ज्ञानमण्डल ग्रन्थमालाका ५वाँ ग्रन्थ

इटलीके विधायक महात्मा



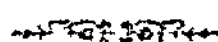
अर्थात्

जिन महापुरुषोंने अनेक संकट सहकर इटली देशको
आस्ट्रिया आदि बलवान राष्ट्रोंके पञ्जेसे छुड़ाकर
संगठित किया उन्हींके कुछ जीवन-
घटनाओंका वर्णन।



सम्पादक

प्रो० रामदास गौड़ एम्० ए०



प्रकाशक

ज्ञानमण्डल कार्यालय, काशी।



प्रथमावृत्ति २०००]   १९७३   [मूल्य सजिल्द २)

प्रकाशक—
ज्ञानमण्डल कार्यालय
काशी

[१ मु–२०००–१९७७]

मुद्रक—
[illegible]रिनाथ पाण्डेय
ज्ञानमण्डल यन्त्रालय
काशी

विषयसूची

चित्रसूची

इटली सम्बन्धी विशिष्ट ग्रंथोंकी सूची

यूरोपका संक्षिप्त इतिहास (सुदर्शन प्रेस प्रयाग)

Bolton King History of Italian Unity (1899)

Burckhardt Civilization of the Renaissance in Italy
[*English translation 1890*]

Corner History of Italy

Cavour The Countess Evelyn Martinengo Cesaresco
(*Macmillan & Co Ltd , St Martin's Street, London*)

D' Ascoli Archivio Glottologico

Evelyn, Countess The Liberation of Italy, 1815-1870
(*Martinengo Cesaresco London Seeley & Co Ltd 38 Great Russell Street, London*)

Garnett Short History of Italian Literature

Hodgkin Italy and Her Invaders (1896-99)

King, Mrs Hamilton Letters and Recollections of Mazzini (*Longmans Green & Co , 39 Paternoster Row, London, New York, Bombay & Calcutta*)

Life and Writings of Joseph Mazzini, 6 Vols
(*London, Smith, Elder & Co , 15 Waterloo Place, London*)

Mario, Jessie White The Birth of Modern Italy
(*T Fisher Unwin, London*)

Marriott, J A R The Makers of Modern Italy
(*Macmillan & Co Ltd , St Martin's Street, London*)

Orsi , Modern Italy (*Story of the Nations* Series)

Stillmann The Union of Italy (1898)

Symonds Age of the Despots (1888)

Italian Literature

Thayer, William Roscoe The Life and Times of Cavour
(*Boston & New York Houghton Mifflin Co The Riverside Press Cambridge*)

Trevelyan, George Macaulay Garibaldi's Defence of the Roman Republic (*Longmans Green & Co 39 Paternoster Row, London, New York, Bombay and Calcutta*

Garibaldi and the Thousand

Garibaldi and the M

Underwood, F M United Italy (*Meth London*)

Vernon, Mrs H M Italy fro
Historical Series)

Zimmern, Helen, and Agn
(*Constable and Co,*

सम्पादककी प्रस्तावना

हमारे साहित्यमें यूरोपकी अन्तर्राष्ट्रीय राजनीतिपर यदि ग्रन्थोंका नितान्त अभाव नहीं तो इतनी कमी अवश्य है कि हमें हिन्दी पुस्तकोंके पढनेवालोंके लिए इस सम्बन्धकी प्रस्तावना लिखनेमे कोई सकोच नहीं हो सकता । आधुनिक पाश्चात्य सभ्यताकी पचायतमें शामिल होनेवाले राष्ट्रोंके इतिहाससे भी हमारी अभिज्ञता बहुत थोड़ी रहती है । समाचारपत्रोंमें ब्रिटेन, जर्मनी, फ्रांस, इटली, रूस आदि राष्ट्रोंका नाम सुनकर उनका जादू हमारे दिल और दिमागपर ऐसा असर कर जाता है कि हम सहसा यह विश्वास नहीं कर सकते कि देश और जनता-की दृष्टिसे यह बहुत छोटे छोटे राष्ट्र हैं, इनका इतिहास हमारी अपेक्षा थोड़े दिनोंका है, अभी थोड़े ही काल पहले यह अपने ही घरोंमे कटे मरते थे, इनकी धार्मिक और आध्यात्मिक उन्नति हमारीसी कभी हुई ही नहीं, सभ्यताकी अनेकानेक बातोंमें यह हमसे मजिलों दूर है, इनका सामाजिक और आर्थिक सगठन यद्यपि किसी किसी दृष्टिसे हमसे अच्छा है, परन्तु फिर भी इतना ढीला है इतनी तरल अवस्थामें है कि वर्त्तमान इतिहासमें गोता लगानेवाले उनमें वह दृढता नहीं पाते जो प्रौढ़ राष्ट्रमे आवश्यक है। यह राष्ट्र अभी बाल्यकालसे उठकर युवावस्थामें

आ रहे है। यह सब होते हुए भी कुछ बात है कि यह मुट्ठी मुट्ठी भर लोग सारे ससारके मामलोमें पच बन रहे हैं। यूरोप-के एक कोनेमें बैठकर तीन चार राष्ट्रोंके प्रतिनिधि ससारका हिस्सा बखरा बाटनेका निश्चय कर लेते है, और भारी भारी देशों और राष्ट्रोंका मनमाना निबटारा हो जाता है, और ससारके प्राचीन बूढ़े राष्ट्र जिनकी सभ्यताकी प्राचीनता इतिहासकी ऐनक लगानेपर भी अत्यन्त सुदूर भूतकालमे ही दिखाई पडती है इन बालक राष्ट्रोंके दु साहसपर ठगेसे रह जाते है और उँगली नहीं उठा सकते। वह कोई बड़े महत्वकी शक्ति होगी जो इन राष्ट्रोंके हाथ आ गयी है, वह कोई अपूर्व बल होगा जिसका सचार आज इनके रगोंमें हो रहा है। यद्यपि हम जानते है कि आज असत्य अनीति छल, कपट, बेईमानी सभी आसुरी रीतियोंका उपयोग आजकलके कूटनीति विशारद कर रहे है,—और वह भी सत्य, नीति, स्वनिर्णय और ईमा-न्दारी आदि दैवी प्रकृतिके पवित्र शब्दोंके आडमें वा उनका दुरु-पयोग करके,—तौभी वह शक्ति जिसके सहारे आज असत्यकी नाव तैरती दीखती है, वह बल जिसके भरोसे आज छलकपट भी उजले कपडे पहनकर सभ्य समाजमें शामिल हो रहे हैं, वह तेज जिसके सामने न्याय भी सर झुकाये खडा दीखता है,—इस तेज, इस बल, इस शक्तिका मूलस्रोत उन सच्चे देशप्राण महा-त्माओंका हृदय है, पुण्य प्रताप है, जिनकी सख्या उँगलियोंपर

आवश्यक वक्तव्य

एक मित्रने जो अपना नाम प्रकट नहीं करना चाहते "बिल्डर्स आव् मार्डन इटली"के आधारपर आठ महात्माओं-के जीवनचरितको सग्रह करके ज्ञानमडलके सचालक महोदयको दो बरससे अधिक हुए दे दिया था। अपने प्रेसके अभावमें यह आरभमें श्रीलक्ष्मीनारायण प्रेसमें छपना रहा। इसके सम्पादनका कार्य्य समय समयपर परिस्थितिके अनुसार कई सज्जनोंने किया है। यही बात है कि वर्त्तनीकी कोई निश्चित नीति नहीं निबाही गयी। परायी भाषाके नाम अग्रेज लोग स्वय बदलकर अग्रेजी पुस्तकमें अग्रेजी भाषाके अनुकूल लिखते हैं। साथही एक भाषाके उच्चारणको दूसरी भाषाकी लिपिमें व्यक्त करना और फिर भी उसके ठीक ठीक पढे जानेकी आशा करना प्रमाद है। जिस ग्रथके आधारपर यह सग्रह हुआ है उसीके उच्चारणके अनुकूल इस ग्रथके कुछ अशमें वर्त्तनी भी रखी गयी। कई अशोंमें इटलीके उच्चारणका रूप दिया गया। अनेक स्थलोंपर इन विदेशी भाषाके शब्दोंको स्वदेशी पोशाक पहनायी गयी है। सम्पादन करनेवालों-की रुचि ही तो है। इस भेदमे वर्त्तनीमें समानता नहीं रही। कहीं कहीं "मैजिनी" लिखा जा चुका और अन्तको "मत्सीनी" ही रक्खा गया। "गारिबाल्डी" "गरिबाल्डी," "गरीबाल्डी"

तीनों रूप पाये जायँगे । 'कैरर" और "कावूर" एक ही व्यक्तिके लिए आ गये हैं । इन दोषोंको स्वीकार करते हुए भी हमारा विश्वास है कि प्रसगपर विचार करनेसे पाठकोंको भ्रम न पड़ेगा ।

इन पक्तियोंके लेखकको सम्पादन-भार तब सौंपा गया जब आधेसे अधिक छप चुका था । फिर अन्तके प्रूफ सशोधनमें अवकाशाभावके कारण मित्रोंकी सहायताका अवलम्ब लेना पडा । इसके लिए सम्पादक उनके प्रति कृतज्ञता प्रकाशित करते हुए भी छूटी हुई भूलोंके लिए अपने ऊपर दायित्व लेकर पाठकोंसे क्षमा प्रार्थी हैं ।

पुस्तक बहुत देरमें निकल रही है । इसके कारण अनिवार्य्य थे जो सचालक और सम्पादक किसीके बसके न थे । अगले सस्करणमें हमको आशा है कि इस वक्तव्यकी आवश्यकता न पडेगी ।

श्रीकाशी ।
गुरु १५, १९७७ ।

रामदास गौड़

इटलाकी राजधानी है, दक्षिण भाग खुला मैदान है, बहुत उपजाऊ है। इसमें कालब्रिया प्रान्त है। नारंगी नीबू यहां खूब होते हैं। दक्षिण भागमें मलेरिया ज्वर अधिक होता है। भूकम्प इस प्रान्तमें बहुत आया करते हैं।

इटलीके ठीक दक्षिणी सिरेसे प्राय मिला हुआ सिसिली नामक द्वीप है। इसे मिलाकर नकशेमें देखनेसे बूटकी शकल मालूम होती है।

इटलीके पश्चिमी तटसे कुछ दूरपर सारडिनिया और कार्सिका यह दो द्वीप हैं। इटलीके पश्चिम और दक्षिण भूमध्य सागर है और पूरबमें अद्रियंतक समुद्र है। पूर्वोत्तरमें आस्ट्रियाका साम्राज्य, उत्तरमें अल्पाचलके पार और पर्वत श्रेणियोंके भीतर ही स्विटसरलैंड और कुछ आस्टियाका भाग है। पश्चिमोत्तरमें फ्रांसकी सीमा मिलती हुई है।

इटलीके राज्यके अन्तर्गत सिसिली और सारडिनियाके द्वीप भी हैं। कार्सिका फ्रांसका है। सिसिलीमें एटना नामका ज्वालामुखी पर्वत है और उसकी राजधानी पलरमो एक पुराने विश्वविद्यालयके लिए प्रसिद्ध है। दक्षिणमें समुद्रके पास ब्रिंडसी, तरान्तो, नेपल्स नामके प्रसिद्ध नगर हैं। नेपल्सके पास ही वसुव्यूह नामका ज्वालामुखी पर्वत है। मध्यप्रान्तमें प्रसिद्ध नगर रोम है जो इटलीकी राजधानी है। उत्तरमें फ्लोरंस, परमा, बोलोना, अद्रिया, पडुआ, जनोआ, टुरिन, मिलान, मटुआ, वरोना आदि नगर प्रसिद्ध हैं।

उत्तर इटलीमें पीडमाट लम्बर्टा और विनीशिया नामक तीन प्रान्त हैं । नीस और सवाय जो पीडमाटसे लगे हुए ठीक पश्चिममें थे फ्रासमें मिले हुए हैं । मध्य इटलीमे इमिलिया, टस्कनी, मारचेस, अम्ब्रिया, अब्रूसी, लाटियम नामके छोटे छोटे प्रान्त हैं । दक्षिणमें अपुलिया, वमिलिकाटा, कम्पेनिया और कल-ब्रिया नामके प्रान्त हैं ।

इस समय (स० १९७७) इटलीके राजा तृतीय विक्टर इमेनुअल है । ब्रिटेनकी तरह राज्य पार्लिमेंटके अधीन है । शिक्षा प्राय सरकारी है । आबादी साढे तीन करोडके लगभग है । धर्म्म प्रधानत रोमन कथलिक ईसाई है । और मतवालोंके सिवाय कोई ४० हजारके लगभग यहूदी भी होंगे । रोममें **वाटिकन** नामका पुस्तकालय ससारमें प्रसिद्ध है । यह ईसाई महामहन्त पोपके अधीन हैं । इस देशमें साक्षरोंकी सख्या आधे-के लगभग है । खेती विशेषत ज्वार और धानकी होती है । रेशम, सूत ऊन, काच और चीनीके वरतन, चुकन्दरकी शकर कागज आदिके कारवार होते हैं । यों तो सभी खनिज पाये जाते है, पर खानोंमे गधक, सीसा, जस्ताकी निकासी अधिक है । **करारा** और **मामाका** सगमरमर भी मशहूर है । इटलीकी वार्षिक आमदनी डेढ अरब रुपयेके लगभग दो वरस पहले थी । फिर पीछे लगभग ९५) सालकी आमदनी होती है ।

गिनी जा सकती है, जिनके महत्वके और प्रात स्मरणीय नाम बहुत थोड़े है और बहुत छोटे हे, जिनके व्यक्तिगत और व्यावहारिक चरित्र अनेक महान सकटोंकी आचमें तपाये गये और कुन्दन पाये गये, निःस्वार्थ देशभक्तिकी कसौटीपर कसे गये और खरे निकले। इनकी ही पवित्रता इनका ही सत्य, इनका ही पुण्य इन राष्ट्रोंको आज बल दे रहा है। जब हम इन राष्ट्रोंके इतिहासपर विचार करते हैं तो हमें इनकी उन्नतिपर आश्चर्य होता है पर जब हम इनके देशप्राण नेताओंका जीवनचरित पढ़ते हैं तो हमें उलटा ही निष्कर्ष निकालना पड़ता है। हमें यह मानना पड़ता है कि यद्यपि यह भौतिक उन्नतिके शिखरपर दिखाई दे रहे हैं तथापि नैतिक दृष्टिसे यह अत्यन्त गिरे हुए हैं, अथाह जलमें हैं, इनका कोई त्राण नहीं है। साथ ही बातकी तहतक जानेमें हमें यह निश्चय हो जाता है कि हमारे देशमें भी यदि इन राष्ट्रोंकेसे सच्चे देशभक्त हमारी आबादी और क्षेत्रफलके अनुमानसे हो जायें तो हम इनसे भी अधिक ऊँचे शिखरपर पहुँच सकते हैं, साथही हमें याद रहे कि हम नैतिक दृष्टिसे उस गहरे गर्त्तमें न गिर जायें जिसमें यह आज डूबे हुए हैं।

प्रस्तुत ग्रंथ इटलीके ऐसे ही आठ महात्माओंके जीवनचरितका सग्रह है। इसके अनेक प्रसगोंमें इटलीके भूगोल और इतिहासके सम्बन्धकी चर्चा अनेक बार आयी है, इसलिए भूमिकाकी तरह उसका सारमात्र यहा दे देना आवश्यक जान पडता है।

इसी सुभीतेकी दृष्टिसे इस पुस्तककी आदिमें इटलीका एक मान-चित्र भी दिया गया है । पाठक उसे देखते हुए भूगोल और इतिहासका अश पढनेकी कृपा करे ।

इटलीका भूगोल

दक्षिणी यूरोपमे यह राज्य लगभग सात सौ मील लम्बा है । यह प्रायद्वीप चौडाईमें सौसे लेकर डेढ सौ मीलतक फैला है । इसकी उत्तरी सीमा अल्पाचलकी लम्बी शृखलासे घिरी हुई है । अत यह केवल राजनैतिक ही नहीं, स्वाभाविक हद भी है । पूर्वोत्तरमे ही सीमा कृत्रिम है । उत्तरमें अधिकाश पो नामकी नदी-का ही प्रान्त है जिसमें अनेक छोटी नदिया आकर मिलती हैं । पो नदी जहा गिरती है उसके उत्तर आदिगा नदी भी गिरती है । इसीके निकट वीनिस नगरी बसी हुई है । अल्पाचलकी ही एक शाखारूप अपिनयन पहाड़ पूर्वोत्तरसे आरभ होकर सारे प्रायद्वीपमें फैला हुआ है । मध्य इटलीमें यह इतने वैषम्यसे फैला हुआ है कि एक प्रकारसे नगर नगर और जिले जिलेको अलगानेमें सहायक हो जाता है । राजनीतिक फूटके लिए मानों यह भी एक साधन है । पहाडी अश यहा अत्यन्त शीत और उजाड है परन्तु घाटी गरम है, हरी भरी रहा करती है और उपजाऊ है । मध्य भागमें अरनो और टैबर यह दो नद हैं । अरनोपर फ्लोरंस और टैबरपर रोम बसा हुआ है जो

ही सारे देशको भोग लगा जानेके विचारमें था परन्तु कई शिकारी होनेके कारण शिकारपर एकका ही अधिकार होना असम्भव था। नवीन जागृति और तत्कालीन तडकभड़कसे यद्यपि पोपराज्यने अपना वैभव बढा रखा था तथापि उसकी जड़में प्रोटेस्टंटोंके विरोध का घुन लग चुका था। कुस्तुन्तुनियाके विजेता (१५२० वि०) तुर्कोंकी चढाईके डरसे पोपके दम सूख रहे थे। सोलहवीं शताब्दीका इतिहास बहुत विस्तीर्ण, बड़े झगड़ोंसे भरा है, पर कई स्थूल बातें उल्लेख्य हैं। फ्रांसने इटलीके भीतरी मामलोंमें हस्तक्षेप करना कम कर दिया पर स्पेन-का प्रभाव बहुत बढ गया था। उत्तरमें छोटी छोटी रियासतोंका एक जमघट था। परमामें पोप तृतीय पौलूसने एक राजवशकी जड जमायी। फ्लारेन्समें मेडिचीका राज्य था ही। वीनिस और जनोआ ही कुछ गिनानेके लायक प्रजातन्त्र थे। "सवाय" ही अपने ठाकुरके बलपर बढ़ रहा था। सत्रहवीं शताब्दीमें इटलीके वाणिज्यकेंद्र वीनिसका बल टूट गया, क्योंकि व्यापारकी नयी राहें खुल गयी थीं और राजनीतिक क्षेत्रमें स्पेन, पोलैण्ड और आस्ट्रियामें गद्दीके अधि-कारपर घोर युद्ध चल रहा था जिससे इटली बच नहीं सकता था। स्पेनके युद्धका अन्त १७७० वि०में हुआ जिससे सवायके ठाकुरको सिसिलीका राज्य मिला जिसे बदलकर पीछेसे उन्होंने सारडिनियापर अधिकार जमाया। पोलैंडका युद्ध १७९५ वि०-में समाप्त हुआ जिससे परमा और टस्कनीकी गद्दीका झगड़ा

मिटा। परन्तु आस्ट्रियावाले युद्धके अन्तमे [१८०५ वि०] टस्कनी और मिलानपर आस्ट्रियाका अधिकार हो गया। जनोआने कार्सिका नामक द्वीप फ्रांसके हवाले किया [१८१२ वि०]। विक्रमकी उन्नीसवीं शताब्दीके आरंभमे इटलीके अनेक टुकडे हो गये थे जो भिन्न भिन्न विदेशी राजाओंके अधिकारमें थे इनमें नेपल्स तो विदेशी चक्कीमें पिस रहा था। अलफीरी इसी समय अपने दु खान्त नाटक लिख रहा था।

विक्रमकी उन्नीसवीं शताब्दीके उत्तरार्धमें फ्रांसमें नेपोलियनका सितारा चमका। उसने अपने बल प्रतापसे सारे युरोपको मथ डाला। इटली उसके भ्रमरावर्त्तसे बच नहीं सकता था। इस देशके अधिकाशपर एक ओर आस्ट्रियाका और दूसरी ओर स्पेनका अधिकार था। सिसली नेपल्स और परमा स्पेनकी मुट्ठीमें थे। टस्कनी मटुआ और मिलान आस्ट्रिया दाबे बैठा था। स० १८५३में नेपोलियनके बलपर मोडेनामे और स० १८५४में मिलानमें प्रजातत्रकी नींव पड़ी। स० १८५५में वीनिसका प्रजातत्र तहसनहस कर दिया गया और फ्रास और आस्ट्रियाने उसे आधोंआध बाट लिया। रोमपर फरासीसी सेनाका अधिकार हो गया। स० १८५६में वीनिसमें नया प्रजातत्र बना। इसके बाद ही इटलीपर आस्ट्रिया और रूस दोनोंने मिलकर चढाई की। १८५८ वि०में फलत आस्ट्रियाने मिलान और लिगूरियाके प्रजातत्रोंको इस शर्त्तपर स्वीकार किया कि यह फ्रांसके अधिकारमें

हुए कृषिपाठशालाएं छत्तीस थीं जिनमें १२०० शिक्षार्थी थे। खनिजविद्याके तीन स्कूल थे, जिनमे ३२ शिक्षार्थी थे, शिल्प कलाके १०३ स्कूल थे जिनमें २४ हजार लडके पढते थे। २७३ स्कूल नकशे और साचे बनानेके थे जिनमें २४ हजारसे अधिक लडके पढते थे। लड़कियोंके लिए ४४ स्कूल थे जिनमें ६ हजार छात्र थे। ३४ स्कूल व्यापारशिक्षाके लिए थे जिनमें ५५०० के लगभग लड़के थे। २६ पाठशालाएं संगीत और चित्रकारी सिखानेकी थीं जिनमें सवा तीन हजार छात्र थे।

इटलीमें अनेक बोलियों और भाषाओंका व्यवहार होता है। मोटी रीतिसे हम चार विभाग कर सकते है। (१) **शुद्ध इटालियन** वहीं बोली जाती है जहा रोमका प्रभाव सबसे अधिक था, अर्थात् पोपकी पुरानी रियासतोंमें, टसकनीमें, अम्ब्रियामें, कम्पेनियामें, अपूलियामे और अब्रूसीमे। (२) **विनीशियन** भाषा दक्षिणी तैरोल और आस्ट्रियाके अद्रयन्तक समुद्र तटपर (३) **फरासीसी इटालियन** जिसमें **बलोनी, लम्बर्डी** और **पीडमण्टी** बोली भी सम्मिलित है, फ्रासके पासवाले प्रान्तोंमें (४) **हिस्पेनी इटालियन** जिसमें कई बोलियां शामिल हैं जो **सिसिली, सारडिनिया, कार्सिका, कलब्रिया, लिगुरिया** और **जनोआ** आदि प्रान्तोंमें बोली जाती है। **इटालियन** भाषा लाटिन भाषाकी पुत्री है जैसे प्राचीन प्राकृतकी पुत्री हिन्दी है।

केवल साढ़े तीन करोड़ मनुष्योंवाले छोटेसे देशमें चार

भाषाए, इक्कीस विश्वविद्यालय, पाचसौ इक्कीस पाठशालाए, कमसे कम चार मत वा सम्प्रदाय, पार्लिमेटरी सरकार तथा प्रजातत्र, सिर पीछे भारतीयकी दूनी आमदनी और सौमें पचास पढे लिखे—यह सब बातें भारतीयोंके लिए विचारणीय हैं।

इटलीका संक्षिप्त इतिहास

इटलीके प्राचीन इतिहाससे यहा हमे अधिक प्रयोजन नही। आजकल जितने भूभागको इटली कहते है उतने भूभाग-का एकछत्र राज्य इसी शताब्दीमे पहली बार हुआ है। इससे पहले या तो वर्तमान भूभाग कई राज्योंमे विभक्त था, या इससे कहीं अधिक बडे और विस्तीर्ण साम्राज्यका अग था। बहुत दिनोतक इस साम्राज्यकी राजधानी रोममें थी। पीछे कुस्तुन्तुनियामें हो गयी। कुछ दिन पीछे साम्राज्यके जब दो भाग हो गये पश्चिमी भागकी राजधानी रोममे थी और वास्तविक सम्राट महामहन्त पोप थे।

धार्मिक अधिकारके साथ साथ धीरे धीरे पोपके हाथमे राज्याधिकार इसीलिए चला गया कि पोप विद्वान और चतुर होते थे और ईसाई सम्राट भी उन्हें ईश्वरका नायब समझता था।

विक्रमकी पन्द्रहवीं शताब्दीके आरभमें इटलीमें फूटने अपना अड्डा कर लिया था और बाहरी विदेशी विजेताओंने अपने जालमें बेतरह फास रखा था। प्रत्येक विजेता स्वय

न अच्छा राजपुरुष। इसने कुछ सुधार तो किये पर परिस्थिति उसके काबूसे बाहर हो गयी। स० १९०४ वि०मे सारे यूरोपमें क्रान्ति व्याप रही थी। फागुनमें ही उस साल लम्बर्डामें कुछ अशान्ति हुई और आस्ट्रियाके विरुद्ध इटलीवालोंमें मेल हो गया और युद्धकी ठनी। पोप बहुत हिचकिचाया, पर अपने विचारके विरुद्ध ही उसे इस लड़ाईकी स्वीकृति देनी पड़ी। युद्धमें पीडमाटका पक्ष विजयी रहा और सावनकी सधिमें आस्ट्रियाको लम्बर्डी और विनीशिया (वीनिसप्रान्त) छोड देना पड़ा।

रोममें हलचल मच गयी। पोपके अधिकारोंकी अवहेला करके लोगोंने प्रजातत्रकी घोषणा कर दी। नेपल्सका राजा द्वितीय फाडिनड सिंहासनपरसे उतार दिया गया और फिर बैठा दिया गया। पीडमाट और आस्ट्रियासे फिर छिडी, पर इसबार पडिमाटकी हार हुई। गरिबाल्डीने रोमपर अधिकार कर लिया पर पीछे उसे इटलीसे भाग जाना पडा। आस्ट्रियाने वीनिस फिर ले लिया और पहलेकीसी ग्रहदशा फिर लौट आयी। दस बरसतक आस्ट्रियाने विनीशिया और लम्बर्डीको बेतरह पीसा। इस समय पीडमाटका बडा भारी राजपुरुष काबूर था पर परिस्थिति उसके काबूसे बाहर हो गयी थी। वह भी अवसर देख रहा था। अन्तत. आस्ट्रियाने अपना अन्याचार कुछ कम किया पर रोममें अन्याय और प्रतिक्रिया ज्योंकी त्यों रही। इसी

बीच एक "राष्ट्र सभा" बन गयी जिसने पीडमाटके अधीश्वर विक्टर इमेनुएलको ही स्वतंत्र और संयुक्त इटलीका अगुआ ठहराया, यद्यपि पहला उद्देश्य था उत्तरी प्रान्तोंका एक करना। विक्टर इमेनुएलको फ्रांसके तृतीय नेपोलियनकी सहायताका वचन मिला और १९१६ वि०में फ्रांस और पीडमाटने आस्ट्रियापर धावा बोल दिया।

तृतीय नेपोलियन हृदयका सच्चा न था, पीछेसे निकल गया। इसने आस्ट्रियासे यह समझौता किया कि लम्बर्डी पीडमाटको मिले और विनीशियाको आस्ट्रिया रखे। पीडमाटने टस्कनीको मिला लिया और वहाके राजा टसक गये। सं० १९१८ में, अर्थात उस घडी जब कि पीडमाटके बडे मारकेका समय था जब भाग्यका पलडा ठीक बीचमें झूल रहा था देशका सबसे बडा और नीतिदक्ष राजपुरुष कावूर इस संसारसे उठ गया, पर अपने पीछे छोड़ गया एक स्वतंत्र और संयुक्त इटली जिसकी बुनियाद पड़ चुकी थी, जिसका जन्म हो चुका था। सं० १९२१ में एक संधिद्वारा यह ठहरा कि फ्रांस रोमसे अपनी सेना हटा ले जाय और छ महीनेके भीतर इटली उसके विरुद्ध धावा न करे। सं० १९२२में इटलीकी राजधानी फ्लोरंसमें चली गयी। सं० १९२३मे आस्ट्रियाके विरुद्ध प्रशा और इटलीकी गुट हुई और शीघ्र ही युद्ध छिडा। आस्ट्रियाने नीचा देखा और इटलीने विनीशियाको मिला लिया। सं० १९२७में

न रहें। इधर वास्तविक अधिकार प्राय सारे इटलीपर नेपोलियनका ही था और उसने इस अधिकारकी रक्षापर कमर मजबूत बाध ली थी। स० १८६०में वह मिलानके प्रजातन्त्रका राष्ट्रपति चुन लिया गया और १८६१में उसके भाई यूसफने ढढोरा पिटवा दिया कि मैं इटलीका राजा हो गया। १८६२में उसने लिगूरियाके प्रजातन्त्रको मिला लिया। इसपर ब्रिटेन रूस और आस्ट्रिया तीनों फ्रांससे बिगड बैठे। परन्तु जब नेपोलियनने आस्ट्रियाको लडाईमें नीचा दिखाया, तब उसने वीनिसप्रान्तका अपना अश और अद्रयन्तक समुद्रके किनारेकी भूमि नेपोलियनको दे दी। फ्रांसके शासकोंने अपने शासनकालमे इटलीके न्याय-विभागमें अच्छे सुधार किये। यद्यपि स०१८६५मे यूसफने इटली-के बदले स्पेनका राज्यसिंहासन ले लिया—और मुराट नेपल्सका राजा हुआ—तथापि नेपोलियनने अपना उद्योग जारी रखा। पोपसे झगड़ा करके उसकी रियासतें जब्त कर लीं, उसे वन्दी करके फ्रांस ले गया और रोमपर अधिकार कर लिया [१८६७ वि०]।

पोपकी रियासतें जबसे नेपोलियनके हाथ आयीं अनेक कामके सुधार किये गये। पर दु ख यह था कि व्यापार फ्रांसकी ही मुट्ठीमें था और नेपोलियनकी सेनामें भरती होनेको रंगरूटोंकी इटलीसे असह्य खींच थी। जबसे रूसकी चढाईमे नेपोलियनकी हानि हुई इटलीमें भी उसकी शक्तिका ह्रास होने लगा। १८७१

वि० में आस्ट्रियाने मिलान ले लिया। तदनन्तर जो पेरिसकी संधि हुई उससे क्रान्तिसे पहलेवाली दशा पुन स्थापित हो गयी। सारडिनियाको सवाय और नीस लौटा मिला और जनोआको उसने मिला लिया। आस्ट्रियाको उत्तरी इटली और दानवी नदीके किनारेका भूभाग मिला। सर्व साधारणको यह पूर्वावस्था पर लौटना अत्यन्त अरुचिकर और कष्टप्रद था, विशेषत' नेपल्सवालोंको जो पूर्वावस्थामें सबसे अधिक सताये गये थे।

स० १८७२ से लेकर १९२७ वि० तकका समय "पुनर्जागृति"का काल कहलाता है। आस्ट्रियाका इस कालमें सबसे अधिक दबाव था, राज्यक्रान्ति समितिया बहुतायतसे बनी, आन्दोलनका गला घोंटा गया जिससे आस्ट्रियाके प्रति घृणा और द्वेपका भाव तीव्र होता गया और देशभक्त अनेक सकट सहकर भी अपने उद्योगमें दृढ रहे।

स० १८७७ में कुछ कालके लिए नेपल्समें राज्यक्रान्ति हुई भी पर रोक दी गयी। दस बरस पीछे कई भागोंमें जनताने सिर उठाया। १८८८ वि० में प्रसिद्ध देशभक्त मत्सीनीने सारडिनियाके राजा चार्ल्स आलबर्टका सहयोग पाकर अनेक समितिया और व्यवस्थाए बनायीं और चलायीं। स० १९०३में सोलहवा पोप ग्रेगरी मर गया और नवा पियूष उसकी धर्म्म गद्दीपर बैठा। यह नेकनीयत था, इसके हृदयमें करुणा और सहानुभूतिका भाव था, पर न तो यह विचारवान था और

रोममे धर्मसभा हुई जिसमे पोपको "अखट प्रमाण" माननेका निश्चय हुआ। असाढमे उसी बरस इटलीने पोपकी रियासतो-पर चढाई की और भादोंमें रोममे इटलीकी सेनाने प्रवेश किया। वहांकी जनताकी रायसे रोम पोपके अधिकारसे निकलकर इटलीके राज्यमे सम्मिलित हो गया। आईनद्वारा पोपके धर्म-मन्दिर और इटली-राज्यका सम्बन्ध निश्चय हो गया। तबसे यद्यपि पोपके अलौकिक अधिकार ही रह गये तथापि सरकार-की ओरसे उनके साथ मैत्रीका बर्ताव रहता आया है। पोपका सम्मान पूर्ववत् बना हुआ है।

इटलीका अन्तिम भाग्यविधाता राजा विक्टर इमनुएल १९२७ वि०के माघके महीनेमें अपनी प्रजाको शोकमग्न छोड स्वर्ग सिधारा। १९ दिन पाछे पोप नवें पियूस भी जिन्होंने राजाके मरते समय आशीर्वाद भेजा था स्वयं राजाके अनुगामी हुए। राजाका बेटा हम्बर्ट गद्दीपर बैठा। स० १९३९मे वह धर्मवीर गरिबाल्डी जिसने इटलीकी स्वतन्त्रताके झंडेको रोमम गाडा था स्वर्गवासी हुआ। इटलीका राज्य धीरे धीरे अपना पार्लिमेंटके ढगपर बन गया।

देशमें नयी स्थापना निर्विघ्न नहीं चलने पायी। मन्त्रि-मंडलकी भूलोंसे जनताके सक्षोभके कारण उत्पन्न होते गये। अन्तत स० १९५७में राजा हम्बर्टकी हत्या हुई। गद्दीपर उनके पुत्र वर्तमान तृतीय विक्टर इमनुएल बैठे। पोप नवम

पियूषकी जगह जो तेरहवा लियो हुआ था १९६०में, मर गया, उसका जगह पियूष दशम हुए जो महायुद्धके आरभमें युद्ध पर पछताते पछताते मरे।

स० १९६८ में इटलीने स्वय जबर्दस्ती तुर्कोंसे लडाई छेडी और त्रिपौली ले ली। १९७० वि०में जर्मनी और आस्टियासे त्रिगुट करके यूरोपके पचोंमें इसने अपनी गिनती करायी और महायुद्धमें फिर आस्ट्रियाके विरुद्ध लड गया। अभी सिलसिला खतम नहीं हुआ है।

यूरोप एक छोटासा "महा"द्वीप है जिसका क्षेत्रफल, रूस छोडकर भारतवर्षके बराबर होता है। इटलीका क्षेत्रफल द्वीपों-को छोडकर विहारोत्कल प्रान्तके बराबर है, और द्वीपोंको लेकर सयुक्त प्रान्तके बराबर है। आबादीकी भी ऐसी ही तुलना है। यही छोटा सा देश पचास ही बरस पहले फूटके फलसे तहस-नहस हो रहा था। बारी बारीसे स्पेन, फ्रास, रूस, आस्ट्रिया सबने इसके टुकडोंपर अधिकार किया। पिछले दिनों यह देश फ्रास और आस्ट्रियाके ही चगुलोंमे फँसा था। पीडमाट जैसे छोटेसे टुकड़ेके राजाने और उसके मन्त्रियोंने अपने देशके दो शत्रुओंको बारी बारीसे लड़ाकर देशको धीरे धीरे अपने अधि-कारमें किया और सारे देशके एक हो जानेपर पार्लिमेंटकी पद्धतिका राज्य स्थापित किया। देशपर सच्चे दिलसे निछावर होनेवाले, अपने प्राणपणसे उसके हितके लिए लडनेवाले,

त्सीनी और कावूर सरीखे विचारवानो और राजपुरुषोंने, परस्पर तभेद और नीतिभेद होते हुए भी, एक लक्ष्य और एक ही उद्देश्य र निगाह रखी और भिन्न मार्गोंसे चलते हुए भी, अपनी स्वतन्त्रताका फडा मजबूत गाडनेमें समर्थ हुए । मत्सीनी और गरीबाल्डीके आन्दोलनोंको दबानेके लिए शत्रु सरकारोंने क्या क्या उपाय नहीं किये । इनके सिरके लिए इनाम प्रकाशित हुए । बन्दी हुए । किसी न किसी रीतिसे मुक्त होकर विदेशोंमे भागे, देश देशकी खाक छानी, अनेक सकट सहे, इनके प्राणोंकी रक्षा इनके लिए नहीं वरन देश सेवाके लिए हुई और अन्तत इनकी मेहनत ठिकाने लगी । यही आस्ट्रियाके लिए बागी और उपद्रवी इटलीके पूज्य देवता और उद्धारक थे ।

विचारवान पाठक इटलीसे अपने देशकी दशाकी तुलना करें । सबकी दशा एक सी नहीं होती । परिस्थिति भेदसे रीति नीतिमें बहुत अन्तर पड जाता है । तब भी राजनीतिकी शिक्षा मिलनेका द्वार भिन्न भिन्न देशोंके इतिहास और उद्धारकोंके जीवनचरितका अनुशीलन है । इसी दृष्टिसे, आइये, आज इटलीके भाग्यविधाताओंके जीवनचरितका इन पृष्ठोंमे अनुशीलन करें । शायद कि हमको इनके जीवनकी घटनाएँ अपने कटकाकीर्ण अँधेरे मार्गमें दीप-शिखाओंका काम दें—

जीवनियोंका अनुवाद किया, किन्तु केवल हमारे साथी ही नहीं, वरन् कदाचित् हमारे शिक्षा गुरु भी यह नहीं जानते थे कि जिनकी जीवनीका हमने अनुवाद किया वे कौन थे, कहां उत्पन्न हुए थे, किसके राज्यमें बसते थे अथवा दूसरा राज्य कहते किसे हैं।" पाठक इतने ही से इटलीके तत्कालीन पठित समाजकी शिक्षाकी दशा भली भांति समझ सकते हैं।

एलफिरी स्वभावत बाल्यावस्थामें विद्योपार्जनकी ओरसे विरक्त सा था ही, किन्तु उसको पढ़ानेका दायित्व जिनके ऊपर था, वे लोग भी अयोग्य शिक्षक थे। तिसपर भी होन हारकी बात, एलफिरीने ज्योंत्यों सब कुछ पढ लिख लिया। जैसे तैसे उसने लेटिन भाषामें इतनी योग्यता सम्पादन कर ली कि उस भाषाके * 'जीआरजिक्स आव वरजिल' का अनुवाद अपने देशकी भाषामें कर डाला। उसे 'गोलडोनी' एवं 'मेटासटेसिओ' को पढनेकी बडी रुचि थी। धीरे धीरे उसकी उन्नतिका मार्ग कुछ और प्रशस्त हुआ। 'ट्यूरिन'में रहते समय उससे और उन विदेशी युवकोंसे मेल जोल बढ़ा, जो ट्यूरिनके विद्यामन्दिरमें विद्या देवीकी आराधना करने गये थे। पर विलक्षण प्रकृतिवाला एलफिरी सन्तुष्ट न था। इस दशाका वर्णन करते हुए उसने एक जगह लिखा है कि "निरन्तर विदेशियोंके सहवास एवम् सदैव विदेशी भाषामें वार्त्तालाप करते करते

---

* यह लेटिनभाषाका प्रसिद्ध इतिहास-लेखक सम्राट आगस्टसके कालमें विद्यमान था और आगस्टसका बड़ा कृपापात्र भी था। उसने, अनेक ग्रन्थ बनाये, किन्तु अब उसकी लिखी हुई प्रसिद्ध यवनानी सेना-की जीवनिया ही उपलब्ध है। कहते हैं कि इसने रोमके सेनानियोंके भी जीवन-वृत्तान्त लिखे थे, पर अब उनका पता नहीं चलता।

विवाहके समय उसके तीन सन्तान थी, किन्तु द्वितीय पुन विवाहके समय विक्टोरियो और उसकी सहोदरा भगिनी सहित वह छ सन्तानकी जननी थी। विक्टोरियोके कई भाई बहिन थे, किन्तु उसकी प्रकृति कुछ ऐसी थी कि बाल्यावस्थासे ही उसे जनरवशून्य एकान्तस्थली ही अच्छी ज्ञान पड़ती थी।

बाल्यावस्थाहीमें एलफिरी विद्योपार्जनार्थ ट्यूरिन नगर के विद्यामन्दिरमें प्रविष्ट करा दिया गया। उसे न तो पुस्तकोंहीसे अनुराग था और न उसका मन किसी प्रकारके विद्योपार्जनमें अनुरक्त था। किन्तु वह स्वयम् उपयुक्त पात्र न बन कर, दूसरोंके गुणदोषोंके विचारमें सदा निरत रहता था। उसने अपनी प्रसिद्ध जीवनीमें लिखा है कि ट्यूरिनके विद्यामन्दिरमें रहकर उसने अपना सारा समय ज्ञानके बदले अज्ञानकी वृद्धिमें व्यतीत किया और जैसा कोरा वह वहाँ गया था, वैसा ही कोरा वहाँसे लौट आया। यहाँतक कि शिक्षित लोगोंके सङ्गमें रहकर उसको शिक्षितों जैसा बोलनेका अभ्यासतक भी न हुआ। वह फरासीसी और पैडीमानरीज भाषाओंके शब्दोंकी खिचड़ी मिलाकर बातचीत करता था और पढ़ना तो उसे बिलकुल आता ही न था।

इटलीदेशमें उस समय विद्या अथवा ज्ञानका आदर सब श्रेणीके लोगोंमें बहुत ही थोड़ा था। उस समय विद्याकी अधिष्ठात्री वहाँकी पादरी मण्डली थी, जो सर्वसाधारणमें विद्याका प्रचार करनेका न तो कष्ट ही उठाती थी और न उसका उत्साह ही था। एलफिरीने अपनी जीवनीमें एक जगह बड़ी कुतूहलजनक बात लिखकर अपने समयके शिक्षित समाजकी विद्या-प्रियताका परिचय दिया है। उसने लिखा है कि "हमने 'कारनीलियस नीपोज' की लिखी

जीवनियोंका अनुवाद किया, किन्तु केवल हमारे साथी ही नहीं, वरन् कदाचित् हमारे शिक्षा गुरु भी यह नहीं जानते थे कि जिनकी जीवनीका हमने अनुवाद किया वे कौन थे, कहां उत्पन्न हुए थे, किसके राज्यमें बसते थे अथवा दूसरा राज्य कहते किसे हैं।" पाठक इतने ही से इटलीके तत्कालीन पठित समाजकी शिक्षाकी दशा भली भांति समझ सकते हैं।

एलफिरी स्वभावत बाल्यावस्थामें विद्योपार्जनकी ओरसे विरक्त सा था ही, किन्तु उसको पढ़ानेका दायित्व जिनके ऊपर था, वे लोग भी अयोग्य शिक्षक थे। तिसपर भी होन हारकी बात, एलफिरीने ज्योंत्यों सब कुछ पढ लिख लिया। जैसे तैसे उसने लेटिन भाषामें इतनी योग्यता सम्पादन कर ली कि उस भाषाके * 'जीआरजिकल आव घरजिल' का अनुवाद अपने देशकी भाषामें कर डाला। उसे 'गोलडोनी' एव 'मेटालटेसिओ' को पढ़नेकी बडी रुचि थी। धीरे धीरे उसकी उन्नतिका मार्ग कुछ और प्रशस्त हुआ। 'ट्यूरिन'में रहते समय उससे और उन विदेशी युवकोंसे मेल जोल बढा, जो ट्यूरिनके विद्यामन्दिरमें विद्या देवीकी आराधना करने गये थे। पर विलक्षण प्रकृतिवाला एलफिरी सन्तुष्ट न था। इस दशाका वर्णन करते हुए उसने एक जगह लिखा है कि "निरन्तर विदेशियोंके सहवास एवम् सदैव विदेशी भाषामें वार्त्तालाप करते करते

---

* यह लेटिनभाषाका प्रसिद्ध इतिहास-लेखक सम्राट आगस्टसके कालमें विद्यमान था और आगस्टसका बड़ा कृपापात्र भी था। उसने अनेक ग्रन्थ बनाये, किन्तु अब उसकी लिखी हुई प्रसिद्ध यवनानी सेना-की जीवनिया ही उपलब्ध हैं। कहते हैं कि इसने रोमके सेनानियोंके भी जीवन-वृत्तान्त लिखे थे, पर अब उनका पता नहीं चलता।

मेरा सर दुखने लगता था।" लोग जो चाहें समझें पर एल फिरीकी बाल्यावस्थाका चित्र केवल फीका और नीरस है।

एलफिरीके स्वभावमें निरङ्कुशताकी मात्रा आरम्भहीसे अधिक थी। विद्यालयके प्रबन्धकर्त्ता यदि उसकी उद्दण्डता रोकनेकी व्यवस्था करते, तो उनका ऐसा करना एलफिरीके विरागका कारण होता था। इसके अतिरिक्त उसके पास व्ययके लिये सदा आवश्यकतासे अधिक धन रहता था, अतः वह अपव्ययी भी पहले दर्जेका होगया था। विद्यालयके तत्वाव धारक जब उसकी स्वतन्त्रतामें हस्तक्षेप करते, तब वह बहुत कुडमुडाया करता था। होते हवाते उसकी बहिनका विवाह काउण्ट जियासिण्टो क्यूमियाना'के साथ हुआ। एलफिरीने अपनी बहिन और बहनोईसे यह प्रार्थना की कि जैसे हो वैसे आप कह सुनकर मेरे इस परतन्त्रमय विद्यार्थी जीवनके बन्धनोंको ढीला करवा दीजिये। काउण्ट और एलफिरीकी बहिनने उद्योग किया और उन दोनोंका उद्योग सफल हुआ। एलफिरी को स्वतन्त्रता मिल गयी और वह राजधानीमें रहकर धन साध्य सब प्रकारके आमोद प्रमोदोंमें अहर्निश अनुरक्त रहने लगा। उसे सबसे बढकर आनन्द घोडेपर सवार होनेमें आता था। अतः उसका अधिक उत्साह अश्वारोहणहीमें दिखलाई पडता था। एक वर्षके भीतर ही उसकी अश्वशालामें आठ बढ़िया घोड़े हिनहिनाने लगे। जब युवक एलफिरीके मित्रोंने उसका अन्धाधुन्ध अपव्यय देख उसे सतर्क किया तब उद्दण्ड स्वभाववाले एलफिरीने कृतज्ञता प्रकट करनेके बदले अनम्रतापूर्वक उत्तर दिया—' धन मेरा, व्यय मैं करता हूँ, तुम लोगोंकी छाती क्यों फटती है। मुझे जो अच्छा सूझ पड़ेगा वही करूँगा।"

जिन दिनों वह विद्यालयमें था, उन्हीं दिनों उसने बडे चावसे सेनामें नौकरी कर ली। काम भी वहां उसे कोई बडा भारी नहीं करना पडता था क्योंकि उसको ध्वजावाहकका काम सौंपा गया था। पर जिसे विद्यालयका नियह ही आपत्ति जनक प्रतीत होता था, वह भला सेनाविभागके कडे नियमों के अनुकूल कितने दिनोंतक काम कर सकता था। अन्तमें उस वृत्तिको भी उसने प्रणाम किया। वहाँसे वह अपने दो युवक मित्रोंके साथ 'जिनोआ' गया। वहाँ एलफिरी अपने उन दोनों मित्रोंकी सालीके प्रेम पाशमें फँस गया। वह स्त्री श्यामवर्ण होनेपर भी बडी हँसमुख थी। जिनोआ-से लौटनेपर उसे गर्व हुआ कि मैंने बडी दूरकी यात्रा कर ली। किन्तु जब वह अङ्गरेज फरासीसी अथवा जरमन सहपाठियोंके सामने, अभिमानमें भरा अपनी लम्बी चौडी यात्राकी डींगें हाँकता तब वे एलफिरीको गूलरका कीट समझ तिरस्कार पूर्वक हँस देते थे। होते हवाते एल फिरीके मनमें यात्रा करनेका अनुराग जगा। उस समय उसकी अवस्था केवल सत्रह वर्षकी थी और यह बात वह जानता था कि अकेले यात्रा करनेकी अनुमति उसे कोई भी न देगा। भाग्यवश एक अङ्गरेज अध्यापक अपने दो छात्रों-के साथ इटलीमें होकर प्रस्थान करनेवाला था और उसने एलफिरीको अपने साथ ले जाना स्वीकार किया। किन्तु एक बडी कठिनाई यह थी कि जब कोई इटलीवासी स्वदेश छोडकर जाना चाहता तो उसे राजदरबारसे आज्ञा मांगनी पडती थी। होनहार एलफिरीको राजाज्ञा प्राप्त करनेमें भी विशेष चिन्ता न करनी पडी और उसके बहनोई-के द्वारा उसे विदेश जानेके लिये राजाज्ञा मिल गयी।

पर्य्यटन करनेके लिये एलफिरी पहलेहीसे उत्सुक था, किन्तु जब उसकी चिरवाञ्छित अभिलाषा पूर्ण हुई, तब उसके मनकी उत्तोल तरङ्गोंका कहना ही क्या था। नये नये नगर, देश, प्रान्त एवम् प्राकृतिक दृश्य देखनेके लिये उसका चित्त सदा चलायमान ही रहता था। वह एक नगरमें पहुचा नहीं कि झट दूसरे नगरकी यात्राके लिये उत्कण्ठित हो उठता। इटली प्रदेशकी यात्रा तो उसे मनोरञ्जक और रुचिकर न हुई। ज्यों ज्यों वह इटलीके नगरोंको देखता त्यों त्यों उसके चित्तमें, वहांकी भाषा और उस भाषाकी लिखावटकी ओरसे विराग सा उत्पन्न होता जाता था। किन्तु आश्चर्यकी बात तो यह है कि जो एलफिरी बाल्यावस्थामें इटालियन भाषासे पूर्णतया घृणा करता था, वही एलफिरी प्रौढ वयमें इटालियन वर्णमालाका उद्धारक हुआ।

एक पक्ष 'मिलन' में रहकर एलफिरी अपने साथियोंके साथ 'परमा' 'मोडीना' एव 'बोलोना' होकर 'फ्लोरेंस' पहुचा। विट्टोरियोको न तो उन देशोंके लोग, भवन, दृश्य, अथवा चित्र ही मनोरञ्जक हुए और न किसी भवन अथवा नगरकी शिल्प पटुताही रुचिकर हुई। ज्योंही एक नगरमें पहुचता, दूसरे नगरको जानेके लिये लालायित होने लगता। फ्लोरेंस भी—जो पीछे उसका आवास-स्थल था, उसको अच्छा न प्रतीत हुआ। वह नगर भरमें 'सेएटाक्रोसी' में * 'माइकेल एनजीलो'की समाधि देखकर

* इसका पूरा नाम है 'माइकेल एनजीलो बुओनरोची' जन्म इसका टसकनी स्थानमें स० १५११ में हुआ था और मृत्यु स० १६१० में। यह इटलीका एक सुप्रसिद्ध चित्रकार था।

प्रसन्न हुआ। सच बात तो यह थी कि एलफिरीके मनकी स्वभावके मारे उसके सहयात्रियोंका नाकों दम था। जहाँ पहुँचता मारे जल्दीके अपने साथियोंके हाथके बरतन चुरवा देता था। एलफिरी फ्लोरेंससे 'रोम' ॐ पहुँचा। सेण्टपीटरके तोरणश्रृङ्गको छोड़ रोममेंकी अन्य कोई भी चित्रकारीका नमूना एलफिरीके चित्तको आकर्षित न कर सका। रोमसे वह 'नेपल्स' पहुँचा। वहाँ उस समय 'कारनीवल' नामक महोत्सवकी धूम थी। एल फिरी उस महोत्सवके आनन्दमें निमग्न हो, दोनों हाथोंसे पानीकी तरह धन उलुचने लगा। वह राजाके सामने उपस्थित किया गया। वहाँ जितने नाच रङ्ग खेलकूद हो रहे थे, उन सबमें वह विशेष रूपसे सम्मिलित होता था, किन्तु इतना होनेपर भी एलफिरी सन्तुष्ट न हो सका। उसकी इच्छा अकेले पर्य्यटन करनेकी थी। अन्तमें वह सफल मनोरथ हुआ और उसे नेपल्स राजमन्त्रीके द्वारा पर्य्यटनकी राजाज्ञा मिलगयी। उस समय उसकी अवस्था उन्नीस वर्ष-की थी और वह उस समयकी सजधजके साथ दीर्घ यात्रा करनेके लिये रवाना हुआ। वह सरकारी यात्रीके रूपमें चला। उसके साथ एक सेवक था और धन भी अतुल था।

उसके पास नेपल्सके बड़े आदमियोंके दिये हुए जहाँ तहाँके प्रसिद्ध पुरुषोंके नाम परिचयपत्र भी थे।

ग्रीष्मावकाशके अवसरपर पर्य्यटन करते हुए, मार्गमें एलफिरीकी भेंट फरासीसी नाटकवालोंसे हुई। उनके साथ बातचीत करते करते उसको फरासीसी रङ्गशालाका दृश्य

ॐ रोमका भारतीय नाम रोमकपत्तन है।

देखनेकी उत्कण्ठा उत्पन्न हुई। उस समय उसकी अभिलाषा रङ्गशालामें अपनी प्रतिभाका परिचय देनेकी न थी, किन्तु अभीतक वह यही विचारता था कि एक न एक दिन मैं सरकारी सेवावृत्तिद्वारा आजीविका निर्वाह करूँगा। सबसे पहले वह 'मारसेलस' गया। वहाँ वह अपना समय नाटक भवनोंमें और एकान्त समुद्र तटपर टहलते हुए बिताने लगा। कुछ दिनों वहाँ रहकर वह 'पैरिस' पहुँचा।

वहाँपर 'पैडिमानरोज' के राजमन्त्रीने एलफिरीको पन्द्रहवें 'लुई' से मिलाया। फरासीसी नराधिपसे मिलकर एलफिरीके मनमें महाराजकी ओरसे अच्छा भाव उत्पन्न न हुआ। एलफिरीके विचारानुसार पन्द्रहवाँ लुई बड़ा अभिमानी था। जब मन्त्री किसीको उससे मिलाता था तो वह उस मनुष्यको सिरसे पैरतक इस प्रकार देखता जैसे कोई विशाल देह-सम्पन्न किसी वामन पुरुषको तुच्छ दृष्टिसे देखे। सं० १८३५ के प्रारम्भमें एलफिरी इङ्गलिश चैनलको पार करके डोवरमें पहुँचा।

एलफिरीको इङ्गलेण्ड देखकर बड़ा हर्ष प्राप्त हुआ। वह वहाँके प्रदेश, भवन, मार्ग, अश्व, एव मनुष्योंको देख मोहित हो गया। उसे सबसे बढकर आश्चर्य तो यह देखकर हुआ कि उस देशमें उसे कोई धन हीन दरिद्र न देख पड़ा। कुछ दिनोंतक तो उसे इङ्गलेण्डकी भूमि यहाँतक रुचिकर प्रतीत हुई कि उसने वहाँ बस जानेका सङ्कल्प कर लिया। अन्तमें अनेक वर्षोंतक यूरोपके अन्यान्य देशोंमें पर्यटन कर एलफिरीने इङ्गलैण्ड और इटलीहीको सर्वोत्तम देश बतलाया था और इन्हीं दो देशोंको अपने रहनेका स्थान निश्चित किया था। इङ्गलैण्डमें बहुत दिनोंतक रहनेके कारण एलफिरीको

यहाँका रहन सहन, आचार विचार केवल अच्छा नहीं लगने लगा वरन् वह स्वयम् उनका अनुकरण करने लगा। इस बीचमें इस देशमें एलफिरीकी कई एक अङ्गरेजोंसे मित्रता भी हो गयी थी।

अन्तमें लन्दनसे चलकर एलफिरी 'हॉलैण्ड' गया। वहाँ वह पुर्त्तगाली राजदूत 'डॉन जोसेफ डी एक्यूनहा' से मिला। इसी राजदूतने एलफिरीको अपनी विद्या बुद्धिको उप योगमें लानेके लिये प्रोत्साहित किया। हेगमें वह तत्कालीन प्रथाके अनुसार एक विवाहिता रमणीके प्रेममें फँस गया। कुछ समयके लिये उसके मनकी चञ्चलता शान्त हो गयी और उसने ऐसा उपाय रचा कि वह निरन्तर अपनी प्रेयसीके साथ रहने लगा। यही नहीं, जब उसकी प्रेयसीको अपने पतिके साथ साथ जाना पड़ा तब एलफिरी भी उनके पीछे हो लिया और साथ पहुँचा।

थोड़े ही दिनों बाद उसकी प्रेयसीका 'पति स्विटजरलैंण्ड' गया और उसकी युवती स्त्री 'हेग' को लौट आई। दस दिन तक अहर्निश एलफिरी स्वच्छन्द अवसर पा, अपनी प्रेयसी के पास रहा। अनन्तर उस युवतीके पतिने उसे अपने पास बुला भेजा। वह युवती जानेके पूर्व एक पत्र एलफिरीके नाम लिखकर 'डि एक्यूनहा' के पास छोड़ गयी थी। एलफिरी उस पत्रको पढ़कर मूर्च्छित हो गया और प्रेयसीकी विरह व्यथाको न सहकर अपने प्रचण्ड स्वभावके वशवर्त्ती हो आत्मघात करनेको उद्यत हुआ। उसने अपने शरीरमें घाव कर लिया और बीमार बन गया। जब वह अकेला रह गया, तब उसने घावकी पट्टी खोल, उससे सारे शरीरका रक्त निकाल कर, मर जाना चाहा। उसका शुभचिन्तक सेवक साथ रहते

विएनामें उसे इटलीके तत्कालीन सर्वप्रसिद्ध प्रतिभाशाली 'मेटेसटेसिओ'से मिलनेका अवसर प्राप्त हुआ, किन्तु उसने उस अवसरको जानबूझकर हाथसे जाने दिया। उसने इसका कारण निर्देश करते हुए लिखा है " मैं प्लुय 'मेटेसटेसिओको 'स्कुमब्रून'की वाटिकाओंमें 'मेरिया थेरिसा'के सम्मुख दास भावसे चापलूसी एवम् प्रणिपात करते देख चुका हूँ। मेरा मन और प्राण तो प्लूटार्कके उच्च कोटिके विचारोंसे विभूषित हो चुके हैं। मैं भला ऐसे मनुष्यसे जिसने अपने आपको उस प्रजापीडकके हाथ बेच डाला है, और जिससे मैं हृदयसे घृणा करता हूँ। न तो परिचय ही करना चाहता और न उसे अपने मित्रोंकी श्रेणीमें गिनना उचित समझता हूँ। 'बर्लिन'में वह 'फ्रेडरिक दी ग्रेट'के सामने उपस्थित किया गया। इस घटनाको लेकर उसने लिखा है—" मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूँ कि उसने मुझे इसका (फ्रेडरिकका) दास बनाकर उत्पन्न नहीं किया। लगभग मध्य नवम्बरमें मैं उस प्रशियन शिविरसे चला, जिसे मैं घृणा एवम् भयका कारण समझता हूँ।"

एलफिरी बर्लिनसे डेनमार्क गया और वहाँसे स्विडन और स्विडनसे रूस। उसने लिखा है कि रूस राज्यकी राजधानी पीटर्सबर्गके पास पहुँचते ही मेरे मनको असाधारण चिन्ता एवम् आशाने दबा लिया। किन्तु दु:ख महादु:ख ज्योंही मैं एशियाई ढङ्गकी झोपडियोंके समूह स्थानपर पहुंचा, त्योंही मेरे स्मरण पथ होकर एक एक करके रोम, जिनोआ, वेनिस एव फलारेंसके रमणीय दृश्य निकलने लगे और मुझसे हँसे बिना न रहा गया। पीछेसे इस नगरमें घूम फिरकर मेरा पूर्व विचार और भी दृढ़ हो गया और मेरे

मनमें यही विचार उत्पन्न हुआ कि मैं यहां व्यर्थ आया। यह स्थान देखने योग्य कदापि नहीं है। इन लोगोंकी दाढ़िया और घोडोंको छोड यहांकी प्रत्येक वस्तुको देख मेरे मनमें यहां वालोंके प्रति इतनी घृणा उत्पन्न हुई कि इन जङ्गलियोंमें लगभग छ सप्ताह रहकर भी न तो मैंने वहाके किसी अधिवासीसे जान पहचान बढाई और न ट्यूरिन विद्यालयके रूस देश निवासी अपने सहपाठियोंसे मिलनेकी इच्छा ही की। मैंने फिर न तो वहाकी सुप्रसिद्ध निरङ्कुश द्वितोय केथराइन से मिलनेका उद्योग किया और न वहांके उस सम्राट्‌के दर्शन किये जो ख्यातिकी सीमाको अतिक्रम कर चुका था।

एलफिरी वहांसे फिर इङ्गलैण्ड गया और इस बार भी वह एक विवाहिता रमणीके प्रेममें फस गया। वह स्त्री एक उच्चपदाधिकारीकी पत्नी थी। वह समाज एवम् लोक लाजको तिलाञ्जलि दे, उस रमणीके पीछे पाछे घूमने लगा। इसको देखकर वहाके समाजमें बडी चकचक होने लगी। होते हवाते यह बात उस रमणीके पतिके कानतक पहुची। फल यह हुआ कि एलफिरी और उस रमणीके पतिमे परस्पर द्व द्व युद्ध हुआ। यह युद्ध तलवारोंसे सेण्टजेम्स पार्कके समीप हुआ था। एलफिरीका एक हाथ उस समय चोटीला हो गया था। क्योंकि एक नटखट घोड़ेने उस हाथमें काट खाया था। इस युद्धमें एलफिरी चोटील हुआ और उसकी प्रेयसीका पति उतनेहीसे सन्तुष्ट हो गया। इस घटनाके कुछ ही दिनों बाद रमणीके पतिने न्यायालयकी शरण ली और एलफिरीके नाम अपनी स्त्रीके विरुद्ध, स्त्री परित्यागका अभियोग चलाया। इस घटनाको ले यहांके पत्रोंमें बड़ी सरगर्मीके साथ चर्चा चली। एलफिरीने उस रमणीके

साथ विवाह करना चाहा, किन्तु इस अनगढ़ नियमित सम्मिलनको उस स्त्रीने असम्भव बतलाकर अस्वीकृत किया। रमणीके इस व्यवहारसे एलफिरी ठण्ढा पड गया और उसका मन बडा उद्विग्न हुआ। उसी दशामें उसने इङ्गलैण्ड परित्याग किया और वह हेग एवम् पैरिस होकर 'स्पेन' पहुँचा।

पैरिसमें उसने प्रसिद्ध प्रसिद्ध ग्रन्थकारोंके ग्रन्थ मोल लिये और उन्हें पढना आरम्भ किया, किन्तु विद्यारसिकोंमें जो बात होनी चाहिये थी, वह अभी एलफिरीने नहीं जानी थी। वह कभी कभी अपनी प्राचीन उद्दण्ड एवम् रसिकता प्रिय प्रकृतिके वशीभूत हो आया करता था। कभी तो वह सामाजिक वन्धनोंके प्रति क्रोध प्रदर्शित करता और कभी विवाह वन्धनमें स्वयम् पडनेके लिये लालायित होता था। उसके चरित्रमें निर्वलताके चिह्न सदा विशेष रीतिसे देख पडते थे और कभी कभी तो वह अपनी नीच इन्द्रियोंके वशमें यहाँतक हो जाता था कि वह अपने आपेमें नहीं रहता था। एक दिनकी बात है, जिन दिनों एलफिरी 'मेड्रिड'में था, सायङ्कालके समय उसका चिरसहचर सेवक उसके सिरके बाल सम्हाल रहा था। उनमें उलझन पडी हुई थी उन्हें सुलझाते समय, एलफिरीके बाल खिंच गये। इससे उसको पीडा हुई और क्रोधमें भर वह कुर्सी छोडकर उठ बैठा और शमादा न उठाकर नौकरको इतनी जोरसे मारा कि नौकरकी कनपटी लोहूलुहान हो गयी। इसपर निरपराध नौकरको भी क्रोध आया और वह भी एलफिरीको मारनेके लिये झपटा। इतनेमें एक स्पेन निवासीने आ दोनोंके बीचमें पडकर बीचबिचाव करा दिया। जब क्रोध उतरा तब एलफिरी स्वयम् बहुत लज्जित हुआ। उसने

नौकरसे कहा, "क्यों जी यदि तुम घात पाते तो मुझे मार ही डालते न। अच्छा रातको जब मैं सो जाऊँ, तब तुम मुझे मार डालना, क्योंकि आज काम तो मैंने इसी योग्य किया है।" इसपर उसके शुभचिन्तक सच्चे नौकरने कुछ भी ध्यान नहीं दिया। बहुत दिनोंतक पलफिरोके साथ रहते रहते वह उसकी प्रकृतिसे भलीभाँति परिचित हो गया था। उसने रक्तसे रँगे दो रूमालोंको सावधानता पूर्वक रख छोड़ा था और कभी कभी उन दोनोंको पलफिरीको दिखाकर उसे उसके अनुचित कर्मका स्मरण दिला दिया करता था।

'लिसबन'में पलफिरीने 'केल्यूलों'के 'पबट'को अपना प्रगाढ मित्र बना लिया। पबटको वह उस कालका मानटेन कहता था। पबटने इस युवकको साहित्यकी ओर आकर्षित करनेका यत्न किया और उसे पद्य रचनामें प्रवृत्त किया। पलफिरी पद्य बनाकर लेजाता था और पबट उसकी रचनाके गुणदोषों की समालोचना कर, उसे आगेके लिये सतर्क कर दिया करता था। कुछ दिनों तक पलफिरीका मन पद्य रचनामें लगा और उस ओर प्रवृत्ति भी रही, किन्तु थोडेही दिनों बाद उसकी ओरसे उसका मन उचट गया और पलफिरी फिर निरुद्देश्य घूमने लगा। उसने घर लौट जानेका निश्चय किया और स० १८२६ के मध्यमें वह ट्यूरिन पहुँचा।

उसने वहाँ एक मकान लिया और उसे बड़ी सजधजके साथ सजाया। यह सजा सजाया मकान नवयुवकोंके नाना प्रकारके मनोरञ्जक कृत्योंका केन्द्रस्थल बना। कुछ नव युवकोंको नवीन रचनाका व्यसन था। पलफिरी उन्हें प्रसन्न रखनेके लिये स्वयं भी कुछ दिनोंतक लिखता रहा, किन्तु थोडेही दिनों बाद लिखते लिखते ऊब गया और उसने अपने

मनको दूसरी ओर लगाया। अपने मनकी चञ्चलताको बाँधनेके लिये एलफिरी सदा उपाय खोजा करता था। होते हवाते वह एक कुलीन घरानेकी स्त्रीके प्रेममें पडा। यह स्त्री उससे अवस्थामें दस वर्ष बडी थी और किसी बातके लिए प्रसिद्ध भी न थी। एलफिरीका जीवनी-लेखक लिखता है कि एलफिरी अपनी इस स्त्रीका नितान्त दास बन गया। उसके पीछे वह उन्मत्त सा बना रहता और सदा उसे अपनी आंखोंके सामने रखनेहीमें परम आनन्द मानता था। दो वर्ष तक एलफिरीके सिरपर उसकी पत्नीका भूत सवार रहा। कभी कभी वह स्वयम् अपनी प्रकृतिको धिक्कारता था, पर जो आपदा उसने स्वयम् मोल ली थी, उससे छुटकारा पाना सहज न था।

अन्तमें उसने स्थानत्याग करके उस बन्धनसे छुटकारा पानेका विचार किया। विचार ही न किया किन्तु रोमकी ओर चल दिया। किन्तु जब रोम नगरके समीप पहुँचा, वसे फिर सनक सवार हुई और फिर ट्यूरिन लौट आया। एक वर्षके लिये उसने ट्यूरिन त्यागनेका फिर सङ्कल्प किया। किन्तु इस बार ३६५ दिनका वर्ष आठ ही दिनमें पूरा कर डाला। इसपर उसे बडी लज्जा उत्पन्न हुई और वह ट्यूरिनमें अपना मुँह दिखलाते भी लजाने लगा। किन्तु उसकी स्त्रीने उसपर कुछ ऐसा जादू सा कर दिया था कि बहुत चाहने पर भी, उससे स्त्रीका साथ नहीं छोडा जाता था। अन्तमें उसने सोचा कि अबकी जो करूँगा वह दृढता पूर्वक करूँगा, नहीं तो मेरी प्रतिष्ठा और प्रभाव एक साथ धूलमें मिल जायेंगे। इस विचारको कार्यमें परिणत करनेके लिये उसने एक उपाय निकाला। अर्थात् उसने अपने सिरके बाल कटवाकर इतने छोटे करा लिये कि उसे फिर

घरसे बाहर, मारे लज्जाके निकलनेका साहस न हुआ और घरके भीतर अपने कमरेके द्वार बन्दकर पुस्तकावलोकन करने लगा। पुस्तकें पढ़ते पढते उसका मन ऊबने लगा, तब उसने रचना आरम्भ किया। उसने एक छोटी सी गाथा रची और अपने एक मित्रके पास भेजा। उसके मित्रने उस गाथाकी प्रशंसा कर मित्रोचित व्यवहारका परिचय देते हुए उसका उत्साह बढ़ाया। तबतो उसकी लेखनी आश्चर्य जनक वेगसे कागजपर दौड़ने लगी। उसके सारे विचार अपने आप विलीन हो गये और अविश्रान्त परिश्रम कर वह पद्य रचनामें संलग्न हुआ। जबतक वह नितान्त श्रान्त न हो जाता था, तबतक वह लेखनीको विश्राम नहीं करने देता था। किन्तु जब उसके बाहर जानेका समय आता था तो वह स्वयं अपने शरीरको रस्सीसे कुर्सीके साथ जकड़ लेता था। इस प्रकार उसने इन्द्रियोंका दमन किया। इतनेमें उसकी दो रचनाएँ समाप्त हुईं। एक रचना तो अन्त्यानुप्रास हीन साधारण थी और उसका विषय "क्लियोपेटरा" की दुःखान्त घटना थी। दूसरा "दी पोएटस्" नामका एक प्रहसन था, जिसमें "क्लियोपेटरा" को लेकर हास्य किया गया था। उसने अपनी दोनों रचनाओंको ट्यूरिनके एक रङ्गशालाके अध्यक्षके पास भेज दिया। सं० १८३२ में वे दोनों रङ्गमञ्चपर खेले गये। लोगोंने उन्हें बहुत सराहा। किन्तु एलफिरीको वे अच्छे न लगे और उसने आगे उनका खेला जाना बन्द करना चाहा। किन्तु इस प्रकार रचनाका अभ्यास करते करते, धीरे धीरे एलफिरीकी कीर्त्ति फैलने लगी और उसके मनमें जो आत्मग्लानि उत्पन्न हो गयी थी वह दूर होने लगी।

पड़ा। वहाँ अचानक उसे "लिवी" नामक पुस्तककी एक प्रति मिली। उसमें वर्णित "वरजिनिया" और "आइसी लियस" की कहानी उसे ऐसी अच्छी लगी कि उसके आधार पर उसने एक दु:खान्त नाटक रचना ही निश्चय किया। वहाँसे चलकर वह शीघ्र ही पिसामें पहुँचा। किन्तु वहाँ ठहरनेका साहस इसलिये ,न हुआ कि वहाँ एक अविवाहिता युवतीको अपना हृदय सौंप चुका था और उसे आशङ्का थी कि वहाँ रहनेसे कहीं उसके साथ विवाह न करना पड़े। एलफिरी एक बार प्रेम करके अब विवाह करने से क्यों डरता था, इसका कारण उसने स्वयम् लिखा है। वह कहता है, "युरोपमें पर्य्यटन करनेके आठ वर्ष बाद, ख्यातिकी लालसा, विद्या प्रेम एवम् स्वाधीनताकी रक्षाकी आवश्यकताने (जिससे मैं अपने हृदयस्थ विचार बिना रोक टोक लिख सकूँ और वाणी द्वारा प्रकाश कर सकूँ) मुझे सतर्क कर दिया कि जहाँके शासक प्रजाको उत्पीड़न करने वाले हों वहाँ अकेले रहना ही कठिन है, फिर जो गम्भीर विचार सम्पन्न हैं, वे भला ऐसे राज्यमें विवाहकी बेड़ी अपने पैरोंमें डाल, कुटुम्बवाले होकर क्यों कर रह सकते हैं। यही सोच मैं 'अरनो' को पार कर 'सेना' में पहुँचा।

उस समय फ्लारेंसमें 'चार्लस एडवर्ड' जो इङ्गलैंडके राजसिंहासनका उत्तराधिकारी था, अपनी सहधर्मिणी सहित 'काउण्ट आव एलबनीकी' उपाधि धारण कर रहता था। एडवर्डको स्टोलबर्गकी राजकुमारी, जिसका नाम 'लुइसा' था ब्याही थी। वह भी काउण्टेस आव एलबनीकी उपाधिसे विभूषित थी। चार्लस एडवर्डकी अपकीर्त्ति वहां घर घर फैली हुई थी। वह पहले दर्जेका मद्यप था। युवती लुइसा

अत्यन्त रूपवती थी और सभ्य शिक्षित समाजकी आभूषण स्वरूप थी, किन्तु मद्यप चार्लस, मद्यके मदमें अहर्निश चूर रह कर लुइसाका महत्व और मूल्य न जान पाया और वह उसपर अत्याचार किया करता था। फ्लोरेंसके निवासी काउएटकी झगड़ालू, अत्याचार परायण और लम्पटता-प्रिय प्रकृतिकी निन्दा किया करते और काउएटेसपर दया एवम् उसके सहनशील मधुर स्वभावकी प्रशंसा किया करते थे। एलफिरीके मित्रोंने लुइसासे उसको मिलाना चाहा, किन्तु उसने उससे मिलना अस्वीकार किया कि "मैं ऐसी स्त्रियोंसे दूर रहनेहीमें अपनी भलाई समझता हूं जो बड़ी रूपवती और सर्वजन प्रशंसिता हैं।" एलफिरीने मित्रोंके प्रस्तावको तो अस्वीकृत किया और लुइसासे न मिला, किन्तु पार्कमें एवम् थियेटरमें एलफिरीकी दृष्टिसे लुइसा न बच सकी। लुइसा ऐसी रूपवती थी कि उसे देखते ही एलफिरीके हृदय पटलपर उसका चित्त अमिट रूपसे अङ्कित हो गया। एलफिरी जिस बातसे डरता था, वही हुई।

अन्तमें अन्य उपाय न देख एलफिरीने फ्लोरेंसमें रहना अनुचित समझा और वह वहाँसे झट चलकर रोम पहुँचा। किन्तु रोममें उसका मन बिल्कुल न लगा और विवश हो उसे फ्लारेंस लौट जाना पड़ा।

फ्लारेंसमें लौट कर वह अपने हृदयस्थ प्रेमकी कथा, छिपा न सका। इस बारका प्रेम प्रवाह उसके पक्षमें हितकर ही सिद्ध हुआ। वह अपने कर्त्तव्य कर्मकी ओर और भी अधिक मनोयोग पूर्वक प्रवृत्त हुआ और उसकी काव्य सम्बन्धिनी कल्पना चरम सीमा तक पहुँच गयी। कहावत प्रचलित है कि किसीको बैंगन हितकर और किसीको अहितकर

होता है। एलफिरीके पद्यमें लुइसाके साथ यह नवीन प्रेम सम्बन्ध बड़ा ही लाभदायक हुआ। इस समय उसने जो पद्यमयी रचना लिखी प्रथम श्रेणीकी और सर्वोत्कृष्ट भावपूर्ण समझी गयी।

इस विचारसे कि टसकनीमें जाकर बसूँगा, उसने अपनी भूसम्पत्तिको अपनी भगिनीके नाम करवा दिया था। इसकी लिखा पढ़ीमें विलम्ब लगा किन्तु हो गयी। इधर लुइसाके साथ नवीन सम्बन्ध होनेसे एलफिरीको अगत्या फ्लोरेंसमें रहना पड़ा। किन्तु आय कम हो जानेके कारण अपने व्ययमें कमी करनी पड़ी। उसने अपने घोड़े बेच डाले, केवल एक टहलुआ और रसोइयाको छोड़, उसने अन्य सब नौकर निकाल दिये। साथ ही और भी भोग विलासकी सामग्रीमें कमी कर दी। अब उसके व्ययका मुख्य द्वार पुस्तकें रह गयीं। उसकी आमदनीका अधिक अंश पुस्तकें मोल लेनेमें व्यय होता था। धीरे धीरे उसके अधिकारमें अच्छी और छुटी पुस्तकोंका एक बहुमूल्य भण्डार हो गया। उसने एक छोटा सा घर भी ले लिया और वह दृश्य काव्योंकी रचनामें संलग्न रहने लगा। इस कार्य्यसे जो समय बचता उसे एलफिरी सुन्दरी काउण्टेसके साथ रहकर व्यतीत करता था। उसके ये तीन वर्ष बड़ी शान्तिके साथ व्यतीत हुए और इस बीचमें उसने ९-१० उत्तम दु:खान्त दृश्य काव्योंकी रचना कर डाली। उसकी रचनामें विशेष मार्केकी बात यह है कि उसने स्थान स्थानपर अत्याचारियोंके प्रति घृणा प्रदर्शित की है, चाहे वे अत्याचार सामाजिक हों, चाहे राजनैतिक।

जब एलफिरीको फ्लारेंसमें रहते तीन वर्ष हो गये, तब

एक ऐसी घटना हुई, जिससे एलफिरीकी मानसिक शान्ति में विघ्न उपस्थित हुआ। चालस एडवर्ड अपनी पत्नी लुइसापर घोर अत्याचार करने लगा। इससे लुइसाके अन्य मित्रोंको विशेषकर एलफिरीके मनमें बड़ी व्यग्रता उत्पन्न हुई और वे लुइसाको उस अत्याचारीके हाथसे निकालनेका उपाय सोचने लगे। अन्तमें लुइसाको वे लोग चुपके चुपके एक गिरजेमें ले गये। फिर काउण्टके भाई 'कारडिनल आव यार्क' और टसकनीके ग्राण्ड ड्यूककी सहायतासे लुइसाको एक बन्द गाडीमें बिठलाकर रोम ले गये। उन लोगोंको काउण्टका इतना भय था कि लुइसा जिस गाड़ीमें थी उसके चारों ओर घुड़सवार थे और एलफिरीके ही हाथमें गाडीके घोड़ोंकी रास थी। जब उसकी गाडी फ्लारेंससे कुछ दूर निर्विघ्न निकल गयी तब एलफिरी लौट आया।

काउण्टेसके फ्लारेंससे जाते ही एलफिरीका मन काममें न लगने लगा। उसकी यह दशा हुई और उसका मन इतना उचाट हुआ कि उससे फ्लारेंसमें न रहा गया और वह नेपल्समें चला गया। वहाँ कुछ दिनों ठहर कर, उसने यह जानना चाहा कि काउण्टेस अब क्या करना चाहती है। थोड़े ही दिनों बाद यह बात प्रकाशित हो गयी कि युरोपके न्यायालयोंमें काउण्टेसका अभियोग चलने लगेगा। परिणाम यह हुआ कि पोपने काउण्टेसको इजाफा देकर आज्ञा दी कि वह अपने जेठके घरमें रहे। अन्तमें एलफिरीको विदित हुआ कि लुइसा नितान्त स्वाधीना हो कर समय व्यतीत कर रही है और अब पतिके साथ उसका कुछ भी सम्बन्ध नहीं है। असली भेद खुल न जाय इस बातको बचाने के लिये एलफिरी एक मास नेपल्समें रह कर रोममें गया और वहाँ रहने लगा।

वहाँ रहकर उसने फिर लिखना आरम्भ किया और "स्पोल" नामक दु:खान्त दृश्यकाव्य लिखकर प्रस्तुत किया। यह उसकी चौदहवीं रचना थी और सबसे चढ़ बढ़कर थी। यह जाननेके लिये कि दर्शक उसकी नाट्यशक्तिको कैसा समझते हैं, अपने कुछ मित्रों सहित वह स्वयम् रङ्गमञ्चपर अभिनय करनेको प्रस्तुत हुआ और उसने "एण्टीगान" नामक नाटकका अभिनय कर दिखलाया। लोगोंने उसकी नाट्यशैलीका बड़ा आदर किया और उसकी प्रशंसा की। इसी समय उसने अपने चार दृश्यकाव्योंको छपाया। उनके छपकर प्रकाशित होते ही उसकी चारो ओरसे प्रशंसा होने लगी। रोममें पलफिरीके दिन बड़े आनन्दमें बीते। वह बाथस आफ डाईक्लशियनके समीप एक भवनमें रहता था और सवेरे उठ कर लिखा पढ़ा करता था। दिन चढ़ आनेपर वह घोड़े पर सवार हो दूर दूर तक घूमने फिरने जाया करता था और सायङ्कालका समय उस सुन्दरीके सहवासमें व्यतीत करता जिसकी प्रीति उसे फ्लारेंससे रोममें खींच लायी थी।

धीरे धीरे पलफिरी और लुइसाका परस्पर मिलन एवम् सम्भाषण, उन दोनोंकी अपकीर्त्तिका कारण हुआ। लोग इस विषयको ले कर मनमानी टीका टिप्पणी करने लगे। अन्तमें लुइसाके जेठ कारडिनल आव यार्कने पोपके न्यायालयका ध्यान इस ओर आकर्षित किया। भीषण भविष्यकी विभीषिकाकी आशङ्कासे पलफिरी चिन्तित हुआ और अन्य उपाय न देख, स० १८४० में वह रोमको छोड़ कर पर्य्यटनके लिये चल दिया। उसकी सारी मनोभिलाषाएँ मनकी मनहीमें रह गयीं और उसे अपना जीवन भारसा प्रतीत होने लगा।

मन बहलानेके लिये पलफिरी जगह जगह घूमता फिरता

और लुइसाके साथ पत्रव्यवहार बराबर किया करता था। उसने कई एक गाथाएं भी लिखनी चाहीं और लिखीं भी किन्तु मनकी व्यग्रताके कारण अब थोड़े श्रमका कार्य्य भी उसे महान परिश्रम-जनक प्रतीत होने लगा। फ्रांसमें घूम फिर कर वह इङ्गलेण्ड पहुँचा। इस बारकी यात्रामें बाल्यावस्थाकी तरह उसके मनकी चञ्चलता नगरोंके सुन्दर सुन्दर दृश्य देखनेमें बाधक नहीं होती थी। जिन अनेक मनोरञ्जक दृश्योंको उसने बाल्यावस्थामें व्यर्थ समझ छोड़ दिया था, इस बार उन्हींको देखनेसे उसके मनको बड़ा सन्तोष प्राप्त हुआ। लन्दनमें पहुँच कर वह फिर घोड़ोंके व्यसनमें पड़ गया और वहाँ एक दो नहीं चौदह घोड़े मोल ले लिये और थोड़ेही दिनों बाद वह उन घोड़ों समेत ट्यूरिन लौट गया। और अपनी माताके दर्शन किये जिससे वह बहुत दिनोंसे नहीं मिला था। मातासे बिदा हो "वह पियासिञ्जा" गया और उसने वहीं यह सुना कि काउटेस लुइसा पराधीनतासे छुटकारा पा गयी और स्वास्थ्य ठीक न रहनेके कारण रोम छोड़ 'बेडिन' चली गयी है। प्रथमतो एलफिरीने चाहा कि मैं लुइसाके पास न जाऊ, किन्तु उससे न रहा गया और स० १८४१ में प्रास्थानिक पन्द्रह दिवसकी यात्रा पूरी कर लुइसासे जा मिला। उससे मिलते ही उसका मस्तिष्क उर्वरा भूमिकी तरह नये नये विचार और भावोंसे परिपूर्ण पद्यमयी रचनाएँ उत्पन्न करने लगा।

इस बार उसने तीन दृश्य काव्योंकी रचना की। इन रचनाओंको तत्कालीन समालोचकोंने बहुत सराहा।

इस घटनाके दो मास बाद लुइसाको लौट कर इटली आना पड़ा। इस प्रेयसीके विरहने एलफिरीके शरीरमें

मनोवेदना उत्पन्न कर दी। साथ ही उसके मित्र 'मेगिङ्लिनीके' मृत्युसंवादने उसको और भी अधिक मर्माहत कर दिया। वह सेना नगरमें गया किन्तु मित्रके न रहनेके कारण वह नगर उसे सूनसान ज्ञात पड़ने लगा। वहाँ उससे न रहा गया और वह पिसाकी ओर चल दिया। जहाँ जाड़ों भर रहा। पिसामें उसने अपनी रचनाओंको दुहराया और उन्हें फिरसे लिखकर छापनेके लिए तैयार किया। शीतकाल समाप्त होते ही वह दो मास लुइसाके साथ 'कोलमर'में रहा और वहाँसे फिर दोनों पृथक् हुए। इस वार उसने अविराम परिश्रम करनेका सङ्कल्प किया और जबतक वह नितान्त श्रान्त न हो गया, निरन्तर परिश्रम करता रहा। इसी समय लुइसाने इटलीको सदाके लिये परित्याग करना स्थिर किया और स० १८४३ में लुइसाको साथ लिये हुए पैरिसमें पहुँचा। पैरिसमें दोनों बड़े आनन्दसे दिन व्यतीत करने लगे। पलफिरीने अपनी रचनाओंका पुनःसंस्कार किया और उन्हें छपानेके लिये भेजा।

स० १८४५के प्रारम्भमें काउण्टेस और पलफिरीके सुखमय पथका कण्टकस्वरूप काउण्ट आव एलबनी रोममें परलोकवासी हुआ। कुछ लोगोंका कथन है कि पलफिरीने लुइसाके साथ पीछेसे विवाह भी कर लिया था, किन्तु पलफिरीके लिखे हुए निज जीवनवृत्तान्तमें इस घटनाका सूत्र उपलब्ध नहीं है। यदि विवाह हुआ होतो आश्चर्य नहीं, किन्तु हुआ होगा तो गुप्त रूपहीसे।

तीन वर्षतक पलफिरी और काउण्टेसने शान्तिमय जीवन व्यतीत किया और इस बीचमें पलफिरीने अपनी रचनाओंके दो संस्करण छपवा कर प्रकाशित किये। साथ ही उनकी

बिक्रीका भी स्वयम् प्रबन्ध किया। यहींपर उसने सं० १८४७ तकका अपना जीवनवृत्तान्त उत्कृष्ट और भावपूर्ण भाषामें लिपिबद्ध किया। इतनेमें पैरिसमें राज्यक्रान्तिका उपक्रम आरम्भ हुआ।

पैरिसके भोगविलासरूपी शान्तिमय आकाशमें, घनघोर कृष्णवर्ण घटाके समूहको देखकर भी एलफिरी अपने ग्रन्थोंके प्रकाशनमें संलग्न रहा। पैरिसकी वे घटनाएं, एलफिरीके मनमें क्रमशः आश्चर्य, भय, और घृणा उत्पन्न करने लगीं जो वहां राजसत्ताक राज्यका मूलोच्छेद कर प्रजासत्ताक राज्यको प्रतिष्ठित करनेके सम्बन्धमें हुई थीं। एलफिरीने इस इतिहासप्रसिद्ध राज्यक्रान्तिको लेकर अपनी जीवनीमें जो उद्गार प्रकट किया है वह परिमित शब्दोंमें होने पर भी पैरिस निवासियोंकी तत्कालीन स्थितिका जीता जागता एवं प्रभावोत्पादक चित्र है। एलफिरीने लिखा है—'पवित्र एवं पूज्य स्वाधीनताके प्रति पण्डित और मान्योंको विश्वासघात करते देख मेरा हृदय विदीर्ण हुआ जाता है।" इसके आगे एलफिरीने लिखा है—"मुझसे यहांके जनसाधारणकी अज्ञानता, मूर्खता, उनका पापमय जीवन जिसे मूर्खतावश यहाँके स्वतन्त्राभिमानी शिष्ट 'राजनैतिक स्वतन्त्रता" कह रहे हैं तथा जिनकी नीच धनलोगों की विलास-प्रियता और उनके औद्धत्य पर टिकी हुई है देखा नहीं जाता। मुझसे यहाँके सैन्यबलका दुरुपयोग भी देखा नहीं जाता और इन बातोंको देख मैं तो यह चाहता हूं कि मैं उस देशमें एक क्षण भी न रहूँ जो विक्षिप्त अथवा असाध्य मूर्खताके रोगसे आक्रान्त रोगियोंका आश्रय-स्थल बना हुआ है।"

ये सब बातें देख सुनकर भी एलफिरी पैरिस छोड़ नहीं

सकता था। इसके मुख्य कारण दो थे। प्रथम तो पलफिरी के ग्रन्थ वहीं छप रहे थे, दूसरे काउण्टेसकी दो तिहाई आय का द्वार फ्रॉसका राजकोप था। जब स्वयं उपद्रवमें पड़नेका समय उपस्थित हुआ, तब पलफिरीने वहाँ रहना मूर्खता समझ १८वीं अगस्त स० १८४६ को बड़ी कठिनाईसे राजाज्ञापत्र प्राप्त किया और लुइसाको साथ ले वह नगर की अन्तिम सीमाकी ओर बढ़ा। रास्तेमें उसने बड़े बड़े अद्भुत दृश्य देखे। राजाज्ञा पत्रको देख 'नेशनल गार्ड' ने तो पलफिरीको जानेका मार्ग दे दिया, किन्तु कुछ मूर्ख शराबियों के एक गिरोहने आकर उसका मार्ग छेक लिया और वे लोग पलफिरीकी गाड़ीमें भरे हुए मालटालको लूटनेका परामर्श करने लगे। किसी ने तो गाड़ीको फूँक देनेकी भी सम्मति दी। इसपर नेशनल गार्डोंने उन्हें फटकारा भी किन्तु वे लोग कहने लगे कि इसी प्रकार सब लोग नगरका सारा धन लाद लादकर ले जायँगे तो यहाँ रहेगा क्या। पल फिरीसे न रहा गया वह झमसे अपनी गाड़ीके नीचे कूदा और जो मनुष्य राजाज्ञापत्र लिये हुए था उससे उसे छीन लिया। फिर उसे अपने हाथमें ले और बड़े जोरसे चिल्लाकर कहा—"देखो! सुनो! पलफिरी मेरा नाम है, मैं इटालियन हूँ, फरासीसी नहीं हूँ, मैं लम्बा, पतला और पीले रङ्ग का हूँ। मेरे बाल लाल रङ्गके हैं। मैं पलफिरी ही हूँ। मुझे तुम लोग भलीभाँति पहिचान लो। मैंने नियम पूर्वक राजाज्ञापत्र प्राप्त कर लिया है और मैं अब जाता हूँ और ईश्वरकी शपथ खाकर कहता हूँ कि मैं रुकूँगा नहीं।"

रोपसे भरी पलफिरीके मुखसे उपर्युक्त बातें सुन भद्यपों का वह जनसमुदाय कुछ क्षणोंके लिये स्तम्भित हो गया और

जबतक वे लोग सम्हले ही सम्हले तबतक एलफिरीने गाड़ी बढ़ा दी और देखते देखते वह नगरकी, सीमाको पारकर निकल गया। एलफिरीके पैरिस छोड़नेके दो ही दिन बाद पैरिसके राजकर्मचारियोंने जिन्होंने एलफिरीको राजपास पोर्ट दिया था, उसके घोड़े, पुस्तकें एव अन्य सामान जो वह छोड़ गया था अपहृत कर लिया और उसका नाम भागजानेवालोंकी सूचीमें लिखकर प्रकाशित कर दिया। वे दोनों विदेशी थे, पैरिसके निवासी न थे, वे जब चाहते जा सकते थे—इस बात पर वहाँ किसीने भी ध्यान न दिया। अच्छा हुआ दोनों वहाँसे चल दिये। लुइसाके लिये पूरा भय था और यदि लुइसाके प्राण जाते तो एलफिरीका बचना भी कठिन था।

पैरिससे भागकर एलफिरी और लुइसा फ्लारेंसमें पहुँचे और वहीं रहने लगे। फ्रांसकी घटनाको लेकर इस पर एलफिरीने लिखा तो, पर श्रृङ्खलाबद्ध नहीं। इसके अनन्तर उसने अन्यदेशकी भाषाओंको सीखना आरम्भ किया। उसकी अवस्था ४६ वर्षकी हो गयी थी तो भी स० १८५२ में उसने ग्रीक भाषाका पढना आरम्भ किया और थोड़े ही दिनोंके परिश्रमसे वह उस भाषाके सुप्रसिद्ध लेखकोंकी रचनाओंको भली भाँति समझने लगा। साथही उन ग्रन्थोंमेंसे एक दो ग्रन्थोंमें वर्णित घटनाएं उसे ऐसी मनोरञ्जक प्रतीत हुईं कि उनके आधारपर अपनी मातृभाषामें दृश्य-काव्य रच डाले। अब इस अवस्थामें पहुँच कर उसकी आकृति और मुखके भावोंमें भी बहुत कुछ अन्तर पड़ गया था। उसका शरीर लम्बा था और उसके मुखपर विद्वत्ताकी झलक दिखलाई पड़ती थी। उसकी चितवन कहती थी कि उसका जन्म स्वतन्त्ररीत्या जीवन बितानेके अर्थ हुआ है न कि दासत्व

नाटकोंके अभिनयोंको देखते देखते तत्कालीन इटलीवालोंके शरीरमें नवजीवन और नवीन उत्साहका सञ्चार हुआ। जब एक बार किसीके मनमें किसी वस्तुका उत्साह अथवा बीज पड़ जाता है तब उसके अनुकूल विचार स्वयं उत्पन्न होने लगते हैं। इसका प्रमाण यह है कि एलफिरीके रचे नाटकोंको देखते देखते इटलीवालोंकी रुचि इतनी बदली कि उसकी मृत्युके बाद, उसके ग्रन्थोंके अठारह संस्करण थोड़े ही दिनोंके भीतर बिकगये। उसके नाटकोंका अभिनय दिखाने के लिये दो पक्की अभिनयशालाएं उस देशमें बनवाई गयीं। उसकी लेखनीमें बडी अद्भुत शक्ति थी पेडमाउण्टसे लेकर सिसलीतक बसनेवाले इटलीवालोंके मनमें बडा भयानक आन्दोलन आरम्भ हो गया था। इटलीवालोंकी वैसी मनोवृत्ति इसके पूर्व कई शताब्दियोंसे नहीं हुई थी, सारांश यह है कि एलफिरीने अपनी लेखनीके प्रभावसे इटलीमें नये युगका प्रादुर्भाव कर दिया था।

एल्फिरीका आद्यन्त जीवनवृत्त पढ़कर हमारे पाठक उसपर असच्चरित्र होनेका दोषारोपण कर सकते हैं। निस्सन्देह एल्फिरी तीव्र और प्रमत्त स्वभावका था और उसमें आत्मसंयमका सर्वथा अभाव था, तथापि जब हम इस बातका विचार करते हैं कि एलफिरीका जन्म किस समय, किस दशामें और कैसे लोगोंके बीचमें हुआ था, एवं उसने आरम्भमें कैसे लोगोंसे कितनी शिक्षा पायी थी, तब उसके सारे दोष हमें क्षम्य प्रतीत होने लगते हैं बल्कि जिस स्थितिमें एलफिरीका जन्म हुआ था उस स्थितिमें रहकर उसका स्वदेशोद्धारके लिये लेखनीसञ्चालन करना ही हमारे निकट परमाश्चर्यका विषय है।

पलफिरीकी रचना उसके स्वभावकी तरह शान्त, गहन और गम्भीर दार्शनिक विचारोंसे शून्य है। तिसपर भी उसकी रचनाओंकी समालोचना करते हुए गैसीपी आरनाडने अपने वक्तव्यको शेष करते हुए लिखा है —

"कवि पलफिरीका यह यश बना रहेगा कि इसने अपने देशको कुत्सित पीनकसे सचेत किया और अपने देश-वासियोंके हृदयमें दासत्वके प्रति घृणा और स्वाधीनताकी सुमधुर महत्त्वपूर्ण महिमा अङ्कित कर दी। अभीतक हम लोग भेड़की तरह मिमिया रहे थे किन्तु पलफिरीने सिंह गर्जना की।"

इसमें सन्देह नहीं कि पलफिरीने अपने देशवासियोंको स्मरण करा दिया कि वे भी मनुष्य हैं और मनुष्योचित स्वतन्त्रताके अधिकारी हैं। नतो वे विदेशियोंके दास बनकर जनमे और यदि वे हाथ पैर चलावें तो न सदाके लिये वे दास बने रह सकते हैं।



वाचस्पति मत्जीनी

जन्म चैत्र वदी ३ सं० १८४२] [मरण सं० १९३०

कड़ी देखरेख और कठोर नियमोंके कारण तथा शुष्क पढ़ाईकी प्रणालीसे मन्ज़ोनीका चित्त वहाँसे ऊब उठा और वह अहर्निश उदासीन रहने लगा। पढ़ाईकी ओरसे उसकी रुचि हटने लगी। जैसे अन्य प्रसिद्ध लोगोंकी बाल्यावस्थाकी अनेक आख्यायिकाएँ सुनी जाती हैं, वैसे ही मन्ज़ोनीकी बाल्यावस्थाकी आख्यायिकाएँ मिलनमें अनेक प्रचलित हैं। उनसे यही सिद्ध होता है कि मनज़ोनी विद्यालयके अन्य विद्यार्थियोंके बराबर पढ़नेमें असमर्थ था और उसकी गणना उस समय वज्रमूर्खोंमें थी। सारांश यह कि विद्यार्थीअवस्थामें मन्ज़ोनीका कोई कार्य ऐसा नहीं हुआ जो उल्लेखयोग्य हो। पीछेसे मन्ज़ोनी जैसा निकला, छात्रावस्थाके क्रमको देख वैसी आशा उससे किसीको न थी। आगे चलकर वह बड़ा विचारसिक निकला। वह विनसेजोमोएटीसे मिला। विनसेजोमोएटी एक प्रसिद्ध कवि था और इटलीमें उसने अच्छा नाम पाया था। वह वोरगीज़ और ब्रेसचीके कारडिनेलोंका कृपाभाजन था। मोएटी कवि और नाटककार था। उसकी रचनाएँ उस देशके राजनैतिक दलके पक्षको समर्थन करके उन्हें बड़ी सहायता देती थीं। इसीसे वह दूर दूर तक प्रसिद्ध होगया था और उसके पद्योंकी प्रशंसा बैरन और नेपोलियन बोनापार्ट जैसे कठोर समालोचक भी किया करते थे। मोएटी एक बार कालेज देखने गया था वहीं उससे मन्ज़ोनीसे जान पहचान हुई और उसी दिनसे मोएटीका ध्यान मन्ज़ोनीकी ओर आकर्षित हुआ। जो लाभ स्काटिश साहित्यको बालक वालटर स्कॉट और राबर्ट बर्न्सके परस्पर मिलनसे हुआ था वही लाभ इटलीके साहित्यको मोएटी और मन्ज़ोनीके सङ्गमसे हुआ।

इतना ही नहीं किन्तु मनज़ोनीका जबसे मोण्टीसे मेलजोल बढा, तभीसे उसका मन पढने लिखनेमें लगने लगा ।

संवत् १८६१ में जब मनज़ोनी बीस वर्षका था तब उसके पिताका शरीरान्त हुआ । मनज़ोनीको कालेज छोडना पडा और वह अपनी माताके पास गया । कुछ दिनों वह माताके पास रहा । अनन्तर वह पेवियाके विश्व विद्यालयमें भेजा गया । वहाँ वह बहुत दिन नहीं रह पाया । कारण यह था कि उसकी विधवा माताका स्वास्थ्य बिगडने लगा । इसपर डाक्टरोंने जलवायुपरिवर्तनार्थ फ्रांस जानेका परामर्श दिया । स्नेहवती माताको यह स्वीकार न था कि वह अपने पुत्रको इटलीमें छोड स्वयं इतनी दूर फ्रांसमें रहे । अत. विश्वविद्यालयको परित्याग कर मनज़ोनी माताके साथ आट्यूल गया । फ्रांसमें यह स्थान जलवायुके विचारसे उत्तम समझा जाता था और वहां अनेक विद्वान् एवं चतुर पुरुष एकत्र रहते थे । वहाँ और पैरिसमें मनज़ोनी उस समयके प्रसिद्ध विद्वानोंसे मिला । उस देशके वोलनी, केवेनिस, डीन्ट्रेसी, फोरिल आदि प्रसिद्ध विद्वान् मनज़ोनीसे मिलकर बहुत प्रसन्न इसलिये हुए कि एक तो वह बेकेरियाका दौहित्र था, दूसरे उसके विचार उनके विचारोंसे मिलते थे । ये विद्वान् लोग विचारसागर समझे जाते थे और बात भी यही थी कि इन लोगोंने अपने विचार-बलसे अनेक शताब्दियोंसे प्रचलित लोकमत एवं आचार विचारोंकी जडको हिला डाला था । विद्याध्ययन कालमें मनज़ोनी उदार कैथोलिक सम्प्रदायका अनुयायी था और बडे बडे तीव्र समालोचक उसे वोलटेरका अनुयायी समझते थे । किन्तु पैरिस और आट्यूलमें यह अनेक ऐसे लोगोंसे मिला

जिनके विचार प्रायः नास्तिकों जैसे थे। इसका फल यह हुआ कि उसका अपने घरके परम्परागत धर्म से विश्वास उठ गया और उसने कैविनिस और कॉण्टरसेट जैसे कट्टर ईसाइयोंका साथ त्याग दिया। पर उसके भाग्यमें नास्तिक होना नहीं लिखा था अतः एक ऐसी घटना हुई कि वह फिर अपने पैतृक धर्मका पक्का अनुरागी बन गया।

उसका विवाह जेनिवाके एक धनीकी लडकीके साथ सवत् १८६६ में हुआ। उस लडकीका नाम लुइसा हैनरेट ब्लाण्डेल था। वह पहले प्रोटेस्टेण्ट धर्मानुयायिनी थी किन्तु कुछ दिनोंसे उसने रोमके चर्चके सम्प्रदायकी दीक्षा ग्रहण कर ली थी। लुइसाका अपने सम्प्रदायपर पूर्ण अनुराग था और वह उसके सिद्धान्तोंपर पूर्ण विश्वास रखती थी। व्याह होनेके कुछ ही दिनों बाद उसने अपने पतिको अपने धार्मिक विचारोंका अनुयायी बना लिया और तबसे मन्ज़ोनी जीवन भर उन्हीं सिद्धान्तोंको मानता रहा। लुइसा बडी रूपवती थी और वह अपने पतिकी पूर्णरीत्या प्रीतिपात्र थी। अब मन्ज़ोनीने पद्य रचनाकी ओर मन लगाया और इटलीके तत्कालीन तीन प्रसिद्ध कवि अर्थात् पलफिरी, मॉण्टी और यूगोफोसकोलोकी रचनाओंको आदर्श मान वह पद्य रचनामें प्रवृत्त हुआ।

विवाहके समय मन्ज़ोनीको एक गॉव और बहुतसा धन भी मिला था। मन्ज़ोनी उसी ग्राममें रह कर अपनी त्रुटियोंकी पूर्त्ति करने लगा। सबसे प्रथम उसने ईश्वर स्तुति सम्बन्धी कई एक भजन बनाये। इसका कारण, उसकी पत्नीके धार्मिक विचारोंका उसके मनपर प्रभाव था। वह भजन स० १८७१ में प्रकाशित किये गये और इन भजनोंमें गम्भीर धार्मिक विचार

और अनूठे भावोंको देख, लोगोंने उनकी बड़ी प्रशंसा की। यह भजन उस समय निकले थे, जिस समय इटली में धर्मभावका दिनोंदिन ह्रास होता जा रहा था। अतः उस समय उनका प्रकाशित होना और उनका लोगों पर प्रभाव पड़ना देख, इटलीके पादरियोंने अपना भाग्य सराहा और उन्हें मनज़ोनीसे अपने धर्मकी सहायताकी बड़ी आशा बँधी। पर उन पादरियोंके दुर्भाग्यवश मनज़ोनीको यह बात अच्छी नहीं लगती थी कि रोमके पोप सांसारिक विषयोंमें हस्तक्षेप करें। उसने "एल इटेली डेस इटेलियन्स" की रचयिता मॅडम कालेटसे जो बातें कही थीं वह उल्लेखयोग्य हैं। मनज़ोनीने कहा था— 'मैं पोपको बड़ी श्रद्धाके साथ प्रणाम करता हूँ क्योंकि ईसाई धर्ममें उनसे बढ़ कर दूसरा मान्य पुरुष नहीं है किन्तु मेरी समझमें यह बात नहीं आती कि लौकिक और पारमार्थिक विषयोंकी सत्ता क्यों कर एक मान ली गयी है। रोमनिवासियोंकी लौकिक विषयसम्बन्धिनी सत्ता चाहना न्यायसङ्गत है। प्रत्येक शासक और शासित जातियोंके लिये समय आता है जब उनको केवल अपनी अपनी सुविधाओंकी ओर ही नहीं किन्तु अपने अपने न्यायसङ्गत अधिकारोंकी ओर ध्यान देना पड़ता है। हम लोगोंको निर्भीक होकर पोपसे शासनसम्बन्धी अधिकार ले लेने चाहियें, साथ ही ईसाई धर्मके सिद्धान्तोंको ज्योंका त्यों अक्षुण्ण बनाये रखनेका पूरा विचार रखना चाहिये। लौकिक और पारलौकिक विषयोंमें उतनाही अन्तर है जितना नाशवान् शरीर और नित्य अविनाशी आत्मामें। पादरियोंसे लौकिक विषयोंकी सत्ता ले लेनेको जो लोग पाप समझते हैं वह एक सच्चे ईसाईके निकट स्वयं पाखण्डी और नास्तिक हैं।"

इस विषयमें मनज़ोनीके विचार आजन्म एकसे रहे। यही नहीं जिस समय इटलीमें मनज़ोनीके बाद पोपके हाथसे राजसत्ता लेना परमावश्यक हो गया था उस समय राष्ट्रीय दल वालोंका यही सिद्धान्त था जो मनज़ोनीके शब्दोंमें हम ऊपर उद्धृत कर चुके हैं।

उसकी दूसरी रचनाने उसके पदको उसके सहयोगियों की अपेक्षा एक हाथ और ऊंचा कर दिया और वह कल्पित आख्यायिकाएं लिखने वालोंका नेता समझा जाने लगा। संवत् १८७४ में उसने सबसे प्रथम एक दु खान्त नाटक लिखा जो अगले वर्ष "कॉनटी डी करमेगनोला" के नामसे प्रकाशित किया गया। उसने इस रचनामें मध्यमकालीन एक दस्युका चरित्र अङ्कित किया था। मनज़ोनीने अपनी रचनामें तत्कालीन नाटकरचनाकी शैलीसे विभिन्न कुछ हेर फेर भी किया था। उसका सिद्धान्त था कि नाटककारको इस विषयका स्वातन्त्र्य होना चाहिये कि वह अपनी इच्छानुसार अपने नाटकका विषय स्थान, समय और वर्णनकी शैली स्वयं निर्वाचित कर ले। इन विषयोंमें उसे पराधीन न होना चाहिये। इटलीमें उसकी स्वतन्त्र रचनाको लेकर नाटककारोंमें घोर वादानुवाद हुआ। प्राचीन विचारके लोग उसके विपक्षमें थे और नवयुवकमण्डली मनज़ोनीको अपना नेता मानकर विपक्षियोंके आक्षेपोंका समाधान करती थी।

संवत् १८७७ में नेपोलियनकी सेण्टहेलना द्वीपमें मृत्यु हुई। उसके मरनेसे योरुप भरपर एक विलक्षण प्रभाव पड़ा। मनज़ोनीने उसकी मृत्युपर पद्य रचे। यह रचना उसकी इतनी मनोहारिणी भावपूर्ण और हृदयग्राहिणी थी कि उसके प्रकाशित होते ही गैटेने जरमन भाषामें और

ग्लेडस्टन एवं अर्ल आव डारबीने अङ्गरेजी भाषामें उसका अनुवाद कर डाला। मनज़ोनीकी इससे योरुपके प्रसिद्ध कवियोंमें गणना होने लगी।

संवत् १८७८ में मनज़ोनीने दूसरा दु:खान्त नाटक "एडेलची" नामक बनाया। जिसमें "शामचार्ल्स" और 'कराल महान्' युद्धका दृश्य दिखलाया गया था यह भी उसके अपने प्रथम नाटक "कारमेगनोला" के ढङ्गपर लिखा था। दोनों नाटक खेले गये। कारमेगनोला संवत् १८८४ में फ्लोरेंसमें और "एडेलची" ट्यूरिनमें, पर खेलमें सफलता प्राप्त न हुई।

यद्यपि रङ्गालयमें मनज़ोनीके नाटकोंका आदर न हुआ, तथापि उसके दोनों नाटकोंका पढ़नेवालोंमें बहुत प्रचार बढ गया और यद्यपि उन दोनोंमें बहुत प्राचीन कालकी घटनाएँ लिखी गयी थीं तथापि उनमें देशभक्तिका सुमधुर स्रोत प्रवाहित होकर इटलीवासियोंके हृदयको एक प्रकारके नवीन उत्साहसे परिपूर्ण करने लगा था।

यह होने पर भी मनज़ोनीके सबसे बढ़कर महत्त्वपूर्ण ग्रन्थका प्रकाशित होना अभी शेष था। वह ग्रन्थ एक उपन्यास था जिसे पढ़कर इटलीवालोंके मनमें जातीयताका भाव उत्पन्न हुआ और जिससे आधुनिक इटली साम्राज्य बना। इटलीमें कवि तो अनेक हो गये किन्तु बोकेसियोंके पीछे कोई नामी उपन्यासलेखक वहाँ नहीं जनमा था। भाग्यवश मनज़ोनी की विद्याका केन्द्र केवल इटालियन साहित्यके अन्तर्गत ही न था, किन्तु उसने अन्य भाषाओंके प्रसिद्ध लेखकोंकी जैसे गैटे, शेक्सपियर, वॉलटर, स्कॉट आदिकी रचनाओंको पढ़ा था। उनसे उसने बहुतसे भाव लिये, उसकी उपन्यास सम्बन्धी योग्यताका स्रोत अङ्गरेजी भाषाके वेवरलीके उप-

न्यास थे। मन्ज़ोनी, बेवरली उपन्यासलेखककी बडी सरा हना किया करता था।

मन्ज़ोनीका "आइ प्रामिसी स्पोसी" नामक उपन्यास सवत् १८८१ में प्रकाशित किया गया और इसका बडा अद्भुत प्रभाव पडा। उसे देख स्कॉटने कहा था कि अभीतक इतना बडा ऐतिहासिक उपन्यास किसीने नहीं लिखा। गैटेने उसे पढ़कर कहा था कि इसे पढकर मुझे वैसा ही आनन्द मिला जैसा अच्छे पके हुए स्वादिष्ट फलके खानेसे मिलता है। इटॅलियन साहित्यमें यही प्रथम और सबसे बडा उपन्यास-था जिसकी चर्चा योरुप भरमें फैल गयी थी। इस उपन्यास में मिलनमें स्पेनवालोंकी १८ वीं शताब्दीकी अमलदारीका दृश्य दिखलाया गया है। उस कालकी कराल विभीपिका, युद्धके रोमाञ्चित करनेवाले दृश्य और प्लेगके करुणोत्पादक वर्णन पढते पढते पढनेवालेके मनकी दशा क्षण क्षणमें परि-वर्तित होने लगती है। इसके गुणोंकी प्रशसा करनेसे कहीं अतिशयोक्तिका दोष हमारे ऊपर पाठक न मढें। सच बात तो यह है कि उपन्यासकी सुन्दर वर्णनशैली, इतिहासकी ठीक ठीक घटनाओंका यथाक्रम सम्मिश्रण, पात्रोंका स्वाभाविक चरित्राङ्कन एव दार्शनिक तत्त्वोंकी सरल सीधी भाषामें अकाट्य व्याख्या, एकसे एक बढ चढ़ कर है। पुस्तकमें आदि से अन्ततक निस्सहाय दीनोंके प्रति सहानुभूतिका स्रोत प्रवाहित होता है। जो बातें स्कॉट ह्यूगो गैटे और मन्ज़ोनीने काल्पनिक आख्यायिकाओंमें दर्शायी थीं उनको जब हम प्रत्यक्ष होते देख रहे हैं तब यह समझमें आना कठिन है कि इन महात्माओंने मानवजातिके लिये बीसवीं शताब्दीके अन्तिम चरणमें कितना भारी काम किया था। इन लोगोंने मानव-

प्रायः सभी अधीश्वरोंके प्रतिनिधिगण अपने अभिनन्दनपत्र लेकर लोम्बार्डे परिवारके मुख्य स्थानमें उपस्थित हुए थे। वाल्टर स्काटको छोड अन्य किसी ग्रन्थकारकी मृत्युपर इतना सर्वव्यापी शोक नहीं मनाया गया था। मनज़ोनीके जो समालोचक थे, वे भी उसको आदरकी दृष्टिसे देखते थे। नवीन राष्ट्रीय साहित्यका मनज़ोनी नेता समझा जाता था।

यद्यपि मनज़ोनीके ग्रन्थोंकी सङ्ख्या इनी गिनी थी तथापि उसके ग्रन्थोंके प्रत्येक शब्दसे उसकी विद्वत्ता, विचार गाम्भीर्य, भावोंका अनूठापन और देशकी सच्ची भक्ति टपकती थी। मनज़ोनी धार्मिक और राजनैतिक दृष्टिसे एक आदर्श पुरुष था। जिसने अपने समयके लोगोंको सिखलाया था कि कोई भी जाति क्यों न हो उसको सुख शान्ति और स्वतन्त्रता पाने की आशा उसी दशामें करनी उचित है जब प्रजा धर्म और नियमोंको सम्मानकी दृष्टिसे देखे।

मनज़ोनी कैथोलिक सम्प्रदायका बड़ा पक्का अनुयायी था। उसके एक मित्रने उसकी चर्चा चलनेपर कहा, मनज़ोनी की दो विषयोंमें पूर्ण निष्ठा थी। एक तो कैथिलिक सम्प्रदाय की भावी उन्नतिमें, दूसरे इटलीकी भावी उन्नतिमें। मनज़ोनी धर्म और देशको दो भिन्न पदार्थ मानता था। मेनज़ोनी जिस प्रकार रोमको पोपका मुख्य स्थान बनाना चाहता था वैसेही रोमको एक राजाकी राजधानी बनानेका पक्षपाती था। मनज़ोनीने विद्वान् होकर भी वही काम किया जो एक राजनैतिक वीर या जातीय राजा जातीय स्वतन्त्रताके लिये कर सकता है।

तत्त्वज्ञानी जियोवर्टी

जियोवर्टीने अपने देशवासियोंको प्राइमेटो नामक एक अद्वितीय पुस्तक रचकर भेंट की थी। इस पुस्तकमें उसने इटली साम्राज्यकी बाल्यावस्था, अन्य यूरोपीय साम्राज्योंके समक्ष प्रतिपादित की थी और पाण्डित्यपूर्ण युक्तियोंसे इटलीके पुनरुद्धारका क्रम निर्दिष्ट किया था। सवोनारोलाके समान उसने भी तत्कालीन प्रचलित कुप्रथाओं एव तज्जनित पापोंकी पोल खोल कर उनकी ओर अपने देश वासियोंका ध्यान आकर्षित किया था और ईसाई धर्मानु सार मुक्ति पानेके उपायोंको बतलाया था। जियोवर्टीके मतानुसार पोप ही उस देशकी प्राचीन प्रथानुसार राज्य पालन एव धर्मशासन करनेके उपयुक्त पात्र थे और अपने इस सिद्धान्तको प्रचारित करनेके लिये वह तदनुसार उपदेश भी दिया करता था। इसी सिद्धान्तके कारण लोगों-का ध्यान उसकी ओर आकर्षित होगया और रोमसे लेकर पेडमाएट तक उसकी ख्याति फैल गयी थी। लोग समझने लगे थे कि जियोवर्टीके उपदेशानुसार चलनेसे इटलीकी सारी अशान्ति दूर हो कर फिर शान्तिमय राज्य स्थापित हो जायगा।

गत कई एक वर्षोंसे इटलीके युवकोंके मनमें राष्ट्रीयताका भाव जागृत हो गया था। उनकी अभिलाषा थी कि उनके देशका विस्तार बढ़े और वह स्वतन्त्र हो किन्तु उन उद्देश्यों-की सिद्धिके लिये जो उपाय उन लोगोंने कार्यरूपमें परिणत किये उनका परिणाम सन्तोषजनक न हुआ। प्रत्युत

उनके कारण नैराश्य और विराग उत्पन्न हुआ। अनुभवसे सिद्ध हुआ कि कुमन्त्रणा, कुचक्र और झगडोंसे आशानुरूप लाभ नहीं होता, प्रत्युत इन कारणोंसे शासक लोग प्रचण्डरूप धारण कर और भी अधिक कडाईके साथ बर्त्ताव करने लगते हैं, इससे उन्नतिमें बाधा पडती है, सर्वसाधारणको आर्थिक हानियां सहनी पडती हैं, अनेक सद्गृहस्थोंके परिवारोंको दुर्दशाग्रस्त होना पडता है। इन सब उपस्थित कठनाइयोंको देख इस बातकी उस समय आवश्यकता थी कि इटलीवासी उन उग्र उपायोंको छोड कर, अपने देशके पुनरुद्धारके लिये किसी प्रशान्त उपायका अवलम्बन करें जिससे आशानुरूप सफलता प्राप्त हो और उन्हें हताश न होना पडे। जब इस प्रकारके विचार इटली देशका उद्धार चाहनेवालोंके हृदयोंमें जागृत होरहे थे उसी समय उनके विचारोंके अनुकूल जियोबर्टीकी पुस्तक निकली। जियोबर्टीका कथन था कि इसमें सन्देह नहीं कि इटली-की स्थिति शोच्य है और अन्य साम्राज्योंके सामने इटलीका कौडी बराबर भी महत्व नहीं, साथ ही इटलीमें अनेक सामाजिक एव राजनैतिक सुधारोंकी बड़ी आवश्यकता है, किन्तु इटलीकी दशा सुधारनेके लिये ऐसा कोई कार्य न करना चाहिये जिससे देशमें अशान्ति फैले। उनकी समझमें विप्लव करना, राज्याधिकारियोंके साथ युद्धमें प्रवृत्त होना अथवा विदेशियोंका अनुकरण कर, उन्नतिके क्षेत्रमें अग्रसर होना अनावश्यक है जियोबर्टीका कथन था कि देशकी दशा सुधारनेके लिये तीन बातोंकी आवश्यकता है। अर्थात् आपसमें मेल बढ़े, लोग स्वावलम्बी हों और स्वतन्त्रतालाभ करें, परस्पर मेलका बढ़ना और स्वावलम्बी होना

तभी सम्भव है जब इटली देशकी छोटी मोटी सारी रियासतें मिलकर पोपको अपना नेता मानें और स्वतन्त्रता तब प्राप्त हो सकती है जब प्रत्येक रियासतमें अन्तरङ्ग संस्कार हो और प्रत्येक रियासतका अधीश्वर इन संस्कारोंका कर्त्ता हो। जियोबर्टीके मुख्य सिद्धान्त येही थे।

जियोबर्टीका जन्म ट्यूरिनमें २२ मीन संवत् १८५७ को हुआ था। वह अपने माबापका एकमात्र पुत्र था। उसके पिता मध्यम श्रेणीके गृहस्थ थे। जब वह छोटाहीसा था तब उसका भविष्य निश्चय करके धर्मयाजक बनानेके उद्देश्यसे, वह ट्यूरिनके पादरियोंको शिक्षा दीक्षाके लिये समर्पण कर दिया गया। जियोबर्टी मनोयोगसे अपने शिक्षकोंके पास विद्याध्ययन करने लगा और जो बात उसे सिखलायी जाती थी उसपर वह विचार करता था। इतना तो मनज़ोनीकी तरह वह भी मानता था कि देशकी दशा सन्तोषजनक नहीं है और उसको सुधारनेकी आवश्यकता भी है पर सुधारनेके उपायोंमें वह मनज़ोनीके साथ सहमत न था। जियोबर्टी व्युत्पन्न छात्र था और विद्यार्थिजीवन उसका बड़ा ही सन्तोषजनक था। धर्मयाजक बननेके लिये उसने मन लगाकर दर्शनोंका इतिहास पढ़ा और एक एक करके वह ईसाई सम्प्रदायके पूर्ववर्त्ती विद्वानोंके लेखों और सिद्धान्तोंको पढ़ा करता था। संवत् १८८१ में वह धर्मयाजक बनाया गया। इस युवक धर्मयाजकने, जो बाल्यावस्थाहीसे बड़ा विचारशील और गम्भीरप्रकृति था, अपना मन देशकी वास्तविक स्थितिका ज्ञानसम्पादन करनेकी ओर लगाया। साथ ही इसने तत्कालीन प्रचलित साहित्यको भी बड़े ध्यानसे पढ़ा और उन कोटियोंको भी उसने ध्यानपूर्वक विचारा जिनके

सहारे लोग देशकी दशा सुधारनेका प्रयत्न कर रहे थे। धर्म एवं राजनीतिसम्बन्धी वादविवादमें सम्मिलित हो उसने ट्यूरिनके बडे बडे नेताओंसे हेलमेल बढाया और अपने ज्ञान की इसप्रकार वृद्धि की। लोगोंके साथ खुल्लमखुल्ला वार्तालाप करनेसे लोग जान गये कि जियोबर्टी इटलीको विदेशी प्रभुओंकी अधीनतासे निकाल लेनेके प्रश्नकी मीमांसा करनेमें लगा हुआ है। धीरे धीरे लोगोंको मालूम हो गया कि जियोबर्टी स्वतन्त्र विचारसम्पन्न धर्मयाजक है। जियोबर्टीने यह एक काम बहुत बुद्धिमानीका किया कि उसने अपने साथी धर्मयाजकोंको शत्रु न बना कर उनके साथ सदा सद्भाव रखा।

पेडमाण्टके चार्ल्स एलबर्टके राज्यमें कन्सरवेटिव और शिक्षित लिबरलोंमें सदा वादानुवाद हुआ करता था। कनसरवेटिव दलके मुखिया पादरी लोग थे और इनमें भी अधिकतर जैसुट* थे। ये लोग वियाइनावालोंसे मिले थे। जियोबर्टीको यह बात अच्छी नहीं लगती थी। वह यद्यपि धर्मयाजकोंकी प्रधानताका पक्षपाती था, तथापि वह यह नहीं चाहता था कि उसकी जन्मभूमि जिस देशके अन्तर्गत है वह आस्ट्रियावालों द्वारा पददलित हो और वियाइनावाले उस देशके अधीश्वरके पदपर रहकर पेडमाण्टको सदा दास बनाये रहें। चार्ल्स एलबर्ट बड़ा गुणग्राही था। उसने जियोबर्टीके गुणोंपर मुग्ध होकर और अपनी राजसभाके सदस्योंके मना करनेपर भी राजगद्दीपर बैठते ही सवत् १८८८ में जियोबर्टीको रायल चेपलेन (राजपुरोहित) के पदपर नियुक्त किया।

---

* रोमन कैथोलिक चर्चके अन्तर्गत पादरियोंका सम्प्रदाय विशेष।

राज-सभामें प्रविष्ट होते ही जियोबर्टीका प्रभाव उत्तरोत्तर बढने लगा। वह निष्कपटहृदय और सत्य-प्रिय मनुष्य था। इसीसे उसके मित्रोंकी संख्या उत्तरोत्तर बढती जाती थी। वह धर्मसम्बन्धी एवं राजनैतिक विषयोंपर हृदयग्राही प्रबन्ध लिखता था, जिनको पढनेसे यह जान पडता था कि उसके हृदयमें असीम देशभक्तिका स्रोत प्रवाहित होरहा है। थोडेही दिनोंमें अनेक लोग उसके अनुयायी हो गये और वह एक जन समुदायका नेता बन गया। साथ ही साथ उसने चार्ल्स एलबर्टको भी अपने विचारोंका पक्षपाती बना लिया। चार्ल्सकी इच्छा थी कि इटली देशके अन्तर्गत जितने छोटे छोटे राज्य हैं, वे सब मिलकर पोपको अपना प्रधान स्वीकार कर लें। किन्तु विदेशी राजाओंके साथ युद्ध न हो इस बातको अन्य प्रदेशोंके प्रतिनिधि पादरियोंने स्वीकार न किया। वे ऐसे परिवर्त्तनको उत्पातका मूल समझते थे। अब उन लोगोंसे यह बात छिपी न रह सकी कि जियोबर्टीने चार्ल्सको अपने हाथमें कर रखा है। यह जानते ही उन लोगोंने मिल कर जियोबर्टीको देशनिकाला देनेके लिये षडयन्त्र रचा।

जब इसका हाल जियोबर्टीको विदित हुआ तब उसने संवत् १८८६ में अपने पदको त्यागनेके अर्थ चार्ल्ससे प्रार्थना की। उसकी प्रार्थनापर विचार भी नहीं हो पाया था कि एक दिन अचानक जियोबर्टी राजकर्मचारियोंद्वारा पकड कर कारागारमें बन्द कर दिया गया। जिस समय यह पकडा गया, उस समय यह अपने एक मित्रके साथ बातचीत करता हुआ एक वाटिकामें टहल रहा था। उस समय पेडमाण्टमें क्लेरिकल पार्टीका प्रभाव इतना

चढ़ा बढ़ा था कि जियोबर्टीको छुडानेके लिये जितने प्रबल किये गये सब विफल हुए और ऐसे बड़े अन्यायके कार्यको गर्हित ठहरानेके लिये, सर्वसाधारण जनोंकी सभा भी न होने पायी। उसपर नियमानुसार न तो कोई अपराध लगाया गया और न किसी न्यायालयने उसके दोषी निर्दोषी होनेका विचार ही किया। चार मासतक कारागारमें पडा हुआ जियोबर्टी न्यायकी प्रतीक्षा करता रहा। किन्तु न्याय कैसा? एक दिन उसने देखा कि उसे देश निकालेकी आज्ञा दी गयी है और इस आज्ञाको कार्यरूपमें परिणत करनेके लिये, बन्दूकधारी सिपाही उसे अपने साथ राज्यकी सीमाके बाहर पहुँचानेके लिये सामने तैयार खड़े हैं। जियोबर्टीको पादरियोंने देशसे निकलवा दिया पर इतनेहीसे उनका सन्तोष न हुआ। उन लोगोंने उसका नाम ट्यूरिनके थियोलाजीकल डाक्टरोंकी सूचीसे भी कटवा दिया।

देशनिकालके दण्डसे दण्डित जियोबर्टी सवत् १८९० के कार्तिक मासमें पैरिस पहुँचा। उसके भाग्यमें अपने देश से बहुत दिनोंके लिये बिछोह लिखा था। पेरिसमें पहुँनेपर जियोबर्टीके पास न तो टका था और न वहाँ उस अपरिचित स्थानमें उसका कोई सहायक मित्र ही था। उस समय उसने साहसी मनुष्यकी तरह सारा कष्ट सहना ही पुरुषार्थ समझा और पैरिससे वह ब्रुशल्स गया। वहाँ उसने दर्शन शास्त्रोंको पढ़ानेका कार्य्य आरम्भ किया और वहाँके एक छोटेसे कालेजके प्रबन्धमें वह अपने एक मित्र गेगियाको सहायता देने लगा। नियमित कार्य कर चुकनेपर उसे जो समय मिलता था उसे वह दर्शनशास्त्रोंके पढ़ने और उनपर अपने विचार प्रकट करनेमें बिताता था। वह बड़े तर्कके

उठता था और रातको भी देरतक काम करता रहता था। इस परिश्रमका फल यह हुआ कि एक एक करके उसने अनेक ग्रन्थ प्रकाशित किये। इन ग्रन्थोंमें दार्शनिक तत्त्वोंकी व्याख्या करते हुए उसने अपने देशकी आवश्यकताओंको भी व्यक्त किया था।

ब्रूशल्समें जियोबर्टी सम्वत् १८९० से १९०१ तक रहा। इस बीचमें उसके अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ छपे और उन्हें पढ़ पढ़कर इटली निवासियोंके मनमें अद्भुत प्रकारकी स्फूर्त्ति उत्पन्न हो गयी। इन सब पुस्तकों और लेखोंमें "प्राइमेटो" नामकी पुस्तकही सर्वोत्कृष्ट रचना थी, जिसे पढ़कर इटली वालोंके शरीरमें नये जीवनका सञ्चार हुआ। इतनेमें रोममें नये पोपका अभिषेक हुआ। उनका नाम नवें प्यूस रखा गया था और वह वहाँके धर्मसिंहासनपर सम्वत् १९०३ मिथुन में आसीन हुए थे। इनका पहला नाम था "कारडिनल मास्टई फ़ेरेटी"। यह इटलीके अधिवासियोंमें अपनी शान्त प्रकृतिके कारण सर्वप्रिय थे। साथ ही इटलीमें जो नये विचारोंका प्रवाह बह रहा था उसके वह अनुकूल थे। उनकी प्रबल उत्कण्ठा थी कि इटलीके सब छोटे बड़े सूर सामन्त मिलकर एक साम्राज्य स्थापित करें। उन्होंने सिंहासनपर बैठते ही प्रथम जो आज्ञा दी वह यह थी कि राजविद्रोह या किसी भी राजनैतिक अपराधके लिये जो लोग दण्ड भोग रहे हैं, उनका अपराध क्षमा किया जाय और वे छोड़ दिये जायँ। इस आज्ञाके प्रकाशित होते ही सहस्रों बन्दी जो रोमके कारागारोंमें बहुत वर्षोंसे बन्द थे छूट गये। जो लोग अज्ञात अपराधके लिये देशनिकालेका दण्ड भोग रहे थे वे भी स्वदेशमें लौट आये और अपने इष्टमित्रों और आत्मीय

बांधवोंसे मिल सुखपूर्वक रहने लगे। पोप स्वयं दीन दुखियोंके पास जाने लगे और उनके कष्ट दूर करनेकी व्यवस्था करने लगे। उन्होंने इटलीमें रेलकी सड़कें बनानेकी आज्ञा दी। छापेखानोंके कड़े आईनमें हेरफेर कर उन्हें सरल कर दिया और नगरके गण्यमान्य पुरुषोंकी सम्मति दायिनी एक समिति स्थापित कर दी। जिस धर्मसिंहासनपर बैठकर बारहवें लिओ और सोलहवें ग्रिगरी चित्तकी सङ्कीर्णताके कारण अपयशके पात्र बन चुके थे, उसी सिंहासनपर आसीन होते ही नवें प्यूसका यश सौरभ चारों ओर फैल गया।

नये पोप जियोबर्टीके राजनैतिक लेखोंको पढ़ चुके थे और उन लेखोंका उनके ऊपर प्रभाव भी अच्छा पड़ गया था। जियोबर्टीका प्राइमेटो ब्रूशलसमें संवत् १८६२ में छपा था और इटलीभरमें, पेएडमाएटको छोड़, सर्वत्र उसके बेचे जानेका निषेध था। इस निषेधसूचक आज्ञासे इटलीके देश प्रेमियोंकी दृष्टिमें उस ग्रन्थका महत्त्व बहुत बढ़ गया था। चार्ल्स एलबर्टने उस ग्रन्थको बड़े ध्यानसे पढ़ा था और उसकी खूब प्रशंसा की थी। नये पोपके सिंहासनारूढ़ होनेके पूर्व ही चार्ल्स, मैजिनी, गैरीबाल्डी और डी एजिलो इटलीके उद्धारकी प्रतीक्षा कर रहे थे। नये विचारोंके प्रभावके कारण ही चार्ल्सने संवत् १६०३ में उन अपराधियोंके अपराध क्षमा कर दिये जिन्हें देश निकालेका दण्ड दिया गया था और इसी राजाज्ञाके अनुसार तेरह वर्षतक देश निकालेका दण्ड भोगकर जियोबर्टीको यह अधिकार प्राप्त हुआ कि वह स्वदेशमें आसका।

बहुत दिनोंतक देशसे बाहर रहनेके कारण, जियोबर्टीकी उत्सुकता कम हो गयी थी, अतः स्वदेशमें लौट जानेकी

रुकावट न रहनेपर भी जियोबर्टी ब्रूसल्समें रहा। अब उसे उसके मित्रोंने विश्वास दिलाया कि ट्यूरिनमें उसके आनेसे वहावाले प्रसन्न होंगे तब वह वहा गया। वह १६ मेष सवत् १८०५को ट्यूरिन पहुँचा। नगरनिवासियोंने उसका स्वागत बड़े समारोह और उत्साहके साथ किया। उसके ग्रन्थोंको पढकर वहा वाले उसपर मोहित थे, इसमें सन्देह नहीं, किन्तु उस समय उत्साहपूर्वक और बड़ी धूमधामसे जो उसका स्वागत किया गया इसका एक कारण यह भी था कि ट्यूरिनवाले जानते थे कि निर्दोष जियोबर्टीको जीसूट्सके डाहसे इतना कष्ट दिया गया था। उसके प्रत्यागमनके उपलक्ष्यमें नगरभरमें ध्वजा पताका और बन्दनवारें लगायी गयी थीं। रौशनीका भी अच्छा प्रबन्ध किया गया था। प्रजाके प्रतिनिधिगण उससे मिलने गये। चार्ल्सने उसे अपनी राजसभाका सिनेटर नियुक्त कर उस का सम्मान किया। किन्तु नये शासन सम्बन्धी सङ्गठनके नियमानुसार ट्यूरिन और जिनोआवालोंने उसे अपना प्रतिनिधि चुना था, अत उसने राजसभामें आसन ग्रहण करना स्वीकृत न कर प्रजाके प्रतिनिधियो की राजनैतिक सभामें ही बैठना स्वीकार किया।

अन्य नगरोंसे उसे बुलानेके लिये उसके पास नित्य पत्र आते थे। अत प्रजाके प्रतिनिधियोंकी सभाका अधिवेशन होनेके पूर्व उसने नगरोंमें भ्रमण किया और मिलनसे यात्रा आरम्भ कर वह रोमतक पहुँचा। वह तीन बार पोपसे मिला और पोपसे मिलकर उसकी यह धारणा हो गयी कि पोपको अपने राजनैतिक विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करना चाहिए।

जिन दिनो वह नगरोंमें घूम फिर कर लोगोंसे मिल रहा था और अपने व्याख्यानों द्वारा उनके हृदयमें नवीन संस्कार उत्पन्न कर रहा था, उन्हीं दिनो ट्यूरिनमें एक सभा हुई जिसमें लोगोंने जियोबर्टीको प्रतिनिधि-समितिका सभापति निर्वाचित किया।

इतनेमें युरोपभरमें संवत् १९०४ की युद्धाग्नि भडक उठी। मिलेनीजने आस्ट्रियन सेनाको भगा दिया। वेनिसवालोंने डेनियल मेनिनकी अध्यक्षतामें प्रजासत्ताक शासन स्थापित करनेकी घोषणा कर दी और "इटली स्वतन्त्र हुई" इसकी प्रतिध्वनि आल्पससे लेकर सिसिलीके टापूतक गूंज उठी। एक वर्ष पूर्व आस्ट्रियावालोंने फेरारामें जब अपनी सेना भेजी थी तब पोप नवें प्यूसने घोर आपत्ति उपस्थित की थी। अब अवसर देख वह नवीन राष्ट्रीय दलके नेता बननेको उद्यत हुए और पेएडमाएटमें चार्ल्स एलवर्टने लाम्बार्डीकी सहायताके लिये युद्धयात्रा की। सवत् १९०४ ई० के अन्त होते ही काउएट वेलबोने जो पेएडमाएटमें प्रधान सचिव थे अपना पद त्यागा और नये मन्त्रिदलका निर्वाचन हुआ। जियोबर्टी मन्त्रिपदपर नियुक्त किये गये।

अभाग्यवश नवें प्यूस दृढ़ विचारवाले पुरुष न थे। जब उन्होंने सुना कि आस्ट्रियन सेना अपने खोये हुए स्थानोंपर एक एक करके लाम्बार्डीमें पुन अपना अधिकार जमाती जाती है, तब चार्ल्सकी सहायतार्थ सेना भेजनेका उनका सारा उत्साह ठडा पड गया। उनके ऊपर कन्सरवेटिव दलवालोंका प्रभाव पडा। उन्होने मेमियेनीको पदच्युत कर उसके स्थानपर काउएट रोसीको, जो छिपकर कन्सरवेटिव दलमें मिला हुआ था और फरासीसी पक्षवीथा, अपना प्रधान

कल्पित बनाया। वृश्चिक संवत् १६०५ में रोसी मार डाला गया। उसकी हत्याके बादही इटलीकी प्रजामें अपने अधिकारोंकी प्राप्तिके लिये प्रबल आन्दोलन देख, पोपने रोम छोड़कर भाग जानेहीमें अपना कल्याण समझा। १ वृश्चिक संवत् १६०५ को वे रोमसे भागकर गेयटा गये। वहाँ पहुँचकर स्वयं भागे हुए पोपने नियमानुसार एक विरोधपत्र प्रकाश किया, जिसमें उन्होंने अपनी प्रजाके उन अत्याचारोंका उल्लेख किया था जिनके कारण उन्हें रोम छोड़कर भागना पड़ा था। साथही उस पत्रमें उन्होंने यह भी प्रकाश कर दिया कि उनकी अनुपस्थितिमें जो प्रबन्ध किया जायगा वह नियमानुसार न होनेके कारण उन्हें मान्य न होगा।

उधर रोममें मैजिनीका प्रजातन्त्र शासन आरम्भ हो गया था और गेयटामें आस्ट्रिया और फ्रान्स पोपको प्रसन्न कर अपनी ओर मिलानेका प्रयत्न कर रहे थे। चार्ल्स एलबर्टने इस बातका प्रयत्न किया कि प्यूनपर आस्ट्रिया एवं फ्रान्स वालोंका प्रभाव न पड़ने पावे। उनने पोप और रोमवालोंमें सन्धि करवा देनी चाही। इस उद्देश्यसे जियोबर्टीने पोपके पास एक पत्र भेजा। उस पत्रका भाव यह था—"मुझे आशा है कि अपनी मर्यादा और अपने पदका विचार रखते हुए आप अपने धर्मकी ओर ध्यान देंगे। मुझे यह लिखते दुःख होता है कि आपने मेल मिलापके सिद्धान्तको परित्यक्त कर रखा है और प्रतिहिंसा एवं रक्त बहानेवाले सिद्धान्तके आप पक्षपाती हो रहे हैं। जान पड़ता है आप इस बातको भूल गये हैं कि आप जिस सिद्धान्तके अनुयायी बन रहे हैं वह दया और शान्तिविशिष्ट प्रभु ईसाका उपदिष्ट नहीं है किन्तु उस सिद्धान्तके उपदेष्टा महम्मद हैं।"

इस पत्रको लिखकर जियोबर्टीने इस बातका भी प्रयत्न किया कि इटलीके सारे सूर सामन्त एव छोटे मोटे राजाओंको मिलाकर पोपके आज्ञानुसार एक कर दें। किन्तु पोपने जियोबर्टीका यह प्रस्ताव स्वीकृत न किया। पोपके वे दिन बीत गये जब इटलीवालोंको उनसे बड़ी आशाए बँधी थीं और वे उन्हें प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे देखते थे। जियोबर्टीकी आँखें खुलीं और उसे पोपकी माया जान पड़ी। उसने समझ लिया कि पोपकी सारी बातें केवल जबानी जमाखर्चके लिये थीं वह काम पड़नेपर कभी हम लोगोंका साथ न देंगे। इस तरह पोपसे अब कोई आशा न रही। अस्तु।

नोवेराका युद्ध समाप्त होते ही चार्ल्स एलबर्टकी अशान्ति तिरोहित हुई और विक्टर इमानुएल अधीश्वर हुए। ये कड़ी प्रकृतिके मनुष्य थे। नये राजाके लिये मन्त्रि-दल का नये सिरेसे चुनाव हुआ। इस चुनावके करने वालोंमें जनरल डीलीनी प्रधान थे। उन्होंने जियोबर्टीको फिर मन्त्रिवर्गमें चुना किन्तु इस बार जो चुनाव हुआ वह जियोबर्टीकी इच्छाके अनुकूल न हुआ। जो लोग चुने गये उनसे जियोबर्टी अपरिचित था। जियोबर्टीने नये शासनको जो उसके पहले शासनसे नितान्त विपरीत था अच्छा न समझा और जब कई बार शासकोंके साथ कई शासनसम्बन्धी सिद्धान्तोंके विषयमें मतभेद होनेके कारण वादविवाद हुआ तब वह नाममात्रके सरकारी कामके बहानेसे पैरिस भेज दिया गया। यह इसलिये किया गया था कि जिससे जियोबर्टी ट्यूरिनके राजनैतिक प्रबन्धोंमें किसी प्रकारका हस्तक्षेप या उथलपुथल न मचाने पावे। जियोबर्टीको जो कुछ देशकी भलाई करनी थी वह उसने चार्ल्सके शासनकालमें कर ली। नये शासनके

सिद्धान्तोंसे उसका मतभेद होनेके कारण उससे कुछ करते धरते न बन पड़ा।

संवत् १६०५ और १६०६ का अशान्त एवं कलहपूर्ण समय निकल गया। पोपके नेता होनेका स्वप्नरूपी भ्रम नष्ट हुआ और इटलीवालोंके कन्धोंपर विदेशी शासकोंका जुआ फिर रखा गया। जो इटली देशके शुभचिन्तक थे, उसके सुधारक थे, वे फिर देशसे निकाले गये। मैज़िनी लण्डनमें और जियोबर्टी पैरिसमें भाग गये। पैरिसमें इटलीसे निकाले हुए और लोग भी पहुँचे। मारक्विस पैलेविनको तथा इटलीके अनेक देशहितैषी जियोबर्टीके मित्र बन गये। पेएडमाएटकी गवर्नमेएटकी ओरसे जियोबर्टीको पेनशन देनेका प्रस्ताव हुआ, किन्तु जियोबर्टीने उसे लेना अस्वीकृत कर दिया और उसने अपनी लेखनी फिर उठायी। संवत् १६०७ में उसका एक बड़ा ग्रन्थ "रिनोवमेएटो सिविलीडि इटेलिया" प्रकाशित हुआ। इस ग्रन्थमें उसने उन भूलोंको प्रकाशित किया जो संवत् १६०५ और १६०६ में इटली वासियोंने की थीं, साथ ही उसने अपनी अदूरदर्शिताकी त्रुटियों को भी स्वीकार किया। उस पुस्तकमें उसने पेएडमाएटको राष्ट्रीय दलका प्रधान नेता बतलाया और साथ ही यह आशा भी प्रकट की कि एक न एक दिन इटलीका पुनरुद्धार अवश्य होगा और उस समय इटलीके परिष्कृत नवीन साम्राज्यकी राजधानी रोममें स्थापित होगी। जिन दिनों वह अपना यह ग्रन्थ लिखा करता था उन दिनों वह पैरिसमें केवूरसे इस विषयकी बात-चीत भी किया करता था। उसने उस पुस्तकमें यह भी भविष्यद्वाणी लिखी थी कि केवूर ही इटलीके उद्धरण कार्यमें अवश्य सहायक होगा। केवूर जो बड़ा राजनीतिविशारद था, जियोबर्टीकी बातें सुन मन ही मन प्रसन्न होता था। जियोबर्टीकी बातें

सुनते सुनते उसके मनपर इनका कुछकुछ प्रभाव भी पडने लगा था। यह जियोबर्टीको इन लोगोंमें समझता था जो केवल कल्पनाके दास होनेके कारण राजनीतिके क्षेत्रमें सफलीभूत नहीं हो सकते, किन्तु जियोबर्टीके ग्रन्थको पढकर उसके मनपर जियोबर्टीकी पहुँच और विचारगाम्भीर्यका बहुत ही अच्छा प्रभाव पडा था।

नवें प्यूस अभीतक फरासीसियोंके अस्त्र शस्त्रोंसे सुरक्षित हो अपनी पूर्ण अयोग्यताका परिचय दे रहे थे। उन्होंने आरम्भमें जो उदार आज्ञाएँ दी थीं उन सबको उन्होंने रद्द कर दिया था। जो पहले उनके शत्रु थे वेही अब उनके मित्र बने हुए थे। उन्होंने शासनसबंधी सारे अधिकार महानीच कारडीनल एनेटोनेलीके हाथमें दे रखे थे। उसके शासनमें जीसूट्सकी फिर बन पडी थी। इन लोगोंने पोपको हर प्रकारसे अपनी मुट्ठीमें कर लिया था। जियोबर्टीके प्राइमेटो एव प्रोलेगोमैनी नामक वे ग्रन्थ, जिन्हें पढकर पोप बहुत प्रसन्न हुआ था, अब उनके नाम उन पुस्तकोंकी सूचीमें चढ़ा दिये गये थे, जिनके प्रचारका रोम राज्यमें निषेध था। इससे इटलीके जनसाधारणपर उलटा प्रभाव पडा। वे लोग बडे चावके साथ पोपकी आज्ञाके विरुद्ध इन पुस्तकोंको पढकर मनमाने तर्क करने लगे।

३० तुला सबत् १६०६ को पैरिसमें जियोबर्टीकी मृत्यु हुई। इस समय उसकी भविष्यद्वाणीके अनुसार इटलीमें नवीन युगके प्रादुर्भावका आरम्भ हो चला था और केवूर पेएडमाएटमें प्रधान सचिवके पदपर आसीन था।

जब हम जियोबर्टीके ग्रन्थोंकी आलोचनामें प्रवृत्त होते हैं, तब इतना तो हमें स्वीकार करना ही पडता है कि उसके

ग्रन्थोंके कारण इटली निवासियोंमें एक प्रकारकी उत्तेजना अवश्य फैली और उसके विचारोंको पढ़ वहाके लोगोंको इटलीको विदेशियोंके दासत्वसे मुक्त करके एक स्वतन्त्र साम्राज्य स्थापित करनेकी आवश्यकता प्रतीत हुई। किन्तु जो उपाय इटलीके उद्धारके लिये उसने 'प्राइमेटो" में बत लाये थे, वे कार्यरूपमें परिणत किये जानेपर निकम्मे सिद्ध हुए। अन्तमें इटलीवालोंके काम वेही बातें आयीं जो मैजिनी बतलाया करता था। जियोबर्टीका कथन था कि देशो द्धारके लिये नियमपूर्वक आन्दोलन करना चाहिए किंतु मैजनी कहता था कि ऐसे आन्दोलनोंसे पहाड खोद कर चुहियाँ मिलनेके सिवाय कुछ भी फल नहीं होगा। राष्ट्र स्थापित करनेके लिये अनेक नरोंका बलिदान करना होगा।

इस मतभेदका मुख्य कारण यह था कि जियोबर्टीने जो कुछ लिखा वह पढे लिखे विचारशील लोगोंके लिये लिखा था। यदि कोई पढ़े लिखोंसे मारकाट और रक्त प्रवाहकी बातें करे, तो शिक्षितसमाजकी दृष्टिमें उसका मूल्य कुछ भी नहीं रहता। किंतु मैजनी जो कुछ कहता था वह अनपढ जनोंमे। जियोबर्टीने "प्राइमेटो" में एक जगह अपने देशवासियोंको उत्तेजित करनेके लिये लिखा था "देखो, उत्तरदेशवासियोंका प्रतापसूर्य कैसा जाज्वल्यमान हो रहा है। उनके बलको देख यूरपके सारे राज्य काँपते हैं। उन लोगोंने भारतवर्षको अपना बना लिया है और चीन को अपने वशमें करके, एशिया, अफ्रिका, अमेरिका एव ओशनियाके सर्वोत्तम भूभागोंपर अपना अधि कार जमा लिया है। हम इटलीवासियोंने अबतक कौनसा बडा काम किया है? हम लोगोंने आजतक शारीरिक अथवा

डेनियल डैफो

[illegible]

डेनियल [illegible] में हुआ था [illegible]

[illegible] किन्तु [illegible]

[illegible]

[illegible] और [illegible]

[illegible] सरदार [illegible]

[illegible]



वेनिसका रक्षक डेनियल मेनिन

जन्म सं० १८६१] [मरण आश्विन कृष्ण १२, सं० १९१४

नाम मेइस्ट्रा है, जा बसा। वहाँ उसने वकालत शुरू की। आस्ट्रियन सरकारके पक्षपातपूर्ण नियमोंके कारण वह केवल दीवानी मामलोंका ही काम कर सकता था और सो भी एक सलाहकारके तौर पर, वकीलकी हैसियतसे नहीं।

डेनियल बाल्यावस्थाहीसे स्वास्थ्य-सुखसे वञ्चित था। यद्यपि उसमें उत्साह बहुत था और वह बडा उद्योगी था, तथापि उसका शरीर उसे प्राय जवाब दे दिया करता था और तब वह कोई भी काम नहीं करपाता था। बड़े होने-पर उसने एक बार लिखा था कि शरीर नीरोग रहने-से बढकर सुखप्रद वस्तु दूसरी नहीं है, किन्तु दुर्भाग्यवश रोगाक्रान्त रहनेके कारण मेरे लिये मेरा रोगग्रस्त शरीर बाल्यावस्थाहीसे चिन्ता और दु खका कारण है। जिस समय कोई बडा काम आपडता, उस समय वह अस्वस्थ हो जाता था।

मैनिनको अपने व्यवसायका कार्य करनेके बाद जो समय मिलता उसे वह वैनीशियन (Patois) पटोइसके पढ़नेमें पर वेनिसको आस्ट्रियाके अत्याचारोंसे मुक्त करनेके उपाय सोचनेमें व्यतीत करता था। सवत् १८८७ वि०में जब उसकी अवस्था केवल २६ वर्षकी थी, तब उसने अपने तीन अभिन्न मित्रोंसे परामर्शकर आस्ट्रियन अस्त्रागारको हस्तगत करना चाहा और एक घोषणापत्र बनाया जिससे वेनिसमें बसने-वाले लोगोंमें उत्तेजना फैले और प्रजा विदेशी शासकोंके विरुद्ध शस्त्र ग्रहण करे। किन्तु वह इस उद्योगमें सफल न हुआ और उसका प्रयत्न निष्फल हुआ। भाग्यवश उस घोषणापत्रके प्रकाश करनेवालोंका पता न चला और मैनिन पूर्ववत् अपने व्यवसायमें डटा रहा। तबसे उसने गुप्तसमि-

तियोंकी शक्तिपर विश्वास करना छोड़ दिया और वह आस्ट्रियावालोंके छिद्र ढूँढने लगा। जिस लेखको पढकर सबसे प्रथम आस्ट्रियन गवर्नमेण्टका ध्यान उसकी ओर गया था, वह लेख उसने इटलीके कोठीवालोंकी ओरसे लिखा था। ये लोग जर्मनीवालोंके साथ वेनिस और मिलनके बीचमें रेलकी सडक बनाना चाहते थे। उन दोनों-में रेलका मार्ग निर्दिष्ट करनेमें परस्पर मतभेद होनेके कारण वादविवाद हुआ। आस्ट्रियन सरकारके प्रतिनिधिने जर्मनी-वालोंका पक्ष लिया। मैनिनने इटलीके धनियोंका पक्ष ग्रहणकर उनके मतका समर्थन बडी योग्यतासे किया। आस्ट्रियाकी सरकारने विना समझे बूझे इस झगडेको निव-टानेके लिये अन्यायपूर्वक "इटालियन रेलवे एसोसियेशन"-को तोड़ दिया। सरकारका यह कार्य उसके आईनके सर्वथा विरुद्ध था। मैनिनको अच्छा अवसर हाथ लगा और उसने सरकारकी खासी पोल खोल दी। उसने भली भांति विचारपूर्वक यह सोच रखा था कि सहसा यदि विद्रोह या विप्लव होगा तो सिवाय होनहार नवयुवकोंके प्राणोंकी हानिके कोई आशाजनक कार्य न होगा। अत वह समय समयपर सरकारके अन्याय्य कार्य्योंको विस्तृत रूपसे वेनिसवालोंको सुझाकर आस्ट्रियन गवर्नमेण्टकी ओरसे वहावालोंके मनमें घृणा और विराग उत्पन्न करता रहा।

इटालियन कोठीवालोंकी ओरसे उनका पक्ष समर्थन करनेसे मैनिनकी ख्याति बढी और वेनिसवाले उसे एक अच्छा वक्ता और आईनवेत्ता मानने लगे। उसने वेनिसवालों-की एक समितिविशेषमें एक व्याख्यान दिया। उस व्याख्यान-में उसने यह दिखलाया था कि जो विचारशील हैं-जिनको

भगवान्ने जटिल विषयोंको सुलझानेके लिये गम्भीर विचारशक्तिसे सम्पन्न किया है, उनका यह परम कर्त्तव्य है कि वे उस शक्तिद्वारा उन लोगोंसे काम लें, जो काम करनेकी शक्ति रखते हैं। इस व्याख्यानका प्रभाव यहाँवालोंपर अच्छा पडा और जो योग्य और विचारशील होनेपर भी आलस्यके दास बनेहुए थे, उनकी निद्रा भङ्ग हुई और वे अपने देशके व्यापार और कारीगरीकी ओर ध्यान देने लगे। उसको आशा थी कि उत्तरी इटली नवीन अवाध वाणिज्यके सिद्धान्तोंद्वारा एक हो जायगी। भाग्यवश उन्हीं दिनों अवाध वाणिज्यका पक्षपाती कावडन नामक एक अङ्गरेज इटलीमें भ्रमण करता हुआ वेनिस पहुँचा और मेनिन एव वहाँके अन्य गण्यमान्य और अवाध वाणिज्यके सिद्धान्तके पक्षपातियोंसे मिला।

वेनिसवालोंको व्याख्यान द्वारा उत्साहित करनेका मेनिनको कई बार अवसर मिला। स० १८०४ई०के सितम्बर मासमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ। मैनिन उसका कमिश्नर नियुक्त किया गया और वेनिसके धर्मसस्थानोंके विषयमें अनुसन्धान करनेका कार्य उसे सौंपा गया। अनुसन्धान करते समय उसने एक दीवारपर एक विज्ञापन चिपका हुआ देखा। यह विज्ञापन एक निर्बल श्रमजीवीका था। उसमें उसने लिखा था कि वहाँकी सरकारने उसके पेटका प्रबन्ध न कर उसे पागल बना पागलखानेमें ठूँस रखा है। मेनिनने इसकी सूचना देते हुए लिखा— डाकृर इस मनुष्यके होश हवास दुरुस्त बतलाते हैं, पर पुलिस और गवर्नमेण्टके डरके मारे उसे छोडते नहीं। मुझे इस पर विश्वास नहीं होता। क्योंकि मेरी धारणा पुलिस और

गवर्नमैएटकी ओरसे बुरी नहीं है। मैं यह बात स्वीकार करनेके लिये उद्यत नहीं हूँ कि सरकार बलात् किसीको पागल बनाती हो। यदि श्रमजीवीने कोई अपराध किया होता तो उसे दण्ड देनेके लिये पर्याप्त आईन था।" इसपर वहाँका गवर्नर काउएट पैलफी बहुत विगड़ा। उसने कहा–"उस श्रमजीवीको मुक्त करके उसकी जगह इस मैनिनको ही बन्द करना होगा।"

इसी समय वेनिसके गवर्नरके एक सम्बन्धी काउएट जेवलोस्कीने एक पत्र लिखा जिसमें वेनिसके निवासियोंसे उसने अनुरोध किया था कि वे सन्तोषपूर्वक आस्ट्रियन गवर्नमेंट की अधीननामें बने रहें और स्वाधीनता पानेसे हताश हों। उस पत्रका उत्तर मैनिनने एक पृष्ठमें बडी विलक्षण रीतिसे दिया था। उस समय मैनिनका लेख प्रकाश नहीं हुआ पर पीछेसे वह छापा गया। उस पत्रको हम ज्योंकात्यों यहाँ उद्धृत करते हैं—

"It is fashion to preach resignation

I distinguish two kinds of resignations, the one virtuous and manly, the other cowardly and worthy only of fools

The strong man, when overcome by misfortune, seeks the means of remedying it Does he find any? In spite of difficulties, he applies himself to the task, excited, cheerful and vigorous, full of energy and pertinacity It is only when he is certain that no remedy exists, that he becomes resigned This is manly resignation

The coward, when misfortune overtakes him, also allows himself to be cast down, and seeks no means of remedying it However spontaneous and easy relief may present itself to his mind, he attempts nothing, he wishes neither to trouble nor expose himself—he is resigned this is the resignation of the fool

Therefore, resignation is virtuous and manly under evils manifestly without remedy, it is cowardly and stupid when we can in any way free ourselves from these evils

In the individual, resignation may often be virtuous, in nation it is perhaps never so, for the misfortunes of a nation are seldom irremediable

To overcome the misfortunes of a nation, we can employ the whole intellectual, moral and physical power of all its citizens, and if the generation which commences the generous task does not succeed in accomplishing it, other generations follow, who will attain success; for nations never die"

मैनिनने अपने सारे राजनैतिक विचार बीजरूपसे उपरोक्त लेखमें कूट कूटकर भरदिये हैं। उसके लेखका मर्म यह है—"आजकल यह चाल निकल पडी है कि लोग विरत हो जानेका उपदेश दिया करते हैं।

"वैराग्य दो प्रकारका है। एक तो गौरव और महत्त्वयुक्त, और दूसरा निन्दास्पद, और जो केवल भीरु एवं मूर्खोंहीके लिए शोभाजनक है।

"जो धैर्य्यवान मनुष्य होता है वह विपत्ति पडनेपर उससे निस्तार पानेका उपाय सोचता है। यद्यपि विपद्से मुक्त होनेका उपाय कष्टप्रद ही क्यों न हो, किन्तु वह हाथपर हाथ रख चुप नहीं बैठ रहता, अथवा हताश हो वैरागी नहीं होता, किन्तु उस सङ्कटसे मुक्त होनेके लिये, प्रसन्न-मनसे उत्साह एवं साहसपूर्वक प्रयत्न करता है। तिस पर भी जब उसे सफलता प्राप्त नहीं होती, तब वह हताश होकर वैराग्यकी शरण लेता है। यह वैराग्य पुरुषोचित वैराग्यकी श्रेणीमें परिगणित करने योग्य है।

"यदि कोई भीरु पुरुष किसी सङ्कटमें पड जाता है तो हाथ-पर हाथ रखकर बैठ रहता है और सङ्कटसे निस्तार पानेका उपाय रहते हुए भी वह हाथ पैर नहीं हिलाता और स्वयं हताश होकर विरत हो जाता है। यह वैराग्य मूर्खोंका है।

"अत. विपदका उपाय न रहते विरक्त होना गौरवास्पद है, किन्तु कठिनाइयोंसे निस्तार पानेका उपाय रहते विरक्त होना मूर्खोंका काम है।

"व्यक्तिगत विरति गौरवकी वस्तु हो सकती है, किन्तु जनसमूह या जातिके लिये किसी प्रकारकी विरति कल्याण-जनक नहीं। क्योंकि कोई भी ऐसा जातीय सङ्कट नहीं, जिसका प्रतीकार न हो।

"जातीय सङ्कटोंसे निस्तार पानेके लिये, उन जातिवालोंको अपनी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक आदि सारी शक्तियों का प्रयोग करना चाहिए। यदि उन लोगोंके किये वह

जातीय सङ्कट दूर न हुआ तो उन्हें विरक्त न होना चाहिए, क्योंकि जो काम वे नहीं कर सके, सम्भव है आगेकी पीढी, उनके आरम्भ किये हुए कार्यको पूरा कर, सफलता प्राप्त करे।

'इसीसे जो लोग किसी जातिविशेषको वैराग्य या त्यागकी शिक्षा देते है वे एक जातिको भीरु बनाते है और जो जाति उनके कथनपर ध्यान देकर कार्य करती है वह भीरु है।"

जिन लोगोंके ऐसे विचार थे उनको भला आस्ट्रिया किस प्रकार सदा अपने दास बनाकर अपनी अधीनतामें रख सकता था ?

मैनिनने सकल्प सा कर लिया था कि वह निरन्तर इस बात को प्रकट करे कि आस्ट्रियन गवर्नमेण्टने जो नियम इटालियन प्रजाके लिए बनाये हैं, उनके अनुसार वह स्वय वर्ताव नही करती। आस्ट्रियन गवर्नमेंट्की अन्य शासनपद्धतियोंमें एक यह भी पद्धति थी कि उसने सार्वदेशीय और प्रान्तीय (Imperial and Provincial) कौन्सिलें नियत कर दी थीं। इन कौन्सिलोंमें वेनिस और लोम्बर्डीकी प्रजाके प्रतिनिधियोंको अधिकार था कि प्रार्थनाके रूपमें वे अपनी कष्ट कथा शासकवर्गके कानतक पहुचा सकें। किन्तु अहङ्कारमें डूबी हुई आस्ट्रियन गवर्नमेण्टके प्रतिनिधिरूप शासकोंने प्रजाके इस तुच्छ अधिकारको भी आत्मसात् कर डाला था। इससे व्यथित हो स० १८०४में नजारी ने,-जो "लोम्बार्डी कांग्रीगेशन"का डिप्टी था, प्रस्ताव किया कि प्रजाके कष्टोंकी कहानी इम्पीरियल गवर्नमेंटको सुनायी जाय। किन्तु वेनिसके किसी भी अन्य डिप्टीने उसका साथ न दिया। लेकिन मैनिनने अपनी ओरसे वेनिस-

कांग्रीगेशनके पास अपने नामसे एक पत्र भेजा जिसमें उसने उसको लिखा था कि वह प्रजाकी ओरसे उनके कष्टोंको प्रकाश करे। उसने उस संस्थापर टिप्पणी करते हुए अपने पत्रमें लिखा था कि कांगिगेशनने आजतक कभी प्रजाके कष्ट एव अभावोंको सरकारके सामने प्रकट नहीं किया। उसके इस मौनावलम्बनका कारण यह जान पडता है कि उसे भय है कि उसके ऐसा करनेसे कहीं शासकोंकी उसपर क्रूर दृष्टि न पड़े, किन्तु उसका यह भय नितान्त अन्याययुक्त एव हानिकर है। क्योंकि यह भी अन्याययुक्त और हानिकर है कि हम लोग समझ वैठें कि सरकारने इस प्रान्तके प्रतिनिधियोंको जो अधिकार दिये ह वे दिखावा मात्र तथा मनोरञ्जनकी सामग्रीभर है और गवर्नमेंट इस प्रान्तहीको नहीं किन्तु यूरपभरको ऐसा आईन वनाकर धोखा दे रही है, जिसके अनुसार कार्य करनेको वह स्वय प्रस्तुत नहीं है और जो उस आईनके अनुसार चला चाहते हैं उन्हें सरकारकी ओरसे दण्ड दिया जाता है।" इस पत्रका समाचार प्रकट होते ही वेनिसवालोंको आशा वॅधी कि उनके कष्ट दूर होजायॅगे। वेनिसमें टोमेसियो नामका एक कवि था। वह वडा उत्साही एव देशहितैषी था। ६ धनुको उसने और मैनिनने एक प्रार्थनापत्र तैयार किया। इस पत्रमें उन लोगोंने निर्भय हो कर तेजस्विनी भाषामें प्रतिवाद किया कि सं० १८७२के आईनके विरुद्ध आस्ट्रियाके प्रेसके सरकारी अध्यक्षने कार्य किया है। इस पत्रके साथ वेनिसके 'एटीनिओ' नामक साहित्यसमितिके सव सदस्योंने भी अपने हस्ताक्षरोंसे युक्त एक निवेदनपत्र भेजा। उस समय उसपर आस्ट्रियन गवर्नमेंटने कुछ भी ध्यान न दिया।

सम्वत् १९०४के *अन्तिम भागमें जब इटलीभरमें अस*न्तोषका प्रवाह प्रवाहित होने लगा, तब भी आस्ट्रियाकी सरकारने उचित ध्यान न दे, इटली नेताओंको शान्त करनेमें शिथिलता की। किन्तु उस निवेदनपत्रको लिखकर भेजनेके लिये ६ मकर १९०५ वि० को मैनिन और टोमेसियोको राजविद्रोहके अपराधमें अभियुक्त कर उन्हें पकड़ कर कारागारमें डाल दिया। इटलीके नवीन उत्साही नवयुवकों का कुछ ठीक न रहा। जिस दिन उक्त दोनों मनुष्य पकड़े गये उसके दूसरे दिन सवेरे वेनिसकी गलियों और कूचोंमें लोगोंकी भीड उमड पडी। किन्तु तबतक कोई ऐसी बात न हुई जिससे किसी प्रकारके भयके लक्षण दिखलायी पडते। गलीकूचोंमें लोग यह अवश्य कहते थे कि "इटलीकी जय" "मैनिन और टोमेसियोकी जय।'

कारागारमें मैनिनको बडा कष्ट था। सबसे बढकर चिन्ता तो उसे अपनी प्रिय बेटीकी थी, जिसे वह बीमारीकी दशामें खाटपर छोड आया था। इस चिन्तासे छुटकारा नहीं मिलने पाया था कि उसकी छोटी बहिन अपने भाईकी विपत्तिका समाचार सुन, मर्माहत हुई और मर गयी! मैनिन विपद् कालके लिये कुछ भी द्रव्य सञ्चय नहीं कर पाया था जो इस समय उसकी गार्हस्थ्य चिन्ताको कम कर सकता। उसके ये सारे कष्ट और चिन्तायें उसके मनको ही व्यथित करती थीं, किन्तु वैसे देखनेमें उसके मुखपर चिन्ता या भयका कोई चिह्न परिलक्षित नहीं होता था। उसने कारागारसे अपनी स्त्रीको पत्र लिखा, जिसमें और सब बातोंके साथ यह भी लिखा कि इतने नोट अमुक स्थानपर और इतने रुपये अमुक स्थानपर रखे हैं। उसने अपने

पत्रमें यह भी लिखा था कि—"इन रुपयोंसे अपना काम निकालना। यदि मेरे छुटकारेमें विलम्ब हुआ तो तुम्हारे निर्वाहका कोई दूसरा उपाय सोचकर लिखूँगा। प्रिये! परस्परप्रेमपूर्वक रहना और सन्तोष रखना, यही कहना है।"

मैनिनकी स्त्रीने अपने पतिको जमानतपर छुडानेका बहुत प्रयत्न किया। अफसर लोग पहले तो उसे आजकल कहकर टालते रहे, अन्तमें डिरेक्टर जनरलने कहा कि—"हमें तुम्हारे पतिको छोडनेका अधिकार नही है।" डिरेक्टर जनरलके इस उत्तरसे सर्वसाधारण जन बहुत क्रुद्ध हुए। वेनिसवालोंने शोकसूचक काले कपडे पहने और नङ्गे सिर धीरे धीरे उस कारागारके द्वारके सामनेसे निकले जिसमें मैनिन और टोमोसियों बन्द थे। जबतक मैनिन जेलमें रहा तबतक उसके सहयोगियोंने मिलकर कोर्टसम्बन्धी उसके कामका भार उठा लिया और उसके प्रगाढ मित्रोंने उसके परिवारका व्ययभार उठाना चाहा। मैनिनको स्वय आशा थी कि वह घरका खर्च आईनकी एक पुस्तककी बिक्रीसे चला लेगा। किन्तु गवर्नमेण्टने तो उस पुस्तककी विक्रीका विज्ञापन छपानेकी भी उसे आज्ञा न दी। थोड़े दिनों पीछे ऐसा नियम बना कि विज्ञापन छपानेके लिये, गवर्नमेण्टसे आज्ञा लेनेकी आवश्यकता ही न रही। मैनिनके परिवारका निर्वाह उस पुस्तककी बिक्रीकी आयसे एवं उसकी मृत छोटी भगिनीकी छोडी हुई थोडीसी सम्पत्तिसे होने लगा।

इटलीके लोग जब अत्याचारियोंका सामना करनेको कटिबद्ध हुए और जब यह समाचार वेनिसवालोंने सुना तब उनका भी उत्साह उत्तरोत्तर बढने लगा। उस देशके इतिहासप्रसिद्ध निकोलेटी एव केसटिलेनी—नामक दो दलों-

के काले और रक्तवर्ण जातिके लोग, प्राचीन वैरभावको भूलकर एक हो गये और उन्होंने गुप्तरूपसे शपथ खायी कि आस्ट्रिया-वालोंसे हम तबतक बराबर लडते रहेंगे, जबतक वेनिस को विदेशियोंके अधिकारसे निकालकर स्वतत्र न कर लेंगे। वेनिसके जो नवयुवक गवर्नमेण्टके दफ्तरोंमें या अन्य पदोंपर नियुक्त थे, उन सबने मिलकर इस्तीफा दे दिया। मैनिन और टोमेसियोका अभियोग अभीतक चलही रहा था किन्तु वहाँकी पुलिस उन दोनोंके विरुद्ध कोई बात प्रमाणित नहीं कर पायी थी,- पर यह किम्वदन्ती लोगोंमें फैलगयी थी कि दोनोंपर अपराध प्रमाणित हों चाहे न हों, किन्तु सरकार बलात् उन दोनोंको स्पेलबर्गके कारागारमें भेजनेवाली है। यह कारागार बडा बुरा समझा जाता था, क्योंकि उस कारागारमें इटलीके अनेक देशहितैषियोंकी मानवी लीला परिपूर्ण हो चुकी थी। इतनेमें मेनिनने सुना कि फरासीसियों-ने अपने राजाको राजसिंहासनसे च्युत कर दिया। यह सुन वह विस्मित हुआ और सोचने लगा, देखें इस विप्लव के पवनका वेनिसपर कैसा प्रभाव पडता है। प्रभावका फल जाननेके लिये मैनिनको चिरकालतक प्रतीक्षा न करनी पडी – विप्लवकारी अग्निकी चिनगारियाँ उडकर सारे यूरपमें फैल गयीं मेटारनिक प्राण लेकर भागा, अस्ट्रियन राज्यका राजसिंहासन हिलने लगा। परिणामदर्शी मैनिनने भावीपरिणामको विचार कारागारहीमें बैठे बैठे वेनिसको विप्लवसे बचानेके उपाय निश्चित किये। स० १८४८ के चौथे मीनार्क-को वेनिसमें बडी खलबली दिखलायी दी। जो देखो वह समुद्रके तटकी ओर जाता हुआ दिखलाई देता था। सब लोग वाइनाके सबसे अन्तिम समाचार जाननेके लिये उत्सुक

थे। जिस जहाजके आगमनकी प्रतीक्षा वे लोग कर रहे थे, वह बन्दरगाहमें आया। नावोंमें बैठकर वेनिसवाले उस जहाजके पास गये। उस जहाजके यात्रियोंमें फ्रांस देशवासी एक व्यापारी भी था। वह वेनिसवालोंकी उत्सुकताका कारण ताड गया। उसने जहाजपर बैठे ही बैठे चिल्लाकर कहा— "A constitution at Vienna! The Recognition of Italian Independence! A free Press! A National Guard!'

अर्थात् "वीनामें जो नया राज्यसम्बधी सङ्गठन हुआ है, उसने इटली देशकी स्वतन्त्रताको स्वीकार कर लिया है, साथ ही मुद्रणयन्त्रालयोंको भी स्वतन्त्रता दी गयी है और एक जातीय रक्षकदल सङ्गठित किया गया है।" यह सुनते ही वे लोग वहाँसे लौटे और दोडते हुए सीधे गवर्नर की कोठीपर पहुँचे। उन लोगोंने पहुचते ही गवर्नरसे मैनिन और टोमेसिओको छोड़ देनेके लिये कहा। उनकी बातें सुन गवर्नरने पहले तो इतस्तत: करके नाही की, अन्तमें उनको जनसाधारणकी बात माननी ही पडी। गवर्नरने कहा "I do what I ought not to do" अर्थात् "मैं वह काम करता हूँ, जो मुझे न करना चाहिए।" यह सुन वहाँसे वे लोग सीधे कारागारकी ओर गये और वहाँ पहुँच एवं कारागारके द्वारको तोड, मैनिन और टोमेसियोका उन्होंने उद्धार किया। उस जनसमूहके नेताओंने उन दोनोंसे कहा—"तुम इस बन्धनसे मुक्त हुए।" किन्तु मैनिन आईनवेत्ता था। वह आईनके विरुद्ध कार्य करनेका अन्तिम परिणाम अच्छी तरह जानता था और ऐसा कोई कार्य करना नहीं चाहता था जो आईन-

विरुद्ध हो। अत उसने उनसे कहा कि "मैं अपनी रिहाईका हुकुमनामा देखना चाहता हूँ।" गवर्नरके हस्ताक्षरसे युक्त आज्ञापत्र उसे दिखाया। तब वह अपने साथीके साथ उस घोर अन्धकारमयी गुहासे बाहर निकला। लोगोंने एक कुर्सीको दो बासोंमें तामजामकी तरह बाँधा। उसपर मैनिनको बिठाकर वे लोग उसका जयजयकार मनाते, उसे सेण्टमार्क बाजारमें लेगये। उस स्थानपर आस्ट्रियाका काला और पीला झण्डा आकाशमें फहराया करता था। उस झण्डेको लोगोंने न जाने कैसे ऊपरसे उतार कर नीचे डाल दिया और उतनी ऊची बल्ली-पर इटली साम्राज्यका लाल, सफेद एव हरे रङ्गोंका झण्डा चढा दिया।

लोग मैनिनसे चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे—"आप बोलिये।" मैनिन प्रकाश एव स्वच्छ वायुरहित अन्धकार-मय गुफामें चिरकालतक रहते रहते दुर्बल एव पीला पड गया था। जनसमुदायके अनुरोध करनेपर बोलनेके लिये वह खडा हुआ। खडे होकर उसने हृदयग्राही शब्दोंमें व्याख्यान दिया। उसने अपने व्याख्यानमें कहा—'यह तो मै नहीं जानता कि मुझे क्योंकर कारागारसे छुटकारा मिला, किन्तु मेरे नेत्रोंके सामने जो दृश्य उपस्थित है, उससे मैं अनुमान करता हूँ कि जातीयता एव देश हितैषिताका अग्नि थोडेही दिनोंके बीचमें आश्चर्यरूपसे धधकने लगा है। किन्तु मेरी एक प्रार्थना है। उसे आप भूलियेगा नहीं। सच्ची और चिरस्थायिनी स्वतन्त्रता नियम बद्ध कार्यप्रणालीपर निर्भर है। पर दासत्वसे सदाके लिये उन्मुक्त होनेके लिये आपलोगोंको नियमबद्ध कार्यप्रणाली-

का रक्षक और अभिभावक बनना चाहिये।' इतना कहकर वह कुछ समयके लिये चुप होगया और फिर बोला—' हम लोगोंके लिये ईश्वरने ऐसे भी समय निर्दिष्ट कर दिये हैं, जिस समय हमारे पक्षमें राजविद्रोह करना केवल न्यायसङ्गत ही नहीं किन्तु हमारा कर्त्तव्य है।''

मैनिन अपने घर गया और वहाँ आगे काम यथानियम चलानेके लिये उपाय सोचने लगा। होते करते निशाके अन्धकारने वेनिस नगरपर अपना अधिकार कर लिया। इतनेमें ड्यूकेल चेपिलका भय सूचक घण्टा टनटनाने लगा।

वेनिसका वह बाजार जहाँ वेनिसनिवासियोंने इटलीका तिरङ्गा झण्डा खडा किया था आस्ट्रियन सेनासे भर गया। सैनिकोंने इटलीका तिरङ्गा झण्डा उतारकर उसके टुकडे टुकडे करडाले। जिन लोगोंने उनका सामना किया, उनपर सैनिकोंने सङ्गीनोंसे आक्रमण किया। तब कुछ लोग मैनिनके पास गये और उससे कहा आप चलकर हमें आस्ट्रियाकी सेनाके विरुद्ध लडनेका ढङ्ग बतलाइये। इस-पर मैनिनने कहा—"यह उपाय ठीक नहीं—नगरमें शान्ति रक्षाके लिये नागरिक रक्षक नियुक्त किये जाने चाहिये।' इसके बाद उसने एक हलकारा गवर्नरकी कोठीपर भेजा और उसके द्वारा गवर्नरको कहला दिया कि—"उससे कहना, उसका जीवन आज मेरे हाथमें था, पर मैंने उस समय अपने व्याख्यानमें ऐसी बातें कहीं, जिनसे शान्ति बनी रहे। अब अपने प्राणोंके विचारसे तथा शान्तिस्थापनके अर्थ उसे उचित है कि तुरन्त वह नागरिक जनोंका एक दल सङ्गठित करे।"

इसपर वेनिसका गवर्नर काउण्ट पैलफी कई दिनोंतक टालमटोल करता रहा। उसने वाइसरायके पास विरोनाको

एक दूत भेजा और वाइसरायने उसे तार द्वारा आज्ञा दी कि वह दो सौ नगर वासियोंको रक्षक दलमें भर्ती करे।

तीन हजार नागरिक अस्त्र शस्त्र लेकर मैनिनके पास गये और उसकी आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगे। मैनिनने कहा—"जिसे मेरी पूर्णरूपसे आज्ञा माननेमें किसी प्रकारका सङ्कोच हो, वह अभी चला जाय।" यह सुनकर उस दलका एक भी मनुष्य न गया। अन्तमें वेनिसमें वहाँके नगरनिवासियोंकी निजकी सेना तैयार हो गयी।

पर उस समय किसी ओरसे भी मारकाट न हुई। वेनिसके मुखिया मिलकर सोचने लगे कि यदि वाइनामें नवीन शासनपद्धतिके पक्षपाती कृतकार्य हुए तो हम लोगोंको क्या करना होगा। जितने लोग थे उतनी ही अलग अलग सम्मतियाँ थीं। अन्तमें मैनिनने कहा—"हम लोगोंको सबसे आवश्यक वस्तु स्वतन्त्रता है। पहले हमारा नगर हमारे हाथमें आ जाय, तब पीछे यह भी विचार होता रहेगा कि आगे क्या हो।" इतनेमें नगरभरमें नाना प्रकारकी किम्वदन्तियाँ फैलने लगीं। लोग कहने लगे, वेनिस नगरभर गोलोंकी वर्षा की जायगी। १८ मीनार्ककी रात्रिको मैनिनने अपना विचारा हुआ कार्यक्रम नगरके अगुओंके सम्मुख उपस्थित किया और कहा—"हम लोगोंको यहाँके अस्त्रागारको तुरन्त अपने अधिकारमें कर लेना चाहिए।" इस पर कुछ देरतक लोगोंमें परस्पर वादविवाद हुआ, अन्तमें सबने एक स्वरसे मैनिनके प्रस्तावका समर्थन किया। नागरिक सैन्यदलका प्रधान सेनापति बुलाया गया। मैनिनने उससे कहा—'लोगोंको नगरके तोपदन किये जानेका भय है। मैं यहाँके अस्त्रागारको जैसे हो

वैसे अपने लोगोंके हस्तगत कर लेना चाहता हूँ। तुम मुझे एक दिनके लिये सेनाका प्रधान नायक बना दो। अपनी सेनाके दो भाग कर उनकी छ टुकडी बनाओ और उन टुकडियोंके कपतानोंको आठ घण्टेके लिये मेरे अधीन कर दो।" यह सुन प्रधान सेनानायक स्तम्भित हुआ और उत्तर दिये विना ही चला गया। इस प्रकार कई एक प्रधान सेना नायक आये और मैनिनके विचारोंको भयङ्कर समझ उसके प्रस्तावसे सहमत न हुए।

इतनेमें अस्त्रागारकी रक्षाके लिये जो आस्ट्रियन सेना नियुक्त थी उसमें असन्तोप फैला और उस सेनाने अपने एक अफसरको मार डाला। अब तो नगरमें विप्लव फैलनेका लोगोंको भय उत्पन्न हुआ। नागरिक रक्षक सैन्य दलके सबसे पिछले नायक मेजर आलीवेरीने अपनी टुकडी मैनिनके अधीन कर दी। वकील साहबने अपनी तलवार हाथमें ली और सोलह वर्षके अपने पुत्रको साथ लिया। फिर मैनिन इस दो सौ सिपाहियोंकी टुकडीको लिये हुए अस्त्रागारकी ओर रवाना हुआ और अस्त्रागारके प्रधान रक्षकसे अस्त्रागारको शरणापन्न होनेके लिये विवश किया। जबतक आस्ट्रियन अफसर लोग इसको जान पाये थे कि तबतक मैनिनने अस्त्रागारकी सारी सामग्री वेनिसवालोंको बांट दी। अस्त्रागारको हस्तगत करके उसने सब लोगोंसे सेण्ट मार्क नामक मैदानमें एकत्र होनेके लिये कहला भेजा। इटलीकी जो पक्षयुक्त सिंह-ध्वजा पचास वर्षसे धूलमें लोट रही थी, वह खोल कर खडी की गयी और उसके नीचे मैनिनका सैन्यदल चला। वे लोग उक्त मैदानमें पहुँचे। यहा उसने सब लोगोंसे दोपहरके समय एकत्र होनेको कहा।

दोपहरके समय जब सब लोग एकत्र हुए वह इटलीका झण्डा लेकर खड़ा हुआ। उसने कहा—"हे वेनिस वालो, अब हम स्वाधीन हैं! और यह स्वतन्त्रता हमें अपना या दूसरेका रक्त बहाये बिना ही प्राप्त हुई है। मेरे निकट देशी विदेशी सभी मनुष्य परस्पर भाई हैं। किन्तु जब पुराना शासन उलट गया है तब नये शासनकी स्थापना उसके स्थानमें अवश्य ही होनी चाहिए। सर्वोत्तम शासन प्रणाली प्रजातन्त्र है। यह प्रणाली हमारे प्राचीन महत्वकी परिचायक है और वर्तमान समयकी स्वाधीनताका गौरव बढ़ानेवाली है। स्वतन्त्रता प्राप्त होनेपर भी हम लोग अपने इटालियन भाइयोंसे जुदा न होंगे। किन्तु हम उसे ऐक्यका ऐसा केन्द्र बनायेंगे जिससे इटली एक स्वतन्त्र साम्राज्य बन जाय। यह प्रजातन्त्र प्रणाली चिरायु हो। यह स्वतन्त्रता चिरायु हो! महात्मा सेएट मार्क की जय हो।"

इसपर नागरिक रक्षक सैन्यदलने शपथ खायी कि हम प्रजातन्त्र शासनकी एवं उसके जन्मदाताकी, अपनी जानें हथेलीपर रखकर रक्षा करेंगे। वृद्धोंने आनन्दके आँसू बहाये और जवान लोग खुशीके मारे परस्पर गले मिले। जितने लोग वहाँ उपस्थित थे सबने एक मत हो आकाशकी ओर हाथ उठाउठाकर जगन्नियन्ताको धन्यवाद दिया। लोग आनन्दमें पागल हो रहे थे। वेनिसवाले मैनिनको अपना उद्धारकर्त्ता समझने लगे। पाँच दिन और रात मैनिनकी आँखें कभी एक क्षणके लिए भी बन्द नहीं होने पायीं। ज्योंही उसने वहाँके कामसे छुट्टी पायी, त्योंही वह सीधा अपने घर गया। उस समय मैनिनको बड़ी थकावट प्रतीत हुई। उसने अपने मित्रोंसे कहा—"कृपा कर कमसे कम आजकी रातभर

मुझे विश्राम ले लेने दीजिये नहीं तो मैं मर जाऊँगा
वेनिसमें आस्ट्रियाकी सरकारकी ओरसे जो सूबेदार
उसने समझा कि हमारे पास जितनी वेतनभुक्त सेना
उससे हम देशप्रेममें डूबे हुए, वेनिसके निवासियोंका सा
करके सिवाय हानिके लाभ नहीं उठा सकते। अत वे
वालोंने जो जो प्रस्ताव किये, उन सबको उसे स्वीकृत क
पड़ा। सारी विदेशी सेना वेनिससे हटा दी गयी। वह
दुर्ग एव सैनिक युद्ध सामग्री, राष्ट्रीयदलको सौंप दी गयी
वहाँका शासन उस नगरके मुख्य मुख्य नेताओंकी
समितिके हस्तगत कर दिया गया।

उसी रातको नये शासनके अधिष्ठाताओंकी नामाव
और आस्ट्रिया सरकारके साथ जो ठहराव किये गये थे
प्रकाशित किये गये। उस नामावलीमें मैनिन और टोमि
के नाम न देखकर वेनिसवालोंको बड़ा आश्चर्य हुआ।
लोग सीधे मैनिनके घरपर पहुँचे और उससे सारा हाल
दिया। उत्तरमें उसने पलङ्गपर पड़ेही पड़े एक पत्र लिख
जिसका भावार्थ यह है कि "वेनिसवालो! मैं जानत
तुम्हारा अनुराग मेरी ओर यथेष्ट है और उस अनुरागके
मैं तुमसे कहता हूँ कि तुम इस आनन्दके अवसरपर वै
बर्ताव करो जो स्वाधीन जातिके स्वरूपानुकूल है।"

यह सन्देशा सुन सब लोग शान्त हुए और चुप
अपने अपने घर चले गये। अगले दिन नयी शासनमण्ड
ने नवीन शासन सम्बन्धी नियम बनानेके लिये एक यो
मनुष्यकी आवश्यकता प्रकट की। सब लोगोंने एक स्व
मैनिनको इस कार्यके लिये चुना। उसने उनका प्रस्त
स्वीकृत किया। वह शासक मण्डलीका सभापति बना

विदेशी साम्राज्योंके साथ लिखा पढी आदिका भार अपने ऊपर लिया। उसने वेनिसकी प्रजातंत्र शासन-पद्धतिका बडी दूरदर्शिता और योग्यताके साथ सङ्गठन किया।

भिन्न भिन्न अधिकारों और शासन सम्बन्धी पदोंपर उसने भिन्न भिन्न जाति और कर्म्मके लोग नियुक्त किये। इससे नवीन शासनपद्धतिकी नीव सुदृढ हो गयी। वेनिसके सभी निवासियोंको पूर्ण विश्वास हो गया कि सचमुच हम स्वाधीन हो गये और हमारे देशका अधिकार हमारे हस्तगत हो गया। आजसे हमलोग समान अधिकार प्राप्त एक स्वाधीन साम्राज्यके अङ्ग हुए। धर्माध्यक्षने नवीन प्रजातन्त्रके झडेको आशिषा दी और जल सेनाके सर्वोच्च नायकने नवीन मन्त्रिदलकी नामावली पढकर लोगोंको सुनायी। जिस समय वह नामावली पढ़ी जा रही थी बीच बीचमें बारबार लोग राष्ट्रपति मैनिनकी जयध्वनि करते जाते थे।

पचास वर्षतक निरन्तर पराधीनताका घोर कष्ट सहकर वेनिस निवासी स्वतन्त्र हुए। अब यह कर्त्तव्य मैनिनकी बाँटमें पडा कि वह नये शासनको निष्कण्टक और स्वतन्त्र बनाये रखे। मैनिन अपने लोगोंकी भीतरी निर्बलताको भली भांति जानता था। उत्तरी इटलीमें फरासीसियोंके साथ मिलगया। पीडमटका चार्ल्स एलबर्ट और मैजिनी चाहते थे कि इटलीको इटलीवालेही विदेशी राजसत्तासे मुक्त करें। किन्तु दूरदर्शी मैनिनको यह बात उसी समय सूझ गयी जो काबूरको पीछे सूझी थी कि किसी न किसी विदेशी शक्तिके साथ सद्भाव या मित्रता स्थापित करना, इटलीकी स्वतंत्रताको बनाये रखनेके लिये परमावश्यक है।

फ्रांस उस समय बड़ी अव्यवस्थित दशामें था। उसके मन्त्रिदलको यह अभीष्ट न था कि फ्रांसकी उत्तरी सीमापर, उत्तरी इटली जैसा सुदृढ़ साम्राज्य बना रहे। उनकी इच्छा (Savoy) सेवायको अपने राज्यमें जोड लेनेकी थी। वे स्वयं प्रजातंत्रके प्रेमी थे अत. उन्होंने भी अपना यह कर्त्तव्य समझा था कि इटलीके उन अशान्त स्थानोंको आस्ट्रियनोंके अत्याचारसे बचानेमें सहायता दें। फ्रांसके साथ मैत्रीभाव स्थापन करनेका मैनिनने प्रथम स्वयं प्रस्ताव किया। फ्रांसकी ओरसे वेनिसमें प्रतिनिधि था, उसे भी पूरी आशा थी। ३ जूनको वेनिसके अधिवासियोंकी विचार समितिका एक अधिवेशन हुआ। इस समितिके सभ्योंको वेनिस एवं डोगेडोके ज़िलेमें बसनेवालोंने चुना था। इस समितिमें सबसे प्रथम विचार इस बातपर हुआ कि वेनिसवालोंको लम्बार्डीके साथ मिलकर पेडमाण्टके राजासे मिलना चाहिए कि नहीं। मैनिन का विश्वास था कि यह विषय तब तक विचाराधीन रखा जाय जबतक देशमें सम्पूर्ण रीतया शान्ति स्थापित न हो जाय किन्तु उपस्थित सभ्योंमेंसे एक प्रभावशाली दलने इसका प्रतिवाद किया। मैनिनके पक्षवालों और विपक्षियोंमें बडी कडी कहा सुनी हुई। दोनों दलोंमें हाथावाही हो जानेकी आशङ्का उत्पन्न हुई। यह देख मैनिनने खडे होकर अपने पक्षवालोंसे विनीत भावसे प्रार्थना की कि आप लोग क्षमा करें और इस मेलमें बाधा न डालें। उसके ऐसे नम्र भावको देख मामला वहीं शान्त हो गया और जो कार्य उचित था हुआ। उसी अधिवेशनमें सब लोगोंने मिलकर यह मन्तव्य भी स्वीकृत किया कि "डेनियल मैनिनने देशकी बडी सेवा की है।" मैनिन ने अन्तमें फिर कहा कि जबतक इटलीमें विदेशी सत्ता बनी

हुई है, तबतक मैं प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वरको साक्षी मान कर दलबन्दीकी चर्चा न उठाइये। जब हम विदेशी सत्ताका काला मुँह कर दें, तब भ्रातृभावसे हमलोग मिलकर ऐसे विषयोंपर परस्पर विचार कर लेंगे। देशकी सेवा करनेके बदले में यही आपसे याचना करता हू।

चार्ल्स एलबर्टके साथ मेल हो गया। अब मन्त्रिदलके चुनावका समय उपस्थित हुआ। लोगोंने मैनिनको प्रधान सचिव चुना, किन्तु उसने उस पदको अस्वीकार किया और कहा—"मैं सदासे प्रजातन्त्र शासनप्रणालीका पक्षपाती हू। राजाके अधीन प्रधान सचिव होना मुझे शोभा नहीं देता। इसके अतिरिक्त शरीररक्षाके लिए मुझे कुछ दिनोंतक विश्रामकी आवश्यकता है।"

वेनिसकी नयी मिनिस्ट्री ७ अगस्ततक चली। अनन्तर चार्ल्स एलबर्टकी ओरसे वहाका शासन रायल कमिश्नरोंके हस्तगत किया गया। दुर्भाग्यवश चार्ल्स एलबर्टको लम्बार्डीमें शत्रुकी सेनासे परास्त होना पड़ा और सैलेसकोके सन्धिपत्रके अनुसार उसके हाथसे वेनिसके सारे अधिकार निकल गये। जब यह सवाद वेनिसमें पहुँचा वहावाले आश्चर्य चकित हो गए। मारे क्रोधके वे आपेमें न रहे। अन्तमें और उपाय न देख वे मैनिनके घरकी ओर दौड़े गये। द्वारपर पहुँचकर मेनिनको पुकारा और रायल कमिश्नरोंकी निन्दा करने लगे। उसने कहा मैं कमिश्नरोंसे जाकर मिलता हूँ। कमिश्नरोंसे मिलकर उसने वेनिसवालोंसे कहा—"परसों सर्वसाधारणकी एक सभा होगी, जो नयी गवर्नमेंट स्थापित करेगी। तबतक अड़तालीस घण्टेके लिए मैं गवर्नर होता हू।" लोग तो यही चाहते थे। यह सुन वे प्रसन्न होते

हुए अपने अपने घर-चले गए। निर्दिष्ट दिन सभाका अधिवेशन हुआ। लोगोंने मैनिनको प्रधानाध्यक्ष बनाना चाहा। किन्तु उसने कहा मैं युद्धविद्यासे अपरिचित हूं। तब वहांके अध्यक्ष पदपर तीन मूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठा की गयी। इन तीनमें एक तो मैनिन था और दोके नाम थे एडमिरल ग्रेंजियेनी और कर्नेल केलचिडेलिस।

जिस समय फ्रांसवाले उत्तरी इटलीवालोंको सहायता देनेका निश्चय कर रहे थे ठीक उसी समय इङ्गलेण्डवाले बीचमें कूद पड़े और दोनोंने मिलकर बीचमें पड़ना चाहा। दुर्भाग्य वश उसी समय चार्ल्स एलबर्टने दोनोंसे सहायता लेना अस्वीकार कर कहा कि इटलीवाले अपनी आग स्वयं बुझा लेंगे। अत वेनिसवालोंके हाथसे विदेशी मित्रोंसे सहायता पानेका अवसर निकल गया। नेपिल्ससे पेडमाण्टतक इटलीका प्रत्येक मनुष्य वीरताप्रदर्शनार्थ उत्सुक था। किन्तु एक सुयोग्य नेताके अभावसे उनका सारा श्रम निष्फल हुआ। रोमके निवासी पोपकी अकर्मण्यताके कारण कुपित थे। आरम्भमें तो पोपने राष्ट्रीय दलके प्रति बड़ा उत्साह दिखलाया था, किन्तु जब जर्मनीवालोंने पोपको धमकाया और आस्ट्रियावालोंके साथ विग्रह करनेका निषेध किया, तब उनका सारा उत्साह धूलमें मिलगया। उधर आस्ट्रियन जनरल रेडेरेजकी धीरे धीरे आस्ट्रियाके हाथसे निकले हुए स्थानोंको अपने अधिकारमें करता जाता था। विसिंजा एव मिलन उसके अधिकारमें आही गये थे। आस्ट्रियावालोंको पूरा विश्वास हो गया था कि वे वेनिसको भी हस्तगत कर लेंगे। स० १८०५ की ग्रीष्म ऋतुके अन्तमें वेनिसवालोंको निश्चय होगया कि उनको अपनी रक्षा अपने

आप अकेले करनी पड़ेगी। अन्य प्रान्तोंमें विप्लव धीमा पड़ चला था। पीडमाण्टवाले अपनी अदूरदर्शिताका परिचय देही चुके थे। मैनिनको अब भी विश्वास था कि उसकी सहायता करनेके लिये कोई न कोई अवश्य खड़ा होगा। साथही उसने यह भी निश्चय कर लिया था कि चाहे कोई उसकी सहायता करे या न करे, किन्तु वेनिसवालोंको शत्रुका सामना करके संसारको यह दिखला देना है कि वेनिसवाले स्वतन्त्रताको कैसी मूल्यवान वस्तु समझते हैं।

जिस समय शत्रुसेनाने वेनिसको घेर लिया, उस समय वेनिसवालोंको धनकी बड़ी आवश्यकता हुई। मैनिनके कहने भरकी देर थी। लोगोंके पास जो कुछ सञ्चित धन था वह सब उन लोगोंने निकालकर उसके आगे रख दिया। क्या धनी, क्या साधारण जन, क्या बूढ़े क्या बारे जिसके पास जो कुछ था, उनलोगोंने श्रद्धाके साथ दे डाला। नागरिक लोगोंने योद्धाओंको वरदियां बनवा दीं। बड़े बड़े प्रासाद, देशसेवकोंके लिए खाली कर दिये गये। मैनिनके घरमें जितने बरतन थे, उसने वे सब दे डाले और कुछ भी घेतन न लिया। लोग अपनी प्यारीसे प्यारी वस्तु दे मातृभूमिके चरणोंमें उत्सर्ग करने लगे। किसीका अपनी आवश्यकताओंकी ओर ध्यान न था। सब लोगोंको यही चिन्ता लग गयी थी कि किसी प्रकार वेनिसकी स्वतन्त्रता अक्षुण्ण बनी रहे। इसके लिय वे प्राणोंतकका मोह छोड़ बैठे थे। यूगो वेस्सी नामका एक धर्म याजक था। यह पीछेसे रोमके पास मेजिनीके साथ लड़ा था और आस्ट्रियावालोंद्वारा पकड़कर मारडाला गया था। यह यूगो नित्य वेनिसवालोंको व्याख्यानद्वारा जन्मभूमिकी स्वतन्त्रता बनाये रखनेका उत्साह बढ़ाया

करता था। ये सारी बातें थीं हीं, किन्तु वेनिसवाले मैनिनके लिये सर्वस्व अर्पण करनेको तयार थे। उसे वे अपना पिता समझ पुत्रकी तरह स्वय उसकी आज्ञा पालनके लिये सदा उसका मुख देखा करते थे। एक ओर तो उसे वेनिस नगरकी चिन्ता थी दूसरी ओर उसे अपने बालबच्चोंकी रोगग्रस्त दशा विकल किये डालती थी। उधर तो वह दिन भर शासन सम्बन्धी परामर्श देता, नगरकी रक्षाके उपाय सोचता और अनुत्साही लोगोंको उत्साहित करता था इधर जब रात होती तब वह रोगग्रस्त बच्चेकी चारपाईके पास बैठकर उसका चिकित्सोपचार करता। मैनिनकी कठोर तपस्याका यही क्रम था। यहातक कि वह कार्त्तिकके महीनेमें ऐसा बीमार पडा कि वेनिसवासियोंको बडी चिन्ता उत्पन्न हुई। किन्तु उन लोगोंके सौभाग्यसे वह चङ्गा हो गया और पूर्ववत् शासन सम्बन्धी काम करने लगा।

यद्यपि वेनिस शत्रुसेनासे अविरुद्ध था और धनाभाव भी था तथापि नगरमें चिन्ताके चिह्न परिलक्षित नहीं होते थे। सारे काम यथावत् होते थे। नाटक, तमाशे, मेले, तीज त्योहार, बाजे गाजे, बरात त्योहार, जो नित्य हुआ करते हैं ज्योंके त्यों होते थे। उन्हें इतने ही दिनोंकी स्वतन्त्रताने पचास वर्षकी परतन्त्रता एकदम भुला दी थी।

वह समिति जिसने पेडमाण्टवालोंके साथ ऐक्य करनेका मन्तव्य स्वीकृत किया था, भङ्ग कर दी गयी और नये सिरेसे समितिके सभ्य चुने गये। मैनिनने कहा कि उसे नगरके ऊपर हर प्रकारके पूरे अधिकार मिलने चाहिए। इसपर कुछ सभ्योंने आपत्ति उपस्थित की। तब उसने कहा "यहांपर इस बातका प्रश्न नहीं है कि तुम एक आदमीको

सर्वाधिकार दिये देते हो। किन्तु इस समय देशकी रक्षाके लिए ऐसा करना आवश्यक है। यदि बात बातमें हमारे सामने कायदे कानून खड़े कर दिये जायगे, तो आवश्यकता होनेपर उपस्थित विघ्नोंको शान्तिका प्रतीकार तत्क्षण न हो पावेगा। स्मरण रखिये इस काममें हमारी रक्षाके लिये शस्त्र-बलकी अपेक्षा बुद्धिबलकी बडी आवश्यकता है। जिन लोगोंको मेरा यह कथन अप्रिय लगा हो, उनसे मैं विनयपूर्वक क्षमा मागता हू।"

इतनेमें लोगोंको विदित हुआ कि समितिमें कुछ लोग ऐसे पहुच गये हैं जो मैनिनसे जलते हैं। वे लोग दलबद्ध हो उनकी मानवी लीला समाप्त करनेके लिये सभा भवन के द्वारपर पहुच गये हैं। मैनिनने उन्हें समझाकर कई बार वहांसे हटाया, किन्तु वे बारम्बार द्वारको घेरकर खड़े होने लगे। अन्तमें जब उसे यह बात विदित हुई कि वे सभाभवनमें घुसकर उन लोगोंको दबाना चाहते हैं जिन्होंने मैनिनके पैरमें नियमोंकी बेडी डालनी चाही थी, तब मैनिन हाथमें नङ्गी तलवार ले अपने पुत्रके साथ सभाभवनके द्वारपर खडा होकर उनसे बोला—"पहले तुम मुझे और मेरे पुत्रको मार डालो, तब इस भवनके भीतर पेर रखना। यदि मेरा कहना मानो, तो चुपचाप घर लौट जाओ।" यह सुन वे लोग चुपचाप लौट गये। उसी रातको उसने एक घोषणापत्र निकाला उसमें उसने लिखा था—"भाइयो! तुमने दिनमें आज मुझे बडा कष्ट दिया है। मेरे प्रति अपना अनुराग प्रकट करनेके अर्थ तुमलोगोंने विप्लव करना चाहा था। किन्तु तुम-लोगोंको भली प्रकार विदित है कि मैं विप्लवकारियोंसे घृणा

करता हूं। तुम लोग कहते हो कि तुम्हारा मेरे ऊपर अनुराग है। यदि वात सत्य है तो अपने इस कथनको कार्यरूपमें परिणत करके दिखलाओ। (अर्थात् मैं जो कहता हूं वह करो।) कल किसी प्रकार हुल्लड न हो, न कोई सभा हो। सब लोग अपने अपने घरोंमें रहो। गवर्नमेण्ट और शासन समितिपर विश्वास रखो। गवर्नमेण्ट और शासन समितिके सभ्य तुम्हारी भलाईको अपने प्राणोंसे बढ़कर समझते हैं।"

इसका प्रभाव उन सभ्योंके ऊपर अच्छा पड़ा जो पहले मैनिनसे जला करते थे। अगले दिन सारा वैर-भाव भूलकर शासक समितिने मैनिनको उस समितिका सभापति निर्वाचित किया और नगर तथा उसके बाहर विदेशियोंके साथ सन्धि आदि करनेके पूरे अधिकार उसे दे दिये।

उधर चार्ल्स एलबर्टने फिर आस्ट्रियनोंका सामना किया और कुछ दिनोंके लिये आस्ट्रियन रणक्षेत्र छोड़कर भाग गये। ब्रेस्सियावालोंने बड़ी वीरतासे शत्रुका सामना किया। वेनिसवालोंको जब यह बात विदित हुई कि एक छोटेसे नगरवालोंने इतने प्रबल पराक्रमी शत्रुके दांत खट्टे कर दिये तब वे बारम्बार वहांवालोंकी वीरताकी सराहना करने लगे। साथ ही उत्साहित हो उन लोगोंने आस्ट्रियाके साथ घोर युद्ध करनेकी प्रतिज्ञा की। वेनिसका युद्धपोतोंका बेड़ा सदा तैयार रखा जाता था। सैनिक लोग हथियार पास रखकर सोते थे। सब लोगोंके मनमें सबसे बढ़कर चिन्ता अपने नगरकी स्वतंत्रता बनाये रखनेकी थी।

सं० १८०६ के लगते लगते ट्यूरिनसे एक बड़ा विषम सवार वेनिसमें पहुँचा। नोवेरावालोंकी हार और चार्ल्स एलबर्टके हतोत्साह होकर अपने पुत्रको राज्यभार

सौंपनेका सवाद सुन वेनिसवालोंको बडा आश्चर्य हुआ। वे लोग सेण्टमार्कके मेदानमें एकत्र हुए। तब मैनिनने उनसे कहा कि मुझे अभी तक सरकारी तौरपर यह सवाद नहीं मिला। किन्तु उसकी भावभङ्गीको देख यह अनुमान लोगोंने कर लिया कि उस सवादके सत्य होनेमें मेनिनको सन्देह नहीं है। उस दिनकी रात वेनिसवालोंको बडी विकलतासे बितानी पडी। इसी प्रकार जब तीन दिन व्यतीत हो गये, चौथे दिन "सरकारी तौर" पर वह दुस्सवाद मैनिनके पास पहुँचा।

नगरवालोंने उस दुस्सवादकी चोटको सह लिया और पूर्ववत् प्रसन्न और आशावान् दिखलाई पडने लगे। २५ अप्रैलको महात्मा मार्कका स्मरण दिवस मनाया गया। बडी धूम धामसे उत्सव हुआ। उस दिन मेनिनने लोगोंसे कहा– "अभी तक विजयश्री हमारे पक्षमें रही है और रहेगी। महात्मा मार्ककी जय हो। यह जयजयकार प्राचीन समयमें समुद्रकी लहरोंसे प्रतिध्वनित होती थी, अब इसको हमें प्रतिध्वनित करना चाहिए। समूचा युरोप हमारी ओर टकटकी लगाये देख रहा है। वही पीछे हमारी प्रशसा करेगा। विजयश्री हमारे ही पक्षमें होनी चाहिए।" मेनिनके इन शब्दोंका अच्छा प्रभाव पडा।

स० १६०६ की वसन्त ऋतुमें आस्ट्रियाने वेनिसपर जल और स्थल मार्गोंसे आक्रमण किया। जब शासन समितिने आस्ट्रियावालोंका सामना करनेका मन्तव्य स्वीकार किया तब लोगोंने लाल रङ्गका फीता अपनी छातीपर धारण किया और लाल रङ्गका एक बडा भारी झण्डा खडा किया। यह शत्रुको सूचना देता था कि स्मरण रखो यदि

वेनिसपर तुमने क्रूर दृष्टि डाली तो लाल रङ्गकी नदियां वहेंगी, प्रत्येक सड़क चौराहों गलियोंके मोड़ोंकी दीवालोंपर विज्ञापन चिपकाये गये, जिनपर छपा था कि "वेनिसको शत्रुका सामना करना है। गिजर्घरोंके वरतन, स्त्रियोंके गहने, पीतलके घण्टे, तांवेके रसोईके वरतन, शत्रुकी तोपोंके गोलेका लोहा आदि सब ही पदार्थ उपयोगी हैं, केवल क्रोटस [आस्ट्रियन सैनिक विशेष] नगरमें न घुसने पावें।

कारीगर लोग अहर्निश जहाज वनानेमें लगे रहते। प्राचीन समयमें जलयुद्ध जैसी वीरता और उत्साह के साथ हो सकता था, वेनिसके युद्धपोतोंके वेड़ेने शत्रुके साथ वैसा ही युद्ध किया। समुद्रतटपर तोपखाना खड़ा किया गया था। जो शत्रुके जहाजी वेड़ेपर अविराम गोलोंकी वृष्टिकर किनारेपर फटकने भी नहीं देता था। तोपखानेमें एक दल सैनिकोंका था, जिसमें वेनिसके धनियोंके घरानेके नवयुवक काम करते थे। इन्होंने अपनी पोशाक सब सैनिकोंसे वढ़िया वनवा ली थी, और वडे उत्साहके साथ युद्ध कर रहे थे। जिस समय मेलवेराके दुर्गपर विकट सग्राम हुआ उस समय इन वीर नवयुवकोंका उत्साह और निर्भय होकर लड़ना देखते ही वन पड़ता था। दुर्गसे वे अविराम गोले वरसा रहे थे, जब शत्रुके वम्वके गोलोंसे कोई युवक मरता तो झट दूसरा युवक उसकी जय कहकर मरे हुए के रिक्त स्थानपर जा खड़ा होता था। इतिहासमें वडे वडे सग्रामोंका इतिवृत्त पाया जाता है किन्तु जरासे वेनिस नगरने स्वाधीनताकी रक्षाके लिये प्राणपणसे जैसा सग्राम किया, वैसे दूसरे उदाहरणके लिये इतिहास चुप है।

इस वर्ष सावनमें एक ओर तो आस्ट्रियन सेनाने नगरपर

गोले बरसाने आरम्भ किये, उधर हैजेने जोर पकडा, और आस्ट्रियन जासूसोंने लोगोंको भगाकर नगरमें विद्वेष और असन्तोष फैला दिया। मैनिनको बडा भय घरकी फूटका था। वह शत्रुसेनासे उतना नहीं डरता था जितना वह घरकी फूटसे भयभीत होता था। मैनिनके मुँहपर तो किसीको कुछ कहनेका साहस नहीं होता था, किन्तु उसके द्वारपर लोग बडबडाते हुए असन्तोष प्रकट करते थे। जब वे शब्द मैनिनके कानमें पडे वह निर्भय हो उनके सामने निकला और उनसे कहा "वेनिसवालो, क्या ये काम तुम्हारे लिये शोभाजनक हैं? तुम किसी जाति या समूहके अगुआ नहीं हो। तुम एक समूहके तुच्छ अवयव हो। मैं तुम्हारे ऐसे अनपढ लोगोंकी बतलायी राहपर नहीं चल सकता। मैं तो केवल उनके कथनानुसार काम करूँगा, जिन्हें सर्वसाधारणने अपना प्रतिनिधि बनाकर समितिका सभ्य नियुक्त किया हो। मुझे लल्लो चप्पोकी बात नहीं करने आती। मैं सत्य कहूँगा, चाहे कोई मेरे गलेपर तलवार ही क्यों न रख दे। तुम लोग यहाँसे तुरन्त अपने अपने घर चल दो।"

उसकी बातोंका प्रभाव गँवारोंके उस समूहपर भी पडा। उन्होंने तालियाँ बजाकर सन्तोष और प्रसन्नता प्रकट की। असन्तोष शान्त हुआ। किन्तु लोगोंकी निराशा बढने लगी। एक मुट्ठीभर मनुष्य एक बडे साम्राज्यका सामना क्योंकर कर सकते थे। मैनिनने सोचा कि इस समय मुझे संसारको यह दिखा देना है कि वेनिसवालोंने वीरोचित साहस दिखलाकर वीरगति प्राप्त की है।

नगरपर आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक विपत्तियाँ छायी हुई थीं। सावनके अन्तिमदिन मैनिनने सेण्ट

[illegible] मेरे साथ [illegible] और [illegible] [illegible] इस [illegible] [illegible] हुआ।

[illegible] नगरमें [illegible] [illegible]

[illegible] दिन [illegible] [illegible] और यह [illegible] [illegible] हुआ। [illegible] [illegible]

[illegible]



वेनिसका रक्षक डेनियल मेनिन

जन्म सं० १८६१] [मरण आश्विन कृष्ण १२, सं० १९१४

नाम मेइस्ट्रा है, जा बसा। वहाँ उसने वकालत शुरू की। आस्ट्रियन सरकारके पक्षपातपूर्ण नियमोंके कारण वह केवल दीवानी मामलोंका ही काम कर सकता था और सो भी एक सलाहकारके तौर पर, वकीलकी हैसियतसे नहीं।

डेनियल बाल्यावस्थाहीसे स्वास्थ्य-सुखसे वञ्चित था। यद्यपि उसमें उत्साह बहुत था और वह बडा उद्योगी था, तथापि उसका शरीर उसे प्राय जवाब दे दिया करता था और तब वह कोई भी काम नहीं करपाता था। बडे होने-पर उसने एक बार लिखा था कि शरीर नीरोग रहने-से बढकर सुखप्रद वस्तु दूसरी नहीं है, किन्तु दुर्भाग्यवश रोगाक्रान्त रहनेके कारण मेरे लिये मेरा रोगग्रस्त शरीर बाल्यावस्थाहीसे चिन्ता और दु खका कारण है। जिस समय कोई बडा काम आपड़ता, उस समय वह अस्वस्थ हो जाता था।

मैनिनको अपने व्यवसायका कार्य करनेके बाद जो समय मिलता उसे वह वैनीशियन (Patois) पटोइसके पढनेमें एव वेनिसको आस्ट्रियाके अत्याचारोंसे मुक्त करनेके उपाय सोचनेमें व्यतीत करता था। सवत् १८८७ वि०में जब उसकी अवस्था केवल २६ वर्षकी थी, तब उसने अपने तीन अभिन्न मित्रोंसे परामर्शकर आस्ट्रियन अस्त्रागारको हस्तगत करना चाहा और एक घोषणापत्र बनाया जिससे वेनिसमें बसने वाले लोगोंमें उत्तेजना फैले और प्रजा विदेशी शासकोंके विरुद्ध शस्त्र ग्रहण करे। किन्तु वह इस उद्योगमें सफल न हुआ और उसका प्रयत्न निष्फल हुआ। भाग्यवश उस घोषणापत्रके प्रकाश करनेवालोंका पता न चला और मैनिन पूर्ववत् अपने व्यवसायमें डटा रहा। तबसे उसने गुप्तसमि-

तियोंकी शक्तिपर विश्वास करना छोड दिया और वह आस्ट्रियावालोंके छिद्र ढूंढने लगा। जिस लेखको पढकर सबसे प्रथम आस्ट्रियन गवर्नमेण्टका ध्यान उसकी ओर गया था, वह लेख उसने इटलीके कोठीवालोंकी ओरसे लिखा था। ये लोग जर्मनीवालोंके साथ वेनिस और मिलनके बीचमें रेलकी सड़क बनाना चाहते थे। उन दोनों में रेलका मार्ग निर्दिष्ट करनेमें परस्पर मतभेद होनेके कारण वादविवाद हुआ। आस्ट्रियन सरकारके प्रतिनिधिने जर्मनी वालोंका पक्ष लिया। मैनिनने इटलीके धनियोंका पक्ष ग्रहणकर उनके मतका समर्थन बड़ी योग्यतासे किया। आस्ट्रियाकी सरकारने बिना समझे बूझे इस झगडेको निब टानेके लिये अन्यायपूर्वक 'इटालियन रेलवे एसोसियेशन'-को तोड दिया। सरकारका यह कार्य उसके आईनके सर्वथा विरुद्ध था। मैनिनको अच्छा अवसर हाथ लगा और उसने सरकारकी खासी पोल खोल दी। उसने भली भांति विचारपूर्वक यह सोच रखा था कि सहसा यदि विद्रोह या विप्लव होगा तो सिवाय होनहार नवयुवकोंके प्राणोंकी हानिके कोई आशाजनक कार्य न होगा। अत वह समय समयपर सरकारके अन्याय्य कार्य्योंको विस्तृत रूपसे वेनिसवालोंको सुझाकर आस्ट्रियन गवर्नमेण्टकी ओरसे वहांवालोंके मनमें घृणा और विराग उत्पन्न करता रहा।

इटालियन कोठीवालोंकी ओरसे उनका पक्ष समर्थन करनेसे मैनिनकी ख्याति बढी और वेनिसवाले उसे एक अच्छा वक्ता और आईनवेत्ता मानने लगे। उसने वेनिसवालों-की एक समितिविशेषमें एक व्याख्यान दिया। उस व्याख्यान-में उसने यह दिखलाया था कि जो विचारशील हैं-जिनको

भगवान्ने जटिल विषयोंको सुलझानेके लिये गम्भीर विचारशक्तिसे सम्पन्न किया है, उनका यह परम कर्त्तव्य है कि वे उस शक्तिद्वारा उन लोगोंसे काम लें, जो काम करनेकी शक्ति रखते हैं। इस व्याख्यानका प्रभाव वहाँवालोंपर अच्छा पडा और जो योग्य और विचारशील होनेपर भी आलस्यके दास बनेहुए थे, उनकी निद्रा भङ्ग हुई और वे अपने देशके व्यापार और कारीगरीकी ओर ध्यान देने लगे। उसको आशा थी कि उत्तरी इटली नवीन अबाध वाणिज्यके सिद्धान्तोंद्वारा एक हो जायगी। भाग्यवश उन्हीं दिनों अबाध वाणिज्यका पक्षपाती कावडन नामक एक अङ्गरेज इटलीमें भ्रमण करता हुआ वेनिस पहुँचा और मैनिन एव वहाँके अन्य गण्यमान्य और अबाध वाणिज्यके सिद्धान्तके पक्षपातियोंसे मिला।

वेनिसवालोंको व्याख्यान द्वारा उत्साहित करनेका मैनिनको कई बार अवसर मिला। स० १८०४ई०के सितम्बर मासमें कांग्रेसका अधिवेशन हुआ। मैनिन उसका कमिश्नर नियुक्त किया गया और वेनिसके धर्मसस्थानोंके विषयमें अनुसन्धान करनेका कार्य उसे सौंपा गया। अनुसन्धान करते समय उसने एक दीवारपर एक विज्ञापन चिपका हुआ देखा। वह विज्ञापन एक निर्बल श्रमजीवीका था। उसमें उसने लिखा था कि वहाँकी सरकारने उसके पेटका प्रबन्ध न कर उसे पागल बना पागलखानेमें ठूँस रखा है। मेनिनने इसकी सूचना देते हुए लिखा- डाकृर इस मनुष्यके होश हवास दुरुस्त बतलाते हैं, पर पुलिस और गवर्नमेण्टके डरके मारे उसे छोडते नहीं। मुझे इसपर विश्वास नहीं होता। क्योंकि मेरी धारणा पुलिस और

गवर्नमैएटकी ओरसे बुरी नहीं है। मैं यह बात स्वीकार करनेके लिये उद्यत नहीं हूँ कि सरकार बलात् किसीको पागल बनाती हो। यदि श्रमजीवीने कोई अपराध किया होता तो उसे दण्ड देनेके लिये पर्याप्त आईन था।" इसपर वहाँका गवर्नर काउएट पैलफी बहुत बिगडा। उसने कहा–"उस श्रमजीवीको मुक्त करके उसकी जगह इस मैनिनको ही बन्द करना होगा।"

इसी समय वेनिसके गवर्नरके एक सम्बन्धी काउएट जेव लोस्कीने एक पत्र लिखा जिसमें वेनिसके निवासियोंसे उसने अनुरोध किया था कि वे सन्तोषपूर्वक आस्ट्रियन गवर्नमेंट की अधीनतामें बने रहें और स्वाधीनता पानेसे हताश हों। उस पत्रका उत्तर मैनिनने एक पृष्ठमें बडी विलक्षण रीतिसे दिया था। उस समय मैनिनका लेख प्रकाश नहीं हुआ पर पीछेसे वह छापा गया। उस पत्रको हम ज्योंकात्यों यहाँ उद्धृत करते हैं—

"It is fashion to preach resignation

I distinguish two kinds of resignations, the one virtuous and manly, the other cowardly and worthy only of fools

The strong man, when overcome by misfortune, seeks the means of remedying it Does he find any? In spite of difficulties, he applies himself to the task, excited, cheerful and vigorous, full of energy and pertinacity It is only when he is certain that no remedy exists, that he becomes resigned This is manly resignation

The coward, when misfortune overtakes him, also allows himself to be cast down, and seeks no means of remedying it However spontaneous and easy relief may present itself to his mind, he attempts nothing, he wishes neither to trouble nor expose himself—he is resigned this is the resignation of the fool

Therefore, resignation is virtuous and manly under evils manifestly without remedy, it is cowardly and stupid when we can in any way free ourselves from these evils

In the individual, resignation may often be virtuous, in nation it is perhaps never so, for the misfortunes of a nation are seldom irremediable

To overcome the misfortunes of a nation, we can employ the whole intellectual, moral and physical power of all its citizens, and if the generation which commences the generous task does not succeed in accomplishing it, other generations follow, who will attain success, for nations never die"

मेनिनने अपने सारे राजनैतिक विचार बीजरूपसे उपरोक्त लेखमें कूट कूटकर भरदिये हैं। उसके लेखका मर्म यह है—"आजकल यह चाल निकल पडी है कि लोग विरत हो जानेका उपदेश दिया करते हैं।

गवर्नमैएटकी ओरसे बुरी नहीं है। मैं यह बात स्वीकार करनेके लिये उद्यत नहीं हूँ कि सरकार बलात् किसीको पागल बनाती हो। यदि श्रमजीवीने कोई अपराध किया होता तो उसे दण्ड देनेके लिये पर्याप्त आईन था।" इसपर वहाँका गवर्नर काउएट पैलफी बहुत बिगड़ा। उसने कहा-"उस श्रमजीवीको मुक्त करके उसकी जगह इस मैनिनको ही बन्द करना होगा।"

इसी समय वेनिसके गवर्नरके एक सम्बन्धी काउएट जेब लोस्कीने एक पत्र लिखा जिसमें वेनिसके निवासियोंसे उसने अनुरोध किया था कि वे सन्तोषपूर्वक आस्ट्रियन गवर्नमेंट-की अधीनतामें बने रहें और स्वाधीनता पानेसे हताश हों। उस पत्रका उत्तर मैनिनने एक पृष्ठमें बड़ी विलक्षण रीतिसे दिया था। उस समय मैनिनका लेख प्रकाश नहीं हुआ पर पीछेसे वह छापा गया। उस पत्रको हम ज्योंकात्यों यहाँ उद्धृत करते हैं—

"It is fashion to preach resignation

I distinguish two kinds of resignations, the one virtuous and manly, the other cowardly and worthy only of fools

The strong man, when overcome by mis fortune, seeks the means of remedying it Does he find any? In spite of difficulties, he applies himself to the task, excited, cheerful and vigorous, full of energy and pertinacity It is only when he is certain that no remedy exists, that he becomes resigned This is manly resignation

The coward, when misfortune overtakes him, also allows himself to be cast down, and seeks no means of remedying it However spontaneous and easy relief may present itself to his mind, he attempts nothing, he wishes neither to trouble nor expose himself—he is resigned this is the resignation of the fool

Therefore, resignation is virtuous and manly under evils manifestly without remedy, it is cowardly and stupid when we can in any way free ourselves from these evils

In the individual, resignation may often be virtuous, in nation it is perhaps never so, for the misfortunes of a nation are seldom irremediable.

To overcome the misfortunes of a nation, we can employ the whole intellectual, moral and physical power of all its citizens, and if the generation which commences the generous task does not succeed in accomplishing it, other generations follow, who will attain success, for nations never die"

मैनिनने अपने सारे राजनैतिक विचार बीजरूपसे उपरोक्त लेखमें कूट कूटकर भरदिये हैं। उसके लेखका मर्म यह है—"आजकल यह चाल निकल पडी है कि लोग विरत हो जानेका उपदेश दिया करते हैं।

गवर्नमैण्टकी ओरसे बुरी नहीं है। मैं यह बात स्वीकार करनेके लिये उद्यत नहीं हूँ कि सरकार बलात् किसीको पागल बनाती हो। यदि श्रमजीवीने कोई अपराध किया होता तो उसे दण्ड देनेके लिये पर्याप्त आईन था।" इसपर वहाँका गवर्नर काउण्ट पैलफी बहुत बिगडा। उसने कहा-"उस श्रमजीवीको मुक्त करके उसकी जगह इस मैनिनको ही बन्द करना होगा।"

इसी समय वेनिसके गवर्नरके एक सम्बन्धी काउण्ट जेव लोस्कीने एक पत्र लिखा जिसमें वेनिसके निवासियोंसे उसने अनुरोध किया था कि वे सन्तोषपूर्वक आस्ट्रियन गवर्नमेंट की अधीनतामें बने रहें और स्वाधीनता पानेसे हताश हों। उस पत्रका उत्तर मैनिनने एक पृष्ठमें बड़ी विलक्षण रीतिसे दिया था। उस समय मैनिनका लेख प्रकाश नहीं हुआ पर पीछेसे वह छापा गया। उस पत्रको हम ज्योंकात्यों यहाँ उद्धृत करते हैं—

"It is fashion to preach resignation

I distinguish two kinds of resignations, the one virtuous and manly, the other cowardly and worthy only of fools

The strong man, when overcome by misfortune, seeks the means of remedying it Does he find any? In spite of difficulties, he applies himself to the task, excited, cheerful and vigorous, full of energy and pertinacity It is only when he is certain that no remedy exists, that he becomes resigned This is manly resignation

The coward, when misfortune overtakes him, also allows himself to be cast down, and seeks no means of remedying it However spontaneous and easy relief may present itself to his mind, he attempts nothing, he wishes neither to trouble nor expose himself—he is resigned this is the resignation of the fool

Therefore, resignation is virtuous and manly under evils manifestly without remedy, it is cowardly and stupid when we can in any way free ourselves from these evils

In the individual, resignation may often be virtuous, in nation it is perhaps never so, for the misfortunes of a nation are seldom irremediable

To overcome the misfortunes of a nation, we can employ the whole intellectual, moral and physical power of all its citizens, and if the generation which commences the generous task does not succeed in accomplishing it, other generations follow, who will attain success, for nations never die"

मैनिनने अपने सारे राजनैतिक विचार बीजरूपसे उपरोक्त लेखमें कूट कूटकर भरदिये हैं। उसके लेखका मर्म यह है—"आजकल यह चाल निकल पडी है कि लोग विरत हो जानेका उपदेश दिया करते हैं।

"वैराग्य दो प्रकारका है। एक तो गौरव और महत्त्वयुक्त, और दूसरा निन्दास्पद, और जो केवल भीरु एवं मूर्खोंहीके लिए शोभाजनक है।

"जो धैर्य्यवान मनुष्य होता है वह विपत्ति पडनेपर उससे निस्तार पानेका उपाय सोचता है। यद्यपि विपद्से मुक्त होनेका उपाय कष्टप्रद ही क्यों न हो, किन्तु वह हाथपर हाथ रख चुप नहीं बैठ रहता, अथवा हताश हो वैरागी नहीं होता, किन्तु उस सङ्कटसे मुक्त होनेके लिये, प्रसन्न मनसे उत्साह एव साहसपूर्वक प्रयत्न करता है। तिस पर भी जब उसे सफलता प्राप्त नहीं होती, तब वह हताश होकर वैराग्यकी शरण लेता है। यह वैराग्य पुरुषोचित वैराग्यकी श्रेणीमें परिगणित करने योग्य है।

"यदि कोई भीरु पुरुष किसी सङ्कटमें पड जाता है तो हाथ पर हाथ रखकर बैठ रहता है और सङ्कटसे निस्तार पानेका उपाय रहते हुए भी वह हाथ पैर नहीं हिलाता और स्वय हताश होकर विरत हो जाता है। यह वैराग्य मूर्खोंका है।

"अत विपद्का उपाय न रहते विरक्त होना गौरवास्पद है, किन्तु कठिनाइयोंसे निस्तार पानेका उपाय रहते विरक्त होना मूर्खोंका काम है।

"व्यक्तिगत विरति गौरवकी वस्तु हो सकती है, किन्तु जनसमूह या जातिके लिये किसी प्रकारकी विरति कल्याण जनक नहीं। क्योंकि कोई भी ऐसा जातीय सङ्कट नहीं, जिसका प्रतीकार न हो।

"जातीय सङ्कटोंसे निस्तार पानेके लिये, उन जातिवालोंको अपनी शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक आदि सारी शक्तियों का प्रयोग करना चाहिए। यदि उन लोगोंके किये वह

ज़ातीय सङ्कट दूर न हुआ तो उन्हें विरक्त न होना चाहिए, क्योंकि जो काम वे नहीं करसके, सम्भव है आगेकी पीढी, उनके आरम्भ किये हुए कार्यको पूरा कर, सफलता प्राप्त करे।

'इसीसे जो लोग किसी जातिविशेषको वैराग्य या त्यागकी शिक्षा देते हे वे एक जातिको भीरु बनाते हैं और जो जाति उनके कथनपर ध्यान देकर कार्य करती है वह भीरु है।"

जिन लोगोंके ऐसे विचार थे उनको भला आस्ट्रिया किस प्रकार सदा अपने दास बनाकर अपनी अधीनतामें रख सकता था ?

मेनिनने सकल्प सा कर लिया था कि वह निरन्तर इस बात को प्रकट करे कि आस्ट्रियन गवर्नमेण्टने जो नियम इटालियन प्रजाके लिए बनाये हैं, उनके अनुसार वह न्याय वर्ताव नहीं करती। आस्ट्रियन गवर्नमेंटकी अन्य शासनपद्धतियोंमें एक यह भी पद्धति थी कि उसने सार्वदेशीय और प्रान्तीय (Imperial and Provincial) कौन्सिलें नियत कर दी थीं। इन कौन्सिलोंमें वेनिस और लोम्वर्डीकी प्रजाके प्रतिनिधियोंको अधिकार था कि प्रार्थनाके रूपमें वे अपनी कष्ट कथा शासकवर्गके कानतक पहुंचा सकें। किन्तु अहङ्कारमें डूबी हुई आस्ट्रियन गवर्नमेण्टके प्रतिनिधिरूप शासकोंने प्रजाके इस तुच्छ अधिकारको भी आत्मसात् करडाला था। इससे व्यथित हो स० १८०४में नजारी ने, जो "लोम्बार्डी काग्रीगेशन"का डिप्टी था, प्रस्ताव किया कि प्रजाके कष्टोंकी कहानी इम्पीरियल गवर्नमेंटको सुनायी जाय। किन्तु वेनिसके किसी भी अन्य डिप्टीने उसका साथ न दिया। लेकिन मैनिनने अपनी ओरसे वेनिस-

जातीय सङ्कट दूर न हुआ तो उन्हें विरक्त न होना चाहिए, क्योंकि जो काम वे नहीं करसके, सम्भव है आगेकी पीढ़ी, उनके आरम्भ किये हुए कार्यको पूरा कर, सफलता प्राप्त करे।

"इसीसे जो लोग किसी जातिविशेषको वैराग्य या त्यागकी शिक्षा देते हैं वे एक जातिको भीरु बनाते हैं और जो जाति उनके कथनपर ध्यान देकर कार्य करती है वह भीरु है।"

जिन लोगोंके ऐसे विचार थे उनको भला आस्ट्रिया किस प्रकार सदा अपने दास बनाकर अपनी अधीनतामें रख सकता था?

मैनिनने सकल्प सा करलिया था कि वह निरन्तर इस बात को प्रकट करे कि आस्ट्रियन गवर्नमेंएटने जो नियम इटालियन प्रजाके लिए बनाये हैं, उनके अनुसार वह स्वय बर्ताव नहीं करती। आस्ट्रियन गवर्नमेंटकी अन्य शासनपद्धतियोंमें एक यह भी पद्धति थी कि उसने सार्वदेशीय और प्रान्तीय (Imperial and Provincial) कौन्सिलें नियत कर दी थीं। इन कौन्सिलोंमें वैनिस और लोम्बर्डीकी प्रजाके प्रतिनिधियोंको अधिकार था कि प्रार्थनाके रूपमें वे अपनी कष्ट-कथा शासकवर्गके कानतक पहुचा सकें। किन्तु अहङ्कारमें डूबो हुए आस्टियन गवर्नमेंएटके प्रतिनिधिरूप शासकोंने प्रजाके इस तुच्छ अधिकारको भी आत्मसात् करडाला था। इससे व्यथित हो स० १८०४में नजारी ने, जो "लोम्बार्डी कांग्रीगेशन"का डिप्टी था, प्रस्ताव किया कि प्रजाके कष्टोंकी कहानी इम्पीरियल गवर्नमेंटको सुनायी जाय। किन्तु वेनिसके किसी भी अन्य डिप्टीने उसका साथ न दिया। लेकिन मैनिनने अपनी ओरसे वेनिस-

कांग्रीगेशनके पास अपने नामसे एक पत्र भेजा जिसमें उसने उसको लिखा था कि वह प्रजाकी ओरसे उनके कष्टोंको प्रकाश करे। उसने उस सस्थापर टिप्पणी करते हुए अपने पत्रमें लिखा था कि कांगिगेशनने आजतक कभी प्रजाके कष्ट एव अभावोंको सरकारके सामने प्रकट नहीं किया। उसके इस मौनावलम्बनका कारण यह जान पडता है कि उसे भय है कि उसके ऐसा करनेसे कहीं शासकोंकी उस-पर क्रूर दृष्टि न पडे, किन्तु उसका यह भय नितान्त अन्याय युक्त एवं हानिकर है। क्योंकि यह भी अन्याययुक्त और हानिकर है कि हम लोग समझ बैठें कि सरकारने इस प्रान्तके प्रतिनिधियोंको जो अधिकार दिये हैं वे दिखावा मात्र तथा मनोरञ्जनकी सामग्रीभर हैं और गवर्नमेंट इस प्रान्तहीको नहीं किन्तु यूरपभरको ऐसा आईन बनाकर धोखा दे रही है, जिसके अनुसार कार्य करनेको वह स्वय प्रस्तुत नहीं है और जो उस आईनके अनुसार चला चाहते हैं उन्हें सरकारकी ओरसे दण्ड दिया जाता है।" इस पत्रका समाचार प्रकट होते ही वेनिसवालोंको आशा बँधी कि उनके कष्ट दूर होजायँगे। वेनिसमें टोमेसियो नामका एक कवि था। वह बडा उत्साही एव देशहितैषी था। ६ धनुको उसने और मैनिनने एक प्रार्थनापत्र तैयार किया। इस पत्रमें उन लोगोंने निर्भय हो कर तेजस्विनी भाषामें प्रतिवाद किया कि स० १८७२के आईनके विरुद्ध आस्ट्रियाके प्रेसके सरकारी अध्यक्षने कार्य किया है। इस पत्रके साथ वेनिसके 'एटीनिओ' नामक साहित्यसमितिके सब सदस्योंने भी अपने हस्ताक्षरोंसे युक्त एक निवेदनपत्र भेजा। उस समय उसपर आस्ट्रियन गवर्नमेंटने कुछ भी ध्यान न दिया।

सम्वत् १६०४के अन्तिम भागमें जब इटलीभरमें असन्तोषका प्रवाह प्रवाहित होने लगा, तब भी आस्ट्रियाकी सरकारने उचित ध्यान न दे, इटली नेताओंको शान्त करनेमें शिथिलता की। किन्तु उस निवेदनपत्रको लिखकर भेजनेके लिये ६ मकर १६०५ वि० को मैनिन और टोमेसियोको राजविद्रोहके अपराधमें अभियुक्त कर उन्हें पकड़ कर कारागारमें डाल दिया। इटलीके नवीन उत्साही नवयुवकोंका कुछ ठीक न रहा। जिस दिन उक्त दोनों मनुष्य पकड़े गये उसके दूसरे दिन सवेरे वेनिसकी गलियों और कूचोंमें लोगोंकी भीड उमड पडी। किन्तु तबतक कोई ऐसी बात न हुई जिससे किसी प्रकारके भयके लक्षण दिखलायी पडते। गलीकूचोंमें लोग यह अवश्य कहते थे कि "इटलीकी जय" "मैनिन और टोमेसियोकी जय।'

कारागारमें मैनिनको बडा कष्ट था। सबसे बढ़कर चिन्ता तो उसे अपनी प्रिय बेटीकी थी, जिसे वह बीमारीकी दशामें खाटपर छोड आया था। इस चिन्तासे छुटकारा नहीं मिलने पाया था कि उसकी छोटी बहिन अपने भाईकी विपत्तिका समाचार सुन, मर्माहत हुई और मर गयी! मैनिन विपद् कालके लिये कुछ भी द्रव्य सञ्चय नहीं कर पाया था जो इस समय उसकी गार्हस्थ्य चिन्ताको कम कर सकता। उसके ये सारे कष्ट और चिन्तायें उसके मनको ही व्यथित करती थीं, किन्तु वैसे देखनेमें उसके मुखपर चिन्ता या भयका कोई चिह्न परिलक्षित नहीं होता था। उसने कारागारसे अपनी स्त्रीको पत्र लिखा, जिसमें और सब बातोंके साथ यह भी लिखा कि इतने नोट अमुक स्थानपर और इतने रुपये अमुक स्थानपर रखे हैं। उसने अपने

पत्रमें यह भी लिखा था कि–"इन रुपयोंसे अपना काम निकालना। यदि मेरे छुटकारेमें विलम्ब हुआ तो तुम्हारे निर्वाहका कोई दूसरा उपाय सोचकर लिखूँगा। प्रिये! परस्परप्रेम-पूर्वक रहना और सन्तोष रखना, यही कहना है।"

मैनिनकी स्त्रीने अपने पतिको जमानतपर छुडानेका बहुत प्रयत्न किया। अफसर लोग पहले तो उसे आजकल कहकर टालते रहे, अन्तमें डिरेक्टर जनरलने कहा कि–"हमें तुम्हारे पतिको छोडनेका अधिकार नहीं है।" डिरेक्टर जनरलके इस उत्तरसे सर्वसाधारण जन बहुत क्रुद्ध हुए। वेनिसवालोंने शोकसूचक काले कपडे पहने और नङ्गे सिर धीरे धीरे उस कारागारके द्वारके सामनेसे निकले जिसमें मैनिन और टोमोसियों बन्द थे। जबतक मैनिन जेलमें रहा तबतक उसके सहयोगियोंने मिलकर कोर्टसम्बन्धी उसके कामका भार उठा लिया और उसके प्रगाढ मित्रोंने उसके परिवारका व्ययभार उठाना चाहा। मैनिनको स्वय आशा थी कि वह घरका खर्च आईनकी एक पुस्तककी बिक्रीसे चला लेगा। किन्तु गवर्नमेण्टने तो उस पुस्तककी बिक्रीका विज्ञापन छपानेकी भी उसे आज्ञा न दी। थोडे दिनों पीछे ऐसा नियम बना कि विज्ञापन छपानेके लिये, गवर्नमेण्टसे आज्ञा लेनेकी आवश्यकता ही न रही। मैनिनके परिवारका निर्वाह उस पुस्तककी बिक्रीकी आयसे एव उसकी मृत छोटी भगिनीकी छोडी हुई थोडीसी सम्पत्तिसे होने लगा।

इटलीके लोग जब अत्याचारियोंका सामना करनेको कटिबद्ध हुए और जब यह समाचार वेनिसवालोंने सुना तब उनका भी उत्साह उत्तरोत्तर बढ़ने लगा। उस देशके इतिहासप्रसिद्ध निकोलेटी एव केसटिलेनी—नामक दो दलों-

के काले और रक्तवर्ण जातिके लोग, प्राचीन वैरभावको भूलकर एक हो गये और उन्होंने गुप्तरूपसे शपथ खायी कि आस्ट्रिया वालोंसे हम तवतक वरावर लडते रहेंगे, जवतक वेनिस को विदेशियोंके अधिकारसे निकालकर स्वतन्त्र न कर लेंगे। वेनिसके जो नवयुवक गवर्नमेण्टके दफ्तरोंमें या अन्य पदोंपर नियुक्त थे, उन सवने मिलकर इस्तीफा दे दिया। मैनिन और टोमेसियोका अभियोग अभीतक चलही रहा था किन्तु वहाँकी पुलिस उन दोनोंके विरुद्ध कोई वात प्रमाणित नहीं कर पायी थी, पर यह किम्वदन्ती लोगोंमें फैल गयी थी कि दोनोंपर अपराध प्रमाणित हो चाहे न हो, किन्तु सरकार वलात् उन दोनोंको स्पेलवर्डीके कारागारमें भेजनेवाली है। यह कारागार वडा वुरा समझा जाता था, क्योंकि उस कारागारमें इटलीके अनेक देशहितैषियोंकी मानवी लीला परिपूर्ण हो चुकी थी। इतनेमें मेनिनने सुना कि फरासीसियों ने अपने राजाको राजसिंहासनसे च्युत कर दिया। यह सुन वह विस्मित हुआ और सोचने लगा, देखें इस विप्लव के पवनका वेनिसपर कैसा प्रभाव पडता है। प्रभावका फल जाननेके लिये मैनिनको चिरकालतक प्रतीक्षा न करनी पडी—विप्लवकारी अग्निकी चिनगारियाँ उडकर सारे यूरपमें फैल गयीं मेटारनिक प्राण लेकर भागा, अस्ट्रियन राज्यका राजसिंहासन हिलने लगा। परिणामदर्शी मैनिनने भावी परिणामको विचार कारागारहीमें वैठे वैठे वेनिसको विप्लवसे वचानेके उपाय निश्चित किये। सं० १८५४ के चौथे मीनार्कको वेनिसमें वडी खलवली दिखलायी दी। जो देखो वह समुद्रके तटकी ओर जाता हुआ दिखलाई देता था। सव लोग वाइनाके सवसे अन्तिम समाचार जाननेके लिये उत्सुक

थे। जिस जहाजके आगमनकी प्रतीक्षा वे लोग कर रहे थे, वह बन्दरगाहमें आया। नावोंमें बैठकर वेनिसवाले उस जहाजके पास गये। उस जहाजके यात्रियोंमें फ्रांस देशवासी एक व्यापारी भी था। वह वेनिसवालोंकी उत्सुकताका कारण ताड गया। उसने जहाजपर बैठे ही बैठे चिल्लाकर कहा— "A constitution at Vienna! The Recognition of Italian Independence! A free Press! A National Guard!'

अर्थात् "वीनामें जो नया राज्यसम्बधी सङ्गठन हुआ है, उसने इटली देशकी स्वतन्त्रताको स्वीकार कर लिया है, साथ ही मुद्रणयन्त्रालयोंको भी स्वतन्त्रता दी गयी है और एक जातीय रक्षकदल सङ्गठित किया गया है।" यह सुनते ही वे लोग वहाँसे लौटे और दोड़ते हुए सीधे गवर्नर की कोठीपर पहुँचे। उन लोगोंने पहुचते ही गवर्नरसे मैनिन और टोमेसिओको छोड देनेके लिये कहा। उनकी बातें सुन गवर्नरने पहले तो इतस्तत· करके नाहीं की, अन्तमें उनको जनसाधारणकी बात माननी ही पडी। गवर्नरने कहा "I do what I ought not to do" अर्थात् "मैं वह काम करता हूँ, जो मुझे न करना चाहिए।" यह सुन वहाँसे वे लोग सीधे कारागारकी ओर गये और वहाँ पहुँच एव कारागारके द्वारको तोड़, मैनिन और टोमेसियोका उन्होंने उद्धार किया। उस जनसमूहके नेताओंने उन दोनोंसे कहा—"तुम इस बन्धनसे मुक्त हुए।" किन्तु मैनिन आईनवेत्ता था। वह आईनके विरुद्ध कार्य करनेका अन्तिम परिणाम अच्छी तरह जानता था और ऐसा कोई कार्य करना नहीं चाहता था जो आईन-

विरुद्ध हो। अत उसने उनसे कहा कि "मैं अपनी रिहाईका हुकुमनामा देखना चाहता हूँ।" गवर्नरके हस्ताक्षरसे युक्त आज्ञापत्र उसे दिखाया। तब वह अपने साथीके साथ उस घोर अन्धकारमयी गुहासे बाहर निकला। लोगोंने एक कुर्सीको दो बासोंमें तामजामकी तरह बाँधा। उसपर मैनिनको बिठाकर वे लोग उसका जयजयकार मनाते, उसे सेण्टमार्क बाजारमें लेगये। उस स्थानपर आस्ट्रियाका काला और पीला झण्डा आकाशमें फहराया करता था। उस झण्डेको लोगोंने न जाने कैसे ऊपरसे उतार कर नीचे डाल दिया और उतनी ऊची बल्ली-पर इटली साम्राज्यका लाल, सफेद एव हरे रङ्गोंका झण्डा चढा दिया।

लोग मेनिनसे चिल्ला चिल्लाकर कहने लगे—"आप बोलिये।" मेनिन प्रकाश एव स्वच्छ वायुरहित अन्धकार मय गुफामें चिरकालतक रहते रहते दुर्बल एव पीला पड गया था। जनसमुदायके अनुरोध करनेपर बोलनेके लिये वह खडा हुआ। खडे होकर उसने हृदयग्राही शब्दोंमें व्याख्यान दिया। उसने अपने व्याख्यानमें कहा—'यह तो मैं नहीं जानता कि मुझे क्योंकर कारागारसे छुटकारा मिला, किन्तु मेरे नेत्रोंके सामने जो दृश्य उपस्थित है, उसमे मैं अनुमान करता हूँ कि जातीयता एव देश हितैषिताका अग्नि थोडेही दिनोंके बीचमें आश्चर्यरूपसे धधकने लगा है। किन्तु मेरी एक प्रार्थना है। उसे आप भूलियेगा नहीं। सच्ची और चिरस्थायिनी स्वतन्त्रता, नियम बद्ध कार्यप्रणालीपर निर्भर है। पर दासत्वसे सदाके लिये उन्मुक्त होनेके लिये आपलोगोंको नियमबद्ध कार्यप्रणाली-

का रक्षक और अभिभावक बनना चाहिये।" इतना कहकर वह कुछ समयके लिये चुप होगया और फिर बोला-" हम लोगोंके लिये ईश्वरने ऐसे भी समय निर्दिष्ट कर दिये हैं, जिस समय हमारे पक्षमें राजविद्रोह करना केवल न्यायसङ्गत ही नहीं किन्तु हमारा कर्त्तव्य है।"

मैनिन अपने घर गया और वहाँ आगे काम यथानियम चलानेके लिये उपाय सोचने लगा। होते करते निशाके अन्धकारने वेनिस नगरपर अपना अधिकार कर लिया। इतनेमें ड्यूकेल चेपिलका भय सूचक घण्टा टनटनाने लगा।

वेनिसका वह बाजार जहाँ वेनिसनिवासियोंने इटलीका तिरङ्गा झण्डा खडा किया था आस्ट्रियन सेनासे भर गया। सैनिकोंने इटलीका तिरङ्गा झण्डा उतारकर उसके टुकडे टुकडे करडाले। जिन लोगोंने उनका सामना किया, उनपर सैनिकोंने सङ्गीनोंसे आक्रमण किया। तब कुछ लोग मैनिनके पास गये और उससे कहा आप चलकर हमें आस्ट्रियाकी सेनाके विरुद्ध लडनेका ढङ्ग बतलाइये। इस पर मैनिनने कहा—"यह उपाय ठीक नहीं—नगरमें शान्ति रक्षाके लिये नागरिक रक्षक नियुक्त किये जाने चाहिये।' इसके बाद उसने एक हलकारा गवर्नरकी कोठीपर भेजा और उसके द्वारा गवर्नरको कहला दिया कि—"उससे कहना, उसका जीवन आज मेरे हाथमें था, पर मैंने उस समय अपने व्याख्यानमें ऐसी बातें कहीं, जिनसे शान्ति बनी रहे। अब अपने प्राणोंके विचारसे तथा शान्तिस्थापनके अर्थ उसे उचित है कि तुरन्त वह नागरिक जनोंका एक दल सङ्गठित करे।"

इसपर वेनिसका गवर्नर काउण्ट पैलफी कई दिनोंतक टालमटोल करता रहा। उसने वाइसरायके पास विरोनाको

एक दूत भेजा और वाइसरायने उसे तार द्वारा आज्ञा दी कि वह दो सौ नगर-वासियोंको रक्षक दलमें भर्ती करे।

तीन हजार नागरिक अस्त्र शस्त्र लेकर मैनिनके पास गये और उसकी आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगे। मैनिनने कहा—"जिसे मेरी पूर्णरूपसे आज्ञा माननेमें किसी प्रकारका सङ्कोच हो, वह अभी चला जाय।" यह सुनकर उस दलका एक भी मनुष्य न गया। अन्तमें वेनिसमें वहाँके नगरनिवासियोंकी निजकी सेना तैयार हो गयी।

पर उस समय किसी ओरसे भी मारकाट न हुई। वेनिसके मुखिया मिलकर सोचने लगे कि यदि वाइनामें नवीन शासनपद्धतिके पक्षपाती कृतकार्य हुए तो हम लोगोंको क्या करना होगा। जितने लोग थे उतनी ही अलग अलग सम्मतियाँ थीं। अन्तमें मैनिनने कहा—"हम लोगोंको सबसे आवश्यक वस्तु स्वतन्त्रता है। पहले हमारा नगर हमारे हाथमें आ जाय, तब पीछे यह भी विचार होता रहेगा कि आगे क्या हो।" इतनेमें नगरभरमें नाना प्रकारकी किम्वदन्तियाँ फैलने लगीं। लोग कहने लगे, वेनिस नगरभर गोलोंकी वर्षा की जायगी। १८ मीनार्ककी रात्रिको मैनिनने अपना विचारा हुआ कार्यक्रम नगरके अगुओंके सम्मुख उपस्थित किया और कहा—"हम लोगोंको यहाँके अस्त्रागारको तुरन्त अपने अधिकारमें कर लेना चाहिए।" इस पर कुछ देरतक लोगोंमें परस्पर वादविवाद हुआ, अन्तमें सबने एक स्वरसे मैनिनके प्रस्तावका समर्थन किया। नागरिक सैन्यदलका प्रधान सेनापति बुलाया गया। मैनिनने उससे कहा—'लोगोंको नगरके तोपदन किये जानेका भय है। मैं यहाँके अस्त्रागारको जैसे हो

वैसे अपने लोगोंके हस्तगत कर लेना चाहता हूँ। तुम मुझे एक दिनके लिये सेनाका प्रधान नायक बना दो। अपनी सेनाके दो भाग कर उनकी छ टुकडी बनाओ और उन टुकडियोंके कपतानोंको आठ घण्टेके लिये मेरे अधीन कर दो।" यह सुन प्रधान सेनानायक स्तम्भित हुआ और उत्तर दिये बिना ही चला गया। इस प्रकार कई एक प्रधान सेना नायक आये और मैनिनके विचारोंको भयङ्कर समझ उसके प्रस्तावसे सहमत न हुए।

इतनेमें अस्त्रागारकी रक्षाके लिये जो आस्ट्रियन सेना नियुक्त थी उसमें असन्तोष फैला और उस सेनाने अपने एक अफसरको मार डाला। अब तो नगरमें विप्लव फैलनेका लोगोंको भय उत्पन्न हुआ। नागरिक रक्षक सैन्य दलके सबसे पिछले नायक मेजर आलीवेरीने अपनी टुकडी मैनिनके अधीन कर दी। वकील साहबने अपनी तलवार हाथमें ली और सोलह वर्षके अपने पुत्रको साथ लिया। फिर मैनिन इस दो सौ सिपाहियोंकी टुकडीको लिये हुए अस्त्रागारकी ओर रवाना हुआ और अस्त्रागारके प्रधान रक्षकसे अस्त्रागारको शरणापन्न होनेके लिये विवश किया। जब तक आस्ट्रियन अफसर लोग इसको जान पाये थे कि तबतक मैनिनने अस्त्रागारकी सारी सामग्री वेनिसवालोंको बाट दी। अस्त्रागारको हस्तगत करके उसने सब लोगोंसे सेण्ट मार्क नामक मैदानमें एकत्र होनेके लिये कहला भेजा। इटलीकी जो पक्षयुक्त सिंह-ध्वजा पचास वर्षसे धूलमें लोट रही थी, वह खोल कर खडी की गयी और उसके नीचे मैनिनका सैन्यदल चला। वे लोग उक्त मैदानमें पहुँचे। यहा उसने सब लोगोंसे दोपहरके समय एकत्र होनेको कहा।

दोपहरके समय जब सब लोग एकत्र हुए यह इटलीका झण्डा लेकर खडा हुआ। उसने कहा—"हे वेनिस वालो, अब हम स्वाधीन हैं! और यह स्वतन्त्रता हमें अपना या दूसरेका रक्त बहाये बिना ही प्राप्त हुई है। मेरे निकट देशी विदेशी सभी मनुष्य परस्पर भाई हैं। किन्तु जब पुराना शासन उलट गया है तब नये शासनकी स्थापना उसके स्थानमें अवश्य ही होनी चाहिए। सर्वोत्तम शासन प्रणाली प्रजातन्त्र है। यह प्रणाली हमारे प्राचीन महत्त्वकी परिचायक है और वर्तमान समयकी स्वाधीनताका गौरव बढानेवाली है। स्वतन्त्रता प्राप्त होनेपर भी हम लोग अपने इटालियन भाइयोंसे जुदा न होंगे। किन्तु हम उसे ऐक्यका ऐसा केन्द्र बनावेंगे जिससे इटली एक स्वतन्त्र साम्राज्य बन जाय। यह प्रजातन्त्र प्रणाली चिरायु हो। यह स्वतन्त्रता चिरायु हो! महात्मा सेण्ट मार्क की जय हो।"

इसपर नागरिक रक्षक सैन्यदलने शपथ खायी कि हम प्रजातन्त्र शासनकी एव उसके जन्मदाताकी, अपनी जानें हथेलीपर रखकर रक्षा करेंगे। बूढ़ोंने आनन्दके आँसू बहाये और जवान लोग खुशीके मारे परस्पर गले मिले। जितने लोग वहाँ उपस्थित थे सबने एक मत हो आकाशकी ओर हाथ उठाउठाकर जगन्नियन्ताको धन्यवाद दिया। लोग आनन्दमें पागल हो रहे थे। वेनिसवाले मैनिनको अपना उद्धारकर्त्ता समझने लगे। पाँच दिन और रात मैनिनकी आँखें कभी एक क्षणके लिए भी बन्द नहीं होने पायीं। ज्योंही उसने वहाँके कामसे छुट्टी पायी, त्योंही वह सीधा अपने घर गया। उस समय मैनिनको बडी थकावट प्रतीत हुई। उसने अपने मित्रोंसे कहा—"कृपा कर कमसे कम आजकी रातभर

वैसे अपने लोगोंके हस्तगत कर लेना चाहता हूं। तुम मुझे एक दिनके लिये सेनाका प्रधान नायक बना दो। अपनी सेनाके दो भाग कर उनकी छ: टुकडी बनाओ और उन टुकडियोंके कपतानोंको आठ घण्टेके लिये मेरे अधीन कर दो।" यह सुन प्रधान सेनानायक स्तम्भित हुआ और उत्तर दिये बिना ही चला गया। इस प्रकार कई एक प्रधान सेना नायक आये और मैनिनके विचारोंको भयङ्कर समझ उसके प्रस्तावसे सहमत न हुए।

इतनेमें अस्त्रागारकी रक्षाके लिये जो आस्ट्रियन सेना नियुक्त थी उसमें असन्तोष फैला और उस सेनाने अपने एक अफसरको मार डाला। अब तो नगरमें विप्लव फैलनेका लोगोंको भय उत्पन्न हुआ। नागरिक रक्षक सैन्य दलके सबसे पिछले नायक मेजर आलीवेरीने अपनी टुकडी मैनिनके अधीन कर दी। वकील साहबने अपनी तलवार हाथमें ली और सोलह वर्षके अपने पुत्रको साथ लिया। फिर मैनिन इस दो सौ सिपाहियोंकी टुकडीको लिये हुए अस्त्रागारकी ओर रवाना हुआ और अस्त्रागारके प्रधान रक्षकसे अस्त्रागारको शरणापन्न होनेके लिये विवश किया। जब तक आस्ट्रियन अफसर लोग इसको जान पाये थे कि तबतक मैनिनने अस्त्रागारकी सारी सामग्री-वेनिसवालोंको बाट दी। अस्त्रागारको हस्तगत करके उसने सब लोगोंसे सेण्ट मार्क नामक मैदानमें एकत्र होनेके लिये कहला भेजा। इटलीकी जो पक्षयुक्त सिंह-ध्वजा पचास वर्षसे धूलमें लोट रही थी, वह खोल कर खड़ी की गयी और उसके नीचे मैनिनका सैन्यदल चला। वे लोग उक्त मैदानमें पहुंचे। यहा उसने सब लोगोंसे दोपहरके समय एकत्र होनेको कहा।

विदेशी साम्राज्योंके साथ लिखा पढी आदिका भार अपने ऊपर लिया। उसने वेनिसकी प्रजातन्त्र शासन-पद्धतिका बडी दूरदर्शिता और योग्यताके साथ सङ्गठन किया।

भिन्न भिन्न अधिकारों और शासन-सम्बन्धी पदोंपर उसने भिन्न भिन्न जाति और कर्मके लोग नियुक्त किये। इससे नवीन शासनपद्धतिकी नीव सुदृढ़ हो गयी। वेनिसके सभी निवासियोंका पूर्ण विश्वास हो गया कि सचमुच हम स्वाधीन हो गये और हमारे देशका अधिकार हमारे हस्तगत हो गया। आजसे हमलोग समान अधिकार प्राप्त एक स्वाधीन साम्राज्यके अङ्ग हुए। धर्माध्यक्षने नवीन प्रजातन्त्रके झण्डेको आशिषा दी और जल सेनाके सर्वोच्च नायकने नवीन मन्त्रिदलकी नामावली पढकर लोगोंको सुनायी। जिस समय वह नामावली पढी जा रही थी बीच बीचमें वारवार लोग राष्ट्रपति मैनिनकी जयध्वनि करते जाते थे।

पचास वर्षतक निरन्तर पराधीनताका घोर कष्ट सहकर वेनिस निवासी स्वतन्त्र हुए। अब यह कर्त्तव्य मैनिनकी बाँटमें पडा कि वह नये शासनको निष्कण्टक और स्वतन्त्र बनाये रखे। मेनिन अपने लोगोंकी भीतरी निर्बलताको भली भाति जानता था। उत्तरी इटलीमें फरासीसियोंके साथ मिलगया। पीडमण्टका चार्ल्स एलबर्ट और मैजिनी चाहते थे कि इटलीको इटलीवालेही विदेशी राजसत्तासे मुक्त करें। किन्तु दूरदर्शी मेनिनको वह बात उसी समय सूझ गयी जो कावूरको पीछे सूझी थी कि किसी न किसी विदेशी शक्तिके साथ सद्भाव या मित्रता स्थापित करना, इटलीकी स्वतन्त्रताको बनाये रखनेके लिये परमावश्यक है।

मुझे विश्राम ले लेने दीजिये नहीं तो मैं मर जाऊँगा।"

वेनिसमें आस्ट्रियाकी सरकारकी ओरसे जो सूबेदार था उसने समझा कि हमारे पास जितनी वेतनभुक्त सेना है, उससे हम देशप्रेममें डूबे हुए, वेनिसके निवासियोंका सामना करके सिवाय हानिके लाभ नहीं उठा सकते। अत वेनिस वालोंने जो जो प्रस्ताव किये, उन सबको उसे स्वीकृत करना पडा। सारी विदेशी सेना वेनिससे हटा दी गयी। वहाँका दुर्ग एव सैनिक युद्ध सामग्री, राष्ट्रीयदलको सौंप दी गयी और वहाँका शासन उस नगरके मुख्य मुख्य नेताओंकी एक समितिके हस्तगत कर दिया गया।

उसी रातको नये शासनके अधिष्ठाताओंकी नामावली और आस्ट्रिया सरकारके साथ जो ठहराव किये गये थे, वे प्रकाशित किये गये। उस नामावलीमें मैनिन और टोमिशियो के नाम न देखकर वेनिसवालोंको बड़ा आश्चर्य हुआ। वे लोग सीधे मैनिनके घरपर पहुँचे और उससे सारा हाल कह दिया। उत्तरमें उसने पलङ्गपर पडेही पडे एक पत्र लिखवाया जिसका भावार्थ यह है कि "वेनिसवालो! मैं जानता हूँ तुम्हारा अनुराग मेरी ओर यथेष्ट है और उस अनुरागके नाते मै तुमसे कहता हूँ कि तुम इस आनन्दके अवसरपर ऐसा वर्त्ताव करो जो स्वाधीन जातिके स्वरूपानुकूल है।"

यह सन्देशा सुन सब लोग शान्त हुए और चुपचाप अपने अपने घर चले गये। अगले दिन नयी शासनमण्डली ने नवीन शासन सम्बन्धी नियम बनानेके लिये एक योग्य मनुष्यकी आवश्यकता प्रकट की। सब लोगोंने एक स्वरसे मैनिनको इस कार्यके लिये चुना। उसने उनका प्रस्ताव स्वीकृत किया। वह शासक मण्डलीका सभापति बना और

विदेशी साम्राज्योंके साथ लिखा पढ़ी आदिका भार अपने ऊपर लिया। उसने वेनिसकी प्रजातन्त्र शासन-पद्धतिका बड़ी दूरदर्शिता और योग्यताके साथ सङ्गठन किया।

भिन्न भिन्न अधिकारों और शासन सम्बन्धी पदोंपर उसने भिन्न भिन्न जाति और कर्मके लोग नियुक्त किये। इससे नवीन शासनपद्धतिकी नींव सुदृढ हो गयी। वेनिसके सभी निवासियोंको पूर्ण विश्वास हो गया कि सचमुच हम स्वाधीन हो गये और हमारे देशका अधिकार हमारे हस्तगत हो गया। आजसे हमलोग समान अधिकार प्राप्त एक स्वाधीन साम्राज्यके अङ्ग हुए। धर्माध्यक्षने नवीन प्रजातन्त्रके झंडेको आशिषा दी और जल सेनाके सर्वोच्च नायकने नवीन मन्त्रिदलकी नामावली पढ़कर लोगोंको सुनायी। जिस समय वह नामावली पढ़ी जा रही थी बीच बीचमें बारबार लोग राष्ट्रपति मैनिनकी जयध्वनि करते जाते थे।

पचास वर्षतक निरन्तर पराधीनताका घोर कष्ट सहकर वेनिस निवासी स्वतन्त्र हुए। अब यह कर्त्तव्य मैनिनकी बाँटमें पड़ा कि वह नये शासनको निष्कण्टक और स्वतन्त्र बनाये रखे। मैनिन अपने लोगोंकी भीतरी निर्बलताको भली भांति जानता था। उत्तरी इटलीमें फरासीसियोंके साथ मिलगया। पीडमटका चार्ल्स एलबर्ट और मैजिनी चाहते थे कि इटलीको इटलीवालेही विदेशी राजसत्तासे मुक्त करें। किन्तु दूरदर्शी मैनिनको यह बात उसी समय सूझ गयी जो कावूरको पीछे सूझी थी कि किसी न किसी विदेशी शक्तिके साथ सद्भाव या मित्रता स्थापित करना, इटलीकी स्वतन्त्रताको बनाये रखनेके लिये परमावश्यक है।

फ्रांस उस समय बड़ी अव्यवस्थित दशामें था। उसके मन्त्रिदलको यह अभीष्ट न था कि फ्रांसकी उत्तरी सीमापर, उत्तरी इटली जैसा सुदृढ साम्राज्य बना रहे। उनकी इच्छा (Savoy) सेवायको अपने राज्यमें जोड लेनेकी थी। वे स्वयं प्रजातन्त्रके प्रेमी थे अतः उन्होंने भी अपना यह कर्त्तव्य समझा था कि इटलीके उन अशान्त स्थानोंको आष्ट्रियनोंके अत्याचारसे बचानेमें सहायता दें। फ्रांसके साथ मैत्रीभाव स्थापन करनेका मैनिनने प्रथम स्वयं प्रस्ताव किया। फ्रांसकी ओरसे वेनिसमें प्रतिनिधि था, उसे भी पूरी आशा थी। ३ जूनको वेनिसके अधिवासियोंकी विचार समितिका एक अधिवेशन हुआ। इस समितिके सभ्योंको वेनिस एवं डोगेडोके जिलेमें बसनेवालोंने चुना था। इस समितिमें सबसे प्रथम विचार इस बातपर हुआ कि वेनिसवालोंको लम्बार्डीके साथ मिलकर पेडमाण्टके राजासे मिलना चाहिए कि नहीं। मैनिन का विश्वास था कि यह विषय तब तक विचाराधीन रखा जाय जबतक देशमें सम्पूर्ण रीत्या शान्ति स्थापित न हो जाय किन्तु उपस्थित सभ्योंमेंसे एक प्रभावशाली दलने इसका प्रतिवाद किया। मैनिनके पक्षवालों और विपक्षियोंमें बडी कडी कहा सुनी हुई। दोनों दलोंमें हाथावाही हो जानेकी आशंका उत्पन्न हुई। यह देख मैनिनने खड़े होकर अपने पक्षवालोंसे विनीत भावसे प्रार्थना की कि आप लोग क्षमा करें और इस मेलमें बाधा न डालें। उसके ऐसे नम्र भावको देख मामला वहीं शान्त हो गया और जो कार्य उचित था हुआ। उसी अधिवेशनमें सब लोगोंने मिलकर यह मन्तव्य भी स्वीकृत किया कि "डेनियल मैनिनने देशकी बडी सेवा की है।" मैनिन ने अन्तमें फिर कहा कि जबतक इटलीमें विदेशी सत्ता बनी

हुई है, तबतक मैं प्रार्थना करता हूँ कि ईश्वरको साक्षी मान कर दलबन्दीकी चर्चा न उठाइये। जब हम विदेशी सत्ताका काला मुँह कर दें, तब भ्रातृभावसे हमलोग मिलकर ऐसे विषयोंपर परस्पर विचार कर लेंगे। देशकी सेवा करनेके बदले मैं यही आपसे याचना करता हू।

चार्ल्स एलबर्टके साथ मेल हो गया। अब मन्त्रिदलके चुनावका समय उपस्थित हुआ। लोगोंने मैनिनको प्रधान सचिव चुना, किन्तु उसने उस पदको अस्वीकार किया और कहा–"मैं सदासे प्रजातन्त्र शासनप्रणालीका पक्षपाती हू। राजाके अधीन प्रधान सचिव होना मुझे शोभा नहीं देता। इसके अतिरिक्त शरीररक्षाके लिए मुझे कुछ दिनोंतक विश्रामकी आवश्यकता है।"

वेनिसकी नयी मिनिस्ट्री ७ अगस्ततक चली। अनन्तर चार्ल्स एलबर्टकी ओरसे वहाका शासन रायल कमिशनरोंके हस्तगत किया गया। दुर्भाग्यवश चार्ल्स एलबर्टको लम्बार्डीमें शत्रुकी सेनासे परास्त होना पडा और सेलेसकोके सन्धि-पत्रके अनुसार उसके हाथसे वेनिसके सारे अधिकार निकल गये। जब यह सवाद वेनिसमें पहुँचा वहावाले आश्चर्य चकित हो गए। मारे क्रोधके वे आपेमें न रहे। अन्तमें और उपाय न देख वे मैनिनके घरकी ओर दौडे गये। द्वारपर पहुँचकर मैनिनको पुकारा और रायल कमिश्नरोंकी निन्दा करने लगे। उसने कहा मैं कमिश्नरोंसे जाकर मिलता हूँ। कमिश्नरोंसे मिलकर उसने वेनिसवालोंसे कहा–"परसों सर्वसाधारणकी एक सभा होगी, जो नयी गवर्नमेंट स्थापित करेगी। तबतक अड़तालीस घण्टेके लिए मैं गवर्नर होता हू।" लोग तो यही चाहते थे। यह सुन वे प्रसन्न होते

हुए अपने अपने घर चले गए। निर्दिष्ट दिन सभाका अधिवेशन हुआ। लोगोंने मैनिनको प्रधानाध्यक्ष बनाना चाहा। किन्तु उसने कहा मैं युद्धविद्यासे अपरिचित हूं। तब वहाँके अध्यक्ष पदपर तीन मूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठा की गयी। इन तीनमें एक तो मैनिन था और दोके नाम थे एडमिरल ग्रेंजियेनों और कर्नेल केलचिडेलिस।

जिस समय फ्रांसवाले उत्तरी इटलीवालोंको सहायता देनेका निश्चय कर रहे थे ठीक उसी समय इङ्गलेण्डवाले बीचमें कूद पड़े और दोनोंने मिलकर बीचमें पड़ना चाहा। दुर्भाग्य वश उसी समय चार्ल्स एलबर्टने दोनोंसे सहायता लेना अस्वीकार कर कहा कि इटलीवाले अपनी आग स्वयं बुझा लेंगे। अत वेनिसवालोंके हाथसे विदेशी मित्रोंसे सहायता पानेका अवसर निकल गया। नेपिल्ससे पेडमाण्टतक इटलीका प्रत्येक मनुष्य वीरताप्रदर्शनार्थ उत्सुक था। किन्तु एक सुयोग्य नेताके अभावसे उनका सारा श्रम निष्फल हुआ। रोमके निवासी पोपकी अकर्मण्यताके कारण कुपित थे। आरम्भमें तो पोपने राष्ट्रीय दलके प्रति बड़ा उत्साह दिखलाया था, किन्तु जब जर्मनीवालोंने पोपको धमकाया और आस्ट्रियावालोंके साथ विग्रह करनेका निषेध किया, तब उनका सारा उत्साह धूलमें मिलगया। उधर आस्ट्रियन जनरल रेडेरेजकी धीरे धीरे आस्ट्रियाके हाथसे निकले हुए स्थानोंको अपने अधिकारमें करता जाता था। विसिंजा एवं मिलन उसके अधिकारमें आही गये थे। आस्ट्रियावालोंको पूरा विश्वास हो गया था कि वे वेनिसको भी हस्तगत कर लेंगे। स० १८०५ की ग्रीष्म ऋतुके अन्तमें वेनिसवालोंको निश्चय होगया कि उनको अपनी रक्षा अपने

आप अकेले करनी पड़ेगी। अन्य प्रान्तोंमें विप्लव धीमा पड़ चला था। पीडमाण्टवाले अपनी अदूरदर्शिताका परिचय देही चुके थे। मैनिनको अब भी विश्वास था कि उसकी सहायता करनेके लिये कोई न कोई अवश्य खड़ा होगा। साथही उसने यह भी निश्चय कर लिया था कि चाहे कोई उसकी सहायता करे या न करे, किन्तु वेनिसवालोंको शत्रुका सामना करके संसारको यह दिखला देना है कि वेनिसवाले स्वतन्त्रताको कैसी मूल्यवान वस्तु समझते हैं।

जिस समय शत्रुसेनाने वेनिसको घेर लिया, उस समय वेनिसवालोंको धनकी बड़ी आवश्यकता हुई। मैनिनके कहने भरकी देर थी। लोगोंके पास जो कुछ सञ्चित धन था वह सब उन लोगोंने निकालकर उसके आगे रख दिया। क्या धनी क्या साधारण जन, क्या बूढ़े क्या बारे जिसके पास जो कुछ था, उनलोगोंने श्रद्धाके साथ दे डाला। नागरिक लोगोंने योद्धाओंको वरदियां बनवा दीं। बड़े बड़े प्रासाद, देशसेवकोंके लिए खाली कर दिये गये। मैनिनके घरमें जितने बरतन थे, उसने वे सब दे डाले और कुछ भी वेतन न लिया। लोग अपनी प्यारीसे प्यारी वस्तु दे मातृभूमिके चरणोंमें उत्सर्ग करने लगे। किसीका अपनी आवश्यकताओंकी ओर ध्यान न था। सब लोगोंको यही चिन्ता लग गयी थी कि किसी प्रकार वेनिसकी स्वतन्त्रता अक्षुण्ण बनी रहे। इसके लिय वे प्राणोंतकका मोह छोड़ बैठे थे। यूगो बेस्सी नामका एक धर्म याजक था। यह पीछेसे रोमके पास मेजिनीके साथ लड़ा था और आस्ट्रियावालोंद्वारा पकड़कर मारडाला गया था। यह यूगो नित्य वेनिसवालोंको व्याख्यानद्वारा जन्मभूमिकी स्वतन्त्रता बनाये रखनेका उत्साह बढ़ाया

हुए अपने अपने घर चले गए। निर्दिष्ट दिन सभाका अधिवेशन हुआ। लोगोंने मैनिनको प्रधानाध्यक्ष बनाना चाहा। किन्तु उसने कहा मैं युद्धविद्यासे अपरिचित हूं। तब वहाँके अध्यक्ष पदपर तीन मूर्त्तियोंकी प्रतिष्ठा की गयी। इन तीनमें एक तो मैनिन था और दोके नाम थे एडमिरल ग्रेज़ियेनी और कर्नल केलविडेलिस।

जिस समय फ्रांसवाले उत्तरी इटलीवालोंको सहायता देनेका निश्चय कर रहे थे ठीक उसी समय इङ्गलेण्डवाले बीचमें कूद पड़े और दोनोंने मिलकर बीचमें पड़ना चाहा। दुर्भाग्य वश उसी समय चार्ल्स एलबर्टने दोनोंसे सहायता लेना अस्वीकार कर कहा कि इटलीवाले अपनी आग स्वयं बुझा लेंगे। अत' वेनिसवालोंके हाथसे विदेशी मित्रोंसे सहायता पानेका अवसर निकल गया। नेपिल्ससे पेडमाण्टतक इटलीका प्रत्येक मनुष्य वीरताप्रदर्शनार्थ उत्सुक था। किन्तु एक सुयोग्य नेताके अभावसे उनका सारा श्रम निष्फल हुआ। रोमके निवासी पोपकी अकर्मण्यताके कारण कुपित थे। आरम्भमें तो पोपने राष्ट्रीय दलके प्रति बड़ा उत्साह दिखलाया था, किन्तु जब जर्मनीवालोंने पोपको धमकाया और आस्ट्रियावालोंके साथ विग्रह करनेका निषेध किया, तब उनका सारा उत्साह धूलमें मिलगया। उधर आस्ट्रियन जनरल रेडेरेजकी धीरे धीरे आस्ट्रियाके हाथसे निकले हुए स्थानोंको अपने अधिकारमें करता जाता था। विसिंजा एवं मिलन उसके अधिकारमें आही गये थे। आस्ट्रियावालोंको पूरा विश्वास हो गया था कि वे वेनिसको भी हस्तगत कर लेंगे। स० १८०५ की ग्रीष्म ऋतुके अन्तमें वेनिसवालोंको निश्चय होगया कि उनको अपनी रक्षा अपने

आप अकेले करनी पड़ेगी। अन्य प्रान्तोंमें विप्लव धीमा पड़ चला था। पीडमाएटवाले अपनी अदूरदर्शिताका परिचय देही चुके थे। मैनिनको अब भी विश्वास था कि उसकी सहायता करनेके लिये कोई न कोई अवश्य खड़ा होगा। साथही उसने यह भी निश्चय कर लिया था कि चाहे कोई उसकी सहायता करे या न करे, किन्तु वेनिसवालोंको शत्रुका सामना करके संसारको यह दिखला देना है कि वेनिसवाले स्वतन्त्रताको कैसी मूल्यवान वस्तु समझते हैं।

जिस समय शत्रुसेनाने वेनिसको घेर लिया, उस समय वेनिसवालोंको धनकी बड़ी आवश्यकता हुई। मैनिनके कहने भरकी देर थी। लोगोंके पास जो कुछ सञ्चित धन था वह सब उन लोगोंने निकालकर उसके आगे रख दिया। क्या धनी, क्या साधारण जन, क्या बूढ़े क्या बारे जिसके पास जो कुछ था, उनलोगोंने श्रद्धाके साथ दे डाला। नागरिक लोगोंने योद्धाओंको वरदियां बनवा दीं। बड़े बड़े प्रासाद, देशसेवकोंके लिए खाली कर दिये गये। मैनिनके घरमें जितने बरतन थे, उसने वे सब दे डाले और कुछ भी वेतन न लिया। लोग अपनी प्यारीसे प्यारी वस्तु दे मातृभूमिके चरणोंमें उत्सर्ग करने लगे। किसीका अपनी आवश्यकताओंकी ओर ध्यान न था। सब लोगोंको यही चिन्ता लग गयी थी कि किसी प्रकार वेनिसकी स्वतन्त्रता अक्षुण्ण बनी रहे। इसके लिय वे प्राणोंतकका मोह छोड़ बैठे थे। यूगो बेस्सी नामका एक धर्म-याजक था। यह पीछेसे रोमके पास मेजिनीके साथ लड़ा था और आस्ट्रियावालोंद्वारा पकड़कर मारडाला गया था। यह यूगो नित्य वेनिसवालोंको व्याख्यानद्वारा जन्मभूमिकी स्वतन्त्रता बनाये रखनेका उत्साह बढ़ाया

करता था। ये सारी बातें थीं हीं, किन्तु वेनिसवाले मैनिन
लिये सर्वस्व अर्पण करनेको तयार थे। उसे वे अपना पि
समझ पुत्रकी तरह स्वय उसकी आज्ञा पालनके लिये, स
उसका मुख देखा करते थे। एक ओर तो उसे वेनिस नगरक
चिन्ता थी दूसरी ओर उसे अपने वालवच्चोंकी रोगग्रस
दशा विकल किये डालती थी। उधर तो वह दिन भ
शासन सम्बन्धी परामर्श देता, नगरकी रक्षाके उपा
सोचता और अनुत्साही लोगोंको उत्साहित करता
इधर जब रात होती तब वह रोगग्रस्त बच्चेकी चारपाई
पास बैठकर उसका चिकित्सोपचार करता। मैनिनक
कठोर तपस्याका यही क्रम था। यहांतक कि वह कार्त्तिक
महीनेमें ऐसा बीमार पड़ा कि वेनिसवासियोंको बड
चिन्ता उत्पन्न हुई। किन्तु उन लोगोंके सौभाग्यसे वह चङ्
हो गया और पूर्ववत् शासन सम्बन्धी काम करने लगा।

यद्यपि वेनिस शत्रुसेनासे अविरुद्ध था और धनाभा
भी था तथापि नगरमें चिन्ताके चिह्न परिलक्षित नहीं हो
थे। सारे काम यथावत् होते थे। नाटक, तमाशे, मेले, ती
त्योहार, बाजे गाजे, बरात ब्योहार, जो नित्य हुआ करते
ज्योंके त्यों होते थे। उन्हें इतने ही दिनोंकी स्वतन्त्रता
पचास वर्षकी परतंत्रता एकदम भुला दी थी।

वह समिति जिसने पेडमाण्टवालोंके साथ ऐक्य करनेक
मन्तव्य स्वीकृत किया था, भङ्ग कर दी गयी और नये सिरेसे
समितिके सभ्य चुने गये। मैनिनने कहा कि उसे नगरके
ऊपर हर प्रकारके पूरे अधिकार मिलने चाहिए। इसपर
कुछ सभ्योंने आपत्ति उपस्थित की। तब उसने कह
"यहांपर इस बातका प्रश्न नहीं है कि तुम एक आदमीको

सर्वाधिकार दिये देते हो। किन्तु इस समय देशकी रक्षाके लिए ऐसा करना आवश्यक है। यदि बात बातमें हमारे सामने कायदे कानून खड़े कर दिये जायगे, तो आवश्यकता होनेपर उपस्थित विघ्नोंकी शान्तिका प्रतीकार तत्क्षण न हो पावेगा। स्मरण रखिये इस काममें हमारी रक्षाके लिये शस्त्र-बलकी अपेक्षा बुद्धिबलकी बडी आवश्यकता है। जिन लोगोंको मेरा यह कथन अप्रिय लगा हो, उनसे मैं विनयपूर्वक क्षमा मागता हू।"

इतनेमें लोगोंको विदित हुआ कि समितिमें कुछ लोग ऐसे पहुच गये हैं जो मैनिनसे जलते ह। वे लोग दलबद्ध हो उनकी मानवी लीला समाप्त करनेके लिये सभा भवन के द्वारपर पहुच गये हैं। मैनिनने उन्हे समझाकर कई बार वहांसे हटाया, किन्तु वे बारम्बार द्वारको घेरकर खडे होने लगे। अन्तमें जब उसे यह बात विदित हुई कि वे सभाभवनमें घुसकर उन लोगोंको दबाना चाहते हैं जिन्होंने मैनिनके पैरमें नियमोंकी बेडी डालनी चाही थी, तब मैनिन हाथमें नङ्गी तलवार ले अपने पुत्रके साथ सभाभवनके द्वारपर खडा होकर उनसे बोला—"पहले तुम मुझे और मेरे पुत्रको मार डालो, तब इस भवनके भीतर पैर रखना। यदि मेरा कहना मानो, तो चुपचाप घर लौट जाओ।" यह सुन वे लोग चुपचाप लौट गये। उस रातको उसने एक घोषणापत्र निकाला उसमें उसने लिखा था—'भाइयो! तुमने दिनमें आज मुझे बडा कष्ट दिया है। मेरे प्रति अपना अनुराग प्रकट करनेके अर्थ तुमलोगोंने विप्लव करना चाहा था। किन्तु तुम-लोगोंको भली प्रकार विदित है कि मैं विप्लवकारियोंसे घृणा

करता हू । तुम लोग कहते हो कि तुम्हारा मेरे ऊपर अनुराग है । यदि बात सत्य है तो अपने इस कथनको कार्यरूपमें परिणत करके दिखलाओ। (अर्थात् मैं जो कहता हू वह करो।) फल किसी प्रकार हुल्लड न हो, न कोई सभा हो। सब लोग अपने अपने घरोंमें रहो। गवर्नमेण्ट और शासन समितिपर विश्वास रखो। गवर्नमेण्ट और शासन समितिके सभ्य तुम्हारी भलाईको अपने प्राणोंसे बढ़कर समझते हैं।"

इसका प्रभाव उन सभ्योंके ऊपर अच्छा पडा जो पहले मैनिनसे जला करते थे। अगले दिन सारा वैर-भाव भूलकर शासक समितिने मैनिनको उस समितिका सभापति निर्वाचित किया और नगर तथा उसके बाहर विदेशियोंके साथ सन्धि आदि करनेके पूरे अधिकार उसे दे दिये।

इधर चार्ल्स एलबर्टने फिर आस्ट्रियनोंका सामना किया और कुछ दिनोंके लिये आस्ट्रियन रणक्षेत्र छोडकर भाग गये। ब्रेस्सियावालोंने बडी वीरतासे शत्रुका सामना किया। वेनिसवालोंको जब यह बात विदित हुई कि एक छोटेसे नगरवालोंने इतने प्रबल पराक्रमी शत्रुके दांत खट्टे कर दिये तब वे बारम्बार वहांवालोंकी वीरताकी सराहना करने लगे। साथ ही उत्साहित हो उन लोगोंने आस्ट्रियाके साथ घोर युद्ध करनेकी प्रतिज्ञा की। वेनिसका युद्धपोतोंका बेडा सदा तैयार रखा जाता था। सैनिक लोग हथियार पास रखकर सोते थे। सब लोगोंके मनमें सबसे बढ़कर चिन्ता अपने नगरकी स्वतन्त्रता बनाये रखनेकी थी।

सं० १८०६ के लगते लगते ट्यूरिनसे एक बडा विषम सवार वेनिसमें पहुंचा। नौवेरावालोंकी हार और चार्ल्स एलबर्टके हतोत्साह होकर अपने पुत्रको राज्यभार

सौंपनेका सवाद सुन वेनिसवालोंको बडा आश्चर्य हुआ। वे लोग सेण्टमार्कके मैदानमें एकत्र हुए। तब मैनिनने उनसे कहा कि मुझे अभी तक सरकारी तौरपर यह सवाद नहीं मिला। किन्तु उसकी भावभङ्गीको देख यह अनुमान लोगोंने कर लिया कि उस सवादके सत्य होनेमें मैनिनको सन्देह नहीं है। उस दिनकी रात वेनिसवालोंको बडी विकलतासे बितानी पडी। इसी प्रकार जब तीन दिन व्यतीत हो गये, चौथे दिन "सरकारी तौर" पर वह दुस्सवाद मैनिनके पास पहुँचा।

नगरवालोंने उस दुस्सवादकी चोटको सह लिया और पूर्ववत् प्रसन्न और आशावान् दिखलाई पडने लगे। २५ अप्रैलको महात्मा मार्कका स्मरण दिवस मनाया गया। बडी धूम धामसे उत्सव हुआ। उस दिन मैनिनने लोगोंसे कहा— "अभी तक विजयश्री हमारे पक्षमें रही है और रहेगी। महात्मा मार्ककी जय हो। यह जयजयकार प्राचीन समयमें समुद्रकी लहरोंसे प्रतिध्वनित होती थी, अब इसको हमें प्रतिध्वनित करना चाहिए। समूचा युरोप हमारी ओर टकटकी लगाये देख रहा है। वही पीछे हमारी प्रशसा करेगा। विजयश्री हमारे ही पक्षमें होनी चाहिए।' मैनिनके इन शब्दोंका अच्छा प्रभाव पडा।

स० १९०६ की वसन्त ऋतुमें आस्ट्रियाने वनिसपर जल और स्थल मार्गोंसे आक्रमण किया। जब शासन समितिने आस्ट्रियावालोंका सामना करनेका मन्तव्य स्वीकार किया तब लोगोंने लाल रङ्गका फीता अपनी छातीपर धारण किया और लाल रङ्गका एक बडा भारी झण्डा खडा किया। यह शत्रुको सूचना देता था कि स्मरण रखो यदि

वेनिसपर तुमने क्रूर दृष्टि डाली तो लाल रक्तकी नदियां बहेंगी, प्रत्येक सडकें चौराहों गलियोंके मोडोंकी दीवालोंपर विज्ञापन चिपकाये गये, जिनपर छपा था कि "वेनिसको शत्रुका सामना करना है। गिर्जघरोंके बरतन, स्त्रियोंके गहने पीतलके घण्टे, तांबेके रसोईके बरतन, शत्रुकी तोपोंके गोलेका लोहा आदि सब ही पदार्थ उपयोगी हैं, केवल क्रोटस [आस्ट्रियन सैनिक विशेष] नगरमें न घुसने पावें।

कारीगर लोग अहर्निश जहाज बनानेमें लगे रहते। प्राचीन समयमें जलयुद्ध जैसी वीरता और उत्साह के साथ हो सकता था, वेनिसके युद्धपोतोंके बेडेने शत्रुके साथ वैसा ही युद्ध किया। समुद्रतटपर तोपखाना खडा किया गया था। जो शत्रुके जहाजी बेडेपर अविराम गोलोंकी वृष्टिकर किनारेपर फटकने भी नहीं देता था। तोपखानेमें एक दल सैनिकोंका था, जिसमें वेनिसके धनियोंके घरानेके नवयुवक काम करते थे। इन्होंने अपनी पोशाक सब सैनिकोंसे बढिया बनवा ली थी, और बडे उत्साहके साथ युद्ध कर रहे थे। जिस समय मेलघेराके दुर्गपर विकट संग्राम हुआ उस समय इन वीर नवयुवकोंका उत्साह और निर्भय होकर लडना देखते ही बन पडता था। दुर्गसे वे अविराम गोले बरसा रहे थे, जब शत्रुके बम्बके गोलोंसे कोई युवक मरता तो झट दूसरा युवक उसकी जय कहकर मरे हुए के रिक्त स्थानपर जा खडा होता था। इतिहासमें बडे बडे संग्रामोंका इतिवृत्त पाया जाता है किन्तु जरासे वेनिस नगरने स्वाधीनताकी रक्षाके लिये प्राणपणसे जैसा संग्राम किया, वैसे दूसरे उदाहरणके लिये इतिहास चुप है।

इस वर्ष सावनमें एक ओर तो आस्ट्रियन सेनाने नगरपर

गोले बरसाने आरम्भ किये, उधर हैजेने जोर पकड़ा, और आस्ट्रियन जासूसोंने लोगोंको भगाकर नगरमें विद्वेष और असन्तोष फैला दिया। मैनिनको बड़ा भय घरकी फूटका था। वह शत्रुसेनासे उतना नहीं डरता था जितना वह घरकी फूटसे भयभीत होता था। मैनिनके मुँहपर तो किसीको कुछ कहनेका साहस नहीं होता था किन्तु उसके द्वारपर लोग बड़बड़ाते हुए असन्तोष प्रकट करते थे। जब वे शब्द मैनिनके कानमें पड़े वह निर्भय हो उनके सामने निकला और उनसे कहा "वेनिसवालो, क्या ये काम तुम्हारे लिये शोभाजनक है ! तुम किसी जाति या समूहके अगुआ नहीं हो। तुम एक समूहके तुच्छ अवयव हो। मैं तुम्हारे ऐसे अनपढ़ लोगोंकी बतलायी राहपर नहीं चल सकता। मैं तो केवल उनके कथनानुसार काम करूँगा, जिन्हें सर्वसाधारणने अपना प्रतिनिधि बनाकर समितिका सभ्य नियुक्त किया हो। मुझे लल्लो चप्पोकी बात नहीं करने आती। मैं सत्य कहूँगा, चाहे कोई मेरे गलेपर तलवार ही क्यों न रख दे। तुम लोग यहांसे तुरन्त अपने अपने घर चल दो।"

उसकी बातोंका प्रभाव गँवारोंके उस समूहपर भी पड़ा। उन्होंने तालियाँ बजाकर सन्तोष और प्रसन्नता प्रकट की। असन्तोष शान्त हुआ। किन्तु लोगोंकी निराशा बढ़ने लगी। एक मुट्ठीभर मनुष्य एक बड़े साम्राज्यका सामना क्योंकर कर सकते थे। मैनिनने सोचा कि इस समय मुझे संसारको यह दिखा देना है कि वेनिसवालोंने वीरोचित साहस दिखलाकर वीरगति प्राप्त की है।

नगरपर आध्यात्मिक, आधिदैविक और आधिभौतिक विपत्तियां छायी हुई थीं। सावनके अन्तिमदिन मैनिनने सेण्ट

मार्कके मैदानमें लोगोंको सम्बोधन करके कहा—"वह जाति जिसको हम लोगों जैसे सङ्कटोंका सामना करना पड़े, कभी नष्ट नहीं हो सकती। एक दिन आवेगा जब तुम्हें इसका पुरस्कार मिलेगा। वह दिन कब आवेगा यह ईश्वरके अधीन है। हमने अच्छा बीज बो दिया है और वह अच्छी भूमिमें अङ्कुरित भी हो गया है। यदि हम इन विपत्तियोंका प्रतीकार न कर सकें तो अपने नगरकी प्रतिष्ठाको अक्षुण्ण बनाये रखना अवश्य हमारा कर्त्तव्य है। यदि एक दिन भी वेनिस वाले अपने कर्त्तव्यकर्मसे विमुख हुए, तो स्मरण रखना अभीतक हम लोगोंने जो कुछ किया है, उस सारी करतूत पर पानी फिर जायगा" यह कहकर उसने उन लोगोंसे पूछा कि आप लोगोंको मुझमें विश्वास है? यदि न हो तो मैं अपना पद त्यागने को अभी तत्पर हूं।" उपस्थित लोगोंने चिल्लाकर कहा—"हम लोगोंको आपमें पूर्ण विश्वास है।" तब मैनिनने फिर कहना आरम्भ किया—"तुम लोगोंका दुर्दमनीय अनुराग देख कर मुझे उस समय खिन्न होना पड़ता है जब मेरा ध्यान तुम लोगोंके कष्टोंकी ओर जाता है। तुम लोगोंको अधिकार है और तुम कह सकते हो कि—यह कुपथमें चल रहा है। किन्तु यह न कहना कि इसने हमें कुपथमें चलाया। मैंने कभी किसीको धोखा नहीं दिया। मैंने कभी कोई ऐसी बात नहीं कही जिसपर मेरा स्वयं विश्वास न था। मैंने दूसरोंको कभी किसी ऐसी वस्तुकी आशा नहीं दिलायी, जिसकी आशा मुझे स्वयं न रही हो।"

इतना कहते कहते वह इतना निर्बल पड़ गया कि सभा-भवनतक उससे न चला गया। वेनिसवालों की दशा भी बड़ी शोच्य हो रही थी। मैनिन नगरनिवासियोंकी दुर्दशा

का दृश्य अपने नेत्रोंसे देखता था किन्तु वह उस समयकी प्रतीक्षा कर रहा था, जब शत्रुके साथ प्रतिष्ठापूर्वक सन्धि स्थापित हो। नितान्त हताश होकर वेनिसवाले पाचदिन पीछे मैनिनके द्वारपर पहुँचे। मैनिन द्वारके ऊपर छज्जेपर खड़ा था। लोगोंने उससे पूछा—"अब क्या करना चाहिए?" मैनिनने उत्तर दिया—"वेनिसवालों मैं तुमसे साफ साफ कह चुका हूँ कि इस समय हमारी स्थिति चिन्त्य है किन्तु चिन्त्य होनेपर भी हम उस दशाको प्राप्त नहीं हुए हैं कि हम अपनी कीर्तिमें धब्बा लगानेके लिये कोई ऐसा काम करें जिससे हमलोगोंकी भीरुता प्रकट हो। यदि वेनिसवाले मुझे कोई ऐसा कार्य्य करने को दबावें, जो अकीर्तिकर है, तो उनके इस आचरणको मैं निन्द्य कहूगा और वेनिस चाहे [illegible] भूमण्डलके तलसे सदाके लिए मिट जाय किन्तु मैं [illegible] कर कार्य कभी न करूगा।"

इतनेमें भीड़मेंसे किसीने कहा "हम बहुत भूखे हैं"। मैनिनने कहा—"जो भूखा हो वह सामने आकर खड़ा हो"। मैनिनके भक्तोंने एक स्वरसे कहा—"कोई भूखा नहीं है हमको इटलीवासी होनेका अभिमान है। मैनिन [illegible]"

इस घटनाके पाँच दिन बाद नगरमें विसवर्की [illegible] मेनिन जिस प्रकारके ठहराव शत्रुके साथ करना [illegible] उन्हें शत्रुने तबतक स्वीकार नहीं किये थे। [illegible] द्वारपर जाकर बुलाया। वह अपने छज्जेपर आया। [illegible] उनके साथ कुछही देर बातचीत कर पाया था कि [illegible] में सहसा पीड़ा उत्पन्न हुई और अचेत हो एक [illegible] गया। थोड़ी देर बाद जब वह सचेत हुआ तब [illegible] उन लोगोंसे कहा—'जो लोग सच्चे वेनिसके [illegible]

से दबा लिया। अतमें संवत् १६१४ विक्रमीयमें डेनियल मेनिन ५३ वर्षकी अवस्थामें सदाके लिये सो गया।

मेनिन मर गया किन्तु वह जो बीज वेनिसमें बो आया था, वह नष्ट न हुआ। १६०५के भाद्रपदमें आस्ट्रियन जनरलने नगरमें प्रवेश कर, वेनिसका तिरगा झंडा उतार कर उसपर अपना जातीय सिंहाकृति अङ्कित झंडा चढाया। आस्ट्रियावालोंको आशा थी कि वेनिस कुछ दिनों बाद फिर पूर्व स्थितिको प्राप्त हो जायगा। वेनिसवालोंने १७ वर्ष तक अपनी स्वाधीनताके नाशके अर्थ शोक मनाया और उस दिनकी प्रतीक्षा करते रहे जब वे सदाके लिये स्वतन्त्रतादेवीके भक्त बनें।

इतने दिनोंकी कठिन तपस्या परिपूर्ण हुई। वेनिसवालों का मनोरथ सफल हुआ। सवत् १६२३ के सावनमें उनके पैरोंसे पराधीनताकी बेडी कट गयी। उनका तिरङ्गा जातीय झण्डा फिर आकाशमें फहराने लगा। कृतज्ञ वेनिसवासी स्वर्गीय स्वातन्त्र्य सुखका अनुभव करके भी उपकार करनेवाले मेनिनको न भूले। इस समय उस आनन्दमय सुघडीमें उनको मेनिनका स्मरण हो आया और पश्चात्ताप पूर्वक वे कहने लगे कि "हा! आज मेनिन न हुए।"

मेनिन, उसकी स्त्री और लडकी—इन तीनोंके शव सेण्ट मार्क गिरजेके हातेमें गाडे गये। सेण्ट मार्कके मैदानमें उसकी प्रतिमा खडी की गयी जो उसकी कीर्त्ति और उसके यशस्वी कार्य्योंका चिर स्मारक है।

महात्मा मत्ज़ीनी

मत्ज़ीनीका जन्म संवत् १८६४ वि० में जिनोआ नगर में हुआ था। उसको आरम्भमें वकालत सिखलायी गयी थी किन्तु विदेशी शासकोंके हाथसे अपने देशकी दुर्दशा देख, उसने अपनी जीविकाको तिलाञ्जलि दी और देशसेवाकी ओर प्रवृत्त हुआ। जब मत्ज़ीनीने होश सम्हाला तब कविप्रवर आल्फिरीके नाटकोंकी बड़ी धूम थी। यह बतलाने की तो, कदाचित् अब फिर आवश्यकता न पड़ेगी कि आल्फिरीकी रचनाओंका असल उद्देश्य क्या था। बाल्यावस्थामें मत्ज़ीनीने आल्फिरीकी रचनाओंको पढ़ उसे देशोद्धारक समझ लिया था और उसके मनमें देशसेवाका बीज तभीसे अंकुरित हुआ।

सं० १८७८में कारबोनारीका विप्लव हुआ। इसका परिणाम यह हुआ कि अनेक देश हितैषी पीडमाएट निवासियोंको देश छोड़कर जिनोआकी राह स्पेनकी ओर भागना पड़ा। उस समय मत्ज़ीनी सोलह वर्षका था। रविवारकी बात है कि वह अपनी माताके साथ गिर्जासे लौटकर घर जा रहा था। रास्तेमें एक मनुष्यने मार्ग रोक कर उन लोगोंकी सहायताके लिये भिक्षा माँगी जो इटली देशके उद्धारवृत्तमें प्रवृत्त थे, और जिन्हें सरकारके भयसे अपनी जन्मभूमि त्याग कर विदेशोंकी शरण लेनी पड़ी थी। इस घटनासे बालक मत्ज़ीनीके चित्तपर बड़ा प्रभाव पड़ा। उसने जाना कि देशसेवा करना सहज काम नहीं है प्रत्युत देश सेवकों को बड़ी बड़ी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ता है। उसने इसी समयसे

इस विषयपर विचार करना आरम्भ किया कि अभी तक जितने आन्दोलन हुए उनके सफल न होनेके कारण क्या थे। जब यथार्थ कारण उसकी समझमें आगये, तब वह लोगोंमें अपने विचार व्याख्यानों द्वारा फैलाने लगा।

फ्रांसके आन्दोलनकी असफलताका कारण यह था कि वहाँवालोंने इतना तो जान लिया था कि हमारे स्वत्व क्या है, किन्तु उन्हें अपने कर्त्तव्यका ज्ञान नहीं हो पाया था। इसके अतिरिक्त फ्रांसवालोंमें एक बडी भारी त्रुटि यह थी कि वे आत्म-सयमी न थे और उनका ध्यान जितना व्यक्तिगत स्वाधीनताकी ओर था, उतना जातीय स्वातंत्र्यकी ओर न था। युरोपके आन्दोलन कर्त्ताओंने अपने सिद्धान्त तो निश्चित कर लिये थे, किन्तु वे धर्महीन थे। मत्जीनीने जिस सिद्धान्त का सबसे प्रथम आविष्कार किया वह यह था कि इटलीका उद्धार विना वहाँके अधिवासियोंके एक हुए नहीं होगा, और वे एक तभी होंगे जब उनकी श्रद्धा और भक्ति विधाताकी बनायी विधि पर होगी। उनको अपने उद्देश्योंमें धर्मकी प्रधानता रखनी चाहिये। आरम्भमें वह दो बातें लोगोंसे कहता था। प्रथम तो यह कि इटलीने दो बार सारे भूमण्डलपर अपना आधिपत्य जमाया और युरोपभरमें ईसाई धर्म एव सभ्यताका प्रचार किया। इटलीको अब भी ससारभरको "मनुष्यत्व" की शुभ सूचना भेजनी है। अर्थात् ससारभरके लोगोंको यह बतलाना है कि "मनुष्यत्व 'क्या है और उसका मूल्य कितना है। उसने एक बार लिखा था कि लोग इटलीको मुर्दोंके गाडनेकी जगह कहते हैं, किन्तु जो ऐसा कहते हैं उन्हें स्मरण रखना चाहिये कि यह उन मुर्दोंकी भूमि है जो शक्तिशाली हैं और उन देशोंसे इटली अच्छो है जिन

में केवल निर्बल लोग रहते हैं। मत्जीनीने इटलीवालोंको अपने देशका वह दृश्य दिखलाया, जो अत्याचारकी अग्निमें तप्त होने पर सुवर्णके समान दैदीप्यमान और पवित्र हो रहा था और उन जातियोंके मध्यमें जो इटलीको निर्बोजोंकी आवासभूमि समझते थे, स्वर्गीय आभासे आलोकित हो रहा था। उसके इन भावोंने इटलीवासियोंके मनमें उत्तेजना उत्पन्न की, किन्तु मत्जीनी अपने देशवासियोंकी प्रकृतिको भलीभाँति जानता था। उसके विचारसे यह उत्तेजना उन लोगोंको जागृत करनेके लिये पर्य्याप्त न थी।

मत्जीनी ने अपने देशवासियोंके अभावोंको भली भाँति समझकर अवकाशके समय स्वतन्त्र सम्वादपत्रोंमें लेख छपवाना आरम्भ किया। वह जानता था कि सम्वाद पत्रोंके सिरपर देशके आईनने कितना भारी दायित्व लाद रखा है। अत आरम्भमें उसने जो लेख लिखे बडी सावधानी से लिखे, किन्तु धीरे धीरे उसके लेख जोशीले होते गये और उनमें राजद्रोहकी मात्रा बढने लगी। उसने एक नये दलकी चर्चा छेडी जिसका नामकरण उसने "यग इटली" (नव इटली) किया। उसने अपने लेखोंमें उन देशनिर्वासित लोगों के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रदर्शित की जो राजविद्रोहके लिये अभियुक्त थे। मत्जीनीने अपने लेखोंमें राष्ट्रीय शक्तिको परि पुष्ट करनेके लिये उपयोगी विचारोंपर आलोचना एव प्रत्या-लोचना भी की। अन्तमें "इण्डिकेटोर लिवर्नेस" नामक पत्र जो निर्भय हो मत्जीनीके लेख छापता था, सरकार द्वारा बन्द कर दिया गया। तब मत्जीनी और आगे बढ़ा और उसने ' एएटो लोगिया " नामक पत्रमें ऐतिहासिक नाटकों पर एक लेखमाला निकालनेका प्रबन्ध किया।

इस बीचमें वह इटलीके युवकोंमें एक नवीन सम्प्रदायको फैलानेके लिये विचार कर रहा था। साथ ही साथ वह कारबोनारीकी सोसाइटीमें सम्मिलित होकर, इस विषयका अनुभव प्राप्त कर रहा था कि षड्यन्त्र रचनेवाली गुप्त समितियाँ किसी प्रकारका विशेष लाभ नहीं पहुँचा सकतीं। ऐसी समितियोंमें जितना नियमोंका आडम्बर होता है, उतना कार्य नहीं होता। जिस गुप्त समितिमें मत्जीनी भर्ती हुआ था उसका न तो कोई निर्दिष्ट लक्ष्य ही था, न कोई नेता। सावन मासमें फ्रान्समें राजविद्रोह खड़ा हुआ। उसका फल यह हुआ कि युरोपभरमें स्वतन्त्रताकी धारा बहने लगी। मत्जीनी ने भी अपने नवयुवक साथियोंके साथ परामर्श कर विप्लव उपस्थित करनेकी तैयारियाँ कीं। सीसेकी गोलियाँ ढलने लगीं, किन्तु जिनोआकी पुलिसको इसका हाल विदित होगया अतः मत्जीनी पकड़ा गया। बहुत दिनोंसे उसपर राजविद्रोही होनेका पुलिसको सन्देह था। एक बार जिनोआके अध्यक्षने मत्जीनीके पितासे कहा था कि "इसमें सन्देह नहीं कि तुम्हारा पुत्र प्रतिभाशाली है पर रातमें अकेला न जाने किन विचारों में डूबा हुआ इधर उधर घूमा फिरा करता है। इस छोटी अवस्थामें उसे किस बातकी चिंता है। हमें कारण जाने विना नवयुवकोंका इतना चिंताशील रहना अच्छा नहीं लगता।"

मत्जीनी सैवोनाकी गढ़ीमें बंदी रक्खा गया। गढ़ीके अधिपतिने उसको इञ्जील, टेसिटस और बैरनकी पुस्तकें रखनेमें आपत्ति न की। एकान्तमें मत्जीनीका मनोरञ्जन वे ही पुस्तकें करती थीं। धीरे धीरे उसकी रुचि अङ्गरेजी पद्योंके पढ़नेकी ओर बढ़ी।

जिनोआकी पुलिस उसपर कोई दोष सिद्ध न कर

सकी। किन्तु उसको छुटकारा देना भयावह समझा गया। अत उससे पूछा गया कि तुम नजरबन्द रहना पसन्द करते हो कि देश निकलना। फ्रांसमें उस समय नवीन विचारोंके लोगोंकी सख्या बढती जाती थी और प्रजासत्ताक शासन प्रणालीके पक्षवाले ओर राजविद्रोहियोंका पेरिस नगर केन्द्र स्थल था। अत उसको देशनिकाले का दण्ड श्रेयस्कर प्रतीत हुआ। सवत् १८८७ वि०के आरम्भमें उसने अपने परिवारको सेवोनामें छोड उत्तरकी ओर प्रस्थान किया।

देश छोडते ही मत्जीनीने इटलीके युवकोंका ध्यान उद्दिष्ट मार्गकी ओर खींचा। उसने वहाके युवकोंकी आत्माको धर्म बन्धनमें बाँधनेकी आवश्यकता समझी, क्योंकि उसको निश्चय था कि युवकोंपर किसी बातका प्रभाव डालना जितना सरल है उतना अधेड लोगोंपर नहीं। मत्जीनीने लिखा है कि—'जितने बडे बडे राष्ट्रीय आन्दोलन होते हैं, उनके जन्मदाता अप्रसिद्ध व्यक्ति ही हुआ करते हैं।" यही कारण था कि अल्पवयस्क होनेपर भी उसे अपने और अन्य युवकोंके ऊपर पूर्ण विश्वास था। यहाँ तक कि काव्रने जो मत्जीनीसे पॉच वर्ष छोटा था, अपने एक मित्रको लिखा था कि एक दिन यह इटलीके प्रधान सचिवकी ऑखें खोलेगा।

"नवन इटली" नामक सस्थामें विशेषता यह थी कि उसकी नींव धर्ममें थी, किन्तु कार्योकारी सभामें किसी धर्मका विशेपत्व न था। धर्म ऐसा विषय है जिसपर लोगोंका विशेष ध्यान जाता है। अत धर्मके सामने अन्य कर्त्तव्यों की लोग अवहेलना कर जाते हैं। नवन इटलीका दूसरा उद्देश्य दीनोंकी सहायता करना था। इस ओर अन्य राज विद्रोहियोंने ध्यान नहीं दिया था। फ्रान्सके राजविद्रोहियोंने

जातीय स्वतन्त्रताकी ओर ध्यान दिया था। उनका ध्यान सामाजिक स्वातन्त्र्यकी ओर आकर्षित नहीं हुआ था। मत्जीनी ने विचारा कि हमारे उद्देश्यके लिये सामाजिक स्वातन्त्र्यकी भी आवश्यकता है।

उसका सिद्धान्त था कि इटलीवालोंके केवल आस्ट्रिया वाले ही शत्रु नहीं हैं, किन्तु इटलीके शत्रु इटलीमें भी है। यथा वे लोग जो अपार सम्पत्तिके अधीश्वर होकर अपने भोग विलासको छोड धनहीन भाइयोंके कष्टोंपर दृष्टिपाततक नहीं करते। बेचारे दीन लोग तो श्रम करके धनोपार्जन करते हैं और उस धनसे बडे लोग आनन्द लूटते हैं। उनको कोई अधिकार नहीं कि वे इस प्रकार आनन्द लूटें और बेचारे श्रमजीवी उनके लिये परिश्रम कर स्वयं मुट्ठीभर अन्नसे अपना सारा जीवन काटें। मत्जीनीके विचारानुसार मनुष्य मात्र समान थे। वह बडे छोटेका अथवा शासक शासितका भेद मेट देना चाहता था। वह कहता था एक मनुष्यको दूसरे मनुष्यसे बडा नहीं होना चाहिये। मनुष्यसे बडा कोई है तो ईश्वर।

इसमें सन्देह नहीं कि नव इटली, कारबोनारी सभा-से सबल सस्था थी, किन्तु त्रुटियाँ दोनों सस्थाओंमें थी। सरकारके जासूस विभागने ही ऐसी गुप्त सस्थाओंको जन्म दिया था। मत्जीनीने "नव इटली" रूपी जहाजको ऐसे भयावह समुद्रमें चलाना चाहा, जहाँ उसे पद पदपर कठिनाइयोंका सामना करना अनिवार्य था। साथ ही उसके किनारे लगते ही उसीके प्रभावसे यूरोप भरमें प्रजातन्त्र शासनपद्धतिके अनेक पक्षपाती और प्रेमी उत्पन्न हो गये।

मत्जीनी ज्यों ही लामोनसमें पहुँचा, त्यों ही उसे विदित हुआ कि मैं षड्यंत्रोंके केन्द्रमें आपहुँचा। कई कारणोंसे वहाँ

रहना उचित न समझ वह मार्सेलसमें पहुँचा। वहाँ बसने अपने कतिपय समवयस्कोंकी सहायतासे एक दल सङ्घटित करना आरम्भ किया। बड़ी धूमधाम और उत्साहके साथ उसका काम आरम्भ हुआ। इन दिनोंके कार्यक्रमके विषयमें उसने पीछेसे लिखा था कि "उस समय न तो हम लोगोंका कोई कहीं दफ्तर था और न कोई हमारा सहायक था। सारे दिन और अधिक रात बीतने तक हम लोग अपने कार्यमें सलग्न रहते थे। कोई लेख लिखता था, कोई पत्रोंके उत्तर तैयार करता था कोई यात्रियोंसे मिलकर समाचार समह करता था, कोई जहाजवालोंको अपने गरोहमें भर्ती करता था, कोई कागज मोड़ता, कोई उन्हें लिफाफेमें रख कर बन्द करता था। इस प्रकार हम लोग मिलकर मानसिक और शारीरिक परिश्रम किया करते थे। लासिलिलिया कम्पोजीटर था अर्थात् छापाका अक्षर बैठाता था, लेम्बर्टी प्रूफोंको शोधा करता था अर्थात् प्रथम छापेकी अशुद्धिया ठीक करता था। एक हमारा साथी था वह पैसे बचानेके लिये जाकर स्वय पत्र बाँट आया करता था। हम लोग सब बराबरवाले भाइयोंकी तरह रहते थे। हम लोगोंके विचार एव उद्देश्य भी एक ही थे। प्रजातन्त्र प्रणाली के विदेशी पक्षपाती हम लोगोंकी सराहना करते थे। हमें कभी कभी अनेक वस्तुओंका अभाव भी प्रतीत होता था किन्तु उनके लिये हम चिन्तित नहीं होते थे और भविष्यकी आशासे सदा प्रसन्न रहते थे।"

इन नवयुवकोंके अनेक आशापूरित विचार उनके पत्र-द्वारा सारे यूरोपमें फैल गये। उस समय लोगोंमें ऐसा असन्तोष और ऐसी बेचैनी फैली थी कि इन लोगोंके आशापूरित लेखों को वे लोग ईश्वरके दूतोंके मुखसे निकले हुए भविष्य

वाद मानने लगे थे। सैकड़ों उपायोंसे इन नवयुवकोंके प्रकाशित लेखोंका इटलीमें प्रचार किया जाता था। "नव इटली" की शाखाएँ प्राय सर्वत्र स्थापित होगयी थीं और स्थानीय सम्पादक मत्जीनीके सिद्धान्तोंको अपने आस पास के प्रान्तोंमें फैलाते थे। मत्जीनीके लेखोंमें गूढ धार्मिक सिद्धान्तोंको देख अनेक धर्मयाजक "नव इटली" संस्थाके अनुयायी होगये थे। इस संस्थामें अनन्त धनी मानी, व्यवसायी भी सम्मिलित हो चले थे। इस संस्थाका मूलमन्त्र था "ईश्वर और जनता।" दो वर्षके भीतर "नवीन इटली"के सभ्योंकी संख्या सहस्रोंपर पहुँच गयी।

जो लोग इटलीको स्वतन्त्र साम्राज्य बनानेके लिये आशान्वित हो रहे थे उनको पीडमाण्टवालोंसे पूरी आशा थी। पीडमाण्टवासी प्रसिद्ध योद्धा थे और वहाँ पर्याप्त सैन्यदल भी था। पीडमाण्टकी अवस्थिति भी ऐसी थी कि वह लोमबार्डीका द्वार समझा जाता था। इन सब बातोंके अतिरिक्त वहाँ राष्ट्रीयताके भावोंका प्रवाह वेगसे बह रहा था। वहाँका तत्कालीन अधीश्वर चार्ल्स एलबर्ट स्वयं राष्ट्रीय सिद्धान्तोंका पक्षपाती था और कभी कभी उसकी बातोंसे यह प्रतीत होने लगता था कि वह विदेशियोंको आल्पाचलके पार भगाये बिना न रहेगा। किन्तु वह उदार न था। उसके पार्श्ववर्त्ती भी अच्छे न थे। चार्ल्समें अनेक गुण रहते भी वह नेता होनेकी योग्यतासे शून्य था। उसके विचार तो बड़े प्रशस्त थे किन्तु उनके कार्य्य रूपमें परिणत होने की नौबत नहीं आती थी। इन सब त्रुटियोंके होते हुए भी युवकोंको उससे बहुत आशा थी। मेजिनीको राजाओंमें अणुमात्र भी विश्वास न था, किन्तु जब उसने देखा कि उसकी संस्थाकी आशातीत

उन्नति हो रही है, तब उसने विचारा कि किसी नेताके न होनेसे किसी एक नेता का होना अच्छा ही है।

संवत् १८८७ वि०में मत्जीनीने चार्ल्स एलबर्टके नाम अपना सुप्रसिद्ध पत्र प्रकाशित किया। वह पत्र न था किन्तु एक राजदूतकी भविष्य सन्ततिके लिये घोषणा थी। उस पत्रमें मत्जीनीने चार्ल्स को लिखा था कि आवश्यकता पड़ने पर आपको आस्ट्रिया या फ्रांससे सहायता न लेनी पड़ेगी। उस पत्रमें लिखा था

"पीडमाण्टके मुकुटसे कहीं अधिक बढ़कर जा ज्वलयमान एक मुकुट है वह मुकुट उसीको मिलेगा जो उसे प्राप्त करनेका साहस करेगा, जो उसकी प्राप्तिके लिये अपने प्राणोंका मोह न करेगा और जो उसकी दमकको तुच्छ अत्याचारके विचारसे धुँधला न करेगा। आप जातीय दलके नेता बनिये। अपने झण्डे पर "ऐक्य स्वतन्त्रता, स्वाधीनता" अङ्कित कीजिये। इटलीको बर्बरोंके हाथसे छुड़ाइये। इटलीके भविष्यकी रचना कीजिए। इटलीकी स्वतन्त्रताके साधक नेपोलियन बन जाइये। आप प्रवृत्त हूजिये, हम सब आपके सहायक आपके साथ हैं। आपके पीछे प्राण देनेको तत्पर हैं। हम इटलीकी सब छोटी मोटी रियासतोंको आपके झण्डेके नीचे कर देंगे। आपकी सुरक्षा तलवारकी नोकपर है। तलवारको खींचिए, म्यानको फेंक दीजिये। साथ ही याद रहे कि यदि ऐसा आप न करेंगे तो दूसरे लोग बिना आपके और आपके विरुद्ध इस कामको कर डालेंगे।"

चार्ल्सके मनमें वीरताकी लहरें उठा करती थीं। किन्तु थोड़ी ही देर बाद सतर्कताकी धारामें दब जाया करती थीं

मत्जीनीके पत्रको यदि उसने एक बार भी पढ़ा होगा तो निस्सन्देह समूचे देशके परित्राणका भाव उसके मनमें अवश्य ही उदय हुआ होगा। किन्तु उस भावकी गतिके मन्द होते ही उसके मनमें यह भाव उठा होगा कि ऐसे बड़े साहसके काममें हाथ डालनेका समय अभी नहीं आया, या मेरा इस काममें हाथ डालना ठीक नहीं। इस विचारदौर्बल्यके मनमें उदय होते ही चार्ल्सके पार्श्ववर्त्तियोंको उसके विचारोंको हिलानेका अवसर मिला। अन्तमें जो प्रजातन्त्र शासनपद्धतिके विरोधी थे उन्हें अच्छा अवसर मिला। चार्ल्सके मनको उन लोगोंने उस ओरसे बहका दिया। दुर्भाग्यवश चार्ल्सने अपने विचारोंके विरुद्ध दूसरोंको उस समय कार्य्य करनेका अधिकार दे दिया। जिस समय पीडमाण्टमें विद्रोहकी आग भड़की, उन लोगोंने विद्रोहियोंके प्रति दयाशून्य हृदयसे बड़ा निष्ठुर व्यवहार किया। जिनोआमें आतङ्क फैल गया। विद्रोहियोंसे कहा गया कि तुम अपने साथियोंके नाम बतलाओ नहीं तो तुमको फांसी दी जायगी। उन विद्रोहियोंमें मत्जीनीका एक बाल्यावस्थाका मित्र भी था। उसका नाम था जैकोपो रुफ्फिनी। उससे जब यह बात कही गयी, तो उसने कारागारमें आत्महत्या कर डाली। इस घटनापर टिप्पणी करते हुए मत्जीनीने लिखा कि स्वधर्मके लिये प्राण त्यागनेवालोंके रक्तसे सींचे हुए सत्यसकल्पोंके फल बड़ी जल्दी पक जाते हैं।

अट्ठाइस वर्षकी अवस्थामें मत्जीनीको फ्रान्स छोड़कर और बहुत छिपकर स्विट्ज़रलैण्डमें रहना पड़ा। उसने लुटेरोंका एक दल सङ्गठित करना चाहा जो सावोय प्रदेशमें जाकर छापे डाला करे। किन्तु जिन लोगों पर उसने विश्वास किया था, वे विश्वासघाती निकले। अनन्त विपत्तियोंको झेलते, झेलते

मत्ज़ीनीका स्वास्थ्य बिगड़ गया। उसकी रात्रि जागते तथा दिन गडरियोंकी झोपड़ियोंमें छिपकर रहते हुए बीतते थे। उसको यदि कहीं विश्वास मिल सकता था, तो हिमाच्छादित पर्वतोंकी कन्दराओंमें। उस दशामें न तो उसके बहुतसे मित्र थे, न उसके पास पुस्तकें थीं और न कोई छापाखाना ही था, जिसके द्वारा वह अपने विचार युरोपके नवयुवकोंमें फैला सकता। हाँ कभी कभी उसे यह सुसम्वाद मिल जाया करता था कि उसके डाले हुए बीज इधर उधर अङ्कुरित होकर पल्लवित होते जाते हैं।

इन घोर कष्टके दिनोंमें मत्ज़ीनीको सबसे बढ़कर दुःख उस समय होता था, जब वह विचारता था कि मैंने व्यर्थ अपने परिवार और मित्रोंको दुःख दिया। उसके बाल्यावस्थाके साथियोंमें बहुतसे तो इस संसारसे चल बसे थे और अनेक उसकी तरह स्वदेशसे निकाल दिये गये थे। वह स्त्री जो उसकी प्रीतिपात्र थी, उसके प्रणयसूत्रमें नहीं बँध सकती थी, क्योंकि इस समय वह घरद्वार रहित हो रहा था। यहाँ तक उसकी स्थिति सन्दिग्ध थी कि उसे इस बातका भी भरोसा न था कि कल मुझे भोजन मिलेगा या नहीं। उसने अपने एक मित्रको लिखा था कि "मैंने भलाई करनी चाही किन्तु बदलेमें सदा बुराई हुई। यह विचार मेरे मनमें इतना गहरा बैठता जाता है कि मुझे भय है मैं कहीं विक्षिप्त न हो जाऊँ।"

संवत् १८६४ में मत्ज़ीनी स्विट्ज़रलेण्डसे लण्डन गया। वहाँ जानेका कारण यह था कि उस नगरमें वह स्वतन्त्रता पूर्वक रह सकता था। वहाँ स्विट्ज़रलेण्डकी तरह छिपकर रहनेकी आवश्यकता न थी। उसको इङ्गलेण्डमें रहते समय

किसी प्रकारका भय न था। क्योंकि वह जानता था कि वहाँ वाले ऐसे लोगोंमें नहीं हैं जो बाहरवालोंकी भली बुरी बातों पर सहसा विश्वास कर लें। उसने एक सस्ते भाडेका मकान लिया और वहाँ बैठकर वह लेखनीद्वारा अपने निर्वाहके योग्य धन उपार्जन कर लेता था। वहाँ रह कर उसने "नव इटली" के सभ्योंके साथ पुन लिखापढी आरम्भकी और वह उन इटलीवालोंसे मिला जो उसकी तरह लन्दनमें कठिनाईके साथ दिन काट रहे थे। रुफ्फिनीका परिवार कुछ दिनों तक उसके ही साथ रहा, किन्तु पीछे मतभेदके कारण वह उससे अलग हो गया। वह वेतन लेकर दिनभर ब्रिटिश म्यूजियम में लिखाईका काम किया करता था और रातको अपनी छोटी कोठरीमें बैठकर लिखता था।

इस समय उसे धन बिना बडा कष्ट था। वह प्रत्येक इटली वासीको भाई समझता था और वे यदि उससे कोई वस्तु माँगते तो तुरन्त दे दिया करता था। धीरे धीरे उसके पास जो कुछ सामग्री बच रही थी, वह भी सब बन्धक हो गयी। मत्जीनीने तब कहा कि " मुझे और कुछ नहीं चाहिये, मुझे केवल बैठकर लिखनेके लिये स्थान और थोडेसे पैसे चुरुटके लिये चाहिये। इसके बाद भाग्यवश उसका परिचय कारलाइल्से हो गया। इससे उसको यह लाभ हुआ कि उसके मनका एक साथी मिल गया और थोडी बहुत चिन्ता भी घट गयी। किन्तु साथही उसके जीकी झञ्झट अवश्य बढ गयी। कभी कारलाइल् मत्जीनीकी कडी परीक्षा लिया करता था। क्रोधमें वह सब सभा समाजोंकी निन्दा कर जाता और पीछेसे मत्जीनीसे कह देता कि "तुम सफल इस लिये नहीं होते कि तुम बकते बहुत हो"। इतना होनेपर भी कारलाइल् अपने

मित्र मत्जीनीकी बुद्धि और विचारोंका मन ही बड़ा आदर करता था। एक बार 'लण्डन टाइम्स' ने मत्जीनीके ऊपर हल्का कटाक्ष किया था जिसका उत्तर कारलाइलने बड़ी गम्भीरतासे देकर उसे शान्त कर दिया था।

धीरे धीरे मत्जीनीने अन्य अङ्गरेजोंके साथ हेल मेल बढ़ा लिया और वहाँकी मासिक पुस्तकोंमें उसके लेख सादर छपने लगे। उसके राष्ट्रीय मतोंपर उनमें आलोचना प्रत्यालोचनाएँ अच्छे ढङ्गसे निकलने लगीं। इटलीके निवासियोंकी उसने लन्दनमें एक संस्था बनायी और उनके लिये एक पत्र भी निकालने लगा। धनहीन इटलीवालोंके बालकोंको शिक्षा देनेके लिये एक स्कूल खोला, जिसमें रातके समय बालकोंको शिक्षा दी जाती थी और उनको साधारण लिखना पढ़ना सिखानेके अतिरिक्त इटलीका इतिहास भी पढ़ाया जाता था। यह स्कूल मत्जीनीको बड़ा प्रिय था। उसका ध्यान सदा उसमें पढ़ने वाले बालकोंकी ओर लगा रहता था।

लण्डनमें रहकर मत्जीनीने 'नव इटली'की शाखा प्रशाखा गुप्तरूपसे समस्त यूरोपमें स्थापित कर डाली और इनकी शक्ति भी यथासम्भव बढ़ायी। संवत् १६०५ में सारे यूरोपमें जातीय आन्दोलनोंकी धूम पड गयी। फ्रांसके राष्ट्रीय दलने वहा राजतन्त्रकी जड उखाड डाली और सारी इटलीमें उसी समय बिजलीकी तरह राष्ट्रीय दलका आन्दोलन आरम्भ हो गया। लेगहार्नने विद्रोह किया और ग्यूरजोको अपना प्रधान बनाया, टूबेकोंके विद्रोहियोंके हाथमें मिलान पडा, सिसिली वालोंने अपने राजाको भगा दिया और नेपल्सने अर्थलोलुप फरडीनेण्डके हाथसे वहाका शासन छीन लिया। पीडमांण्ट और टसकनीमें भी विप्लव

आरम्भ हुआ। यहां प्रजातंत्रके लिये लोग कोलाहल करने लगे। उधर पोपने मारे डरके रोममें विद्रोहियों की इच्छानुसार प्रजातंत्रशासनपद्धति आरम्भ करवा दी। उस समय सब लोगोंको यह विश्वास हो गया कि इटलीवाले आस्ट्रियाके दासत्वसे विनिर्मुक्त हो गये।

सब तो हुआ, पर इटलीवालोंमें सर्वनाशकारी परस्परका मतभेद उत्पन्न हुआ। लोगोंने वीरता प्रदर्शनकर स्वतन्त्रता तो प्राप्त कर ली। किन्तु अब इटलीवालोंमें दलादली आरम्भ हुई। एक दल कहता था कि इटलीका कोई मनुष्य समस्त देशका राजा बनाया जाय, कोई कहता कि राजाकी आवश्यकता नहीं, हम लोग मिलकर प्रजातन्त्रके अनुसार देशके शासनकी व्यवस्था करेंगे। कोई पोपके पक्षमें हो उसे सर्वेश्वर बनाया चाहता था। कोई उसे विघातक समझ उसका प्रत्याख्यान करना चाहता था, कोई फ्रासवालोंकी सहायता लेना चाहता, कोई आत्म बलपर निर्भर हो स्वदेशकी रक्षाके लिये विदेशियोंका मुह ताकना नहीं चाहता था। मतभेदोंके कारण यद्यपि कार्य स्थगित सा हो गया था, तथापि एक बात बड़े मार्केकी थी। मत्जीनीने इटलीवालोंके मनमें कर्त्तव्यपालनकी जो स्फूर्त्ति उत्पन्न कर दी थी, उस स्फूर्त्तिका प्रवाह सिसिलीसे लेकर सावोयतक बड़े वेगसे बह रहा था।

मिलानसे समाचार आया कि विएनामें भी घोर विप्लव हो रहा है। कोमो, ब्रेसिया, वेनिस आदि इटलीके उत्तरी प्रदेशोंमें आस्ट्रियाकी राजसत्ताको वहाँवालोंने विध्वंस कर डाला है। पीडमाएट और टसकनीमें युद्ध आरम्भ हो गया है। उत्तर प्रदेशकी सेनाओंको सहायता देनेके लिये लमबेरियासे स्वेच्छासेवकोंकी सेना भी बराबर चली आ

रही है। मत्जीनीको यह समाचार लन्दन नगरमे मिला और वह मिलनको रवाना हुआ। लोगोंने उसका बड़े समारोहके साथ स्वागत किया जैसे कोई किसी देवताका करता है। अस्थायी रूपसे मिलनमे जो शासनसमिति स्थापित हुई थी उसकी कोई नीति निर्दिष्ट नहीं हो पायी थी। चार्लस एलबर्टके पार्श्ववर्त्ती उसकी इच्छाओंमें बराबर बाधाए डाल रहे थे। स्वेच्छा सेवक सग्राम करनेके लिये सन्नद्ध थे, किन्तु युद्ध करनेमे चिरकालसे अभ्यस्त आस्ट्रियावालोंका सामना करनेके लिये न तो उनके पास अस्त्र शस्त्र ही थे और न युद्ध करनेकी उन्हें शिक्षा ही मिली थी। लोम्बर्डीमे वादविवाद और मतभेदकी इतिश्री नहीं हो पायी थी कि आस्ट्रियाकी सेनाने उन स्थानोंपर अपना अधिकार जमाना आरम्भ कर दिया, जो विप्लवके समय उनके हाथसे निकल गये थे। सावनमें इटलीकी सेनाको भागकर मिलनकी शरण लेनी पड़ी। वहाँ इटलीकी सेनामें फिर अदम्य उत्साहके लक्षण दिखाई पडे। किन्तु चार्लस एलबर्टने परास्त हो अपना नगर शत्रुको समर्पण कर दिया। मत्जीनी ल्यूगेनो तथा लेगहार्नमे होकर फ्लोरेंसमे पहुँचा। प्रत्येक नगरकी दशा प्राय एक सी ही थी। प्रत्येक नगरके निवासी मातृभूमि इटलीकी रक्षाके लिये प्राणतक देनेको तय्यार थे किन्तु जितने नेता थे उतने ही उनके भिन्न भिन्न मत थे।

रोमवालोंने पोपको भगा दिया था और वहाँ प्रजातंत्र स्थापित कर दिया था। रोमवाले मत्जीनीके लिये व्याकुल थे। मत्जीनीने भी वहाँ पहुँचकर चाहा कि रोममेंही देशभरकी कठिनाइयोंके निराकरणकी कोई व्यवस्था कर दी जाय। रोमवालोंने मत्जीनीका स्वागत उचित और उसकी सेवाके अनुरूप

किया। उसने रोममे पहुँचते ही दस हजार सैनिकोंकी एक सेना उत्तरकी ओर रवाना करनी चाही इतनेमे नोवेरामे इटालियनोंके बुरी तरह हार जानेके समाचार सुन पड़े। इन्हें सुनते ही रोमके समस्त देशहितैषी किंकर्त्तव्यविमूढ होगये। रोमवालोंको अब अपनी चिन्ता उत्पन्न हुई। उन्होंने तीन मनुष्योंको रोमका प्रधान नियन्ता बनाया, जिनमे एक मत्जीनी भी था।

मत्जीनीने अभीतक व्याख्यान दिये और लेख लिखे थे। अब उसको रोम जैसे विशाल नगरका शासन करना पडा। यह वही नगर था जहाँके प्रधान धर्मयाजक और शासक पोप प्राण लेकर भाग गये थे। उसे चाहिये था कि वह इस अधिकारको ग्रहण न करता, किन्तु उसने ऐसा न किया। उसे विश्वास था कि पोप सदाके लिये अधिकारच्युत हुए। वह एक नयी धार्मिक व्यवस्थाका दिवास्वप्न देख रहा था। किन्तु जबतक पुरानी धर्मव्यवस्था विलुप्त न हो, तबतक नवीन व्यवस्थाका प्रचार कैसे हो सकता है। उसने प्राचीन धार्मिक व्यवस्थाको नष्ट करना तो दूर रहा, प्रत्युत यह अपना कर्त्तव्य समझ लिया कि उसकी अध्यक्षतामे पुराने समयके धर्म याजकोंसे कोई चूतक न करने पावे। वह रोमके प्रजातंत्रमें ईश्वरकी भक्तिको और मिलाया चाहता था। उसे आशा थी कि धर्मयाजकगण, इटलीकी नवीन शासनपद्धतिके पोषक होंगे। मत्जीनी तो पोपको फिर अधिकारसम्पन्न करनेको प्रस्तुत था, यदि पोप अपना अधिकार केवल धर्म-सीमाके अन्तर्गत रखकर, शासनसम्बन्धी विषयोंमे हस्तक्षेप न करनेका उसे विश्वास दिला देता।

रोममें जो नवीन शासनपद्धति स्थापित की गयी थी, उसमें

इस बातका पूरा ध्यान रखा गया था कि सब वर्ण और श्रेणीके लोगोंका उसमें समान भाग रहे। नवीन पद्धतिका बीजारोपण बडे धैर्य और उत्साहके साथ किया गया था। जो त्रिमूर्त्तियाँ रोमराज्यके अधिष्ठात्री बनायी गयी थीं बडी योग्यता और मनोयोग पूर्वक अपने कर्त्तव्यका पालन करती थीं। मत्ज़ीनीका बर्त्ताव अमीर गरीब सबके साथ समान था। उससे जिस प्रकार बड़े आदमियोंका काम निकलता था वैसे ही छोटे आदमियोंका काम करनेमें मत्ज़ीनी कभी विमुख नही होता था। उसे वेतनरूपमे जो कुछ मिलता था, दीन दुखियोंको दे देता था।

मत्ज़ीनीकी यह आशा दुराशामात्र थी कि रोमकी सेना आस्ट्रियाकी उस सेनाका जो उसपर अधिकार स्थापित करनेके अर्थ आरूढ थी सामना कर सके। अधिकसे अधिक रोमवालोंसे वह यह आशा कर सकता था कि वे रोमकी रक्षाके लिये आत्मसमर्पण कर समस्त पृथिवीको जना दें कि वे कैसे स्वदेशानुरागी और स्वतंत्रता देवीके उपासक हैं। मत्ज़ीनीने यह तो अवश्य दिखला दिया। किन्तु वह फ्रांस और आस्ट्रियावालोंसे अकेला न लड सका।

रोमवालोंने बडी वीरतासे शत्रु सेनाका सामना किया। किन्तु लुइस नेपोलियनने रोमके मुखियोंको धोखा दिया और सन्धिस्थापनके झमेलेमे उनको अटका कर, रोमपर आक्रमण किया और उसे घेर लिया। इतनेपर भी एक मासतक रोमवालोंने शत्रुओंके साथ युद्ध किया। मत्ज़ीनी, गारिबाल्डी, कावूर, बेली प्रमुख छोटे बडे सब लोगोंने मातृभूमिको विदेशी राजसत्तासे अक्षुण्ण बनाये रखनेके लिये प्राणपणसे युद्ध किया। ये स्वदेशानुरागी शरीरमे प्राण रहते कभी शत्रुके हाथमें रोमको समर्पण न करते, किन्तु जब भोजनकी सामग्री नगरमें

न रही, तब अगत्या उन लोगोंको शत्रुओंके हाथ आत्मसमर्पण करना पड़ा। गारिबाल्डी तीन हजार सेना लिये हुए रणक्षेत्रसे मुड़ा। मत्जीनी रोममें ही बना रहा। शत्रु उसके शरीरपर हाथ नहीं लगाते थे, क्योंकि उनको यह बात मालूम थी कि रोमके लोग मत्जीनीको प्राणोंसे बढ़कर समझते हैं।

रोममें प्रजाशासनपद्धतिका अधःपतन मत्जीनीके लिये मर्मभेदी घटना थी। आसुरिक शस्त्रबल और विश्वासघात-द्वारा, शासनकी सर्वोत्कृष्ट प्रणालीका नाश हुआ। किन्तु मत्जीनी इस अस्थायी विफलताके कारण हतोत्साह न हुआ। वह अपने उद्देश्य-सिद्धिके लिये कार्य करता रहा। रोमसे पहले वह स्विजरलेण्डमें गया। जब वहाँ विदेशियोंने उसे तङ्ग किया तब वह वहाँसे चलकर लन्दन पहुँचा।

इस बार इङ्गलेण्डवालोंने मत्जीनीसे पहलेसे अधिक दयामय व्यवहार किया। इस बार भी उसने एक साधारण मकानमें डेरा डाला और पूर्ववत् लेख एवं पत्र लिखना तथा अपने देशके धनहीन लोगोंके बालकोंको पढ़ना आरम्भ किया।

पीडमाण्टके राजाके प्रधान सचिव कावूरका मत्जीनीकी जीवनीके साथ सम्बन्ध है। यह सम्बन्ध उन दोनोंका व्यक्तिगत नहीं, किन्तु उद्देश्य सम्बन्धी है। कावूर और मत्जीनी दोनोंका उद्देश्य इटलीमें स्वराज्य-स्थापित करना था। किन्तु इस उद्देश्यके साधनमें दोनों एक दूसरेके प्रतिकूल थे। कावूर इटली-का उद्धार अपने प्रभुके हाथसे करवाना चाहता था और राष्ट्रीय दलकी सहानुभूतिका केन्द्र विक्टर इमेनुएलको बना रहा था। उसने लुइस नैपोलियनको भी अपनी ओर करनेका प्रयत्न किया था। अधकचरे विप्लव जो आस्ट्रियनके विरुद्ध भड़का करते थे उनसे कावूर घृणा करता था। वह सेनाको

युद्धकी उचित शिक्षा दे रहा था, और धन एकत्र कर रहा था। किन्तु कावूरके इन साधनोंको मत्जीनी अच्छी दृष्टिसे नहीं देखता था। नेपोलियनको यह विश्वासघातक समझता था। आस्ट्रियाके विरुद्ध विप्लव होते रहें, मत्जीनी इसका पक्षपाती था। न तो कावूर मत्जीनीको अपने विश्वासोंका अनुयायी बना सका और न मत्जीनी ही उसपर अपना प्रभाव डाल सका। यही क्यों कावूर तो मत्जीनीको आततायी समझ सब कार्योंका विघातक समझता था और मत्जीनीके विचारमें कावूर राजतत्रका पक्षपाती था जो इटलीवालोंकी गरदनपर आस्ट्रियाके जुएका बोझ हटाकर अपने जुएका भार रखना चाहता था। यही कारण था कि दोनोंसे नहीं पटती थी और मत्जीनी खुल्लमखुल्ला सर्वसाधारणके सामने कावूरको दोषी ठहराता था और कावूरने इसीसे मत्जीनीको देशसे निर्वासित करवा दिया था।

इस बीचमें जब पीडमाएट बडी सावधानीसे चाल चल रहा था और इटलीकी अन्य रियासतें संयुक्त प्रयत्नके लिये सन्नद्ध हो रही थीं, तब मत्जीनीने दो विप्लवोंमें जाकर योग दिया। एक तो कोमोंके समीप और दूसरे जिनोआमें। इन दोनों विप्लवोंका कुछ भी फल न हुआ किन्तु विप्लवकारियोंको बुरी तरह नीचा देखना पडा। आस्ट्रियन गवर्नमेंट नित्यके विप्लवों-से तङ्ग हो गयी थी। अत इस बार विप्लवकारियोंको राज विद्रोही होनेके अपराधमें मत्जीनी और उसके पांच साथियोंको मृत्युदण्ड और अनेक लोगोंको बहुत वर्षोंतक कारागारवास-का दण्ड दिया। मत्जीनी मारकिस पैरेट्रोके घरमें छिप रहा। पुलिसने उसे बहुत खोजा किन्तु वह उसका पता न लगा सकी। कुछ दिनों बाद मत्जीनी भेष बदलकर एक स्त्री का

हाथ पकडे हुए टहलता हुआ गाडीके पास पहुँचा और उसमें बैठकर वह क्वारटों गया और वहींसे वह इङ्गलैण्ड चला गया।

संवत् १६१६ वि० में कावूरकी दूरदर्शिता और बुद्धिमानी से राजतन्त्र शासन प्रणालीके पक्षपाती और राष्ट्रीय दलके लोग युद्धके लिये तैयार हो गये। फ्लोमबेरीजमें कावूर और नैपोलियनकी भेट हुई। कावूरको भरोसा था कि वह अपने मित्रकी सहायतासे शत्रुको परास्त कर देगा। अत युद्ध आरम्भ करनेकी घोषणा की गयी। टसकनी, रोमाग्ना, पारमा और मोडें-नाके राजा भगा दिये गये और ये सारे स्थान विक्टर इमेनुअल-के अधिकारमें आ गये। इस बीचमें एक ऐसी घटना हुई जिससे इटलीमें फिर फूट फैलगयी। बिना कहे सुने नैपोलियन विल्ला-फ्रेङ्कामें जाकर सम्राट फ्रेंसिस जोजेफसे मिलगया और सारा भेद खोल दिया। इसपर कावूरको बडा क्रोध आया और हृदयस्थ घृणाको दमन न कर उसने पदत्याग कर दिया। इटलीवालोंमें फिर मैत्राके अभावसे निर्बलता आ गयी।

मत्जीनीकी नैपोलियनके विषयमें जो धारणा थी वही ठीक निकली। मत्जीनी फ्लारेंस गया और वहीं जाकर कहा कि मध्य इटलीके निवासियोंको अपने प्राणोंका मोह छोडकर स्वतंत्रताके लिये प्राण देना चाहिये। साथही उसने मतद्वैधका विचार छोडकर परामर्श दिया कि पीडमाण्टको मिलाकर शक्तिको परिपुष्ट कर लेना चाहिये। उसने सिसली और रोमको पत्र भेजे तथा गारीबाल्डीसे प्रार्थना की कि तुम अपनी सेना लेकर उम्ब्रियामें प्रवेश करो। ये सारे काम मत्जीनीने छिपे छिपे किये थे, क्योंकि उसके नामका वारंट अभी रद्द नहीं हुआ था। मत्जीनी, जो अपने देशके उद्धारके

लिये अहर्निश सचेष्ट रहता था, उसपर उसके देश वासियों-का विश्वास न होना और उनसे भयभीत रहना मत्जीनीको असह्य था और वह इस विचारके उदय होनेपर अत्यन्त क्रुद्ध हो जाया करता था।

धीरे धीरे जो घनी घटा आकाशमे छायी हुई थी, फट गयी। कावूर फिर पूर्ववत् प्रधान सचिवके पदपर आरूढ हुआ और समयानुसार वर्ताव करने से उसे फ्रास और देशी सेना की उपयुक्त सहायता प्राप्त हुई। मत्जीनीके मतानुसार युद्ध छेडनेमें विलम्ब करना ठीक न था, किन्तु कावूर अभी समयकी प्रतीक्षा करना उचित समझता था। कावूरहीका विचार ठीक भी था। यह देख हतोत्साह हो मत्जीनी इङ्गलैण्ड लौट गया। फिर जब उसने सुना कि गारिवाल्डी अपनी प्रसिद्ध सेना सहित सिसिलीकी ओर चलपडा, तब तुरन्त जिनोआमें लौट आया। उधर गारिवाल्डीकी विजयपताका फहराने लगी। पीडमाण्टवालोंने पोपके विरुद्ध युद्धकी घोषणा कर दी। केवल रोम और वेनिसही छूटे हुए थे। मत्जीनी घटनास्थलके समीप रहनेके अभिप्रायसे नेपिल्स गया। वहा उसने नेपिल्सके रहनेवालोंसे आग्रह किया कि तुमलोग भी स्वराज्य लो, किन्तु उन लोंगोंमें एका था अत उन्होंने मत्जीनीको धमकाया। मत्जीनीके मित्रोंने नेपिल्स छोडकर चले जानेका आग्रह किया। एकने मत्जीनीसे कहा कि "अपनी इच्छाके विरुद्ध भी आप हमारे बीच भेदभाव उत्पन्न करना चाहते हैं।"

इटलीके भाग्यका निबटारा जिस समय हो रहा था, उस समय मत्जीनी उसे छोड न सका, किन्तु उसने अपनी भूलको स्वीकार कर लिया। उसने समझ लिया कि गारिवाल्डीद्वारा इटलीभरके एक किये विना मनोरथ

सफल नहीं हो सकता। उधर इटलीकी पलटनोंने प्रुशियाकी सहायतासे आस्ट्रियावालोंके साथ विनिशिया, इस्ट्रिया और टिरोल लेनेके लिये फिर युद्ध छेडा। गारिवाल्डीकी प्रसिद्धसेनाके टिरोलकी घाटियोंमें छक्के छूट गये। प्रुशिया नो जीता, किन्तु इटलीको कुसटोज्जामे हारना पडा। नैपोलियन फिर इटलीके पक्षमें हुआ। यह सुनकर यूरोपभरको बडा आश्चर्य हुआ कि इस झगडेको मिटानेके लिये नैपोलियन बीचमें पडा है और आस्ट्रियाने उसे विनिशिया देनेकी प्रतिज्ञा की है। इटलीवालोंसे नेपोलियनने कहा कि विनिशिया मैं तुम्हें देदूंगा यदि तुम मेरे कहनेसे आस्ट्रियावालोंके साथ सन्धिकर लोगे। अब कुछ करना धरना नहीं था। मत्जीनी ने देखा कि जो युद्ध जातीय स्वतंत्रतालाभके लिये आरम्भ किया गया था, उसकी समाप्तिमें विदेशी एक प्रान्तका दान करनेको उद्यत हुआ है।

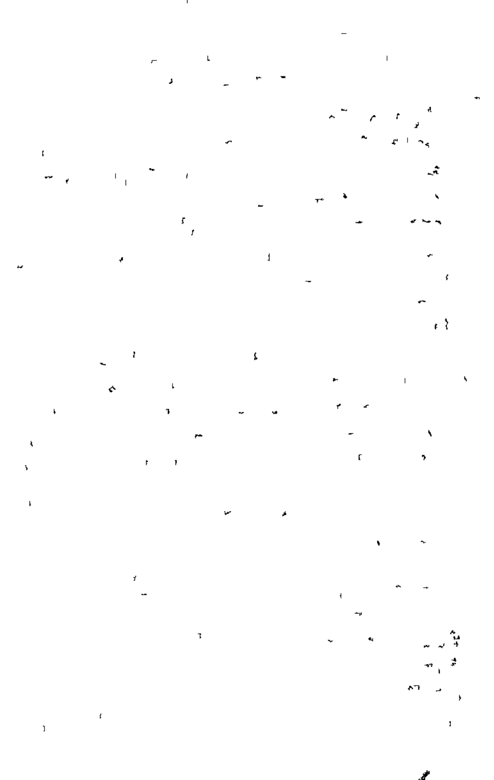
उसी समयसे मत्जीनीमें और राज-सत्ताके पक्षपातियोंमें फिर विरोध होगया, पर उसने इटलीके किसी न किसी दिन स्वतत्र होनेकी आशा न छोडी। किन्तु उसे यह आशा छोड़ देनी पडी कि उसके जीतेजी उसके सामने इटली स्वतंत्र हो सकेगी। चालीस हजार मनुष्योंने हस्ताक्षर करके उसका अपराध क्षमा करनेके लिये प्रार्थनापत्र भेजा। उसको मोस्सिनाने बारंबार अपना प्रतिनिधि निर्वाचित किया। किन्तु माडरेट दलवालोंने उसे उस पदपर न होने दिया। वारवार उसका विरोध करनेसे मत्जीनीकी प्रसिद्धि बढी। बहुतसे तो उसे देवता समझते थे। वह छिपकर इटलीमें घूमने लगा और अपनी शारीरिक शक्तिसे प्रजातंत्र राज्य स्थापन करनेके अर्थ अधिक उद्योग करने लगा। जिनोआमें उसके बहुतसे अनुयायी थे। उसने

एक छोटी पुस्तक जिसका नाम "धर्मसभासे ईश्वरकी सभातक" था और जिसमे धर्मसम्बन्धी बातें थी, लिखी। साथही वह एक विप्लवके लिये षडयंत्र भी रच रहा था। इस बार उसने सिसिलीमें उतरना चाहा। उसका यह विचार अदूरदर्शिता का था। वह पालरमो Palermo में पकड लिया गया और गेइटामें बन्दी कर लिया गया।

रोमका पतन होतेही मत्जीनीने छुटकारा पाया। वह उस नगरमें होकर निकला, जहाँका इक्कीस वर्ष पूर्व वह शासक रह चुका था। उसको यह बात पसन्द न थी कि उसका धूम धामके साथ लोग जलूस निकाले। अत. वह चुपके चुपके जिनोआ चला गया। वहा जाकर बीमार हो गया। निर्बलताके कारण उसका रोग उसे दबाता ही चला गया। वहासे हटकर वह पीसा नामक नगरको गया और वहा एक मित्रके घरमें संवत् १९२८ वि० के अन्तमें परलोकवासी हुआ। यह बडे ही आनन्दकी बात थी कि उसने अपनी आखोंसे इटली-को स्वतत्र दशामें देख लिया।

मत्जीनीकी जीवनीमें आद्यन्त आत्मोत्सर्गके भाव भरे पड़े हैं। उसने मातृभूमिको विदेशियोंकी दासत्ववृत्तिसे विनिर्मुक्त करनेके अर्थ घर छोडा, कुटुम्ब छोडा, सुख छोडा और शरीर सम्बन्धी भोग छोडा। उसके पास जो कुछ था, सब मातृभूमिके चरणोंपर चढा दिया। वह देशवासियोंके सुखसे सुखी और उनके दु.खमें दुखी रहता था। वह न तो ईर्ष्यालु था और न दूसरोंके विभवको देख जला करता था। उसको न तो अभिमान था और न उसका चित्त मलिन था। उसे इस बातका अहङ्कार भी न था कि इटलीको परतन्त्रतासे छुडानेका यश मैं ही पाऊँ। उसे यशकी तिलभर भी परवाह

न थी। जिसे देखता कि यह कुछ काम कर रहा है और सच्चे मनसे देशकी सेवामें निरत है, उसेही वह सर्वस्व समझ लेता था। इन गुणोंके अतिरिक्त उसमें एक गुण सबसे बढ़कर यह था कि वह सहनशील भी था। जिन इङ्गलैण्डवासियोंके बीचमें वह बहुत दिन रहा, उन्होंने उसके गुणोंका आदर न कर समय समयपर अनादर ही किया, किन्तु मत्जीनीने उसे भी अचल भावसे सहन किया। बारम्बार कहनी अनकहनी बातें सुननेपर भी वह कारलाइलको अपना मित्रही मानता रहा। वह इतना बड़ा कर्त्तव्यपरायण था कि कर्त्तव्यके सामने वह सारी विपत्तियोंको तुच्छातितुच्छ मानता था और कर्त्तव्यपालनमे उसके ऊपर जो जो विपत्तिया पड़ी उन्हें, उसने आनन्दपूर्वक झेला। यदि इटलीकी भूमि ऐसे ऐसे मातृभक्त पुत्र न जनती, तो विदेशियोंकी परतन्त्रतासे उसको छुटकारा मिलना असम्भव था। धन्य इटली जहा मत्जीनी जैसे देशसेवक उत्पन्न होकर अपने नामको इतिहासमें अमर बना गये।



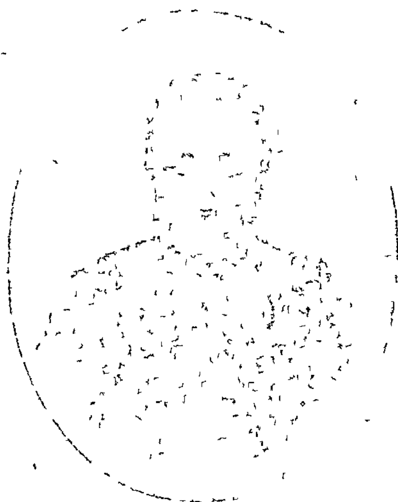


कुटिल नैतिज्ञ कावूर

जन्म स० १८६७]　　　　[मरण ज्येष्ठ शुक्ल ८, स० १९१८

राजपुरुष कावूर

"अपने उद्देश्यपर अचल अटल रह कर और दृढतापूर्वक अपने विचारोंको कार्यरूपमें परिणत कर, इटलीको परतंत्रता से छुटकारा दिलवानेवालोंमें कावूर अग्रगण्य है। उसका जन्म सवत् १८६६ वि०में ट्यूरिन नगरमें हुआ था। या यों भी कहा जा सकता हैं कि उसका समय मध्यकालीन युगमें हुआ था। उस समय राजतत्र शासनप्रणाली प्रचलित थी। उस समयके शासनकी बागडोर जिनके हाथमें थी वे सङ्कीर्ण मना, अपने विचारोंपर दुराग्रही और अभिमानी थे। उसके समयमें विज्ञानसम्बन्धी जो नये आविष्कार हुए थे और जो उपयोगी शिल्प सम्बन्धी उन्नति हुई थी उन्हें अच्छी नही लगती थी। वे सत्रहवी सदीके तुच्छ विनोदोंमें अनुरक्त रहते थे। नैपोलियनके उस समयके उत्कर्षको वे स्थायी मेघके समान समझते थे जो विमल आकाशको कुछ देरके लिये आच्छादित कर प्रवल समीरके चलते ही छिन्नभिन्न हो जाता है। नैपोलियनरूपी प्रचण्ड शीत समीरणके चलते ही उन्होंने अपने शरीरको प्राचीन समयके जीर्ण लबादोंसे लपेट लिया था। उनमेंसे अनेकको यह पूरा विश्वास था कि उस पवनका प्रचण्ड वेग कुछ ही देरमें धीमा पड जायगा। अधिक सख्या ऐसे लोगोंकी थी, जिन्होंने फ्रांसके राष्ट्रविप्लवको एक साधारण घटना समझ लिया था, किन्तु कुछ ऐसे पुरुष एवं स्त्रियाँ भी थी, जो विदेशोंमें रहती थीं और जिनकी दृष्टिमें भविष्य आशाजनक दिखलाई पडने लगा था। इसी श्रेणीकी स्त्रियोंमें कावूरकी पितामही भी थी जिसके उदार और विस्तृत विचारोंका प्रभाव बालक कावूरपर पडा था।



कुटिल नीति र कानूर

जन्म सं० १८२७]　　　　[मरण ज्येष्ठ शुक्ल ८, सं० १

पिचल वैंसोको अपनी बुद्धिमती माताके चातुर्यसे बडा लाभ हुआ था, तथापि उसकी दुराग्रहपूर्ण प्रकृति ज्योंकीत्यों बनी थी। उसका प्रतिविम्ब उसके ज्येष्ठ पुत्र गुस्टेवापर भी पड गया था। हाँ गुस्टेवाके छोटे भाईपर अवश्य उसकी पितामहीके सद्गुणोंका प्रतिविम्ब पडा और उसने ही अपने घरानेका नाम उजागर किया। यह बालक ज्यों ज्यों बडा होता गया त्यों त्यों उसके घरानेके लोग तथा उसके मित्र उसे धर्मोन्मत्त उदारधी कहकर उसपर आक्षेप करने लगे। किन्तु उसे उन लोगोंकी तिलभर भी परवाह न थी। उसे पूर्ण विश्वास था कि वह जैसा है उसे उसकी पितामही भली भाँति जानती है। जीवनभर कावूरके विश्वासपात्र इनेगिने ही रहे। उसके ऐसे मित्र भी बहुत थोडे थे जिनसे उसे सत्परामर्श मिलता था। उसकी पितामहीने शिक्षा देकर ऐसा आत्म निर्भर और स्वावलम्बी बना दिया था कि उसे दूसरोंकी सहायताकी आवश्यकता ही नहीं पडती थी।

सामन्तोंकी प्रथाके अनुसार उस समय छोटे पुत्रोंका सम्मान नहीं होता था। ज्येष्ठ पुत्र ही सब प्रकारके सम्मानोंका पात्र समझा जाता था। इसीसे गुस्टेवाकी शिक्षाका तो बहुत अच्छा प्रबन्ध कर दिया गया था और कैमिल्ली अपने भाग्यपर छोड दिया गया था। गुस्टेवा तो अपनी पदोचित शिक्षा प्राप्त कर रहा था और कैमिल्लीको ट्यूरिनके सैनिक विद्यालयमें शिक्षा ग्रहण करनेके लिये जाना पडता था और वह चार्लस एलबर्टके दर्बारमें पार्श्ववर्त्ती बालानुचरके पदपर नियुक्त हो गया था, किन्तु कैमिल्ली न तो विद्यालयकी शिक्षासे सन्तुष्ट था और न वह राजदर्बारके पदसे प्रसन्न था। कभी कभी वह नियमोंकी पाबन्दी देख क्रोधमें भर जाता। उस उदारमनाके

वैसोका घराना पीडमाएटके प्राचीन घरानोंमें गिना जाता था। समय पाकर इस घरानेके अधिकारमें सेनटेनाकी जागीर और मिगनेरोला प्रान्तके अन्तर्गत काव्रूग्रामकी गढी आ गयी थी। इसी घरानेके एक पुरुषने युद्धमें वीरता दिखलायी थी जिसके पुरस्कारमें तृतीय चार्लस इमेनुएलने मारकिस काव्रूकी उपाधि प्रदान की थी। मारकिस काव्रूके ज्येष्ठ पुत्रका विवाह सेलनकी लडकी फिलीपाइनसे हुआ जो एनिर्सी झीलके तटपर स्थित एक विशाल भवनमें पाली-पोसी गयी थी। पतिके घर जाकर अपनी योग्यता और बुद्धिमत्ताके कारण फिलीपाइन घरकी अधिष्ठात्री देवी हो गयी। जब घरवालोंपर विपत्तिका समय आया और फरासीसियोंने ट्यूरिनमें अपना अधिकार जमाया उसने अपने घरके वर्तन, सामग्री और बहुमूल्य प्राचीन समयकी पवित्र पूजाकी वस्तुओंको बेचकर धन एकत्र किया और अपने सोलह वर्षके पुत्रके लिए आवश्यक सामग्री ले दी। क्योंकि उस बालकको फ्राँसके जनरल बर्थियरके अधीन सेनामें काम करनेकी आज्ञा मिली थी। पीछेसे श्रीमती काव्रूको पीडमाएटके शासककी स्त्रीके साथ रहनेकी आज्ञा मिली जिसका नाम केमिल्लो बोरगीज़ था। यह नैपोलियनकी बहिन थी, सुन्दरतामें अद्वितीया थी। श्रीमती काव्रूके प्रेमपूर्ण बर्त्तावको देख प्रिंसेस बोरगीज़ काव्रूको अपनी प्राणोपमा सखी समझने लगी यहातक कि श्रीमती काव्रूके दूसरे पौत्र कैमिलि काव्रूके खीष्टीय संस्कारमें रानी अपने पतिसहित सम्मिलित हुई थी। मारशनेस फिलिपाइन अर्थात् श्रीमती काव्रूका पुत्र मिचल वैसोका विवाह जिनेवाके काउएट सेलनकी बेटी एडेलीके साथ हुआ था। उसके दो पुत्र थे। एकका नाम गुस्टेवा और दूसरेका केमिल्ली।

पिचल वैंसोको अपनी बुद्धिमती माताके चातुर्यसे बडा लाभ हुआ था, तथापि उसकी दुराग्रहपूर्ण प्रकृति ज्योंकीत्यों बनी थी। उसका प्रतिबिम्ब उसके ज्येष्ठ पुत्र गुस्टेवापर भी पड गया था। हाँ गुस्टेवाके छोटे भाईपर अवश्य उसकी पितामहीके सद्गुणोंका प्रतिबिम्ब पडा और उसने ही अपने घरानेका नाम उजागर किया। यह बालक ज्यों ज्यों बडा होता गया त्यों त्यों उसके घरानेके लोग तथा उसके मित्र उसे धर्मोन्मत्त उदारथी कहकर उसपर आक्षेप करने लगे। किन्तु उसे उन लोगोंकी तिलभर भी परवाह न थी। उसे पूर्ण विश्वास था कि वह जैसा है उसे उसकी पितामही भली भाँति जानती है। जीवनभर कावूरके विश्वासपात्र इनेगिने ही रहे। उसके ऐसे मित्र भी बहुत थोडे थे जिनसे उसे सत्परामर्श मिलता था। उसकी पितामहीने शिक्षा देकर ऐसा आत्म निर्भर और स्वावलम्बी बना दिया था कि उसे दूसरोंकी सहायताकी आवश्यकता ही नहीं पडती थी।

सामन्तोंकी प्रथाके अनुसार उस समय छोटे पुत्रोंका सम्मान नहीं होता था। ज्येष्ठ पुत्र ही सब प्रकारके सम्मानोंका पात्र समझा जाता था। इसीसे गुस्टेवाकी शिक्षाका तो बहुत अच्छा प्रबन्ध कर दिया गया था और कैमिल्लो अपने भाग्यपर छोड दिया गया था। गुस्टेवा तो अपनी पदोचित शिक्षा प्राप्त कर रहा था और कैमिल्लोको ट्यूरिनके सैनिक विद्यालयमें शिक्षा ग्रहण करनेके लिये जाना पडता था और वह चार्लस एलबर्टके दर्बारमें पार्श्ववर्त्ती बालानुचरके पदपर नियुक्त हो गया था किन्तु कैमिल्लो न तो विद्यालयकी शिक्षासे सन्तुष्ट था और न वह राजदर्बारके पदसे प्रसन्न था। कभी कभी वह नियमोंकी पाबन्दी देख क्रोधमें भर जाता। उस उदारमनाके

लिये राजसभाके सङ्कीर्ण व्यवहार सर्वथा स्वभाव विरुद्ध थे। उसकी अभिलाषाएँ उसी समयसे ऐसी थीं कि उसके साथी सुनते तो डर और शोकसे सिहर जाते। उसके मानसिक भाव छिप न सके और वह सीमाप्रान्तकी एकान्त अल्पाचलीय गढीमें भेज दिया गया। उस स्थानमें रहकर उस समयकी सैनिक स्थिति और देशकी दुर्व्यवस्थाने उसके मनपर बड़ा प्रभाव डाला। उसकी अवस्था इक्कीस वर्षकी ही थी तभी उसने एक पत्रमें काउण्ट डी सेलनको लिखा था कि "इटलीवालोंके उद्धारकी आवश्यकता है। स्पेनी और आस्ट्रियनोंकी अमलदारीमें रहनेसे इन लोगोंके आचरण और विचार नितान्त भ्रष्ट हो गये हैं किन्तु फरासीसियोंकी अमलदारीमें रहकर उनमें कुछ सुधार हुआ है। अब देशके युवक जातीय राज्य स्थापन करनेके लिये विकल हो रहे हैं किन्तु बहुत दिनोंकी गुलामीसे छुटकारा पाकर स्वतन्त्रता लाभ करना सहज काम नहीं है। इस उद्देश्यकी सिद्धिके लिये अनेक प्रकारके कष्ट सहने पड़ेंगे और अनेक प्रकारके स्वार्थोंको तिलाञ्जलि देनी पड़ेगी। स्वदेशी राष्ट्रस्थापनके लिये इटलीवालोंको युद्ध करने पड़ेंगे, तब हम उस कीचड़से निकल सकेंगे जिसमें पड़े पड़े हम अनेक शताब्दियोंसे पैरोंसे कुचले जा रहे हैं।"

भला ऐसे विचारोंका आदर विलासी अमीरों और राजा महाराजाओंके दर्बारमें कब हो सकता था। अत. पीडमाण्टके अधीश्वरने उन विचारोंके साथ सहानुभूतितक न दिखलायी। कावूरने देखा कि सेनामें नौकर रहकर उसे अपना चातुर्य्य दिखानेका अवसर नहीं मिल सकेगा। अत उसने अपने पितासे कह सुन कर लैरीमें एक छोटासा इलाका अपने लिये खरिदवाया। वहाँ चावलोंके खेतमें कावूर किसानों जैसा

जीवन विताने लगा। उस स्थितिमें रहकर उसने स्टीममे चलनेवाले कृषिसम्बन्धी यन्त्राकी परीक्षा की। नहरोंसे लाभ उठाया और कृषिसम्बन्धी और शासनसम्बन्धी ग्रन्थ पढे; और प्राचीन समयके दोषपूर्ण शासनके अधःपातकी प्रतीक्षा करने लगा। उसके घरवालोंने उसे उसके भाग्यपर छोड रखा था। घर उसको कोई पूछता न था। उन्हें सन्तोष था कि बेटा खेती करके आनन्दसे जीवन बिता रहा है। पिता और बडे भाई राजदर्बारके झञ्झटोंमें फँसे रहते थे। जबतक पितामही जीवित थी घरसे उसका कुछ कुछ सम्बन्ध भी था किन्तु पितामहीके मरते ही वह भी टूटसा गया। घरवाले उसे सनकी समझते थे और एक दृष्टिसे वह था ही, क्योंकि जो मनुष्य राजदर्बार जैसे स्वर्गीय भोगविलासोंको तुच्छ समझे, और श्रमजीवियोंकी तरह दिन दिन भर खेतमें खडे खडे हल चलवाना अच्छा समझे, विक्षिप्त समझा जाय तो आश्चर्य ही क्या। जो हो, कावूरको इस बातकी चिन्ता न थी कि घर उसको कोई नहीं पूछता उसकी उदासीनताका कारण कुछ और ही था। उसे दुःख इस बातका था कि हाय मैं इस गुलाम जातिमें क्यों जन्मा। वह मनही मन कहा करता था कि यदि मैं इङ्गलैण्डमें किसी अङ्गरेजके घर जन्मा होता तो अभीतक मेरी ख्याति समस्त यूरोपमें फैल गयी होती।

यह तो हम ऊपर लिख ही आये हैं कि कैमिली कावूर मित्रोंकी संख्या बढाना अच्छा नही समझता था। उसके इनेगिने मित्र थे। उन इनेगिने मित्रोंमें भद्रकुलकी एक इनकोन्यू नामकी एक रमणी थी। उस रमणीने उसे ट्यूरिनमें बुलाया। कावूर ट्यूरिन गया। रमणी क्षुब्ध रहा करती थी क्योंकि मत्जीनीके विचार उसके हृदयमें बैठ गये थे, वह देशाकी दशा देख दुखी

रहने लगी थी और देशसेवाको सर्वोपरि मानती थी। उसके हार्दिक विचारोंको सुन कावूर प्रसन्न हुआ किन्तु उस रमणीको नि:स्वार्थ प्रीतिका परिचय पाकर कावूरके मनमें पश्चाताप अथवा लज्जा उत्पन्न हुई। कुछ दिनों उसके घरमें रहकर कावूर फिर अपने गाँवमें लौट गया किन्तु उन दोनोंमें पत्रव्यवहार आरम्भ हो गया। परस्पर सम्भाषणसे जो भाव कावूरके मनमें उस रमणीकी ओरसे उत्पन्न हुए थे उनका प्रवाह एक वर्षतक तो बड़े वेगसे प्रवाहित होता रहा किन्तु एक वर्ष बाद उस स्रोतकी गति मन्द पड़ गयी। यद्यपि कावूर उस रमणीको प्रीतिकी दृष्टिसे नहीं देखता था, किन्तु वह रमणी कावूरको मन ही मन अपना सर्वस्व अर्पण करके, इस भावको प्रकट करनेके लिये सुअवसरकी प्रतीक्षा कर रही थी। अभाग्यसे उसके मनकी बात मनमेंही रही। कुछ वर्षों बाद वह मर गयी। मरते समय वह कावूरके नाम एक पत्र छोड़ गयी जिसमें अन्तिम वाक्य यह था—"जो रमणी तुम्हारे प्रेममें अनुरक्त थी उसकी मानवी लीलाका अन्त हुआ। जैसा गंभीर अनुराग उसका तुम्हारे ऊपर था वैसा किसीका भी तुमसे न था। हे केमिल्ली, तुमने उस अनुरागकी सीमातक पहुंचनेका कभी प्रयत्नतक न किया।" इस घटनासे यह बात हुई कि कावूरके मनपर कुछ प्रभाव पड़ा और पहले उसने अकेले रहनेका जो विचार कर लिया था उसमें परिवर्तन हुआ।

कावूरने १५ वर्षतक लेरीमें कृषि सम्बन्धी कार्य किये। इस बीचमें वह कभी कभी फ्रांस और इङ्गलैण्ड हो आया करता था। इङ्गलैण्डका प्रभाव [illegible] बहुत पड़ता [illegible]
उसकी दृष्टिमें एक कुलीन [illegible] [illegible]दास-जी[illegible]
महत्वकी वस्तु थी। वह पिट [illegible] पड़।

किया करता था। उसको सबसे बढ़कर शेक्सपीयरकी ग्रन्थावली प्रिय थी। पेरिसमें उसके कई एक सम्बन्धी थे। उनके द्वारा वह फ्राँसके युवकोंसे मिलकर उनके विचारोंपर मनन किया करता था। उससे जिस पुरुष या स्त्रीसे कुछभी हेलमेल या जानपहचान होती वह उससे यही कहता कि "तुम क्यों निरुद्देश्य अपना अमूल्य समय नष्ट करते हुए मारे मारे फिरते हो। तुम्हें उचित है साहित्यके क्षेत्रमें अथवा राजनैतिक मैदानमें अवतीर्ण होकर अपने समयका सद्व्यय करो।" इसके उत्तरमें वह कह दिया करता था कि साहित्यमें तो मुझे विशेष अनुराग नहीं। रहा राजनैतिक विषय सो मेरे देशके अकर्मण्य राजाओंकी चालढाल मुझे पसन्द नहीं। उनकी नौकरी करना मैं अपनी अन्तरात्माके विरुद्ध समझता हूं। दूसरी जगह जाकर नौकरी करना मुझे पसन्द नहीं। कावूरकी प्रतिभाकी, तीव्र बुद्धिकी और हँसमुख स्वभावकी लोग प्रशंसा करते किन्तु वह बदनाम भी था कि एक जगह डटकर काम नहीं कर सकता। कावूर ताश खेलता था और ऊँचे दाँव भी बदता था, किन्तु जुएका दुर्व्यसन उसमें न था। पैरिसमें रहनेसे उसे यह बड़ा भारी लाभ हुआ कि उन लोगोंकी प्रकृतिसे परिचित हो गया था जिनसे उसे पीछे काम पडा और इङ्गलैण्डमें रहकर उसे यह निश्चित हो गया कि पार्लिमेण्टरी गवर्नमेण्टका कितना महत्व है।

पीडमोण्टकी शासकमण्डलीका कावूर स्नेहभाजन न था। वे लोग पुराने विचारके थे और कावूर नये विचारका इसीसे उसका मन न तो देशके गण्यमान्य पुरुषोंसे मिलता था और न वह वहाँकी किसी सभा या समाजके उद्देश्योंसे सहानुभूति रखता था। उसने विदेशी सवादपत्रोंमें लेख छप-

वाये थे, जिसमें उसने इटलीमें रेलगाडीके प्रचारकी आवश्यकता प्रदर्शित की थी। उसके ऐसे विचारोंको पढ उसके देशवासी उसे भयङ्कर आततायी समझने लगे। वह न तो किसी सार्वजनिक आन्दोलनमें योग देता था और न किसीसे बहुत मिलता जुलता था, न किसी कार्यमें हस्तक्षेप करता था, तथापि लोग उससे शङ्कित रहते थे। अपने प्रति लोगोंकी ऐसी धारणा वह अपनी प्रकृतिके अनुकूल समझता था। कावूर सवत् १६०४ विक्रमीतक चुप रहा। जब उसने देखा कि पीडमोएटके अधीश्वर चार्लस एलबर्टका मन उसके विचारोंसे मिलता जुलता है और उसकी भी उत्कण्ठा इटलीमें राष्ट्रीयता स्थापित करने की है, तथा इटलीवासी विदेशियोंके दासत्वका टोकरा सिरसे उतार कर फंक देनेके लिये कटिबद्ध हैं, तब वह लेरीका एकान्तवास परित्याग कर कार्यक्षेत्रमें अवतीर्ण हुआ। उसने इङ्गलैण्डके इतिहासको मननपूर्वक पढा था, इससे वह प्रेसकी स्वतन्त्रताका महत्व जानता था। उसने झट एक सवादपत्र निकालना आरम्भ किया, जिसका उद्देश्य था स्वतन्त्र होना, राजाओं और प्रजामें मेल बढाना और आवश्यक सुधार करना।

कावूरको बहुत दिनोंतक अवसरकी प्रतीक्षा न करनी पडी। जिनोआवालोंने सूचना दी कि वे एक ऐसी समिति सङ्गठित कर रहे हैं जो राजधानीमें जाकर ईसवी सम्प्रदायवालों निर्वासनके लिये और जातीय सैन्यदलके सङ्गठनके अर्थ राजासे प्रार्थना करेगी। टयूरिनके मुख्य पत्रोंके सम्पादक एकत्र हुए और विचार करने लगे कि अब हमको इस विषयमें किस नीतिका अनुसरण करना चाहिये। यह बात प्राय. निश्चित हो चुकी थी कि हम लोग जिनोआवालोंके प्रस्तावित विचारोंका अपने

अपने पत्रोंमें समर्थन करेंगे। उसी समय कावूर बोलनेके लिये खड़ा हुआ। उसकी वाणीका वैसा ही भीषण प्रभाव पडा जैसा बमके गोलेके फूटनेपर होता है। उसने उठते ही कहा "जिनोआवाले जिन अधिकारोंको माँगते हैं वे तुच्छ हैं। यदि बुद्धिमान हों तो उन्हें बहुत कुछ मांगना चाहिये। उन सुधारोंके लिये आन्दोलन करनेसे लाभ ही क्या है। जिनका न तो कोई निश्चित रूप ही है और न वास्तविक फल ही है ऐसी प्रार्थना करनेसे लाभ ही क्या है जिसके स्वीकार होने अथवा अस्वीकृत होनेपर गडबडी हो और गवर्नमेंएटका महत्व क्षीण हो। अब जैसा समय उपस्थित है, उसके अनुसार वर्त्तमान शासनपद्धति उपयोगी नहीं, अत हमें समयानुकूल और प्रजामें सभ्यता बढानेवाली नयी शासनपद्धतिके सङ्गठनके लिये आन्दोलन करना चाहिये। आओ हम लोग मिलकर इस कामको शीघ्र करें, कहीं ऐसा न हो कि जिस शक्तिसे आज समाज शृङ्खलाबद्ध हो रहा है वही आगे चलकर जातीय असन्तोषसे नष्ट कर दी जाय।"

कावूरके इस प्रस्तावसे सम्पादकसमितिमें बडा वाद-विवाद हुआ। नरम और गरम दोनों दलवाले पत्रोंके सम्पादकोंके मतानुसार कावूरका प्रस्ताव अनुचित ठहरा। वेलेरिओ नामक एक पत्रसम्पादकने यहाँतक कह डाला कि इस समितिमे ऐसी चर्चा अनधिकार चर्चा है और यह प्रस्ताव जनसाधारणकी इच्छाके विरुद्ध है। वादविवाद, खण्डन मण्डन, कहा सुनी बहुत हुई, किन्तु सम्पादकसमिति कोई सिद्धान्त निश्चित न कर सकी और अन्तमें काम पूरा किये बिना ही विसर्जित हुई। किन्तु इस समितिकी कार्रवाईके समाचार तार समाचारकी तरह चारों ओर फैल गये। वेले-

रिओने तो अपनी मित्रमण्डलीमें कावूरकी दिल्लगी उडाते हुए उसे "अङ्गरेजी बन्दर" बतलाया। कोई कोई उससे पूछने लगे कहिए साहब, राजसभा स्थापित करनेका प्रस्ताव आप कब उपस्थित करेंगे।"

अस्तु जो हो, यह उपहास तो थोडे दिनोंतक रहा। पीछे लोग भूल गये किन्तु उसने बात कही थी, वह ज्योंकीत्यों बनी रही। कावूरकी वक्तृताका मर्म चार्लस एलवर्टके कानोंतक भी पहुंचा। नवीन पद्धतिके सङ्गठनकी पुकार चारों ओर पड गयी। लुइस फिलिपके अधःपतनके दिन समीप आने लगे। इटलीके छोटे छोटे राजा अपनी जागृत प्रजाको बडे बड़े प्रतिज्ञा वाक्योंसे आश्वासन दे रहे थे। एलबर्ट बडी दुविधामें था। समयको देखकर तो वह प्रचलित शासन प्रणालीका संशोधन चाहता था, किन्तु गुप्त रूपसे वह प्रतिज्ञा कर चुका था कि मुझे जैसा शासन मिला है, उसमें किसी प्रकार का हेरफेर न कर ज्योंकात्यों उसे बनाये रखूंगा। जब उसने निस्तारका कोई उपाय न देखा तब राज्य-परित्यागका विचार किया। किन्तु इसका बडा विरोध उसके पुत्र विक्टर इमेनुएलने किया। अन्तमें बहुत सोच विचारकर तथा घर वालोंके साथ परामर्श करके उसने नवीन शासनसङ्गठनकी बात स्थिर की और तदनुरूप किया भी।

ऐसा होतेही कुछ दिनोंतक तो कावूरकी चारों ओर बडी वाहवाही हुई। किन्तु शीघ्रही वहाँका लोकमत फिर विरुद्ध हो गया। नरम दलवालोंको तो उसके साथ विरोध होना ही चाहिये था, किन्तु जो उदार दलके लोग थे उसके साथ इस लिये द्वेष करते थे कि वह अङ्गरेजोंका अनुकरण करना चाहता था। नये चुनावके समय कावूर खडा हुआ और हार गया।

किन्तु थोडेही दिनों बाद अनाश्रित एक पद खाली हुआ और कावूर उसपर नियुक्त किया गया। इस नियुक्तिपर उसके कई साथियोंने आपत्ति की और उससे कहा कि तुम इस पदको अस्वीकृत कर दो क्योंकि वे जानते थे कि जनसाधारण उसके आन्तरिक भावको भली भांति न जान सके थे। कारण यह कि उसकी ओरसे सशङ्कित थे कि यदि वह कहीं किसी दायित्व पूर्ण पदका अधिकारी होगया तो मनमाना काम करेगा।

मन्त्रिमण्डलमें उसके सम्मिलित होतेही मिलनवाले आस्ट्रियाके विरुद्ध उठखड़े हुए। इसपर चार्लसको कुछ सङ्कोच हुआ। इसका कारण यह था कि यद्यपि उसकी मिलन-वालासे पूर्ण हार्दिक सहानुभूति थी। तथापि इङ्गलैण्ड और रूसने, आस्ट्रियाके साथ बखेडा न खडा करनेके लिये साव-धान कर दिया था। मन्त्रिमण्डलीमें जब इस विषयकी चर्चा उठी तब वहाँ दो दल हो गये, एक पक्षमें दूसरा विपक्षमें। जो दल पक्षमें था, उसका नेता कावूर था। कावूरने अपने विचार बड़े कड़े शब्दोंमें अपने पत्रमें छापे। उसने लिखा "अभीतक हमलोगोंने अपना समय शान्तिपूवक व्यतीन किया है इसीसे हम लोगोंको मनमाना काम करनेका अभ्यास पडा हुआ है। युक्तिपूर्वक काम करना तो हम जानतेही नहीं। हमने भली भांति एक एक शब्दपर जो हम लिखते है, विचार लिया है और हमारा अन्तरात्मा कहता है कि इस समय इटली वालोंके लिये केवल एकमात्र द्वार खुला है—वह है स्वराज्य, स्वराज्य और युद्ध भी बहुत शीघ्र"। जिस अङ्कमें यह लेख निकला था वह सवेरे प्रकाशित हुआ था। उसी दिन सायङ्काल को चार्लसने निश्चय किया कि युद्धकरनाही होगा और पीडमो-ण्टसे विप्लवकारियोंकी सहायताके लिये सेना भेजी गयी।

उस युद्धमे जो हुआ हम पहले बतला चुके हैं। लोगोंने बडी वीरतासे मातृभूमिको गुलामीके फन्देसे छुडानेके लिये प्राण दिये। कई प्रसिद्ध युद्धोंमें विजयी भी हुए, किन्तु पीछे आस्ट्रियन सेनाके जनरल रेडिसटेकीने उन्हें परास्त किया। सारडिनियाकी सेनामे सिपाही तो वीर थे किन्तु उनके नैपोलियन जैसा सुचतुर जनरल न था। गोयटाके युद्धमें कावूरका भतीजा, जिसकी केवल बीस वर्षकी अवस्था थी मारा गया। उसके कपडोंमें केमिल्लि कावूरका एक पत्र मिला जिसमें चचाने अपने भतीजेको युद्ध करनेके लिये उत्साहित किया था। उसके मारेजानेसे कावूरको बड़ा शोक हुआ। उसने अपने भतीजेके भविष्यके विषयमें बडी उत्तम भविष्यद्वाणी कही। कहते हैं कि कावूरने अपने भतीजेकी वीरताका स्मारक स्वरूप वह पोशाक एक काचके चौखटेमे बन्द कर अपने सोनेके कमरेमें रखी।

नोवाराके युद्धमें आस्ट्रियनकी जीत हुई। इटलीका राष्ट्रीय दल ध्वस्त हुआ। पीएडमोंएटमे मन्त्रिदलमे परिवर्तन हुआ। कावूरका नाम इस बारके चुनावमें नही आया तथापि वह अपने पत्रमे अपने लेखोंद्वारा लोकमतपर अपना प्रभाव डालता रहा। उधर चार्लस एलबर्टने राज्य परित्याग किया, और उसका पुत्र विक्टर इमेनुएल सिंहासनपर बैठा। पिता पुत्रके विचारोंमे आकाशपातालका अन्तर था। जब नियमित शपथ लेकर विकृरने राज्यशासनकी बागडोर अपने हाथमें ली, उसे एक ऐसे प्रधान सचिवकी आवश्यकता पडी जो राज्यकी अव्यवस्थित दशाको सुधार कर, पूर्ववत् शान्ति स्थापित करे। उसे इस कार्यके लिये उपयुक्त मनुष्य डी एजिलो दिखलायी पडा। वास्तवमें, डी एजिलो एक योग्य पुरुष था और सर्व-

साधारणको उसपर विश्वास था। डी एजिलोकी नियुक्तिसे कावूर भी प्रसन्न हुआ और यह विचार कर कि उसके ट्यूरिन-में रहनेसे शासनमें बाधा पड़ेगी वह अपने इलाकेपर चला गया। वहाँ रहकर उसने भली भाँति विश्राम किया।

कावूर बहुत दिनोंतक गाँवमें न रह पाया। कुछ ही दिनों बाद विक्टरने फिरसे मन्त्रिमण्डलका निर्वाचन किया और कावूर फिर अपने पहले पदपर नियुक्त हुआ। कुछ दिनों बाद मन्त्रिमण्डलमें एक मसविदा उपस्थित हुआ जिसका उद्देश्य यह था कि वे न्यायालय जो केवल धर्मसम्बन्धी अपराधोंके विचारके लिये प्रतिष्ठित किये गये हैं, तोड़ दिये जायँ। इस पर पादड़ीदल और नवीनमतके दलसे बड़ा वादविवाद हुआ। उस खर्रेका समर्थन करनेके लिये कावूरने संवत् १९०६-के अन्तमें एक वक्तृता दी। अपनी वक्तृता समाप्त करते हुए उसने कहा "यदि पीएडमोएटकी सरकार यथार्थ सुधारोंमें हाथ डालेगी तो उसकी नींव केवल पीडमाएटमेंही सुदृढ न होगी, किन्तु पीएडमाएटके पक्षमें सारी इटली हो जायगी और तब यह राज्य, सारे इटली देशका नेता बनकर मातृभूमिकी यथोचित सेवा कर सकेगा।" जो लोग कावूरकी वक्तृता गैलरीमें बैठकर सुन रहे थे, वे मारे आनन्दके उछलने लगे। मन्त्रीगण वक्ताके साथ हाथ मिलानेको उत्सुक हुए। लोकमतपर कावूर-के व्याख्यानका बड़ा प्रभाव पड़ा। लोगोंको कावूरकी ओरसे बड़ी बड़ी आशाएं बँधने लगी।

इस घटनाके कुछ ही दिनों बाद कौंट डी एजिलोके मन्त्रियोंमेंसे एक सेण्टा रोसा नामक मन्त्रीकी मृत्यु हुई। डी एजिलोके ऊपर दबाव डाला गया कि उस शून्यपदपर कावूरको नियुक्त करो किन्तु डी एजिलो कावूरका मित्र होनेपर भी कावूर

जैसे गरम विचारवाले मनुष्यको मन्त्रिमण्डलमें लेनेको प्रस्तुत न था। अन्तमें उसने कावूरको कृषि और वाणिज्यके सचिवका पद देना चाहा, जिसे उसने अङ्गीकार कर लिया। किन्तु स्वीकार करनेके पूर्व उसने प्रधान सचिवके साथ कई एक ठह-राव कर लिये जिनमें एक यह भी था कि मन्त्रिमण्डलीमें एक व्यक्ति विशेष जो, अति भीरु प्रकृतिका है पद त्याग दे। यह बात डी एजिलोको माननी पडी, किन्तु अनिच्छापूर्वक। इसपर राजाने डी एजिलोसे कहा था कि "अभी तुम नहीं समझते। यह आदमी तुम सबको निकाल बाहर करेगा।'

इस पदपर जब कावूर नियुक्त हुआ उसने अपने "रिसआरजी-मेण्टो" नामक संवादपत्रसे सम्बन्ध तोड दिया। कृषि और वाणिज्यका सचिव तो था ही, उसने इङ्गलेण्ड फ्रांस और बेल-जियमसे वाणिज्य सम्बन्धी सन्धि की। इस पदपर रहकर ऐसी उत्तम रीतिसे काम किया कि उसे सामुद्रिक सचिववाला पहले पदका काम भी मिल गया। अब वह दो काम करने लगा। संवत् १९०८ वि० में वह अर्थसचिव हुआ, किन्तु आग्रहपूर्वक उसने अपने पूर्ववर्त्ती नैग्रासे पदत्याग करवा लिया और कहा कि यदि मुझे रखना है तो नैग्राको अलग करो। शिक्षाविभागके सचिवसे और कावूरसे कुछ झगडा हुआ। उस सचिवको भी अपना पद त्यागना पडा और उस पदपर कावूरका मित्र फैरिनी नियुक्त किया गया, जो एक बडा प्रभावशाली राष्ट्रीय दलके लेखकोंमेंसे था। धीरे धीरे कावूरने अपने मतानु यायी मन्त्री भरे और विपरीत मतवालोंको अलग किया। उसकी निरन्तर चेष्टा यह रहती थी कि इटलीकी दुर्गति-ग्रस्त दशापर देशी और विदेशियोंमें उत्तेजना फैले। साथ ही उसका यह भी दृढ निश्चय था कि विना किसी विदेशी शक्ति-

को मित्र बनाये, इटलीका उद्धार नहीं हो सकता। और इस कामके योग्य उसने फ्रांसको समझ रखा था।

बाहरवालोंकी सहायता तभी उपयोगी हो सकती है जब घरमें एका हो और तयारी हो। अत उसने पहले अपनी पार्लिमेण्टके भिन्न मतानुयायियोंमें एका किया। कावूरकी बुद्धिमत्तासे माघ मास संवत् १९०८ वि०में पीडमाएटकी पार्लमेण्टके सभ्योंमें एका हुआ। कुछ दिनोंतक यह बात गुप्त रखी गयी। समय पाकर कावूरने रटेज्जीको चेम्बरमें प्रेसीडेण्ट चुने जानेमे सहायता दी। यह बात डी एजिलोंको बुरी लगी। इसपर कावूरने मन्त्रिदलसे अलग हो जाना अच्छा समझ अपना पद त्याग दिया। उसके पद त्यागते ही और सब सचिवोंने भी अपने अपने पद त्याग दिये। यह एक बातकी बात थी। इसमें कुछ तत्व न था। अत राजाकी आज्ञासे सब लोगोंने अपने अपने पद त्याग-पत्र लौटा लिये। कावूरका प्रधान सचिवके साथ कोई मतभेद तो था ही नहीं अत वह प्रसन्नतापूर्वक अपने पदसे अलग हुआ। और यह विचार कर कि राजधानीमें उसके रहनेसे किसी प्रकारका विघ्न उपस्थित न हो, उसने फ्रांस और इङ्गलेण्डकी यात्राके लिये प्रस्थान किया।

इस यात्रासे कावूरको बडा लाभ हुआ। फ्रांस और इङ्गलेण्डके राजनीति विशारदोंसे मिलकर कावूरने अनेक आवश्यक विषयोंका ज्ञान प्राप्त किया। लार्ड पामर्स्टन कावूरके बडे गाढे मित्र और उसके गुणोंके प्रशंसक थे। लार्ड पामर्स्टनकी धारणा थी कि इटली विदेशियोंके अत्याचारसे तभी मुक्त होगी जब वहांके निवासियोंमें एका होगा और उस ऐक्यकी शक्तिसे परिपुष्ट हो सारडीनियन सरकारकी शक्ति बढेगी।

साथ ही यदि एक बार वहाँकी गवर्नमेण्ट नियमानुसार स्थापित हो गयी तो उसे आस्ट्रियाको अपने देशसे निकालते देर न लगेगी। लार्ड पामर्स्टनने कावूरको यह भी विश्वास दिलाया कि इङ्गलेण्ड इटलीको न्यायोचित सहायता देगा यह प्रतिज्ञा पाकर कावूर प्रसन्न होता हुआ लन्दनसे रवाना हुआ।

कावूर पेरिसमे देअरससे मिला जिसने उसे बहुत कुछ ढारस बधाया। फिर वह वहाके प्रिंस प्रेसीडेण्ट नेपोलियनसे मिला और उसके मनपर अपनी ओरसे अच्छा प्रभाव डाला। पैरिससे कावूरने लिखा था—"हम चाहे पसन्द करें या न करें किन्तु इटलीका भविष्य फ्राँसपर निर्भर है। हम लोगोंको उसके साथ उस खेलमे योग देना चाहिये जो अभी या कुछ दिनो बाद यूरोपमे होनेवाला है। कावूर पैरिसमें इटलीके उन नेताओंसे भी मिला जो मातृभूमिकी सेवा करनेके अर्थ देशसे निर्वासित किये गये थे। इनमे डेनियल मैनिन भी था। उससे मिलकर कावूरने वेनिसवालोंकी अभिलाषाए अवगत की।

जिस समय कावूर ट्यूरिनमे पहुचा उस समय डी एजिलो और उसके सहयोगी मन्त्रिओंमें मनोमालिन्य और कलह उपस्थित था। उसने राजासे कहा आप मुझे अब छुट्टी दीजिए और यह भी कहा कि इस पदके योग्य कावूर है उसे आप नियुक्त कीजिये। विकृरने कावूरसे नयी मन्त्रि-मण्डलके सङ्गठन करनेके लिये कहा और उसके अधिकारोंमे कुछ रोकें भी डाली। उसमें प्रधान रोक यह थी कि तुमको पोपके साथ मित्रभावमे मिलकर विवाह सम्बन्धी आईन निर्विवाद पास करना होगा। कावूरने इस प्रकार अपने हाथ पैर जकडे जाने पर स्वय प्रधान सचिव बनना अच्छा न समझा और कहा कि आप कौण्ट बलबोंको प्रधान सचिव बनाइये। किन्तु राजाकी

दृष्टिमें बलवों उस समयके योग्य मनुष्य न था। इसलिये उसने काबूर को सर्वाधिकार सम्पन्न प्रधान सचिव बनाया।

प्रधान सचिवके पदपर आसीन होते ही काबूरने अपने मनमें इटलीके उद्धारके लिये जो उपाय विचार रखे थे, उन्हें प्रकट किये। आश्चर्यकी बात तो यह थी कि पीडमाएटके राज्यमें सर्वोच्च पदपर आसीन होकर भी काबूर सर्वप्रिय न था। विक्टर उससे पूर्णतया सन्तुष्ट न था, देशके नेता उससे इस लिये अप्रसन्न थे कि काबूरका वास्तविक स्वरूप उन्होंने नहीं जान पाया था। विक्टर इमेनुएल और पीडमाएटके नेतागण और जनसाधारण यह बात अवश्य जानते थे कि काबूर भयङ्कर शक्तिसम्पन्न पुरुष है और आगे चलकर यही नेता होगा। किन्तु धीरे धीरे वह समय आया जब वहांवाले राजासे लेकर साधारणसे साधारण मनुष्यतकको काबूरसे पूर्ण विश्वास हो गया। अब तो लोग विना समझेबूझे भेडकी तरह काबूरके पीछे चलने लगे। वह जो चाहता वही उन सबको मान्य था।

काबूर शासन सभाका सभापति नियत हुआ और साथ ही अर्थविभागके सचिवका भी काम करने लगा। इस समय उसकी दृष्टि हर तरहसे रियासतकी आमदनी बढ़ानेकी ओर थी। आगे आनेवाली आवश्यकताओंकी पूर्त्तिका वह पहलेहीसे प्रबन्ध कर रहा था। उसने अपने यहांकी गढियां और गढ सुदृढ़ किये, लाथारमोराको सेनाका समुचित सुधार करनेके स्वतंत्र अधिकार दिये, राज्यभरमें रेलकी सडकें बनवायीं, शिल्प तथा कृषि सम्बन्धी उन्नतिसे आयमें यथेष्ट वृद्धि की, नये नये कर लगाये, नमकका कर कम किया, अबाध व्यापार-की प्रथा चलायी और आगे होने वाली भीषण घटनाओंका सामना करनेके लिये इसी प्रकार पहलेहीसे नियमित प्रबन्ध

किये। उसके इन नवीन प्रबन्धोंमेंसे कई प्रजाको बड़े अरुचिकर और उत्तेजनाजनक थे। अत कुछ गँवार उससे इतने असन्तुष्ट थे कि उसके रक्तके प्यासे हो गये। लोग समझने लगे कि वह बेचारे गरीबोंके मुखसे उनकी रोटी छीन लेना चाहता है।

असलमें कावूरका लक्ष्य यह था कि प्रधान गवर्नमेण्टमें कोई छिद्र न रहे। वह सुदृढ हो जाय। इसीसे वह और बातोंकी ओर ध्यान नहीं देता था उसने अपने घोर विरोधी दलके नेता रहेज्जीको बातोंमें फुसलाकर मन्त्रिमण्डलमें सम्मिलित कर लिया। पहले जो दल उसके प्रत्येक काममें बाधा डालता था। वही अब उसकी जा बेजा सभी बातोंमें हाँमें हाँ मिलाने लगा। लोग कावूरकी चाल तो समझे नहीं, उलटे उसीपर क्रुद्ध हुए। कावूरका यह विचार था कि जबतक हम घरमें एका न कर लेंगे तब तक हमारी शक्ति न बढेगी। शक्ति बढानेके लिये उसकी समझमें देशमे शान्ति-स्थापित करना परमावश्यक था और इस उद्देशकी सिद्धिके लिये अपने मानसिक भावोंको छिपा कर, आस्ट्रियावालोंको भी मिला लिया और अपने ऊपर वहाँके प्रधान नेताओं और राजपुरुषोंका विश्वास उत्पन्न करवा लिया। सवत् १६१० वि० में मिलनमें मत्जीनीकी उत्तेजनासे जो बखेडा खडा हुआ, उसकी निन्दा उसने इस लिये की कि ऐसे बखेडे उसकी विचारी हुई सिद्धिके बाधक थे। उसका सिद्धान्त था कि शत्रुका सामना तब करना चाहिये जब अपने हाथोंको भली भाति सुदृढ कर लो।

उधर पश्चिमी युरोपमें क्रिमिया युद्धकी तयारियां हो रही थीं। इङ्गलैण्ड और फ्राँस मिलकर रूसके विरुद्ध खडे होना चाहते थे। कावूरने भावी परिणामको अपने मनमें समझ रखा था। अत उसने फ्रांस और इङ्गलैण्डके साथ

सन्धि-स्थापित कर सारडीनियाको उन दोनों साम्राज्योंके साथ मिला दिया, जिससे आगे चलकर अपने छोटे से राज्यको समयपर पूर्ण रूपसे सहायता मिले। कावूरकी चालको विकृर इमेनुअल तो समझ गया था, किन्तु प्रजा उस चालके महत्वको न समझ सकी। प्रजाके प्रतिनिधियोंने कावूरकी इस नीतिका घोर प्रतिवाद और विरोध किया। उन्होंने दूसरा ही अर्थ लगाया। वे कहने लगे कि अपने राज्यको अरक्षित दशामें छोड़ना, आस्ट्रियाको अपनी निर्बलता दिखला कर आक्रमणका अवसर देना तथा विदेशी साम्राज्योंकी सहायताके लिये सेनामें जाना कहाकी बुद्धिमानी है। प्रजाके इस विरोधका कुछ भी फल न हुआ। तब वे लोग कहने लगे कि न तो कावूर हमारी बात सुनता है और न विकृर इमेनुएल। अच्छा उनकी जो इच्छा हो करें, हमारे भाग्यमें जो लिखा है वह हम लोग भुगतेंगे। फ्रान्स और इङ्गलैण्डके साथ मित्रता स्थापित करते समय, कावूरने उन देशोंके साथ कुछ ऐसे ठहराव करने चाहे जिनसे उक्त दोनों देश आवश्यकता पड़नेपर आस्ट्रियाके विरुद्ध विकृर इमेनुएलको सहायता दें। दोनों देशके नेता सारडीनियाको अपना मित्र तो बनाना चाहते थे किन्तु भविष्यमें सहायता देनेका वचन देकर बाध्य होना उन्हें स्वीकार न था। तब सारडीनियाके वैदेशिक विभागके सचिवने अपना प्रस्ताव लौटा लिया। कावूरने यह पद डी एजिलोको देना चाहा, किन्तु जब उसने ग्रहण न किया तो २७ पौष १९११ विक्रमीमें कावूर स्वयं उस पदका काम करने लगा। उसी दिन सारडीनियाकी ओरसे कावूरने फ्रांस और इङ्गलैण्डके साथ मैत्री सम्बन्ध स्थापित करनेके अर्थ प्रतिज्ञापत्रमें हस्ताक्षर किये। उसी दिन इटली साम्राज्यकी

यूरोपमें नीव पडी।

कावूर यूरोपको दिखलाना चाहता था कि इटलीवालोंमें नियमपूर्वक शासनपद्धति सङ्गठित करके तदनुसार शासन करनेकी योग्यता है और उनकी सेना शत्रुके साथ युद्ध करनेकी भी शक्ति रखती है। इस बीच आस्ट्रियाने अपना हाथ खींच लिया और अलग रही। इङ्गलेण्ड, फ्रांस और सारडीनियाकी सेनाओंने मिलकर रूससे युद्ध किया। नेपोलियन अपनी सेनाकी कीर्त्तिका अभिलाषी था, अतः उसने फरासीसी सेनाको तो आगे मोर्चेपर भेज दिया और सारडीनियाकी सेना कुस्तुन्तुनियामें समय पडनेपर सहायता देनेके लिये अलग रखी। रणक्षेत्रमें सेना भेजनेके लिये कावूरको बडी बडी चालें चलनी पडी। अन्तमें सारडीनियाकी सेना गयी और उसने बडी वीरतासे युद्ध किया। सावन मासमें पीडमोण्टकी सेनाने टेचरनाईयामें विजय प्राप्त की। यह विजय सवाद सुन ट्यूरिनवाले बहुत प्रसन्न हुए। विक्टर इमेनुअलने जनरल ला मारमोराको लिखा—“अगले वर्ष हम वहीं युद्ध करेंगे जहा पहले हो चुका है।”

इसी समय विक्टर इमेनुएलने इङ्गलेण्ड और फ्रांसकी यात्रा की। कावूर उसके साथ गया। महारानी विक्टोरिया और राजा अलवर्टने इटलीसे पूरी सहानुभूति दिखायी और पीडमोण्टके अधीश्वरको पूरी आशा हो गयी। नैपोलियनसे मिलनेपर विदित हुआ कि वह क्रिमिया युद्धको बन्द करनेका सकल्प कर चुका है।

सवत् १९१२ के अन्तमें सन्धि हो गयी। आस्ट्रियाने जो अब तक उदासीन थी, इस युद्धसे पूरा लाभ उठाया। उधर पीडमोण्टके धर्ममन्दिरोंके दमनका प्रश्न उठ खडा हुआ,

जिससे बडा बखेडा हुआ कावूर और बहुतसे लोग इस प्रस्तावके पक्षमें थे किन्तु राजा उसे स्वीकार करनेमें आगा पीछा करता था। जब प्रतिनिधि मडलने उस प्रस्तावको मन्तव्य रूपमें परिणत कर दिया और शासनसभामें वह विषय विचारार्थ उपस्थित किया गया, उस समय दो पाद्‌डियोंने राजाको लिखा कि जितने रुपये इस नये आईनके पास होनेसे राजके कोषमें जमा होंग, उतने हम देनेको तयार हैं किन्तु ऐसा आईन पास न किया जाय। विकृर इमेनुएल जो स्वय बडा भक्त था, यह चाहता ही था। उसने सोचा चलो झगडा मिट गया और उसने कावूरसे कहा कि पाद्‌डियोंकी प्रार्थना स्वीकार की जाय। कावूरने देखा कि जो बात एकबार निश्चित हो चुकी, उसमें हेरफेर करनेसे शासनमें निर्बलता आती है। अत उसने पाद्‌डियोंकी प्रार्थना अस्वीकृत् करते हुए इस्तेफा दे दिया। कावूर जबसे प्रधान सचिव हुआ था तबसे राजाके चित्तकी अशान्ति बढ गयी थी, अत. उसने झट कावूरका इस्तेफा मञ्जूर कर लिया। जब लोगोंको मालूम हुआ कि वह मामला इस तरह निवटाया जाता है तब उनके क्रोधकी सीमा न रही। लोगोंको जान पडने लगा कि अभी तक जो प्रयत्न गवर्नमेएटको स्थायी बनानेके लिये किये गये, वे सब मिट्टीमें मिले चाहते हैं। यह देख और अपना मन कडा-कर डी एजिलोने राजाको एक पत्र लिखा जिसमें उसने दिख लाया कि आप जिस मार्गका अनुसरण करना चाहते ह वह भयावह है। उसने विनय की कि आप उन्नतिके अवरोधकोंकी बातोंमें न आइये क्योंकि इसी प्रकारकी घटनाओंसे स्टुअर्ट और बोर्बनके राज्य मिट्टीमे मिल चुके हैं। जिस बातके लिये लोकमत आग्रह कर रहा है, उसके विरुद्ध कार्य करना

यूरोपमें नीव पड़ी।

कावूर यूरोपको दिखलाना चाहता था कि इटलीवालोंमें नियमपूर्वक शासनपद्धति सङ्गठित करके तदनुसार शासन करनेकी योग्यता है और उनकी सेना शत्रुके साथ युद्ध करनेकी भी शक्ति रखती है। इस बीच आस्ट्रियाने अपना हाथ खींच लिया और अलग रही। इङ्गलैण्ड, फ्रांस और सार्डीनियाकी सेनाओंने मिलकर रूससे युद्ध किया। नेपोलियन अपनी सेनाकी कीर्त्तिका अभिलाषी था, अतः उसने फरासीसी सेनाको तो आगे मोर्चेपर भेज दिया और सार्डीनियाकी सेना कुस्तुन्तुनियामें समय पड़नेपर सहायता देनेके लिये अलग रखी। रणक्षेत्रमें सेना भेजनेके लिये कावूरको बड़ी बड़ी चालें चलनी पड़ी। अन्तमें सार्डीनियाकी सेना गयी और उसने बड़ी वीरतासे युद्ध किया। सावन मासमें पीडमोण्टकी सेनाने टेचरनाईयामें विजय प्राप्त की। यह विजय सवाद सुन ट्यूरिनवाले बहुत प्रसन्न हुए। विक्टर इमेनुअलने जनरल ला मारमोराको लिखा—"अगले वर्ष हम वहीं युद्ध करेंगे जहां पहले हो चुका है।"

इसी समय विक्टर इमेनुएलने इङ्गलैण्ड और फ्रांसकी यात्रा की। कावूर उसके साथ गया। महारानी विक्टोरिया और राजा अलवर्टने इटलीसे पूरी सहानुभूति दिखायी और पीडमोण्टके अधीश्वरको पूरी आशा हो गयी। नैपोलियनसे मिलनेपर विदित हुआ कि वह क्रिमिया युद्धको बन्द करनेका सकल्प कर चुका है।

सम्वत् १९१२ के अन्तमें सन्धि हो गयी। आस्ट्रियाने जो अब तक उदासीन थी, इस युद्धसे पूरा लाभ उठाया। उधर पीडमोण्टके धर्ममन्दिरोंके दमनका प्रश्न उठ खड़ा हुआ,

जिससे बडा बखेडा हुआ कावूर और बहुतसे लोग इस प्रस्तावके पक्षमें थे किन्तु राजा उसे स्वीकार करनेमें आगा पीछा करता था। जब प्रतिनिधि मडलने उस प्रस्तावको मन्तव्य रूपमें परिणत कर दिया और शासनसभामें वह विषय विचारार्थ उपस्थित किया गया, उस समय दो पाद्-डियोंने राजाको लिखा कि जितने रुपये इस नये आईनके पास होनेसे राजके कोषमें जमा हों, उतने हम देनेको तयार हैं किन्तु ऐसा आईन पास न किया जाय। विकृर इमेनुएल जो स्वय बडा भक्त था, यह चाहता ही था। उसने सोचा चलो झगडा मिट गया और उसने कावूरसे कहा कि पादडियोकी प्रार्थना स्वीकार की जाय। कावूरने देखा कि जो बात एकबार निश्चित हो चुकी, उसमें हेरफेर करनेसे शासनमें निर्बलता आती है। अत उसने पादडियोंकी प्रार्थना अस्वीकृत करते हुए इस्तेफा दे दिया। कावूर जबसे प्रधान सचिव हुआ था तबसे राजाके चित्तकी अशान्ति बढ गयी थी, अत उसने झट कावूरका इस्तेफा मन्जूर कर लिया। जब लोगोंको मालूम हुआ कि वह मामला इस तरह निपटाया जाता है तब उनके क्रोधकी सीमा न रही। लोगोंको जान पडने लगा कि अभी तक जो प्रयत्न गवर्नमेएटको स्थायी बनानेके लिये किये गये, वे सब मिट्टीमें मिले चाहते हैं। यह देख और अपना मन कडा-कर डी एजिलोने राजाको एक पत्र लिखा जिसमें उसने दिख-लाया कि आप जिस मार्गका अनुसरण करना चाहते हैं वह भयावह है। उसने विनय की कि आप उन्नतिके अवरोधकोंकी बातोंमें न आइये क्योंकि इसी प्रकारकी घटनाओंसे स्टुअर्ट और बोर्बनके राज्य मिट्टीमें मिल चुके हैं। जिस बातके लिये लोकमत आग्रह कर रहा है, उसके विरुद्ध कार्य करना

अब ठीक नही। इस पत्रका प्रभाव विकृर इमेनुएलके मन पर आशानुरूप पड़ा। उसने कावूरको बुलाकर फिर उसके पदपर नियुक्त किया और उस बिलको आईनके रूपमें ज्योंका त्यों परिणत किया।

जिस समय कावूर पेरिसमें गया हुआ था, उस समय नैपोलियनने उससे कहा था कि तुम एक नोट तैयार करके हमारे पास भेजना कि इटली फ्रांससे किस प्रकारकी सहायता लेना चाहती है। उस नोटको कावूरने अब तैयार किया और उसमें विशेष सहायता न मागकर केवल इतना ही लिखा कि फ्रास आस्ट्रियावालोसे बोलोग्ना खाली करवा दे। फ्रांससे विशेष सहायता न मागनेका एक कारण यह था कि उस समय बडी विषम समस्या उपस्थित थी। क्रिमियायुद्धमें अस्ट्रिया तो सम्मिलित हुआ ही न था और सारडिनियाने युद्धमें योग दिया था, इससे उसका सैन्यबल निर्बल हो गया था। कावूर और विकृरको पूरी आशा थी कि आस्ट्रिया रूसका पक्ष लेगा। अतः यह बडे सन्देहकी बात थी पेरिसमें होनेवाली काग्रेसमे न मालूम क्या निश्चय हो। साथही निज-के तौरपर कावूरके पास सूचना आ गयी थी कि काग्रेसके उन्हीं अधिवेशनोंमे सारडीनियाका प्रतिनिधि उपस्थित होने पावेगा, जिसमें सारडीनिया सम्बन्धी विषय उपस्थित किये जांयगे। और बडी बडी शक्तियोंके राजदूतोंके साथ न बैठ सकेगा। कावूरको बडी उत्कण्ठा थी कि उस काग्रेसमें डी एजिलो सारडीनियाका प्रतिनिधि बनकर जाय, किन्तु डी एजिलोने वहाकी विषम समस्याका हाल सुनकर कोरी नाहीं कर दी। अब कावूरके लिये कोई उपाय न था। अत उसने वहा जाना स्वयं निश्चय किया और पेरिसको रवाना हुआ।

संवत् १६१२ वि०की काग्रेसका परिणाम बडे बडे साम्राज्योंकी आशाओंके विरुद्ध ही हुआ। उस काग्रेसमें आस्ट्रिया शान्तिका प्रतिरूप बनकर आया था, किन्तु बडे भयङ्कर अत्याचारीका रूप धारण कर वहाँसे विदा हुआ। कावूर एक क्षुद्र रियासतकी ओरसे प्रतिनिधि बनकर गया था। किन्तु लौटती बेर उसकी स्थितिमें विलक्षण परिवर्तन हुआ। उसे लोगोंने अत्याचारसे पीडित इटली प्रायद्वीपका धर्मिक नेता समझा। वस्तुत. आस्ट्रियाने सारडीनियाको कुछ दिया नही, किन्तु इङ्गलैण्ड और फ्रान्सकी दृष्टिमे आस्ट्रियाका महत्व कम हुआ और सारडिनिया जो माँगती थी वह उनको उचित जान पडा। कावूरकी सचमुच हरतरहसे जीत ही रही। कावूर काग्रेसके अधिवेशनोंमे चुपचाप बैठा लोगोंकी बातचीत सुना करता था। इङ्गलैण्ड और फ्राँसके प्रतिनिधि वर्ग तो उसके मित्र थे ही, किन्तु रूसके काउन्ट आरलफका भी चित्त उसने अपनी ओर आकर्षित किया था। उसने भरसक अपनी ओरसे आस्ट्रियाके प्रतिनिधि काउन्ट वोलेको जो उसके परिचित थे, बिगडने न दिया। जबतक उन लोगोमें अन्य विषयपर वादविवाद होता रहा तबतक कावूर चुपचाप बैठा सुनता रहा। अन्तमें उसने एक नोट अगरेजी और फरासीसी प्रतिनिधियोंके नाम लिखकर दिया। उसमें उसने पूछा था कि आस्ट्रियाको रोममें अपनी प्रतिनिधि रखने का क्या अधिकार है। यह प्रश्न बड़े महत्वका था। इस प्रश्नसे पोपकी राजनैतिक सत्ताके अधिकारका भण्डा फूटता था। कावूरने यह प्रश्न इसलिये किया था कि रोमनगरमें पोपने जो अधिकार जमा लिया था, उसमें मुख्य सहायता आस्ट्रियाकीही थी। यदि पोपका केवल धर्म

सम्बन्धी विषयोमें अधिकार उस काग्रेसमें प्रतिपादित हो जाता, तो उनको शासनसम्बन्धी सत्ता अगत्या वहाँके किसी न किसी राजाके हस्तगत आती। साथही जो राजा बली होता वही उस सत्ताका स्वामी होता। इटलीके राजाओं-मे उस समय विक्टर इमेनुएलही बली था, अत अन्ततोगत्वा वही वहाँकी सत्ता पाता। इसके अतिरिक्त इस प्रश्नसे यह बात भी सब प्रतिनिधियोंको विदित हो गयी कि सारडीनिया इटलीके अन्य राज्योंके मामलोंपर भी दृष्टि रखती है।

कावूर अपना काम करके ट्यूरिन लौट गया। उसने स्वय कुछ भी न कहा, जो उसे कहना था वह उसने इङ्गलैण्डके प्रतिनिधि लार्ड क्लेरेंडनके मुखसे कहला लिया। जो अत्याचार इटलीपर आस्ट्रियाकी ओरसे थे उसने सारे युरोपके सामने खुलवा दिये। उसके इस कृत्यसे इटलीके अन्य राज्योंका भी ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। सारडिनियाके कुछ स्वार्थी लोगोंने कावूरकी इस चालको बुरा बतलाया और कहा कि कावूरको क्या आवश्यकता थी जो सारी इटलीकी वकालत की ओर आस्ट्रियाकी सत्ता हटानेकी चर्चा चलाकर ऐसे बलवान साम्राज्यको अपना शत्रु बनाया। किन्तु उन बुद्धिके शत्रुओंको यह न सूझा कि कावूरका लक्ष्य इटलीको स्वतत्र साम्राज्य बनानेकी ओर है। कावूरका अभिप्राय खुल गया। लोग जान गये कि कावूर सारडिनियाका प्रधान सचिव नहीं है किन्तु इटली भरका मुख्य है।

सवत् १९१४ विक्रमीके मकर सक्रान्तिके दिन कैलिस ओर-सिनीने जो रोमग्नाके बलगाइयोंमे से एक था, फ्रांसके सम्राट्-पर बम का गोला चलाया। इस घटनासे लोगोंको आशा हुई कि फ्रान्स और इटलीमें अब झगडा हो जायगा। यद्यपि कुछ

कालतक दोनों राज्योंमें परस्पर लिखापढी तो बडी सरगर्मी-के साथ होती रही तथापि लोगोंकी आशाके विपरीत फल हुआ। कारण यह था कि ओरसिनीने बमका गोला फेंककर कहा था—"मेरे देशको मुक्त करादो, हम पचीस लाख इटली वासी तुम्हें आशीर्वाद देंगे।" यह सुन नेपोलियनने जान लिया था कि बमका गोला मेरे ऊपर फेंके जानेका कारण, व्यक्तिगत घृणा नही है। किन्तु आततायीका उद्देश्य इटलीकी स्वाधीनता है। अब नेपोलियनने इस कहनेको लेकर एक, मनुष्यकी मूर्खताके कारण सारे देशकी भलाईके कामसे मुख न मोडा और फ्रांसकी सत्ताको हानि पहुचाये बिना यथा-शक्ति इटलीके राष्ट्रीय दलकी सहायता की।

अनन्तर कावूरने इटलीके स्वय सेवकोंकी एक सेना बनायी। उस सेनाका नाम रक्खा—"अल्पाचलके अहेरी" या "अल्पाहेरी"। इस सेनाका सङ्गठन उसने गारीबाल्डीकी अनु-मतिके अनुसार किया था। कावूरने इटलीके सब देशहितैषियों-को परस्पर मिला दिया। जो उसके पुराने विरोधी थे वे भी उस समय एक हो गये। जब अच्छे दिन आनेवाले होते हैं तो ऐसा ही होता है। डी एजिलोंने कावूरको लिखा था—"आज तुम्हारी नीतिके यथार्थ अयथार्थकी मीमासाका अवसर नहीं है किन्तु हमें वह कार्य करना चाहिये जिससे तुम्हारी नीति फलवती हो"। विक्टर इमेनुएलने भी उसकी नीतिका सम-र्थन किया। किन्तु कावूरने अपने घरमे युद्धकी सारी तयारियाँ करके भी अभी युद्ध छेडना उचित न समझा और वह विदेशी शक्तियोंकी सहायताकी प्रतीक्षा करने लगा।

सवत् १९१५ वि०के माघमें जो पहली जनवरी पडी उसी दिन यूरोपीय नवीन वर्षारम्भके उपलक्ष्यमें एक दर्बार हुआ।

उसमें नैपोलियनने आस्ट्रियाके प्रतिनिधिसे कहा—"मुझे दुःख है कि हम लोगोंके परस्पर मित्रभावमें बडा अन्तर पड गया है। तथापि आप अपने सम्राट्को विश्वास दिलाइये कि मेरा भाव उनकी ओर पूर्ववत ही बना हुआ है।" नैपोलियनके इन वाक्योंसे बडी खलबली मची। लोगोंको आश्चर्य हुआ कि नैपोलियनने यह बात किसकी प्रेरणासे कही और क्यों कही। किन्तु कावूरने जब यह सुना तब उसे बडी आशा बँधी। यह प्रथा है कि जब पार्लमेण्टके अधिवेशन आरम्भ होते हैं तो पहले दिन राजा व्याख्यान देता है। जब ट्यूरिनकी पार्लमेण्टके खुलनेका दिन समीप आया। कावूरने राजाके लिये बडी सावधानीसे वक्तृता लिखी और उसकी एक प्रति पहलेसेही नैपोलियनके पास भेज दी। नैपोलियनने उसमें कुछ जोडा और उसे लौटा दिया। विक्टर इमेनुएलने उसपर और अच्छा रङ्ग चढाया। जब वह वक्तृता पढी गयी तब जो श्रोता उस समय वहाँ उपस्थित थे उनपर बहुत अच्छा प्रभाव पडा। वक्तृता देते हुए राजाने यह भी कहा कि "पीडमोण्टका वर्गफल अन्य राज्योंकी अपेक्षा छोटा है, किन्तु उसके विचार और सहानुभूति विस्तृत और उदार हैं। हमारी यह स्थिति अवश्य ही हमारे लिये अनेक प्रकारसे भयावह है तथापि हम वर्त्तमान सन्धियों-के ठहरावोंके प्रति सम्मान प्रदर्शित करते हुए भी उस करुणक्रन्दनकी ओरसे अपने कान बन्द नही कर सकते जो इटलीके अनेक प्रदेशोंसे निरन्तर हमारे कानोंतक पहुँच रहे हैं।" इस वक्तृताके प्रकाशित होते ही यूरोपकी महाशक्तियोंने जान लिया कि संवत १६१२में जो सन्धियाँ परस्पर हुई थीं उनका यथाविधि रहना असम्भव है। सब लोगोंको आश्चर्य था कि ऐसे साहसपूर्ण शब्द कहनेका साहस एक छोटे राज्यके अधी-

स्वरमें क्योंकर आ गया। यह वक्तृता अवश्य किसी दूसरेकी लिखी हुई है, किन्तु किसने लिखी है यह कोई नहीं कह सका।

कावूर अब इस उद्योगमें था कि किसी प्रकार फ्राँसवालोंके साथ ऐसी सन्धि हो जिससे विदेशी आक्रमणसे सारडीनियाँकी रक्षा फ्रान्स अपना कर्त्तव्य समझे। अन्तमें कावूरका उद्योग सफल हुआ। नैपोलियनके पुत्रका विवाह यूरोपके एक प्राचीन घरानेकी कुमारीके साथ हुआ। उस समय प्रसन्न हो नैपोलियनने अपने पुत्रको आज्ञा दी कि तुम सन्धिपत्रपर सही कर दो। युवराजने पितृ निर्देशानुसार सन्धिपत्रपर सही कर दी। उस सन्धिपत्रमें वे ही ठहराव थे जो कावूर चाहता था। इस नवीन सन्धिपत्रके अनुसार फ्रांसने अपने ऊपर भार लिया था कि यदि आस्ट्रियावाले अन्यायरूपसे इटलीवालोंको दबावेंगे तो फ्रांसका धर्म होगा कि वे इटलीवालोंकी रक्षा करें। यह सन्धिपत्र गुप्तरूपसे तयार किया गया था और उसे गुप्त रखनेकाही दोनों जातिवालोंका विचार था। किन्तु यह अफवाह उड ही गयी कि उक्त दो राज्योंमें नयी सन्धि स्थापित हुई है। कावूर अब आस्ट्रियाके अत्याचारपूर्ण कृत्योंकी प्रतीक्षा करने लगा। इङ्गलैण्ड अपनेको इस झगड़ेमें डालना नहीं चाहता था और सबके साथ समान भावसे रहना चाहता था। चतुर कावूरने इस झगडेसे तो इङ्गलैण्डको पृथक रखा किन्तु इङ्गलैण्डके साथ मित्रता बढाकर कावूरने इसलिये उसे तयार रखा कि यदि फ्रांसकी नीयत बदले तो वह सारडीनियाकी सहायता करे।

संवत् १९१६ विक्रमीकी वसन्त ऋतुके आगमनके साथ ही साथ मत्जीनीके उत्तेजित शब्दोंसे उत्साहित उत्तरी इटलीके नये वीर कमरमें तलवार बाँध युद्धके सामानसे सुसज्जित हो

पीडमाएटमें इकट्ठे होने लगे। इस उठानको पीडमेएटकी सरकार न रोक सकी। कावूर भी अब रोकना नही चाहता था। किन्तु वह चाहता था कि आस्ट्रियाकी ओरसे छेडछाड आरम्भ होनी चाहिये।

इसपर रूसने प्रस्ताव किया कि पैरिसमें कांग्रेसका फिर अधिवेशन हो और इटलीके बखेडोंपर विचार किया जाय। इङ्गलैएड और प्रूशियाने इस प्रस्तावका अनुमोदन एवं समर्थन किया। आस्ट्रियाने इस प्रस्तावको स्वीकार तो किया किन्तु दो ठहराव किये। प्रथम तो यह कि पीडमोएटके अस्त्र शस्त्र रखवा दिये जायँ और पीडमाएटकी बातें कांग्रेसवाले न सुने। इधर नैपोलियनको उसकी स्त्री और मन्त्रीगण लडाईके बखेडेमें न पडनेका परामर्श दे रहे थे। अब बेचारा अकेला रह गया। अगत्या उसने नैपोलियनको एक पत्र लिखा। पत्रके उत्तरमें पैरिससे उसे बुलावा आया। वह पैरिसमें नैपोलियनसे मिला किन्तु नैपोलियनने सहायता देनेकी प्रतिज्ञा न की। तब कावूरने नैपोलियनको धमकाया और कहा कि विक्टर इमेनुएल राज परित्याग कर देगा और मैं अमरीका जाकर आपके और अपने पत्र छाप दूँगा। जब नैपोलियन इसपर भी राजी न हुआ, तब वह ट्यूरिन लौट आया। वहाँ लोगोंने बडी धूमधामसे उसका जुलूस निकाला।

इधर इङ्गलेएडने प्रस्ताव किया कि इटलीकी छोटी बडी सभी रियासतोंके प्रतिनिधिगण प्रस्तावित कांग्रेसमें बुलाये जायँ और आस्ट्रिया एवं पेडमोएट दोनोंसे हथियार रखवा लिये जायँ। फ्रांसने इस प्रस्तावका समर्थन किया और कावूरको लिखा कि तुम इस प्रस्तावको स्वीकार कर लो। यद्यपि कावूर इस प्रस्तावका अन्तिम शोच्य परिणाम

जानता था तथापि उसने इस प्रस्तावको स्वीकार कर लिया। पत्र भेज दिया और सफलताकी आशाको सर्वथा छोड आत्महत्या करनेको उद्यत था कि इतनेमें उसके एक मित्रने आकर उसे रोका। बहुत समझाने बुझानेपर कावूर शान्त हुआ।

ईश्वरकी लीला यह क्षुद्र मानव भला क्या जान सकता है। जिस दिन कावूरने स्वीकारपत्र भेजा था—उसी दिन आस्ट्रियाकी सरकारने अङ्गरेजी सरकारके प्रस्तावके उत्तरमें अप्रतिष्ठा जनक उत्तर देते हुए लिखा कि आस्ट्रिया स्वय पीडमाएटसे अस्त्र शस्त्र रखा लेगी। कावूर तो इसीकी प्रतीक्षा कर रहा था कि आस्ट्रिया किसी प्रकार आक्रमण करे। जान पडता है उस समयतक आस्ट्रियाको यह नहीं मालूम था कि पीडमाएटने फ्रांससे सन्धि कर ली है। उधर पीडमाएटने तो इङ्गलेण्ड और फ्रांसका प्रस्ताव स्वीकार किया और इधर आस्ट्रियाने अनुचित उत्तर दे स्थितिमें विलक्षण परिवर्त्तन कर दिया।

इसी घटनाके अनन्तर जिस दिन जिस समय पीडमाएटकी राजसभा विक्टर इमेनुएलको सर्वाधिकार सौंप रही थी, कावूरके हाथमें एक पुर्जा दिया गया जिसमें लिखा था कि ' वे लोग यहीं हैं। मैंने उन्हें देख लिया है।" ' वे लोग" से अभिप्राय आस्ट्रियाके राजदूतोंसे था। कावूर यह कहता हुआ कि "पीडमाएटकी यह अन्तिम पार्लमेण्ट है, अगले वर्ष हमलोग इटेलियन पार्लमेण्ट खोलेंगे"—कमरेके बाहिर हुआ। वह जाकर आस्ट्रियाके राजदूतोंसे मिला, और वे जो पत्र लाये थे, उसे उसने पढा। उसमें लिखा था कि "सारडीनियाकी सेनामें शान्ति स्थापित करो, इटालियन स्वयसेवक सैनिकोंके अस्त्र

शस्त्र छीन लो और उन्हें जहाँके तहाँ भेज दो। इन बातोंका करना स्वीकार हो तो वैसा लिखो, यदि अस्वीकृत हो तो वैसी सूचना दो। किन्तु उत्तर तीन दिनके भीतर दो। यह भी स्मरण रखो कि यदि तुम्हारा उत्तर सन्तोष-जनक न हुआ तो आस्ट्रियाको अपने शस्त्रोंका आश्रय ग्रहण करना पडेगा।"

कावूरने उन राजदूतोंसे कहा—"इस पत्रका उत्तर सोच विचार कर तीन दिन बाद दे दिया जायगा। तीन दिनमें उसने युद्धकी आवश्यक सामग्री एकत्र कर तयारी की। तत्पश्चात् उसने आस्ट्रियाकी सरकारके पत्रका उत्तर देते हुए केवल इतनाही लिखा कि "पीडमाएटकी सरकारने इङ्गलैण्डके उस प्रस्तावको स्वीकार कर लिया है, जिसका अनुमोदन समर्थन प्रुशिया, रशिया और फ्रांसने किया था।" इस प्रकार पत्रका उत्तर दे कावूरने आस्ट्रियाके राजदूतोंको बडी शिष्टताके साथ विदा किया और लौटकर अपने साथियोंसे उसने कहा कि "लो हमारा पासा पड गया।"

इटली और फ्रांसने मिलकर आस्ट्रियाको परास्त किया, किन्तु पीछेसे नैपोलियनकी नीयत बिगडी। नैपोलियनने जो उपकार इटलीके प्रति किये थे सबको उसने अपनी अदूरदर्शिताके कारण-मिट्टीमें मिलाकर प्रत्येक देशहितैषी इटेलियनको अपना घोर शत्रु बना लिया। उसने विला फ्रैङ्कामें आस्ट्रियाके साथ मेलजोल करनेके लिये बातचीत की। इटलीवालोंको नीचा दिखानेके लिये उसने जो ठहराव आस्ट्रियाके साथ किये वे ये हैं—

(१) वेनिस आस्ट्रियाके अधिकारमें रहे। (२) मोडेना, टसकनी और रोमैग्ना उनके छोटे छोटे राजाओंको लौटा दिये

जाँय। (३) एक शासनसमिति बनायी जाय जिसका अध्यक्ष पोप हो और आस्ट्रिया भी उसमें सम्मिलित रहे।

इन ठहरावोंको देख कावूर बहुत हताश हुआ। वह सोचने लगा कि मेरा सारा परिश्रम धूलमें मिलना चाहता है। जिन लोगोंको मैंने युद्ध करनेके लिये तयार किया है वे जब इन ठहरावोंको देखेंगे मुझसे क्या कहेंगे। वह विक्टर इमेनुएलके शिविरमें भागता हुआ गया और उसे परामर्श दिया कि या तो तुम राज्य परित्याग करो या अकेले, फ्राँसकी सहायताके बिना ही युद्ध करो। उस समय विक्टरने बुद्धिमानी और दूरदर्शितामें कावूरको परास्त किया। उसने निश्चय किया कि मैं अभी इस सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर करूँगा और अवसरकी प्रतिक्षा करूँगा।

कावूरने सोचा कि मैं युद्धक्षेत्रमें जाकर अपने शरीरको त्याग दूँ किन्तु जबतक नवीन मंत्रिदलका सङ्गठन न हो तबतक उसे अगत्या ट्युरिनमें रहना पड़ा। कर्त्तव्यके अनुरोधसे उसे गवर्नमेण्टकी ओरसे फ्लारेंस, पारमा, और मोडिनाके कमिश्नरोंके नाम राजाज्ञापत्र भेजने पड़े, जिनमें उन प्रदेशोंका अधिकार छोड़ देनेको उन लोगोंको आज्ञा दी गयी थी। किन्तु कावूरने साथही निजके पत्रोंमें अधिकारको न छोड़नेकी बात लिख उनको जहाँके तहाँ बने रहनेका परामर्श दिया। अनन्तर उसने प्रधान सचिवके पदको त्याग दिया और खुलंखुल्ला वह राष्ट्रीयदलमें जा मिला।

कावूरकी जगह रेटेंज़ी प्रधानसचिवके पदपर आरूढ़ हुआ। कावूर कुछ दिनोंके लिये अपने एक सम्बन्धीके पास स्विजरलैण्ड चला गया। उधर मध्य इटलीवालोंने पीडमाण्ट सरकारके साथ मेल करना चाहा। इङ्गलैण्डमें लार्ड पामर्स्टनका

मंत्रित्व काल था। वह कावूरका बड़ा मित्र था, अत. उसका विशेष ध्यान इटलीकी स्वतन्त्रताकी ओर था। पामस्टर्नका नैपोलियनमे तिलभरभी विश्वास न था। लार्ड पामस्टर्नकी समझमें इटलीभरमें केवल कावूरही एकमात्र नीतिनिपुण मनुष्य था जो नैपोलियनकी चालोंका उत्तर दे सकता था। किन्तु दुखकी बात यह थी कि कावूरने प्रधान सचिवके पदको परित्याग कर दिया था। लार्ड पामर्स्टनने लिखा था-"पैरिस वाले कावूरपर षडयंत्र रचनाका अभिशाप लगाते हैं। किन्तु उनका यह कृत्य मुझे अन्यायसङ्गत प्रतीत होता है। यदि वे यह कहें कि कावूरने इटलीकी उन्नतिके लिये और अस्ट्रियनके अधिकारसे निकालनेके लिये ये सारे बखेडे रचे, तो यह बात ठीक है और इतिहासमे उसका नाम देशहितैषियोंमें लिखा जायगा। अपने मनोरथको सफल करनेके निमित्त उसने जिन उपायोंका आश्रय ग्रहण किया वे भले हों चाहे बुरे मैं नही कह सकता, किन्तु उसका उद्देश्य प्रशस्त है।"

उधर नैपोलियन खटाईमे पडा था। कभी पेडमोण्टके पक्षमें जाता, कभी अस्ट्रियाके पक्षमे और कभी अपना स्वार्थ साधना चाहता था। अन्तमें इन बखेडोंसे छुटकारा पानेके लिये उसने पेरिसमें फिर काग्रेसका अधिवेशन करना चाहा। पीडमाण्टने कावूरको अपना प्रतिनिधि बनाकर पैरिस भेजा।

काग्रेसका एकभी अधिवेशन न हुआ। पर अङ्गरेजोंके बराबर आग्रह करनेपर संवत् १९५६ वि०के माघमे पीडमाण्ट-के प्रधानसचिवके पदपर फिर कावूर आरूढ़ हुआ। शासनकी बागडोर हाथमें आतेही कावूरने इस बार अपने सिद्धान्त और विचार प्रकट कर दिये, उन्हें छिपाया नहीं। उसने कहा—"मध्य इटलीके निवासी जो चाहते हों वह करें। हम उनका

साथ देंगे और जो होनेको होगा सो होता रहेगा। हम देख लेंगे।" मध्यइटली वाले ऐक्य चाहते थे। अतः कावूरने नैपोलियनका फिर मन टटोला। इस बार उसके मनकी बात खुल गयी। वह स्वार्थलोलुप कुछ अपना लाभ चाहता था। उसने कहा कि मुझे तुम सेवाय और नीस प्रान्त दे दो तो मैं तुम्हें इच्छानुसार कार्य करनेकी अनुमति प्रदान कर दूं।" कावूर उसपर सहमत होगया। किन्तु कावूरका यह कार्य उसकी जीवनसम्बन्धी घटनाओंकी समालोचना करनेवालोंके निकट बड़ी उग्र समालोचनाका विषय है।

जो हो जब राजाने अपनी बेटी व्याह कर फ्रांस सम्राट्से मैत्रीकी, तब कावूरका इटलीकी स्वतंत्रता लाभके लिये उक्त दो प्रान्तोंको फ्रांसके अधीन करना आश्चर्यकी बात नहीं। विक्टर इमेनुएल और कावूर दोनोंने नैपोलियनको उक्त दोनों प्रान्त देनेका वचन दिया। किन्तु नैपोलियन चाहता था कि इस विषयकी लिखा पढ़ी गुपचुप हो। पीडमान्टकी पार्लमेण्टको यह बात न विदित होने पावे। यदि ऐसा हुआ तो वह वहांकी पार्लमेण्ट और अङ्गरेजोंकी दृष्टिमें गिर जायगा। लोग कहने लगेंगे कि नेपोलियनने आज तक इटलीके प्रति जो कुछ किया वह अपना अर्थ साधनेके लिये किया। अन्तमें कावूर इसके लिये भी तयार हुआ और अपने देशवासियोंका क्रोध सहनेका साहस किया। संवत् १६१६ वि०के अन्तमें बहुत विचार कर चुकनेपर कावूरने सन्धि पत्रपर हस्ताक्षर किये। अनन्तर उसके मनमें भय उत्पन्न हुआ कि पार्लमेण्ट मुझपर विश्वासघातका दोष न लगावे, अतः उसने पार्लमेण्टको निमंत्रित किया। इस निमंत्रणपर जो पार्लमेण्टकी बैठक हुई वह प्रथम पार्लमेण्ट थी जिसमें पीडमाण्ट,

लोम्बर्डी, पारमा, मोडिना और रोमाग्नाके प्रतिनिधि भी उपस्थित हुए थे। ग्यूरज्जीने बड़ी बुरी तरह मन्त्रिमण्डल पर आक्रमण किया। उसने कावूरको द्वितीयचार्लसके अर्ल आव क्लेरेन्डनसे उपमा देते हुए कहा "इसका बर्ताव राजाके साथ कठोर है और पार्लमेण्टके साथ भी वह बड़ी नृशंसता दिखला रहा है। कावूरको इतना अभिमान है कि उसने अपनेको सर्वशक्तिमान् समझ रखा है। कावूरने अपने प्रतिपक्षीकी कड़ी आलोचना करते हुए उसकी बातोंके उत्तर दिये और उस सन्धिपत्रका सारा दायित्व अपने ऊपर ले लिया। उपस्थित सभ्योंमेंसे अधिकांश लोगोंने उसके प्रस्तावका अनुमोदन तथा समर्थन किया। गारिबाल्डीकी नीसमें जन्मभूमि थी, अतः उसे और उस देशके अन्य लोगोंको यह कार्य बड़ी नीचताका मालूम हुआ और उन्होंने उस प्रस्तावका विरोध किया।

उधर नेपिल्स और सिसिली राज्योंकी प्रजाके उत्पात उत्तरोत्तर बढ़ते जाते थे। वहांके राजा बड़े सङ्कटमें थे। यूरोप भरके साम्राज्योंके अधीश्वर द्वितीय फ्राँसिसकी ओरसे हताश हो गये थे। विक्टर इमेनुएलने उसको लिखा था कि तुम्हारी भलाई इसीमें है कि तुम अपनी प्रजाकी इच्छानुसार शासनपद्धतिमें परिवर्त्तन कर दो। किन्तु फ्राँसिस भला क्यों मानने लगा। इधर उत्तरवासी विप्लव कारियोंने सिसिलीके उद्धारके लिए गारिबाल्डीको भेजना चाहा। कावूर उसे भेजना नहीं चाहता था, क्योंकि वह जानता था कि कहीं यदि गारिबाल्डी की जीत हुई तो घरमें यहा बड़े बखेड़े उठ खड़े होंगे। किन्तु विक्टर न माना। और गारिबाल्डी अपनी वीरवाहिनी लेकर गया और पहुंचते ही राजाकी सेनाको मार भगाया। गारिबाल्डीने सिसलीको अपने अधीन किया। गारिबाल्डीका पैलरमों-

में बडी धूमधामसे स्वागत हुआ और वह वहाँका नेता बनाया गया। वहाँ गारिबाल्डी सारा कामधाम विक्टर इमेनुएलके नामसे करता था। किन्तु कावूरका यह भ्रम था कि वह गारिबाल्डीकी ओरसे विपरीत भावना रखता था। कावूरके चरित्रमें यह दौर्बल्य है कि उसने गारिबाल्डीके मनको न पहचान पाया और मत्ज़ीनीके सिद्धान्तोंका सदा विरोध किया।

कावूरको यह आशा न थी गारिबाल्डी नेपिल्सको ध्वंस कर सकेगा किन्तु गारिबाल्डीने केलेब्रियाको जीतकर नेपिल्स में प्रवेश किया। गारिबाल्डीका नाम सारे यूरोपमें प्रसिद्ध हो गया।

यह विचार कर कि गारिबाल्डी कहीं उत्तरी इटलीको भी परपट न कर डाले कावूरने उत्तरी इटलीकी सेना अम्ब्रिया और एनकोनामें भेज दी। एनकोनाका पतन हुआ। विक्टर इमेनुएलने नेपिल्सराज्यकी सीमामें प्रवेश किया और आस्ट्रिया के अधिकारमें जो अन्तिम स्थान रह गया था, उसका उद्धार किया। इस बीचमें यूरोपकी कोई भी बडी शक्ति नही पडी थी। कारण यह था कि वे लोग आस्ट्रियाकी उद्दण्डतासे अप्रसन्न थे और इटलीकी स्वतंत्रताके पक्षपाती थे। इसका आभास आस्ट्रियाको मिल गया था। अत आस्ट्रियाने इस बार इमेनुएलका सामना न किया और इमेनुएलकी विजयपताका फहराने लगी।

गारिबाल्डीकी अन्तिम विजय वालटरनोमें हुई। वहीं उसकी वीरवाहिनी इमेनुएलकी सेनाके साथ मिली। कावूर विक्टर इमेनुएलका प्राधान्य तो चाहता था किन्तु यह नहीं चाहता था कि किसी प्रकार गारिबाल्डीकी कीर्त्ति मन्द होने पावे। विक्टरकी सेनाके सेनापति और गैरीबाल्डीकी सेनामें अन-

विवाद उठा तब काबूरने आग्रह किया कि गारिबाल्डीकी सेनाके प्रति आदरपूर्वक व्यवहार किया जाय। काबूर यह जानता था कि नीसको नैपोलियनके हस्तगत कर देनेका अपराध गारिबाल्डीके निकट क्षन्तव्य नहीं है, तथापि वह गारिबाल्डीकी वीरोचित कीर्तिका महत्व मानता था। काबूरने विक्टर इमेनुएलको लिखा था कि "गारिबाल्डी यद्यपि मेरा घोर शत्रु हो गया है, तथापि मैं इटलीकी भलाई और आपकी प्रतिष्ठाके लिये चाहता हूं कि गारिबाल्डीको किसी प्रकार असंतुष्ट न करना चाहिये।"

नेपालियनकी सेना अबतक गेयटामें पड़ी थी। नैपोलियनने जब यह बात जानी कि इस बखेडेका अन्त इस प्रकारही होसकता है तब उसने अपना जहाजी बेड़ा हटा लिया। संवत् १९१७ वि०के धनुसंक्रान्तके दिन नगरने आत्मसमर्पण किया। द्वितीय फ्रांसिस भाग गया। रोम अबभी ज्योंका त्यों बना था। किन्तु काबूरकी यह इच्छा थी कि पोपकी राजसत्ताका अब अन्तहो और रोम इटली साम्राज्यकी राजधानी हो। इतनेमें नयी पार्लमेएटके सभ्योंका चुनाव हुआ। चुनावमें काबूरके पक्षवालेही अधिक चुनेगये। चेम्बरकी प्रथम बैठकमें इस विषयपर सम्मति ली गयी कि विक्टर इमेनुएल इटली साम्राज्यके सिंहासनपर आसीन किया जाय। किसी किसी की राय यह था कि इटलीके राजाकी उपाधि इटालीयोंका राजा हो। किन्तु काबूरका आग्रह था कि नये राजाकी उपाधि "इटलीका राजा" हो।

संवत् १९१७ के अन्तके अधिवेशनमें काबूरने पार्लमेएटमें कहा कि इटलीकी राजधानी रोममें स्थापित होनी चाहिये। साथही उसने यह भी कह दियाकि इस मेरे कथनका लोग अर्थ

न लगा लें कि मैं पोपकी धर्मसम्बन्धी स्वतंत्रताको अपहृत करना चाहता हूँ। पार्लमेण्टने रोमको इटली साम्राज्यकी राजधानी बनाये जानेके पक्षमें अपनी सम्मति प्रकट की। तब कावूरने इस बातका उद्योग करना आरम्भ किया। उधर गारिबाल्डीकी सेना और सरकारी सेनामे परस्परका मनोमालिन्य मिटाना भी कावूरकी चिन्ताका एक विषय था। सरकारी सेना गारिबाल्डीकी सेनाको कुछ गिनती ही न थी। इससे गारिबाल्डी बडा क्रुद्ध था। गारिबाल्डीने पार्लमेण्टमे एक बार क्रोधके आवेशमें यहांतक कह डाला था कि "कावूर अब स्वदेश में परस्पर झगडा करवाना चाहता है।" गारिबाल्डीके इन शब्दोंने कावूरके हृदयको वेध तो दिया पर उसने रोषको रोक कर बडी शान्तिके साथ उत्तर दिया। थोडे दिनोंबाद विकृर बीचमें पडे और और उन दोनोंमें एका करा दिया।

सवत् १६१८ विक्रमीके जेठके महीनेमें कावूर बीमार पडा। उसे कई वर्पसे निरन्तर अविश्रान्त शारीरिक और मानसिक परिश्रम करना पडा था। विश्राम करनेका अवसरही नहीं मिलता था। पार्लमेण्टकी अन्तिम बैठकके दिन, पार्लमेण्ट भवनमें उसको तबियत बिगडी और उसे ज्वरने आ दबाया। यह ज्वर साङ्घातिक ज्वर था जो तबतक न उतरा जबतक कावूरके प्राणवायुको उसके शरीरसे पृथक न करदिया। २२ ज्येष्ठ सवत् १६१८ विक्रमीको इटलीके राजनैतिक गगनमण्डलका एक चमकता हुआ नक्षत्र सदाके लिये मानवी दृष्टिपथसे तिरोहित हो गया।

जबसे होश सँभाला था कावूरकी आन्तरिक इच्छा यही थी कि इटली विदेशियोंके दासत्वसे किसी न किसी उपायसे मुक्त हो। यह इच्छा उसके मनमें मरते समयतक बनी हुई थी।



देशभक्त गारिबाल्डी

जन्म स० १८६४]   [मरण स० १९३९



लित हुआ, किन्तु वह राष्ट्रीय दलको परास्त होना पड़ा, अतः २२ माघ, सं० १८६० विक्रमीको गारिबाल्डी जिनोआसे भागा। कुछ दिनोंबाद उसे मालूम हुआ कि सरकारने उसे प्राणदण्डकी आज्ञा दी है। तब वह मार्सेल्स ब्रेजिलकी ओर चल दिया।

इसके बाद चौदह वर्षतक गारिबाल्डी एक छोटीसी सेनाका नेता रहा और मानटीविडियोके युद्धमें सम्मिलित रहा। इसके अतिरिक्त वह अनेक छोटी छोटी लड़ाइयोंमें भी योग देता रहा जो स्वाधीनताकी प्राप्तिके लिये दक्षिणी अमेरिकाकी प्रजाकी ओरसे वहाँकी सरकारके विरुद्ध हुआ करती थी।

दक्षिणी अमेरिकाके भिन्न भिन्न स्थानोंमें अनेक फरासीसी, स्पेनी और इटलीके युवक थे। उनमेंसे गारिबाल्डीने कुछ इटलीके नवयुवक छाँटे और उनको सैनिक शिक्षा दे एक सेना सङ्गठित की। इसी सेनाने अन्तमें अपने पराक्रम और अदम्य उत्साहसे इटलीमें साम्राज्य स्थापनमें बड़ी सहायता दी थी। गारिबाल्डीने अपनी इस सेनाकी सहायतासे, उस देशमें अनेक बार छोटी छोटी लड़ाइयोंमें योग दिया। यद्यपि इन छोटी छोटी लड़ाइयोंसे कोई विशेष लाभ नहीं हुआ तथापि गारिबाल्डी और उसकी अधीन सेनाके वीरोंको युद्धसम्बन्धी अनेक उपयोगी बातें विदित हो गयीं। ब्रेजिल प्रान्तके लेगुना जिलेके अन्तर्गत एक क्षुद्र ग्रामवासिनी किसी युवतीके साथ गारिबाल्डीने विवाह भी कर लिया।

सं० १६०३ वि०में नवा पीयूष पोप हुआ और इटलीके उद्धारके लिये उसने उत्साहवर्द्धक और आशाजनक बातें कहीं। उन्हें सुन लोगोंको भरोसा हुआ कि राष्ट्रीय दलका काम अब चल निकलेगा। क्योंकि उस समय लोगोंमें पोपका बड़ा

उत्तेजना तो उत्पन्न हो गयी थी किन्तु उन लोगोंको कोई नेता नहीं मिलता था। राष्ट्रीय दलवालोंने नये पोपको अपना नेता बनाना चाहा और कुछ दिनोंतक नया पोप उनके अनुकूल रहा। जिस समय इसका समाचार गारिबाल्डी आदि विदेशस्थ इटलीके स्वदेशभक्तोंने सुना उस समय उन लोगोंने पत्रद्वारा अपनी सहानुभूति प्रकाशित की और पोपको यह भी लिखा कि वे आवश्यकता पडनेपर शस्त्रबलसे सहायता देनेको सदा प्रस्तुत हैं। किन्तु पोपमें भला इतना साहस कहां जो गारिबाल्डी आदिके पत्रोंका उत्तर देता। तिसपर भी गारिबाल्डीसे न रहा गया और उसने पचास वीर सैनिकोंके साथ इटलीकी ओर कूच किया। स्मरण रहे कि अभीतक उसके प्राणावधकी आज्ञा ज्योंकी त्यों थी।

गारिबाल्डी अपनी सेना समेत ५ आषाढ सवत् १९०४ विको नीसमें पहुंचा। एलेकेएटके बखेडोंका वृत्तान्त ये लोग सुन ही चुके थे, अत. वहा जाकर आस्ट्रियन सरकारके विरुद्ध युद्ध करनेंके लिये बडे उत्सुक थे। गारिबाल्डी अपनी मुट्ठीभर सेना लिये हुए लोम्बार्डी पहुंचा और वहाँ चार्लस एलबर्टको सहायता देनी चाही। किन्तु चार्लसने गरिबाल्डीकी सहायता अस्वीकार की। इसपर गारिबाल्डी मिलनकी ओर बढ़ा। गारिबाल्डीकी वीरताका हाल मिलनवाले बहुत कुछ जानते थे, अत. बडी धूमधामसे स्वागत किया। साथही उस प्रान्तके अनेक युवक आ आकर उसकी सेनामें सम्मिलित होने लगे। यहांतक कि कुछ ही दिनोंबाद उसकी अधीनस्थ सेनामें तीस हजार युवक हो गये। इन लोगोंमें बहुतेरे तो इतने गरम थे कि बस चलता तो खड़े खड़े आस्ट्रियन सरकारको लाम्बर्डीसे निकाल बाहर करते। उधर चार्लस एलबर्ट जब युद्धमें हारा और आस्ट्रियन

सरकारके साथ सन्धि स्थापित की तो मिलानका प्रान्त फिर आस्ट्रियन सरकारके हवाले कर दिया। किन्तु गारिबाल्डीकी सेनाने चार्लसके नवीन सन्धिपत्रपर तिलभर भी ध्यान न दिया वरन् अवसर मिलते ही आस्ट्रियन सेनापर छापे मारने लगी।

एक दिन गारिबाल्डीने मेजियोरी झीलमें आस्ट्रियाके दो जहाजों पर छापा मारा। उन जहाजोंको १५०० सैनिकोंकी रखवालीमें छोड ल्यूनो पहुँचा। ल्यूनोंके समीप दस हजार आस्ट्रियन पडे थे। उनपर चढाईके उपाय सोचने लगा। किन्तु इसके समाचार आस्ट्रियनोंको पहलेहीसे मिल गये, अत. गारिबाल्डी अपनी सेनाके साथ बडी चतुरताके साथ वहासे नव दो ग्यारह हो गया और आस्ट्रियन सैनिक हाथ मलकर रह गये। यद्यपि इन धावोंसे विशेष लाभ नहीं होता था, तथापि शत्रुके मनमें सदा आतङ्क बना रहता था। इसीसे उनकी सेनाके योद्धाओं की संख्या उत्तरोत्तर बढ़ती चली जाती थी। जबसे चार्लस एलबर्ट युद्धसे विरत हुआ, इटलीके हितैषियोंनेगारिबाल्डीकी ओर ध्यान दिया।

एकबार स्विजरलैण्डमें गारिबाल्डीपर विषम ज्वरने आक्रमण किया और उसके बचनेकी आशा किसीको न रही। किन्तु ईश्वरने उसकी रक्षा की। आरोग्य होनेपर वह अपने घर जाकर कुछ दिन रहा। गारिबाल्डीसे सहायता लेना, चार्लस एलबर्ट अस्वीकृत कर चुका था, किन्तु मनही मन वह इस अदूरदर्शिताके कामके लिये बहुत पछताता था। अन्तमें उसने गारिबाल्डीको अपनी सेनामें एक उच्च पदपर नियुक्त किया। गारिबाल्डीकी इच्छा थी कि इटलीसे आस्ट्रियनोंका शीघ्र ही मुहँ काला किया जाय और शीघ्र ही युद्ध छिडे। इधर

वेनिसमें डैनियल मैनिनकी वीरोचित कार्यप्रणालीका वृत्तान्त सुन गारिवाल्डीका उत्साह उत्तरोत्तर बढ़ता जाता था। अन्तमें उससे न रहा गया और वह ढाई सौ स्वयं सेवकोंके साथ वेनिसको रवाना हुआ। रेविनामें पहुँचने ही उसने सुना कि रोममें विप्लव आरम्भ हो गया है, अतः वह वेनिस न जाकर रोमकी ओर चल दिया। रास्तेमें उसकी अनुयायिनी सेनाके सैनिकोंकी सख्या बढ़ने लगी और अन्तमें उसकी सेनामें पन्द्रह सौ सिपाही हो गये। गारिवाल्डीने रोममें पहुँचकर सुना कि जिस पोपके द्वारा देशोद्धारकी आशा थी, वह नगर छोड़कर भाग गया है। पोप अपने प्रधान सचिव रोसीके मारे जाने पर बहुत डरा और रोमको विप्लवकारियोंके हाथोंमें छोड़ गेमटामें भागा। इतनेमें वहाँ मत्जीनी भी जा पहुँचा। रोमवालोंने मत्जीनी एवं गारिवाल्डीको रोमका शासक बनाया और वे दोनों रोमकी नई शासक संस्थामें निर्वाचित किये गये। मत्जीनी तो नगरका शासन सम्बन्धी कार्य किया करता और गारिवाल्डी सैनिक विभागके सङ्गठनकी ओर दत्तचित्त हुआ। उसकी सेनामें इटली भरके नवयुवक सम्मिलित होते जाते थे। गारिवाल्डीने सीमापर अपना आसन जमाया जहाँपर नेपिलसकी सेना गरज रही थी और रेइटीके दुर्गको दृढ किया।

इतनेमें उत्तरी इटलीमें चार्लस एल्बर्टने फिर युद्ध करना आरम्भ किया। किन्तु नौवेराके युद्धमें बुरी तरह परास्त होकर, उसने राजपाट परित्याग किया। उधर रोमकी प्रजाको विदित हुआ कि आस्ट्रिया, स्पेन और नेपिलसकी सेना नये पोपको रोम नगरका अधिकार दिलाकर तत्कालीन शासक समितिके नेताओंको दण्ड देकर आगेके लिये समुचित शिक्षा देना

चाहती है। जैसे वेनिसमें मैनिनको फ्राँन्सकी सहायताका भरोसा था। वैसे ही मत्जीनी भी फ्राँस वालों की सहायता पाने की आशा कर रहा था। मत्जीनीने सोच रखा था कि यदि फ्रांस इटलीको स्वाधीन होनेमें सहायक न हुआ तो कमसे कम वह बाधक भी न होगा। यही सोचकर रोमकी शासक मण्डलीने एक पत्र इङ्गलेण्ड और फ्राँसकी सरकारोंके नाम भेजा। किन्तु फल उलटा हुआ।

फ्रांसकी प्रजासत्ताक मण्डलीके अधिपति लुइस नेपोलियनने जनरल ओडिनारकी अधीनतामें एक सेना सिविटानेशोमें भेजा। साथ ही यह भी प्रकट किया कि यह सेना उस प्रदेशमें शान्ति स्थापनार्थ भेजी जाती है। किन्तु दूरदर्शी मत्जीनी आदि शासक संस्थाके प्रधानोंसे बात न छिपसकी और लोगोंने गारिबाल्डीको रोममें बुला लिया और रोमकी ही रक्षाके लिये प्रयत्न करने लगे।

१६ वैशाखको फरासीसी सेनाने प्रथम आक्रमण किया। गारिबाल्डीने इनके आक्रमणको प्रचण्ड वेग और बड़ी वीरतासे रोका। फल यह हुआ कि गारिबाल्डीकी छोटीसी सेनाके सामने सात हजार फरासीसियोंके पैर उखड़ गये। किरायेके लडाकोंकी क्या मजाल कि मातृभूमिके लिए प्राण देनेवालों का सामना कर सकें। शत्रु जनरल इटलीकी सेनाका प्रबल उत्साह और वेगवती वीरता देख दंग रहगया और सुलहके संदेसे भेजने लगा। उधर नेपोलियनने इस कार्य्यको सम्पादन करानेके लिये डी लेसिप्सको भेजा। गारिबाल्डी नहीं चाहता था कि सन्धिकी बातचीत करनेके बहाने शत्रुको अपना बल बढानेका अवसर दे, किन्तु मत्जीनी आदि प्रमुख नेतागण इस आशासे लुब्ध थे कि अन्तमें फ्रांस हमारा सहायक होगा।

फ्रेंच राजदूतोंके साथ रोमके नेतागण सन्धिके ठहरावोंके विषयमें बातचीत करते रहे, किन्तु गारिबाल्डी अपने कर्तव्य-से विरत होनेवाला मनुष्य न था। २० वैशाखको वह चुपचाप, बिना किसीसे कहे सुने, चार हजार सैनिकोंको साथ लेकर रोमसे चल दिया। २४ वैशाखको वह पैलिस्ट्रिना पहुंचा और दूसरे दिन ही नैपिल्सकी सेनाके साथ उसकी मुठभेड हो गयी। शत्रु सेनामें लगभग सातहजार चुने हुए वीर थे। तीन घण्टे तक बडे वेगसे युद्ध होता रहा, अन्तमें गारिबाल्डीको विजय हुई और शत्रु सेना रणक्षेत्र छोडकर बडी बुरी तरह भागी। शत्रुसेनाके जनरलका कहना था कि मेरी सेनाके हारनेका कारण यह था कि मेरे सैनिक गारिबाल्डीको मनुष्य नहीं समझते थे। उसे दैवीबल सम्पन्न वा देवता समझते थे और उसका रोब, उसका आतंक उनपर बैठ गया था। उनको विश्वास था कि गारिबाल्डीको कोई मनुष्य नहीं मार सकता।

नैपिल्सकी सेनाको परास्त कर गारिबाल्डीको अब रोम-की चिन्ता हुई। उसने विचारा कि मेरी अनुपस्थितिमें कहीं फ्रांसवाले रोमपर चढ़ाई न कर दें। इस विचारसे वह लौट-कर रोममें पहुंचा। डी लेसिप्स और मत्जीनी आदि नेताओंमें अभीतक सन्धिकी बातचीत हो ही रही थी। इतनेमें नहीं मालूम क्यों गारिबाल्डीके ऊपर कर्नल रोसिली नामक एक अधिपति नियुक्त किया गया। इसका गारिबाल्डी ने तिलभर भी बुरा नहीं माना। वह बुरा क्यों मानने लगा। उसे कुछ नाम करनेकी तो अभिलाषा थी ही नहीं। उसकी आन्तरिक इच्छा तो इटलीको विदेशियोंके अत्याचारों से मुक्त करनेकी थी। इस नियुक्तिके विषयमें गारिबाल्डीने अपने एक मित्रको लिखा था कि "मेरे कतिपय मित्र आग्रह कर रहे हैं कि मैं उस कर्नल रोसि-

लीके नीचे काम न करूँ जो थोडे ही दिन पहले मेरे नीचे काम कर चुका है किन्तु मैं सच कहता हू कि मुझे इस प्रकारकी स्पर्धा कभी नही सताती। मैं तो उसे धन्यवाद देता हू जो मुझे देशकी रक्षाके लिये शत्रुके साथ युद्ध करनेका अवसर देता है चाहे वह ऊचा अफसर हो या साधारण सिपाही हो।"

उधर किङ्ग बम्बाकी सेनाने एकत्र हो रोमके मार्ग वाले कई एक दुर्गोंपर अधिकार जमा लिया। उनको भगानेका काम गारिबाल्डीको सौंपा गया। गारिबाल्डीने जाकर शत्रु-सेनाको विध्वंस किया और शत्रुओंको मार भगाया। शत्रु-सेनाने भागकर वेलिट्रीमें दम लिया, किन्तु जब गारिबाल्डीकी सेनाने सवेरे वहा उन्हें छेकना चाहा, तब उन्हें विदित हुआ कि शत्रु-सेना मारे डरके रातही में नगर छोड भाग गयी। गारिबाल्डी रोममें लौट आया।

कुछ दिनो बाद जनरल रोसिलीने गारिबाल्डीको आज्ञा दी कि तुम जाकर नैपिल्स राज्यकी सेनासे लडो। गारिबाल्डी सेना सहित चल दिया, किन्तु निर्दिष्ट स्थानपर पहुचने के पूर्व रोमवालोंने एक दूत भेजकर उसे लौटा लिया। क्योंकि फ्रास वालोंके साथ जो सन्धि होने वाली थी, उसके ठहरावोंके विषयमें गारिबाल्डीसे परामर्श लेना भी परमावश्यक था। ६ ज्येष्ठ को गारिबाल्डी रोममें पहुचा।

फ्रेंच राजदूत डी लेसिप्सने जिस सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर किये थे, वह जब जनरल ओडीनारके पास पहुची तब उसने उन ठहरावोंमेंसे कई एक ठहरावोंको अस्वीकृत किया। ओडीनारके पास फ्राससे नयी सहायक सेना आ ही गयी थी, अत: उसने तुरन्त रोमपर आक्रमण करनेकी ठहरायी। उसने रोम वालोंको अवकाशतो २२ ज्येष्ठ तकका दिया, किन्तु आक-

मण उसने २१ ज्येष्ठसे ही आरम्भ किया और रोम वालोंकी कई चौकियोंको अपने हस्तगत कर लिया।

ज्यो ही इस विश्वासघातके समाचार भय-सूचक घण्टा बजा कर रोम नगरमें प्रकाशित किये गये, त्यों ही गारिबाल्डी अपनी वीरवाहिनीको ले शत्रुके साथ युद्ध करनेके लिये दौड पडा। उसके साथ उस समय लोम्बार्डीकी सेना भी थी। नगरके परकोटेके चारो ओर फ्रासकी बहुसख्यक सेनाके साथ रोम वालोंका युद्ध होने लगा। युद्ध बडा विषम था। फ्रासकी तोपें लगातार गोले वर्षा कर रोमके प्राचीरको नष्ट किये डालती थी, तथापि गारिबाल्डी आदि नगर को शत्रुके हाथमें देनेके लिये तत्पर न थे उधर पैरिसमे डी लेसिप्स सन्धि स्थापनके लिये प्रयत्न कर रहा था। मटजीनीकी इच्छा थी कि अन्त तक युद्ध हो, किन्तु गारिबाल्डी अपनी सेनाकी शक्तिको भलीभाँति जानता था, अत' उसकी इच्छा न थी कि अधिक दिनोंतक युद्ध चलता रहे।

८ अषाढको फ़रासीसी तोपें नगरकी दीवार पर चढा दी गयी और उनकी मारसे नगरका नाश शीघ्रतापूर्वक होने लगा। उस समय रोमवालोंकी दशा देखते ही बन जाती थी। योद्धा, वक्ता और नेता रक्तम सने, हाथमें तलवार लिए, मातृभूमिकी रक्षाके लिए प्राणोत्सर्गका उपदेश देते हुये वीरोंको उत्तेजित कर रहे थे। पादरी यूगोवेसी, हाथमें सूली लिए हुए, मुर्दोंके बीचमें उस स्थान पर घूम रहा था जहाँ गोलियोंकी वर्षा हो रही थी। रोमवालोंने शत्रुका सामना बडी वीरतासे किया, किन्तु बहुसख्यक शत्रु सेनाके सामने उनकी कहाँ तक चल सकती थी। अन्त में गारिबाल्डी रोमकी शासकसमितिके नेतागणके पास गया और कह सुनकर यह आज्ञा निकलवायी कि

"रोमकी शासनसमिति ईश्वरकी इच्छापर निर्भर होकर प्रजा की रक्षाके लिए, शत्रु का सामना करना छोडती हे, क्योंकि उसकी समझमें ऐसे प्रवल शत्रुके साथ युद्ध करना असम्भव है।"

इसके अनन्तर उसी दिन संस्थाके नेताओंने अपने पद भी परित्याग कर दिये और गारिवाल्डीको उस संस्थाने अनन्याधिपति [डिक्टेटर] नियत किया। कुछ दिनोंतक इधर उधर होते रहनेके बाद २० अषाढको सन्धि स्थापनकी चर्चाका अन्त हुआ। गारिवाल्डीने अपनी सेनाको मैदानमें एकत्र किया और सैनिकोंको सम्बोधन कर कहा—"हे वीरो, मैं आज तुमको कुछ देना चाहता हूँ। वह यह है—भूख, प्यास, सर्दी गर्मी सहो, वेतन पानेकी आशा परित्याग करो। अट्टालिकाओंमें रहना छोडो, सुस्वाद भोजन सामग्रीको परित्याग करो, सदा सतर्क रहो, और मृत्युसे निडर होकर विचरो। जिसे यश और देश प्यारा हो, वह मेरे पीछे आवे।" लगभग ४ हजारके मनुष्य उसी क्षण गारिवाल्डीके साथ हो लिये और टसकनाके छिन्न भिन्न पार्वत्य प्रदेशको हस्तगत करनेके लिये वे टिवोलीकी राह पर अग्रसर हुए। उसी समय फरासीसी सेनाने रोममें प्रवेश किया। गारिवाल्डी की स्त्री अनिटा अपने पतिके साथ गयी।

मार्गमें गारिवाल्डी और उसके साथियोंको जिन विपत्तियों का सामना करना पडा, यदि उन सबका इतिवृत लिखा जाय तो विस्तार बहुत बढ़ जायगा, अतः यह कह देना ही यथेष्ट होगा कि गारिवाल्डी अपने साथियों समेत किसी न किसी तरह वेनिस में पहुँचा। वेनिस उस समय अपने शत्रुका सामना कर रहा था। फरासीसी और आस्ट्रियन सेना सदा गारिवाल्डीके पीछे रहा करती थी किन्तु यह गारिवाल्डीकी चतुरता थी कि

वे उसे पकड नही पाते थे। गारिबाल्डी रातमें चलता और दिनमें छिपा रहता था। अवसर पाकर सहसा शत्रु सेनापर छापा डालता और देखते देखते सेनासहित अदृश्य हो जाता था।

औरिविटो में फरासीसियोंके प्रवेश करनेके एक घण्टे पूर्व गारिबाल्डी अपनी सेना समेत वहाँसे चल दिया था। वहाँसे वह एरिजो और माण्टी पलसिएनो होकर रिमिनीके समीप सैरिनोमें पहुचा। इस बीचमें उसकी सेना बहुत थोडी रह गयी थी और आस्ट्रियन सैन्यदल उनके पीछे लगा चला आ रहा था। तब गारिबाल्डीने सोचा कि अब शत्रु से बचने का सबसे उत्तम उपाय यह है कि मैं अपनी सेनाको तितिर वितिर कर दूँ। यह सोच उसने सब स्वयं सेवकोंको बिदा किया और विदाईके समय उन्हे स्मरण दिलाते हुए कहा कि भाइयो विदेशियोंके गुलाम बनकर जीनेकी अपेक्षा मरना बहुत अच्छा है।

आस्ट्रियनोंने सैन मैरिनोपर आक्रमण करनेकी जब धमकी दी तब गारिबाल्डी अपने थोडेसे साथियोंको लिए हुए चुपचाप वहाँसे भागा। उसकी स्त्री एनिटा यद्यपि बीमारीके कारण अत्यन्त निर्बल हो गयी थी तथापि उसने पतिका साथ छोडना अस्वीकृत किया। ये लोग सिसेनाटिको नामक बन्दरगाहमें पहुँचे और तेरह छोटी नावोंमें सवार हो चल दिये। आस्ट्रियनोंकी मारके मारे नौ नावोंको नो आत्मसमर्पण करना पडा। शेष चार नाव जिनमें गारिबाल्डी, उसकी स्त्री, चका सिसरेशियो और पादरी यूगोबेसी थे कुशल पूर्वक पोके मुहाने पर जा लगी।

गारिबाल्डी आदि नावोंसे उतरने भीन पाये थे कि आस्ट्रियन दलके गुप्तचरोंने उन्हे जा घेरा। एनिटा बहुत थकी हुई

होनेके कारण बहुत बीमार पड गयी और उसे अपने पतिके साथ अनाजके एक खेतमें छिपना पडा। यूगोवेसी वहाँ इसलिये न छिपा कि उसके वहाँ रहनेसे कही भेद न खुल जाय और वह कुछ दिनों बाद आस्ट्रियन सेना द्वारा पकड लिया गया। अनन्तर सिसरेशियो और उसके नौ साथी भी पकडे गये। वेसी और सिसरेशियों बोलग्नामें पहुँचाये गये। जहाँ वे बडी बिट्टतके साथ मार डाले गये। इन दोनोंने ही अपनी मातृभूमिकी सेवामें आत्म-समर्पण कर अमरत्व प्राप्त किया।

उधर गारिबालडीकी स्त्रीको एक दयार्द्र हृदय किसान उठा कर अपनी झोपडीमें ले गया। यहाँ पहुँचकर कुछ ही दिनों बाद एनिटा परलोकवासिनी हुई। हताश हो गारिबालडी वहाँ से चला और आस्ट्रियन सिपाहियोंकी आँख बचाकर रेविन्ना और फ्लारेन्स होता हुआ जिनोआ पहुँचा। वहाँ वह अपनी माता और अपने तीनों बच्चों से मिला।

जिनोआमें गारिबाल्डीका रहना वहाँ की सरकारके लिये आपत्ति जनक था, अतः ट्यूरिनसे वारवार गारिबालडीके पास राज्य छोड कर चले जानेके लिये सन्देसेपर सन्देसा आने लगा। किन्तु उसकी कुछ भी परवाह न कर गारिबालडी सारडिनियामें गया। इससे फ्रांस वालोंका मन बडा चञ्चल हुआ। क्योंकि वे उसका इटली भरमें रहना अच्छा नही समझते थे। इस पहाडी टापूमें गारिबाल्डीने दो प्रकारसे समय काटा। कुछ तो ईश्वर स्मरणमें और कुछ लूट मार करके। वह कैप्रेरा के छोटेसे चट्टानी टापूमें बडी निश्चिन्ततासे रहता था।

अन्तमें फ्रांस और पेडमोएटकी चिन्ता दूर हुई। गारिबाल्डीने सारडिनियाको छोड देना स्वीकार किया। वह जिबराल्टर पहुँचा, किन्तु वहाँ वह केवल चौबीस ही घण्टे रहने पाया।

यूरोपका कोई भी राज्य प्रसिद्ध विद्रोही गारिबाल्डीको अपने देशमें नहीं टिकने देता था। जब गारिबाल्डीको यह बात विदित हुई, तब वह सीधा न्यूयार्ककी ओर चल दिया। वहाँ पहुच कर उसने डेढ़ वर्ष तक मोमबत्तियाँ बनाकर दिन काटा। इस दशामें भी गारिबाल्डी न्यूयार्कमें अकेला न था। उसके साथी लेमस्टाइन, लुइसब्लेङ्क लेड्रू रोलिन आदि पाच छः मनुष्य जो विद्रोहियोंकी श्रेणीमें समझे जाते थे, न्यूयार्क पहुचे थे और शारीरिक परिश्रम कर दिन बिताते थे।

न्यूयार्क छोडकर गारिबाल्डी दक्षिणी अमेरिकामें गया और वहा एक जहाज पर कपतानका काम करने लगा। जिस जहाज पर वह नियुक्त किया गया था वह पीरू और हाङ्काङ्ग के बीच आया जाया करता था। वहासे कुछ दिन बाद वह फिर न्यूयार्क पहुचा और एक सौदागरी जहाजको चलाने लगा। यह जहाज था तो अमेरिकावालोंका पर इसपर काम करनेवाले इटेलियन थे, जो इटलीके उद्धारके लिये समयकी प्रतीक्षा कर रहे थे।

चार वर्षतक घूमफिर कर वह इंगलैंड गया। वहा गुण ग्राही अङ्गरेजोंने बडे उत्साहसे उसका स्वागत किया और एक तलवार भेंट की। जब गारिबाल्डी जिनोआमें पहुचा, उसने अपनी माताके मरनेका दुःखदायी सवाद सुना। उसके तीनों बच्चे अपने चाचाके घर रहते थे। कुछ दिनों और जहाजी नौकरी कर उसने इतना धन एकत्र किया जिससे उसने केप्रा नामक द्वीपमें कुछ स्थान मोल ले लिया और वहीं बस गया। वहा बसकर वह शुभअवसरकी प्रतीक्षा करने लगा। संवत् १९११में गारिबाल्डीने केप्राका आधा द्वीप मोल ले लिया और उसपर अपना अधिकार कर लिया। धीरे धीरे उसने

बड़ा अच्छा भवन बनवाया। फिर अपनी लड़की और दो लड़कोंको उनके चाचा सहित उसने वहीं बुला लिया। द्वीपमें वह खेती किया करता था और बहुत दिनोंतक अविराम परिश्रम कर वह अब निश्चिन्त सा हो विश्राम कर रहा था। बीच बीचमें उससे मिलनेके लिये लोग वहा आया जाया करते थे। ये वेही लोग थे, जिनको यह पूरी आशा थी कि एकदिन गारिबाल्डी जातीय सैन्यदलका नेता बनकर, इटलीको विदेशियोंकी गुलामीसे छुटकारा दिलावेगा। संवत् १६१५ तक गारिबाल्डीने बड़ी शान्तिके साथ दिन व्यतीत किये। बीच बीचमें वह कावूरकी राजनैतिक चालोंका संवाद सुना करता था। और उसे उत्कण्ठा थी कि वह दिन कब आवेगा, जब मैं पीडमाण्टकी सेनाके साथ स्वयं सेवकोंको अपने सङ्गमें ले शत्रुको परास्त करूंगा।

दस वर्षके बाद कावूरकी चतुरतासे वह समय आया जिसकी गारिबाल्डी प्रतीक्षा कर रहा था। कावूर शत्रु सेनाके साथ युद्ध करनेकी तैयारियां करने लगा और उसने टयूरिनमें गारिबाल्डीको बुलाया। गारिबाल्डी प्रधान सचिवके घरपर अपनी साधारण पोशाक पहने कर मिलने गया। द्वार पर पहुचकर उसने कावूरको एक व्यक्तिके आनेकी सूचना दिलवाई पर दरवानको अपना नाम न बतलाया। दरवानने जब कहा एक आदमी बेढङ्गे कपडे पहने द्वारपर खडा है और आपसे मिलना चाहता है। तब कावूरने कहा कि "अच्छा उस दीनानको लिवा लाओ सम्भवत: मुझसे वह कुछ मागने आया होगा।"

कावूरसे मिलकर इस बार गारिबाल्डी बहुत प्रसन्न हुआ। कारण प्रसन्नताका यह था कि गारिबाल्डीको जो काम प्रिय

था, वही उसे मिला। कावूरने उससे कहा कि तुम "अल्पाचलके अहेरी" नामक स्वय सेवक सैन्यदलके अधिपति बन कर युद्धमें प्रवृत्त हो। गारिबाल्डीने तुरन्त सेनामें युवकोंको भर्त्ती करना आरम्भ किया। उस समय उत्तरी और मध्य इटलीमें आस्ट्रियाके विरुद्ध, वहाँके लोगोमें इतनी उत्तेजना फैली हुई थी कि थोडेही दिनोमें गारिबाल्डीने तीन सेना अस्त्र शस्त्रसे सुसज्जित तयार करली और युद्धयात्राकी आज्ञाके लिये प्रतीक्षा करने लगा। आस्ट्रियाने कावूरके साथ कैसा व्यवहार किया, नैपोलियनने क्योंकर पीएडमाण्टकी सहायता की—ये सारी बातें हम कावूरकी जीवनीमें लिख आये हैं। उन्हें यहाँ दुहराकर हम अनावश्यक स्थान घेरना नहीं चाहते केवल इतना बतलाये देते हैं कि गारिबाल्डीने युद्ध-यात्रा की।

गारिबाल्डीकी देश व्यापिनी कीर्त्तिने उसके कुछ शत्रु भी बना दिये। वे शत्रु बाहरी न थे, घरकेही थे और वे ऐसे थे जिनकी प्रकृति दूसरोंका उत्कर्ष सह नहीं सकती थी। वे लोग सैनिक विभागके उच्च कर्मचारी थे और जान बूझकर गारिबाल्डीको ऐसी ऐसी आज्ञाएँ दिया करते, जिनसे कार्यका अग्रसर होना तो दूर रहा उलटे उसमें बाधा पडती थी। किन्तु सौभाग्यवश विक्टर इमेनुअलके कानों तक इस दुर्व्यवस्थाकी भनक पहुची। उसने अपने राज्यकी सेनासे गारिबाल्डीके सैन्यदलका लेशमात्रभी सम्पर्क न रहने दिया और गारिबाल्डीसे कहा-"आपकी इच्छा जहाँ जानेको हो जाइये। आप जो करना चाहते थे करिये। मुझे एक बातका बडा दुःख है और वह यह है कि मैं आपके साथ चलनेमें असमर्थ हू।"

इसका फलभी बहुतही सन्तोषजनक हुआ। गारिबाल्डीको पदपदपर विजयश्री प्राप्तहोने लगी। गारिबाल्डीकी बुद्धिमानी-

से उसकी अधीनस्थ सेनाके वीरोंकी सख्या कम होनेपर भी शत्रुसेनाकी दृष्टिमें उनकी सख्या बहुत बडी दिखलाई पडने लगी। आस्ट्रियन सेनाके योद्धाओंके मनमें गारिबाल्डी-का नाम सुनतेही आतंक छा जाता था। उसने लोम्बार्डी प्रदेशमें घुसकर वैरिसी पर अपना अधिकार किया। वहाँ शत्रुको बुरी तरह परास्त किया। मालनेंटकी लडाईमें विजयी हो, उसने शत्रुकी सेनाको कोमोके पास केवेलेस्का तक खदेडा और उन्हें मोञ्जाकी ओर भगा दिया। कोमोवालोंने गारि-बाल्डीकी सेनाका बडे प्रेमके साथ स्वागत किया। कोमोसे गारिबाल्डीने आस्ट्रियन सरकारको एक तार भेजा। तार अपने नामसे नहीं किन्तु उन्हींकी सेनाके जनरलके नामसे, और जो बात वह जानना चाहता था, वह उस तारके उत्तर को पढ़ उसने जान ली। अनन्तर उसने अपनी सेनाका एक दल विला-मैडिची भेजा जो उस प्रान्तके प्रत्येक स्थानकी स्थितिका ज्ञान सम्पादन करने लगा। यहींपर आस्ट्रियन सेनाने उसे घेरना चाहा। किन्तु गरीवाल्डीने इस बार एक ऐसी चातुरीसे काम लिया कि शत्रुकी सेना भ्रममें पड गयी। गारिबाल्डी अपने सैन्यबलके विषयमें लम्बी चौड़ी चिट्ठिया लिखता और उन्हें मार्गमें इस ढङ्ग से ढलवाता, जिससे वे पत्र शत्रुओंके हाथमें पडे। शत्रु उन पत्रोंको पढ पढकर उनमें लिखी बातोंको सत्य समझ उनपर विश्वास कर लिया करते थे और इसीसे उत्साह बढनेकी जगह उनका उत्साह दिनों दिन घटता जाता था। इधर तो गारिबाल्डीने यह युक्ति निकाली, उधर प्रकृति-देवीने भी उसकी पूरी सहायता की। एक दिन रातके समय बडे वेगसे तूफान आया। उस तूफानमे शत्रुकी सेनाका चौकी पहरा तितिर बितर हो गया। सुअवसर पा, गारिबाल्डी अपनी

सुनी तब उसे विश्वास होगया कि नैपोलियनकी चाल सफल न होगी। इटलीका स्वतन्त्र साम्राज्य स्थापित होगा। गारिबाल्डीने अपने साथियोंसे कहा था कि "घटनाका प्रवाह इस समय जिधर चाहे उधर बहे, किन्तु इटेलियनोंको न तो अस्त्र शस्त्र रख देने चाहिये और न हताश ही होना चाहिये। बल्कि उनको दुगुने उत्साहसे शत्रुका सामना कर युरोपको दिखला देना चाहिये कि इटलीवाले महाराज इमेनुअलद्वारा परिपालित होकर युद्धसे पराङ्मुख होना नही चाहते। सम्भव है जब हम युद्धकी ओरसे निश्चिन्त होकर बैठें उसी समय फिर रण दुन्दभीका नाद हमें सुनाई पडे।"

गारीबालडी मध्य इटलीमें भेजा गया। ज्योंही वह फ्लारेंस, बोलग्ना, रिमीनीमें पहुँचा त्योंही स्वय सेवकोंके दलके दल निकल आये और उसे घेरकर, आज्ञाकी प्रतीक्षा करने लगे। जब यह समाचार नैपोलियनने सुने, तब उसने विक्टर पर जोर डाला कि गारिबालडीको ऐसा करनेसे रोको। इस समय कावूर बडी दुविधामें पडा। न तो वह नैपोलियनको चिढाना चाहता था और न गारिबालडीके साथ विरोध करना चाहता था। -

इतनेमे गारिबालडी यह समाचार सुन दङ्ग रह गया कि नैपोलियनने मध्य इटलीको पीएडमोएटमें जोड देनेके बदले सिवाय और नीस प्रान्तोंको पीडमोएटकी सरकारसे माँगा है और कावूरने उन्हें देना स्वीकार भी कर लिया है। उसने नीसकी ओरसे प्रतिनिधि बनकर ट्यूरिनकी पार्लमेएटमें कावूरकी नीतिकी बडी कडी आलोचना की किन्तु अधिक लोगोंकी सम्मतियाँ तिसपर भी कावूरहीके पक्षमे आई। तब गारिबाल्डी ट्यूरिनसे चल दिया और नीस गया। नीस यद्यपि उसकी जन्मभूमि थी तथापि वह फ्राँसकी प्रजा बनकर वहाँ नहीं रहना चाहता था।

अतः वह वहाँसे विदा होनेके लिये वहाँ गया। कावूरकी इस चाल से गारिबाल्डी बहुत उदास हुआ। उसने कहा कि मुझे न तो किसी मनुष्यसे अनुराग है और न किसी नीति विशेष से, मैं तो अपने केवल देशकी रक्षा विदेशियोंसे करना चाहता हूँ।

इटलीके उद्धारमें मत्जीनी, कावूर एव गारिबाल्डी तीनोंने ही बडे बडे मार्केके काम किये। मत्जीनीने असलमे क्षेत्र तयार किया। उसने सिसलीको अपने उद्देश्य सिद्धिके लिये उपयुक्त स्थान समझा और वहाँ अपने प्रतिनिधि भेज, वहाँके लोगोंको उत्साहित किया। साथ ही वहा चुप छिपकर अस्त्र शस्त्र भी एकत्र करवाये। गारिबाल्डीकी सुप्रसिद्ध सिसली यात्राका आरम्भ हुआ। कावूर बड़ी दुबिधामें पडा। खुलमखुल्ला तो उसने अपनी सेनाके अधिपतियोंको यह आज्ञा दी कि गारिबाल्डी चढने न पावे और वह पकडा जाय, किन्तु चुपके चुपके उनसे यह कहला दिया कि गारिबाल्डीके कार्यमें किसी प्रकारकी बाधा न डाली जाय। इसी प्रकार अङ्गरेज राजदूत सर जेम्स हडसनने भूमध्य सागरवाले जहाजी बेडेको प्रकट रूपसे तो फ्रांस और गारिबाल्डीकी ओरसे उदासीन रहनेकी आज्ञा दी किन्तु भीतर भीतर यह कहा कि गारिबाल्डीको किसी प्रकारका कष्ट न मिलने पावे। फल यह हुआ कि अङ्गरेजी बेडेकी सहायतासे गारिबाल्डीका जहाज जिसमें एक सहस्र उसके वीर योद्धा सवार थे सकुशल फ्रांसकी जहाजी सेनाकी आख बचा कर निकल गया। बहुत थोडे राजकर्मचारियोंने गारिबाल्डीके दलकी खुल्लमखुल्ला सहायता की। पर यह आशा सबको थी कि गारिबाल्डी अपने उद्योगमें सफलता प्राप्त करेगा। २३ बैशाख संवत १६१७ वि० को गारिबाल्डी १०६७ चुने हुए वीरोंको साथ ले जिनोवासे सिसलीकी ओर चला।

गारिवाल्डी जिनोवासे सेना सहित जिस समय चला उस समयका दृश्य बड़ा प्रभावोत्पादक था। सैनिकोंके इष्टमित्र, माता पिता, भाई, बहिन, साश्रुनेत्र उन्हें विदा करनेके लिए बन्दरगाहपर एकत्र हुए थे। गारिबाल्डीने टेलेमोनमें पहुंच कर सौ सैनिक उतार दिये और उन लोगों को आज्ञा दी कि तुम लोग। जाकर पैपलराज्यमे बसने वालोंको विदेशियोंके विरुद्ध उभाडो। यहींसे गारिबाल्डीने अनेक अस्त्र शस्त्र भी संग्रह किये। २६ वैशाख दो जहाज मोरसलामें पहुँचे। उनका पीछा नैपिल्सके दो जङ्गी जहाज कर रहे थे। गारिबाल्डीने पहुँचते ही मारसलापर अधिकार कर लिया और बहुत आशाजनक एक घोषणापत्र प्रकाश किया। अनन्तर गारिबाल्डीने सिसली वासियोंमेंसे १ हजार गुप्तचर, जो युद्ध सामग्री से भी सुसज्जित थे, चुने। मारसलासे यह सैन्यदल सालिमी गया। रास्तेमें सिसलीवासी पादरी, स्त्रियाँ तथा लडकोंने उनका हृदयसे स्वागत किया। सालिमीमें गारिबाल्डीने एक घोषणापत्र प्रकाशित किया, जिसका मर्म यह था कि सिसली निवासियोंका आमत्रणपत्र पाकर गारिबाल्डी, राष्ट्रीय सैन्यदलका प्रधान नेता ससैन्य यहाँ आया है। युद्धके समय इस बातकी आवश्यकता है कि शासक और युद्ध विभागके कार्यकर्त्तागण एक हो जाय। अत. गारिबाल्डीने आजसे इटलीके अधीश्वर विक्टर इमेनुएलकी ओरसे सिसलीके अधीश्वरके पदको ग्रहण किया।

अनन्तर नैपिल्स वालोंकी सेनाके साथ इस राष्ट्रीय दलकी सेनाका प्रथमयुद्ध पहाडोंके बीचोबीच हुआ। इस युद्धमें गारिबाल्डी एवं मैनिनके पुत्र घायल हुए। किन्तु अन्तमें गारिबाल्डीकी जीत हुई। नैपिल्सकी सेना पालरमोमें भाग गयी। तब गारिबाल्डी सिसलीकी राजधानीको हस्तगत करनेका

उपाय सोचने लगा।

इस युद्धमें आदिसे अन्ततक नेपिल्सकी सेनाने असावधानी दिखलायी। यदि नेपिल्स राज्यकी सेना चाहती तो पालरमोको शत्रुसेनासे बहुत दिनों तक बचा सकती थी किन्तु उस सेनाके जनरलने समझा कि गारिबाल्डी लौट गया, अब वह नहीं आवेगा। इस विचारमें डूब उसने युद्धको एकदम भुला दिया और एक बडा भारी भोज किया। उधर गारिबाल्डी तेजीके साथ धावा मारकर पालरमोके द्वार पर जा पहुचा। द्वारपर पहुचते ही उसने अपनी सेनाको नगरमें घुसनेकी आज्ञा दी। आज्ञाकी देर थी। सेनाने नगरमें घुसते ही शत्रुसेनाको ढूँढ ढूँढ कर मारना आरम्भ किया। गली-कूचा कोई भी स्थान ऐसा न छोडा जहा राष्ट्रीय दलके सैनिकोंने घूमफिर कर शत्रुओंको न भगाया हो। शत्रु भागकर राजप्रासादमें एकत्र हुए। कुछ दिनों तक बम्ब गोलोंकी मार से नगरकी दुर्दशा रही। उधर जहाजोंसे गोलोंकी वर्षा होती थी। अन्तमें नेपिल्सकी सेनाके जनरलने सन्धि करनी चाही। सन्धि स्थापित हुई। कुछ गढ और मैसिनाको छोड सम्पूर्ण सिसिली, नेपिल्सके अधीश्वरको खाली कर देनी पडी। पालरमो विदेशियोंसे शून्य हुआ। वहा वाले आनन्दमें डूब गये। विदेशी शासकोंके जितने स्मारक थे सब गिराकर नष्ट कर दिये गये। यह समाचार पीडमोण्टकी राजधानीमें ज्योंही पहुचा त्योंही कावूरने अपने प्रतिनिधि भेज कर सिसिलीको पीडमोण्ट राज्यमें मिला लेनेका सन्देसा भेजा। किन्तु गारिबाल्डी अभी इसके लिये तत्पर न था। उसका विचार नेपिल्स और रोमको हस्तगत करनेके अनन्तर आधिपत्य परित्याग करनेका था।

इतनेमे गारिबाल्डीका यश यूरोप भरमें फैल गया और उसकी सेनामें अङ्गरेज, हङ्गेरियन, फरासीसी, इटेलियन वीर जाकर सम्मिलित होगये। इस वीरवाहिनीको लेकर गारिबाल्डीने मिलियाजोपर चढाईकी और वहा घोर युद्ध हुआ। अन्तमें गारिबाल्डीका मिलियाजोपर अधिकार हुआ। मेसेनाको शत्रु सेना अपने आप छोडकर भाग गयी। कुछ दिनों बाद मेसेना भी गरीबाल्डोके हस्तगत हो गया। अब सम्पूर्ण सिसिली विदेशियोंकी सत्तासे निकल इटलीके अधिकारमें आ गयी।

इस समय गारिबाल्डीकी ग्रहदशा उसके अनुकूल थी। उसने अपनी सेनाकी बहुत थोडी हानि सहकर, शत्रुकी सेनाको सम्पूर्ण देशसे निकाल दिया। साथ ही उसे विपुल धन, अस्त्र शस्त्र, भोजन सामग्री, नाव आदि अनेक बहुमूल्य पदार्थ मिले। उसकी सेनाके योद्धाओंकी सख्या २५ हजारपर पहुच गयी। गारिबाल्डी लाल रङ्गके कपडे पहनता था। अत उसके अनुयायी भी उसी रङ्गके कपडे पहननेमें विशेषता समझने लगे। उसके जो शत्रु थे वे उससे थर थर कापने लगे। साथही इस एक वीरके कारण इटली भरके युवकोंका उत्साह बढा और वे उसकी सेनामे भर्ती होनेके लिये चारो ओरसे टूटने लगे।

गारिबाल्डीकी सेना २३ दिनतक मेसेनामें रही। २६ अगस्तको उसकी सेनाका पहला भाग टारमिनासे रवाना हुआ। नेपिल्सका जहाजी बेडा समझता था कि गारिबाल्डीकी सेना मेसेनासे रवाना होगी। अत. उनके जहाज मेसेनाके आसपास मँडराते रहे और उधर गारिबाल्डीकी सेना उस पार मेलिटोके तटपर लगी। अगले दिन सवेरेही गारिबाल्डीने कूच बोल दिया और वह रीगोकी ओर बढा। रातके दो बजे गारि-

बाल्डीकी सेनाने रीगोमें घुसकर नेपिल्स राज्यकी सेनाको सोते पाया। वे लोग गारिबाल्डीको शैतान कहा करते थे। सो ज्योंही उन्हें मालम हुआ कि शैतान अपनी सेना सहित सिर-पर आ पहुंचा, त्योंही वे अपने अफसरोंकी आज्ञाकी तिलभर भी परवाह न कर नगरसे भाग कर पासकी एक गढ़ीमें इकट्ठे हुए। वहा एकत्र होकर उनलोगोंने घोर युद्ध किया। अन्तमें जीत गारिबाल्डीकीही हुई। अनन्तर उसने मैस्निासे बची हुई सेना बुला ली और २२ अगस्तको उसने रीगोसे नेपिल्स नगरकी ओर प्रस्थान किया। नेपिल्समें युद्ध नाम मात्रको भी न हुआ। गारिबाल्डीके आनेके समाचार सुनते ही वहासे राजा भय सेनाके भागे और नेपिल्सवाले तथा वहा-की सेनाके भागे हुए सैनिक गारिबाल्डीकी सेनामें जाकर मिल गये। अब तो गारिबाल्डी जहा जाता वहीं उसकी विजय पताका फहराने लगती। विल्लासन जिमोवेनीमें ज्योंही गारि-बाल्डी पहुंचा त्योंही उसने शत्रुसेनाके जनरलसे कहला भेजा कि यातो आत्म समर्पण करो, नहीं तो लड़ो। लड़ना कैसा, बारह हजार सैनिकोंने झट आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार सोवेरियामें १९००० शत्रुसेनाने आत्मसमर्पण किया। बस जहा लालरङ्गकी कुर्ती शत्रुने देखी कि वह जान लेकर भागा। एक एक करके सारे नगर गारिबाल्डीके हस्तगत होते गये। इटलीवासी और आस्ट्रियन गारिबाल्डीमें विशेष दैवी-शक्ति जान उससे बहुत डरते थे। बस उसके आनेका जहा समाचार मिला कि शत्रुसेना अपने आप भाग जाती थी। लड़ाई भिड़ाई का कुछ काम ही न था।

नेपिल्सका मार्ग बिलकुल साफ था। वहाके नगरनिवासी गारीबाल्डीका स्वागत करनेको उत्सुक थे। रेलमें बैठकर

पडेगा। क्योंकि रोममें फ्रांसकी सहायतासेही पोप बैठे हैं। उस समय बडी गडबड होगी और फ्रांससे भिडना पडेगा। उसकी यह इच्छाथी कि विक्टर इमेनुअल जाकर गारिवाल्डीसे मिले और शीघ्र मिले जिससे यह वालटरनोके पार न जाने पावे।

गारिवाल्डी इन दूरकी बातोंके पीछे अपना माथा नहीं पचाया करता था। उसके मनमें तो रोमको लेनेकी लगी हुई थी। कावूरने जो प्रतिनिधि इन बातोंको समझानेके लिये गारिवाल्टीके पास भेजे थे उनकी बातोंपर उसने कुछ भी ध्यान न दिया। किन्तु सौभाग्यवश गारीवाल्डी आगे न बढ़ पाया और नेपिल्सके अधीश्वर द्वितीय फ्रांसिसने गारिवाल्डीका सामना किया। गारिवाल्डीको वालटरनोमें कितनी ही लडाइयाँ लडनी पडी। तब कही जाकर उसके लिये रोमका मार्ग साफ हुआ। इतनेमें विक्टर इमेनुअल उससे जा मिला। केपुआ में बडा भयानक युद्ध हुआ, किन्तु अन्तमें फ्रांसिसको जान लेकर गेमटामें भाग जाना पडा।

३ कार्तिकको गारिवाल्डीने सिसिलीको पीडमोएट राज्यमें मिलाये जाने अथवा न मिलाये जानेके बारेमें लोगोंसे वोट ली। मिलानेके पक्षमें बहुत अधिक लोगोंने सम्मति दी। अन्तमें सिसली, पीडमोएटके राज्यमें मिला दिया गया। गारिवाल्डीने विक्टरके अधिकारमें नैपिल्स और सिसिलीके प्रदेशोंको सौंप दिया।

गारिवाल्डी रोमको अधिकृत करनेके लिये अब भी उत्सुक था, किन्तु विक्टरकी सम्मति इस कार्य्यके विरुद्ध थी। आपसमें यह ठहराव निश्चित हुआ कि उत्तर प्रान्तकी सेना जाकर, राज्यकी सेनाके साथ मिल जाय। इसके बाद, गारिवाल्डी

पेल्ससे केप्राके लिये प्रस्थानित हुआ। उसे तीन सौ रुपये
ऋ देना चुकानेके लिये उधार काढने पड़े और जिस अवस्था
वह घरसे निकला था, उसी अवस्थामें अपने घर लौट
ा। वहाँ जाकर वह बुलाहटकी प्रतीक्षा करने लगा।

युरोप भरमें गारिबाल्डीका नाम प्रसिद्ध हो गया था। अत-
रोपके प्रत्येक खण्डसे लोग दलवद्ध होकर उससे मिलनेके
ल्ये केप्रामें जाने लगे। कुछ दिनोंतक गारिबाल्डी घर रहकर,
ती बारीका काम करता रहा, किन्तु रोमको वह कभी
वस्मृत न कर पाया। उसे रोममें स्वतंत्रताका झण्डा गाड़े
ना चैन नहीं पड़ता था। उसे विश्वास था कि उसके अधीन
वय सेवकोंकी सेना अवश्य आस्ट्रिया और फ्रांसकी
म्मिलित सेनाओंको परास्त कर सकेगी। उधर कावूरकी
ीति यह थी कि अभी कुछ कालतक युद्ध बन्द रक्खा जाय।
सकी यह दीर्घसूत्री नीति गारिबाल्डीको बहुत अखरती थी।
न्तमें उससे न रहा गया और वह अप्रेल सन १८६१में ट्यूरिन-
ी पार्लियेण्टके सामने अपना मत प्रकाश करनेके लिये गया।
सने कावूरपर घोर आक्रमण किया। किन्तु कावूरने गरीबाल्डी-
ा उत्तर वैसेही कड़े शब्दोंमें न दिया। विक्टरके कहने सुनने-
े गरीबाल्डी और कावूरमे मेल मिलापहो गया। किन्तु दोनों
ादमी एक दूसरेकी प्रकृतिसे तङ्ग थे। गारिबाल्डीके अभाग्य
शही नहीं किन्तु इटलीके दुर्भाग्यवश कावूर बीमार होकर
मर गया। यदि वह जीवित रहता तो जो काण्ड इटलीमें उसके
ीछे हुए न होते।

गारिबाल्डी केप्रामें लौट गया और दूरसे बैठकर नये
सचिवोंकी चालें देखने लगा। पहले रिकेसोली फिर रैटेज़ी,
ट्यूरिनमें प्रधान सचिवके पदपर आसीन हुए। रैटिज़ीपर

लोगोंका सन्देह था कि वह फ्रांससे मिला हुआ है। अतः गरम दलवाले उनके विरोधी हो गये थे। रेटिज्जी बडा चतुर मनुष्य था किन्तु उसके भाग्यमे यश नहीं था। ज्यों ज्यों दिन बीतने लगे, त्यों त्यों उसे गारीबाल्डीकी ओर से चिन्ता बढती गयी। उसे विदित हुआ कि जिनोआ, सिसिली और नेपिल्स, उपद्रवके प्रधान स्थान हैं। उसे यह भी ज्ञात था कि नैपिल्सवाले गरीबाल्डीपर पूरा विश्वास रखते हैं और ईश्वरके समान मानते हैं। वे बारबार उससे प्रार्थना करते हैं कि पोपके विरुद्ध अस्त्र उठाओ। यही नही बलिक रोममे भी अनेक मनुष्य हैं जो पोपसे अप्रसन्न हो गारिबाल्डीका साथ देनेके लिये उद्यत हैं। उधर उसे पोपके पक्षपातियोंका भी पूरा स्मरण था और वह यह बात भली भांति जानता था कि इटली अभी इस योग्य नहीं हुई कि वह फ्रांस और आस्ट्रियाकी मिली हुई सेनाओंका सामना कर सके। अन्तमें उसने यह निश्चय किया कि गरीबाल्डीको तो उत्तेजना देकर पोपके विरुद्ध युद्धके लिये खडा करूँ और जब वह आगे बढे उसपर विद्रोहका दोषारोपकर राज्यकी सेना भेज उसे पकडवा लू। उसका यह विचार कार्य रूपमे परिणत हुआ। वह सफल मनोरथ हुआ।

सवत् १९१८ वि०की वसन्त ऋतुके आरम्भ होतेही गारिबाल्डीने अपने अनुयायियोंको यह सुसवाद दिया कि वह रोमपर चढाई करेगा। पीडमोण्टकी सरकारने गारिबाल्डीको यह विश्वास दिला ही दिया था कि वह उसके इस कार्य्यमें बाधा न डालेगी। अत वह सजधज कर रोमकी ओर चला। वह बहुत दूर नहीं जाने पाया था कि उसने देखा कि सरकारी सेना उसके विरुद्ध उमडी चली आती है। एक पहाडीके पास

तब गारिबाल्डी सरकारी सेनाकी आँख बचाकर निकलना चाहता था, तब दोनों सेनाओंमें गोलियाँ चल गयीं। गारिबाल्डी और उसका पुत्र मैनोटी इस लडाईमें घायल हुए। कुछ दिनोंके लिये दोनों सेनाओंमें सन्धि हो गयी। गारिबाल्डी को सरकारी सेनाने पकड लिया। सरकारने गारिबाल्डीको पकडकर बन्दी तो बना लिया, किन्तु यह कार्य उसके लिये उतना सहज न था जितना उसने विचारा था, क्योंकि इटली भर जिसको पूज्य दृष्टिसे देखती थी, उसको बंदी बनाना सहज काम न था। गवर्नमेण्टने करते करते तो यह दुःसाहसका काम कर डाला, किन्तु उसे बडी बडी कठिनाइयोंका सामना करना पडा।

घायल गारिबाल्डीको धीरे धीरे सरकारी सेना पहले तो जेलमें ले गयी फिर वहाँसे वह स्पेजाकी खाडीमें अवस्थित वेरिगनानोंके दुर्गमें पहुचाया गया। गारिबाल्डीका घाव बडा विषम और पीडाजनक था, अतः कुछ दिनोंतक उसे सांसारिक सारी चिन्ताओंको छोड़ चारपाईपर पडे रहना पडा, किन्तु उसकी इस बीमारीसे लोगोंने जान लिया कि सर्वसाधारणके मनमें गारिबाल्डीके लिये कितना स्थान है। सहस्रों स्त्रियाँ उस रोगीकी सेवाशुश्रूषा करनेको व्यग्र होतीं। इङ्गलैण्ड, जरमनी एवं इटलीसे अनेक लोग गारीबाल्डीके दर्शन करने आते। स्पेजा और दुर्गके आसपासके होटल गरीबाल्डीके भक्तोंसे भरे रहते थे।

आश्विन संवत् १६११ वि० को सरकारने गारिबाल्डी और उसके साथी सङ्गियोंको छोड दिया। केवल वह लोग न छोडे गये जो सरकारी सेनाकी नौकरी छोडकर गारिबाल्डी की सेनामें जाकर भर्ती हो गये थे। गारिबाल्डी दुर्गसे निकलकर

स्पेजामें पहुंचा। जिस नगरमे हो कर वह निकलता वही बडी धूमधामसे उसका स्वागत होता था। पीसामें जिस रात्रिको वह पहुँचा उस रात्रिमें वहाँ एक नाटक खेला जाता था किन्तु उस नाटकशालामें सारी रात अभिनय न करके दर्शकोंके अनुरोधसे नाटकमण्डलीके प्रवन्धकर्ताको गारिबाल्डीकी गुणावलीके गीत गवाने पडे। यही पीसामें गारिवाल्डीके पैरसे गोली निकाली गयी और वह बहुत शीघ्र आरोग्य हो गया। तदनन्तर वह अपने घर कैप्रा गया। वहा उसने विश्राम किया तथापि उसके भक्त वहाँ भी उसके दर्शन करनेको पहुँचा करते थे। गारिवाल्डी बड़ा दयालु हृदय मनुष्य था, मनुष्य जातिके दु:खकी कहानी सुन, यथाशक्ति निवारणका यत्न किया करता था। उसके पास जो वस्तु होती, उसे कोई यदि उससे मागता तो वह अपने सुखकी ओर न देख तुरन्त दे डालता था। स्वय सङ्कटमें पड दूसरोंको सङ्कटसे उवारना उसके जीवन का व्रत था।

राष्ट्रीय दलके कुछ लोग थे जो समझते थे कि गारिवाल्डीको पकड कर सरकारी सेनाने उसकी अप्रतिष्ठा की। अत. उन लोगोंने ऐसा प्रयत्न किया कि सवत् १९२० वि० में गरीवाल्डी बडी धूमधामसे इङ्गलेण्ड गया। गारिवाल्डीके मनमें इङ्गलेण्ड वालोंके लिए बडा स्थान था, क्योंकि आस्ट्रिया और फ्रांसकी परवाह न कर न्यायप्रिय इङ्गलेण्डने विदेशियोंके अत्याचारोंसे पीडित इटलीका प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूपसे पक्ष बराबर ग्रहण किया था और समय समय पर सहायता भी की थी। गारिवाल्डी कैप्रासे साउथम्पटन गया और वहाँसे लन्दन। लन्दनने उसका बडी धूमधामसे स्वागत किया। गली गली, हाटबाट, मोहल्ले कूचोंमे गारिबाल्डीकी गुणगरिमा-

के गीत गाये गये। उसकी लालरङ्गकी कमीज वहा वालोंने पहनना बडे अभिमानके साथ स्वीकार किया और लालरङ्ग की कमीजका पहनना लन्दनमें प्रथा सी हो गयी। वहाके धनीसे लेकर साधारण मजूरों तकने गारिवाल्डीको भोज दिया। इङ्गलेण्डमें गारिवाल्डीका ऐसा स्वागत होते देख नेपो-लियनका कलेजा ईर्षासे जलने लगा। उसने लार्ड पामर्स्टन-को पत्र लिखा कि गारिवाल्डीको अपन राज्यकी सीमासे बाहर कर दो। किन्तु ऐसे सर्वप्रिय मनुष्य को बाहर करना इङ्गलेण्डके राजनैतिक दलके लिये बडे झञ्झटका काम था। किन्तु गारिवाल्डीको जब यह बात विदित हुई तब वह स्वय बडे स्नेहसे स्वय इङ्गलेण्डको छोड अपने घर कैप्राको चला गया।

तबसे सवत् १९२३ वि० तक गारिवाल्डी अपने ही घर रहा। इस बीचमें प्रशिया और जर्मनीमें आधिपत्यके लिये विग्रह होनेकी आशङ्का उत्पन्न हुई और विकृर इमेनुअलने बर्लिन वालोंके साथ मित्रता स्थापित की। वैशाख सवत १९२३ में इटली के युद्धविभागके सचिवने गारिवाल्डीसे प्रार्थना की कि, आप स्वय सेवकोंकी सेनाका परिचालन भार ग्रहण करें। उसने इस कार्यको करना सहर्ष स्वीकार किया। फिर क्या था। ज्योंही यह समाचार प्रकाशित हुआ त्योंही स्वय सेवकोंने चारों ओरसे आना आरम्भ किया। देखते ही देखते गारिवा-ल्डीकी सेनामे असख्य सैनिक दिखलाई पडने लगे। किन्तु सरकारी सेनाके प्रधान परिचालक गारिवाल्डीसे द्वेष रखते थे। उन्हींकी प्रेरणा और धूर्त्ततासे गारिवाल्डीकी सेनाके अफ-सरभी उसकी ओरसे अन्यमनस्क रहते और इन कारणोंसे उसके कार्य्यमे विघ्न उपस्थित होते थे। उसे कोमोंसे आस्ट्रिया-पर आक्रमण करनेकी आज्ञा मिली।

इन सब अडचनोंके रहते भी गारिबाल्डीने बडे उत्साह के साथ युद्ध यात्रा की। उसके प्राचीन लाल कुर्त्तीधारी सैनिक भी उससे आमिले और गारिबाल्डीकी महिमाके गीत गाये जाने लगे। एक अङ्गरेज और उसकी स्त्री भी इस युद्ध यात्रामे गारिबाल्डीके साथ थे। वे दोनों अपने साथ अङ्गीठी वा भोजनकी सामग्री रखते थे और समय समयपर अपने भक्तिभाजनको भोजन कराया करते थे। किन्तु इस बार जैसी सफलता होनी चाहिये थी वैसी न हुई। आस्ट्रियन-सेनाने बडो वीरतासे शत्रु सेनाका सामना किया। गारिबाल्डी की सेनाका सारा प्रबन्ध गडबड हो गया। सैनिकोंको भोजन आदिकी तङ्गी होने लगी। तथापि इन सारी कठिनाइयोंमें पड कर भी गरीबाल्डीने आशा परित्याग न की।

प्रथम दिनके युद्धमें गारिबाल्डीके जंघेमें गोली लगी। किन्तु वहीं गाडीमे लिटाकर और जघा चीर कर निकाल ली गयी। उधर सरकारी सेनाके अफसर परस्पर विरुद्ध आज्ञाए भेजने लगे, किन्तु गारिबाल्डी जो युद्ध विद्यामे बडा प्रवीण था, इन त्रुटियोंसे घबडाया नहीं। वह शत्रुपर आक्रमण करनेका उपाय सोचता रहा। कोमा झीलसे उसे लैकोआ जानेकी आज्ञा मिली। वहा भी वह नही ठहरने पाया था कि उसे वेरगोमा जाना पडा। वेरगोमामे पहुचते ही उसे ब्रेसिमा जानेकी आज्ञा मिली। इसके बाद कुछ दिनोंतक वह गार्ड-की झीलके तटपर सैलोमें रह पाया।

इतनेमे उसे जनरल ला मारमोरासे आज्ञा मिली कि लोनेरोपर जाकर अधिकार कर लो और वहाँसे लौटकर फिर सैलो चले आओ। ऐसा ही किया गया। किन्तु ये लोग वहा पहुच भी न पाये थे कि आस्ट्रियन सेनाके पैर उखड़े

और यह सेना बिना रोक टोक ट्रिनटिनोमे घुस गयी जाते ही इन लोगोंने रोकाडी एन फो नामक चट्टानी दुर्गपर अधिकार जमाया अन्तमें डेरजोंकी ओर चले। वहा शत्रु सेनाके साथ लड़ना पड़ा। किन्तु जीत इन्हींकी रही और इन लोगोंने एमपोला दुर्गको भी अपने अधिकारमें कर लिया। १ श्रावणको स्वयसेवकोंकी सेनाने अपनी तोपें मेरचोंपर चढाई और दूसरे दिन यथार्थ युद्ध आरम्भ हुआ। एमपोलामें शत्रुसेना हारी। तब यह विजयनी सेना लोड्रोकी घाटीमे होकर रीवाकी ओर बढी। मार्गमे विजेका ग्रामके पास बडे तडके शत्रु सेनाने इनपर आक्रमण किया। आस्ट्रियनोंने ग्रामके घरोंकी छतों पर तोपें चढा दीं और वहाँसे वे इनपर गोले बरसाने लगे। इस युद्धमे गारिबाल्डीकी ओरका एक अफसर मारा गया और कुछ समयके लिये उसकी सेनाकी गति रुक गयी। गारिबाल्डीके दोनों बेटों और उसके जामाताने अपने अनुयायियोंको बहुत उत्साहित कर अग्रसर किया और जो मार्ग कुछ समय पहले बड़ा भयङ्कर प्रतीत होता था, वही विजयका सिंहद्वार सिद्ध हुआ। उस ग्रामपर गारिबाल्डीकी सेनाका अधिकार हुआ। वहाँसे वे लारडेरोकी ओर जाने ही वाले थे कि इतनेमे समाचार आया कि दोनों पक्ष वालोंमे सन्धि होने वाली है अत तुम ट्रिनटिनोसे चले आओ।

कस्टोजामे इटलीको नीचा देखना पडा था किन्तु उसके सहायक प्रुशियाकी सेनामें समयपर सहायता देकर बिगडी हुई बातको बना दिया। इससे आस्ट्रियाको अगत्या सन्धि करनी पडी। वेनिसका प्रान्त इटलीके साम्राज्यमें जोड लिया गया। अब केवल रोम बच रहा। इस बातसे गारिबाल्डी असन्तुष्ट सा था। उसे भरोसा था कि उसके स्वयं सेवकोंका सैन्यदल

रोमको हस्तगत कर लेगा। किन्तु जो सन्धि पहले फ्रांसके साथ ट्यूरिनवाले कर चुके थे, उसके अनुसार विकृर रोमपर हाथ नहीं बढ़ा सकता था। किन्तु गारिवाल्डीको उस सन्धिपत्रकी तिल भर भी परवाह न थी। वह सैकड़ों उपाय बतलाकर रोमको इटलीकी राजधानी बनानेके लिये उत्सुक था। इस बीचमें पीडमाएट राज्यकी राजधानी ट्यूरिनसे हटाकर फ्लारेंसमें कर दी गयी थी। वहाँका प्रधानसचिव गारिवाल्डीके विचारोंके कारण घोर सङ्कटमें था।

ज्यों ही फ्रेंच रोमसे विदा हुए, त्योंही रोममें राजविद्रोहियोंकी अनेक गुप्त समितियोंने जन्म ग्रहण किया और गारिवाल्डीसे प्रार्थना की कि आप आकर इन समितियोंके कार्य्योंमें योग दीजिये। उसने पार्लमेण्टमें अपने चुने जानेके लिये भ्रमण किया और अन्तमें वह नयी पार्लमेण्टमें चार जिलोंसे प्रतिनिधि (डिपुटी) निर्वाचित हुआ। इसके बाद वह जिनोआकी शान्ति-कारिणी-सभामें सम्मिलित हुआ। वहाँ उसने पोप और पादरियोंके शासन सम्बन्धी अधिकारोंके दोष दिखलाये। वहाँसे वह इटलीमें लौट आया, और विला कैरौलीमें उसने उत्तेजना जनक वक्तृता देकर अपने देशवालोंको रोमपर आक्रमण करनेके लिये उत्तेजित किया। वह पोपके राज्यकी सीमाकी ओर चला। वहाँ उसके पास तुरन्त इतने स्वयसेवक एकत्र हो गये कि रेटेज़ीको लाचार हो गारिवाल्डीको पकड़ानेका पुन प्रबन्ध करना पड़ा। सिनालुङ्गामें गारिवाल्डी पकड़ा गया और वहाँसे एलिसेड्रिया होकर वह अपने घर केप्रा पहुँचा दिया गया, और वहाँ उसकी निगरानीके लिये प्रबन्ध कर दिया गया। इतने पर भी गारिवाल्डी चुपचाप न रहा। यद्यपि उसकी निगरानीके लिये चार स्टीमर

और एक लड़ाईके जहाज नियुक्त किये गये थे, तथापि वह इटलीमें विद्रोहियोंके दलको आक्रमण करनेके लिये सदा सतर्क करता रहा। उधर राष्ट्रीय दलके अन्य नेता रोममें हलचल मचा रहे थे। निकोटेरा नेपिल्ससे रोमकी ओर बढ़ा चला आता था। रिवोलीके पास गारिबाल्डीका पुत्र मैनोटी छापे डाल रहा था। कैरोली भ्रातागण विन्नाग्लोरीपर बड़ी वीरतासे आक्रमण कर रहे थे। रोममें पोप नवें पीयूष और उसके मन्त्री अन्टोमेल विकल थे। सैनिकोंके अड्डे उड़ा दिये जाते थे, बम्बके गोले बनाये जाने लगे थे। पोपकी प्रजाने रोमकी रक्षाके लिये विक्टर इमेनुअलकी सेना मँगवानेके लिये प्रार्थना पत्र भेजा।

इतनेमें गारिबाल्डीने केप्रासे भागनेका उपाय सोचा। पहले तो उसने बीमारीका बहाना किया, फिर एक दिन अन्धेरी रातमें वह एक छोटी डोंगीमें बैठ सारडीनियाकी ओर चल दिया। वह तब तक छिपा रहा जब तक पोर्टो प्रूडेञ्जा जानेके लिये उसे घोड़े न मिले। पोर्टो प्रूडेञ्जासे वह अपने दामादके साथ महाद्वीपमें चला गया। वहाँ पहुच कर वह खुलखुला विद्रोह-जनक व्याख्यान देने लगा। तब फ्लोरेंसकी सरकारने विवश हो फिर वही चाल चली जो एक बार पहले उसे पकडनेके लिये चल चुकी थी।

टेरनीमें गारिबाल्डी युद्ध यात्राको तयारियां करने लगा। उसने बढ कर मोएटी रोटोनडोपर आक्रमण किया। यह स्थान रोमके मार्गमें था और एक पहाडीपर बसा हुआ था। इस स्थानपर घोर युद्ध हुआ पर जीत गारिबाल्डीकी ही हुई। वहाँ कुछ दिनों ठहर कर पन्द्रह हजार सेना सहित गारिबाल्डी मैएटानाकी ओर बढा जो रोमसे लगभग साढेचार मील इधर था। कहा जाता है कि सेएट एञ्जलोके गवर्नरसे जो

पोपका नियुक्त किया हुआ था, यह निश्चित हो गया था कि गारिबाल्डी उसे कुछ धन देगा और वह गारिबाल्डीके हस्तगत हो जायगा। यह रुपया गारीबाल्डीके अङ्गरेज मित्रोंने एकत्र कर उसे दिया भी था; किन्तु उसने विश्वासघात किया। इसमें कुछ विलम्ब हुआ और इतनेमें फरासीसी सेना वहाँ पहुँच गयी और अपने मित्र पोपकी सहायताके लिये कटिवद्ध हुई।

विवश हो गारिबाल्डीको मोएटी रोटोण्डोमे लौट आना पडा। वहाँसे उसने सर्वसाधारणके नाम मर्मस्पर्शी एव उत्तेजनावर्द्धक शब्दोंमें एक सूचना निकाली। संवत् १९०६ में रोमकी प्रजा शासकमण्डलीने उसे जनरल बनाया था। अतः गारिबाल्डी अब भी अपनेको जनरल समझे हुए था।

उधर फरासीसी सेना जाकर पोपकी सेनासे मिल गयी और इटलीकी सेना गारिबाल्डीके पीछे एकत्र हो रही थी। १८ कार्तिक को वह टिवोलीकी ओर बढ़ा, किन्तु उसे मेएटनामें लौट आना पडा। यहाँके युद्धने गारिबाल्डीकी इस चढाईके भाग्यका निपटारा कर दिया। गारिबाल्डीके स्वयसेवक सैन्य दलने बडी वीरतासे युद्ध किया, किन्तु उनके अस्त्र शस्त्र फरासीसी सेनाके नवीन अस्त्र शस्त्रोंका सामना नहीं कर सकते थे। गारिबाल्डीको मोएटी रोटेएडोमें लौट आना पडा। वहाँ जब उसे मालूम हुआ कि उसके सैनिकोंके पास एक भी कारतूस नहीं रहा तब उसे वहाँसे भी पीछेकी ओर हटना पडा। चढ़ाई समाप्त हुई। स्वयसेवकोंका दल विदा कर दिया गया और गारिबाल्डी रेलमें सवार हो फ्लारेंस चला गया। वहाँ वह पकड़ लिया गया और वैरिगनैनोंके दुर्गमें भेज दिया गया।

मैएटोनाके युद्धमें अनेक इटेलियनोंको अपने प्राण देने पड़े। विक्टर इमेनुअलको इसका बड़ा शोक हुआ। उसने फ्रासके सम्राट्के पास सन्देसा भेजा कि "पिछली घटनाओंने इटली की हृदयगत कृतज्ञताका गला घोंट दिया। फ्रासके साथ मित्र भाव बनाये रखना इस सरकारकी शक्तिके बाहर है।" मैएटोनामें फरासीसियोंकी शास्यो नामक तोपोंने वज्रपात किया। इस युद्धका परिणाम यह हुआ कि इटली और फ्रासकी मित्रता भङ्ग हुई और विक्टर इमेनुअलको रोमको अधिकृत करनेका अवसर मिला।

सवत् १६२६ में फ्रास और प्रूशियामें युद्ध छिड़ा। उस समय फ्रास सम्राट् नेपोलियन अपने राज्यकी सीमाकी रक्षामें व्यग्र हुआ। उस समय वह पोपकी सहायता न कर सका। विक्टर इमेनुअलने बिना अधिक रक्त बहाये रोमपर अधिकार कर लिया। इटली साम्राज्य एक हुआ। यद्यपि यह अभीष्ट गारिवाल्डीका बहुत दिनोंका था, तथापि इस बार उसका इसमें कुछ भी हाथ न था।

जब फ्रासमें नेपोलियन पदच्युत किया गया, तब प्रजातन्त्र शासनपद्धतिमें योग देनेका लोभ गारिवाल्डी न रोक सका। वह तलवार ले अपने घरसे निकला और फ्रासकी सहायताके लिये वह स्वयसेवक बनकर अग्रसर हुआ। वह वोसेजकी सेनाका अधिपति नियुक्त किया गया। उसने आएटन और डीजनमें प्रूशियावालोंको परास्त किया। जब लड़ाई समाप्त हुई और फ्रासमें शान्ति विराजने लगी तब पैरिस, डीजान और नीसके अधिवासियोंने अपनी ओरसे गारिवाल्डीको प्रतिनिधि चुना किन्तु वह विदेशी होनेके कारण शासक-समितिमें बैठनेका अधिकारी न समझा गया। उसे फ्रासकी

सरकारने यथाविधि धन्यवाद दिये और वह अपने घर लौट गया।

सयुक्त इटली धीरे धीरे सबल होती जाती थी किन्तु गारिबाल्डो तब भी शान्त न रह सका। वह जब कभी किसी सार्वजनिक आन्दोलनमें योग देता, तब लोग प्रकाशरूपसे तो उसकी प्रतिष्ठा करते थे किन्तु मन मे उससे डरते थे। जैसे जैसे उसकी अवस्था बढ़ती गयी वैसे वैसेही वह प्रजातत्र शासनपद्धतिका कट्टर पक्षपाती होता गया।

इतनेमें गारिबाल्डोने फ्रेंसिस्का नामक स्त्रीके साथ केप्रामें विवाह किया। उससे उसके दो सन्तानें हुईं।

सवत् १९३७ मे रोमके न्यायालयमें एक विवाह सम्बन्धी अभियोगका विचार समाप्त हुआ। रैमाएडी नामक एक स्त्रीको गारिबाल्डीने अपनी प्रीतिपात्र बनाया था। उसने न्यायालयमे गारिबाल्डीपर विवाह सम्बन्धी अभियोग चलाया था। न्यायालयने स्त्रीको हरादिया और गारिबाल्डीकी जीत हुई। केप्रामें गारिबाल्डी राजाके समान ठाटसे रहता था। उससे मिलने अनेक दूर दूरके लोग जाते और अनेक प्रकारकी वस्तुएं भेंट किया करते थे।

गारिबाल्डीको जब जब सरकारी कार्यमें योग देना पडा तब तब उसने सरकारी नीतिका प्रतिवाद किया। यहा तक कि जब उसका पुराना मित्र -कैरोली, रोममें प्रधान सचिवके पदपर आरूढ हुआ तब उससे भी गारिबाल्डीकी न पटी। वह सरकारके विरुद्ध प्राय संवाद पत्रोंमें पत्र छपवाया करता था, जिससे सरकार बहुत हैरान थी। जब विप्लवकारिणी -समितिमें उसका दामाद कैनजिओ पकडा गया तब गारिबाल्डी बहुत विचलित हुआ और उसने नेशनल

चेम्बर्सकी सदस्यताको परित्याग कर दिया। अहर्निश इस प्रकार चिन्तामे पड कर गारिबाल्डी निर्बल पड गया और सवत् १६३६ में वह अपने घरपर केप्रामे मर गया।

गारिबाल्डी सरल, उदार और दयालु स्वभावका मनुष्य था। उसे दिखावट पसन्द न थी। धनवान होनेके उसे कई बार सुयोग प्राप्त हुए, किन्तु उसने धनकी ओर विशेष ध्यान न दिया और जैसा था वैसाही बना रहा। पिछले दिनों गवर्नमेण्ट उसे पेंशन देती थी किन्तु पेंशनका सारा धन वह अपने बालबच्चोमे व्यय कर डालता और धर्मार्थ बांट देता था। बाल्यावस्थासे उसे इटलीको स्वतत्र करके रोमको उसकी राजधानी बनानेकी धुन सवार थी। भगवान्‌के अनुग्रहसे उसकी इच्छा पूरी हुई और उसने अपनी आखोंसे रोममे स्वतत्र एव सयुक्त इटलीकी राजधानी देख ली। उसने "दी रूल आफ दी माक" और "दी थाउजेण्ड" नामक दो पुस्तकें भी लिखी थीं। पहली पुस्तक उसने उन दिनों लिखी थी जिन दिनों वह वैरिगनेनोंके दुर्गमें बन्दी था और दूसरी वासेजकी चढाईके बाद। इन पुस्तकोंका ढग उपन्यासों जैसा है और कल्पित पात्रोंके सहारे उसने अपनी बीती कहानी लिपि बद्ध कर डाली है।

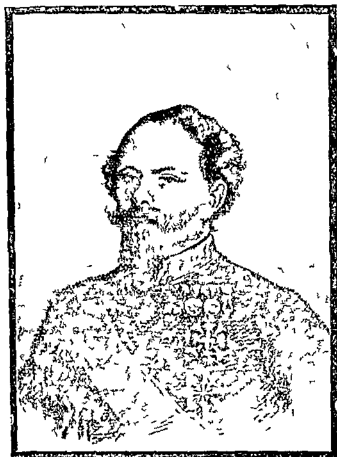
गारिबाल्डीने इटलीको स्वतत्र बनानेमें अपना सारा शारीरिक सुख अर्पण किया। सारी ऐहिक और पारलौकिक आशाओंपर पानी फेर, अपनी सारी आशाओंका केन्द्र अपने देश और जातिकी स्वाधीनताको माना। धन्य स्वदेशभक्त गारिबाल्डी।

[illegible]

[illegible] जिसकी [illegible]
[illegible] जिन [illegible]
[illegible] मिल [illegible]
[illegible] निपुण [illegible]
[illegible] विन्सटर [illegible]
[illegible]

[illegible]

[illegible] उपाधिधारी [illegible]
यद्यपि [illegible] पड़ा न था, तथापि [illegible]
[illegible] विषयमें विशेष रूपसे [illegible]
[illegible] अभिलाषा यह थी कि [illegible]
[illegible] और [illegible]



विक्टर इमेनुयल

जन्म चैत्रशुक्ल १४, सं० १८७७] [मरण माघकृष्ण ४, सं० १९३४



राजकुमारका मन निर्मल और सच्चा था। उसके मुखपर दृढताके चिह्न विद्यमान थे। बाईस वर्षकी अवस्थामें उसने मेरिया एडिलेडके साथ विवाह किया। यह लोम्बर्डी-वेनिसके क्षत्रपकी बेटी थी।

२ चैत्र संवत् १९०४को ट्यूरिनसे जब मिलानमें विप्लव-के समाचार आये तब राजकुमारके आनन्दकी सीमा न रही। चार्लस एलबर्ट और उसका मन्त्रिदल तो उस समय इस चिंतामें व्यग्र थे कि उपस्थित स्थितिमें हमको क्या करना चाहिये, किन्तु राजकुमारको आस्ट्रियाके साथ युद्ध करने-की चिन्ता थी। लोम्बार्डीकी रक्षाके लिये जो सैन्यदल भेजा गया उसके कमाण्डर राजकुमार विक्टर नियुक्त किये गये। २४ वैशाख संवत् १९०५ को सेण्टा लुसियामें प्रथम युद्ध हुआ। इस युद्धमें उसने बड़ी वीरता दिखलायी। इसके अतिरिक्त उसने लोगोंको समझा दिया कि वह जैसा स्वयं वीर है वैसा ही अपने अनुयायियोंको उत्तेजना देकर वीर बनानेकी योग्यता भी रखता है। गोयटामें जिस समय आस्ट्रि-यन सेनाने राजकुमारकी सेनापर अचानक आक्रमण किया उस समय राजकुमारको सिवाय पीछे हटनेके और कोई उपाय न था। अतः वह अपनी सेनाके आगे हो लिया था और उसने सैनिकोंसे कहा था कि "आजसे नामकी लाज तुम्हीं लोगोंके हाथ है"। वह घायल हो गया था तो भी वह बराबर लड़ता गया। परिणाम यह हुआ कि उसने शत्रुको परास्त किया। इस विजयके लिये उसे एक पदक मिला किन्तु उस पदक-की अपेक्षा वह उस घावको विशेष महत्त्वकी दृष्टिसे देखता था।

युद्धका दृश्य सहसा बदल गया। इटलीकी अन्य रियासतोंने लोम्बार्डीकी सहायताके लिये वचन देकर भी चार्लस-

की मदद न की। नये पोप नवें पीयूपने रणक्षेत्रमे अपनी सेना तो भेजी, किन्तु उस सेनाको यह आज्ञा दी कि—तुम शत्रुपर आक्रमण न करना, केवल यह देखना कि आस्ट्रियन सेना हमारे राज्यकी सीमापर अत्याचार न करने पावे। नेपिलस्के राजाने भी अन्य इटलीके राजाओंकी तरह सहायता देनेका वचन दिया और अपनी सेना भी भेजी, किन्तु उसने ऐसा विश्वासघात किया कि उसकी सेना सदा रणस्थलसे इतनी दूर रही कि उससे तिलभर भी सहायता न मिल सकी। वेनिसवाले घरके विप्लवोंमे फँसे रहनेके कारण सहायता न दे सके। अत केवल पीडमाएटको आस्ट्रिया जैसी प्रबलशक्तिका सामना करना पडा।

स्टेफनामें चार्लसकी फिर जीत हुई, किन्तु दूसरे दिन पीडमाएटकी सेनापर शत्रुसेनाने आक्रमण किया और कसटज्जामें बुरी तरह परास्त किया। तब लोगोंने चार्लसको परामर्श दिया कि तुम पियेमेन्जा लौट जाओ, किन्तु उसने कहा कि मेरा कर्त्तव्य है कि मैं जाकर मिलानकी रक्षा करूँ। अतः वह मिलानको गया। उसकी सेना बहुत हारी थकी थी। शत्रुसेनाने ज्यों ही उसपर आक्रमण किया, त्योंही उसे लाचार हो मिलान शत्रुके हाथमें सौंप देना पडा। चार्लस एक युवक सैनिक अफसरकी सहायतासे वहाँसे निकल भागा।

यद्यपि चार्लस सब ओरसे हताश हो गया था, तथापि उसने युद्ध बंद न किया। उसने अकेले युद्ध किया। ७ चैत्र संवत् १६०५ को फिर युद्ध आरम्भ हुआ और बराबर तीन दिन तक होता रहा। मारटारामे पीडमाएटकी सेनाका अग्रभागवाला रक्षक दल मारा गया। जब यह संवाद चार्लस एलबर्टने सुना तो उसने जान लिया कि अब मेरी

हार अवश्य होगी। तिसपर भी उसने नौवेरामें मोर्चा लिया। चौथे दिन ही नौवेराके युद्धने चार्लसकी सारी आशाओंपर पानी फेर दिया। इस युद्धमें राजकुमार विक्टर और उसके भाई फर्डीनेण्डने बडी वीरताके साथ युद्ध किया। अन्तमें बहुसख्यक शत्रुसेनाकी मारको चार्लसकी सेना न सह सकी। परस्पर सन्धि स्थापनकी बात चीत होने लगी, किन्तु शत्रुसेनाके प्रधान अधिपति मार्शल रेडटस्कार्इने ऐसी कडी शर्तें लिखीं जो चार्लसको सर्वथा अमान्य थीं। उसने अपनी सेनाके जनरलोंसे पूछा-"सज्जनो ये शर्तें मैं कभी स्वीकार नहीं कर सकता। क्या यह सम्भव है कि हम शत्रुके साथ फिर युद्ध करें ?" इस प्रश्नके उत्तरमें सबने एक स्वरसे कहा—"नहीं।" यह उत्तर सुन हतभाग्य चार्लसने इन शब्दोंको कह कर राज्यभार पटक दिया। उसने कहा—"अठारह वर्षसे आज तक मैंने प्रजाकी भलाईके लिये सदा प्रयत्न किया। मुझे इसका बडा दुःख है कि मेरी सारी चेष्टाएँ विफल हुईं। पश्चात्ताप इस बातका है कि मैं रणक्षेत्रमें मारा क्यों न गया, जैसा मैं चाहता था। कदाचित् मेरा रहना ही सन्धि-स्थापनमें बाधक है। अब शत्रुका सामना करनेकी शक्ति जब नहीं है तब मैं राज्य परित्यागकर अपने स्थानपर विक्टरको बिठाता हूँ। ऐसा करनेसे सम्भव है कि शत्रु ऐसी शर्तें करे जो तुम लोगोंके लिये विशेष हानिकर न हों। अब तुम अपने राजाकी ओर देखो।"

दोनों राजकुमारों और सेनाके जनरलोंने बहुत अनुनय विनय की, किन्तु चार्लसने दृढ प्रतिज्ञा कर ली थी। अतः उन सबका कहना सुनना निष्फल हुआ। चार्लसके मनमें यह बात बैठ गयी कि उसका इटलीको स्वतन्त्र करनेका विचार

की मदद न की। नये पोप नवें पीयूसने रणक्षेत्रमे अपनी सेना तो भेजी, किन्तु उस सेनाको यह आज्ञा दी कि तुम शत्रुपर आक्रमण न करना, केवल यह देखना कि आस्ट्रियन सेना हमारे राज्यकी सीमापर अत्याचार न करने पावे। नेपिलस्के राजाने भी अन्य इटलीके राजाओंकी तरह सहायता देनेका वचन दिया और अपनी सेना भी भेजी, किन्तु उसने ऐसा विश्वासघात किया कि उसकी सेना सदा रणस्थलसे इतनी दूर रही कि उससे तिलभर भी सहायता न मिल सकी। वेनिसवाले घरके विप्लवोंमे फँसे रहनेके कारण सहायता न दे सके। अतः केवल पीडमाएटको आस्ट्रिया जैसी प्रबलशक्तिका सामना करना पडा।

स्टेफनामें चार्लसकी फिर जीत हुई, किन्तु दूसरे दिन पीडमाएटकी सेनापर शत्रुसेनाने आक्रमण किया और कसटज्जामें बुरी तरह परास्त किया। तब लोगोंने चार्लसको परामर्श दिया कि तुम पियेसेन्जा लौट जाओ, किन्तु उसने कहा कि मेरा कर्त्तव्य हैं कि मैं जाकर मिलानकी रक्षा करूँ। अतः वह मिलानको गया। उसकी सेना बहुत हारी थकी थी। शत्रुसेनाने ज्यों ही उसपर आक्रमण किया, त्यों ही उसे लाचार हो मिलान शत्रुके हाथमें सौंप देना पडा। चार्लस एक युवक सैनिक अफसरकी सहायतासे वहाँसे निकल भागा।

यद्यपि चार्लस सब ओरसे हताश हो गया था, तथापि उसने युद्ध बंद न किया। उसने अकेले युद्ध किया। ७ चैत्र संवत् १९०५ को फिर युद्ध आरम्भ हुआ और बराबर तीन दिन तक होता रहा। मारटारामें पीडमाएटकी सेनाका अग्रभागवाला रक्षक दल मारा गया। जब यह संवाद चार्लस एलबर्टने सुना तो उसने जान लिया कि अब मेरी

शासनप्रणालीके पक्षपाती दलवाले नेता उत्तेजनाजनक व्याख्यान और लेखों द्वारा वहाँकी प्रजामें असन्तोष फैला रहे हैं। ट्यूरिनवालोंके असन्तुष्ट होनेका दूसरा कारण नौवेराके युद्धका अन्तिम परिणाम भी था। जिस समय राजा रानी और उनके दोनों पुत्र नगरमें होकर निकले प्रजाने उनका बड़ी उदासीनताके साथ स्वागत किया। तब विक्टरने एक घोषणापत्र निकाला जिसमें प्रजासे सहानुभूतिकी प्रार्थना की और लोगोंको विश्वास दिलाया कि विक्टरको भी इटलीके उद्धारकी चिन्ता है और वह सुअवसरकी प्रतीक्षा कर रहा है।

१६ चैत्रको विक्टरके राज्याभिषेककी विधि पूरी हुई। जनरल डिलोनीने नये मन्त्रिदलका चुनाव किया। इस मन्त्रिदलने अधिकार पाते ही, पुरानी पार्लमेण्ट सभाको भङ्गकर नयीके लिये नवीन सभ्योंका चुनाव करना आरम्भ किया। उधर विक्टर इमेनुअल सार्डिनियाकी भलाईके लिये इङ्गलेण्ड एवं फ्रांसके साथ मैत्री स्थापन करनेका प्रयत्न कर रहा था। जिन ठहरावोंपर फ्रांसके साथ विक्टर मेल करना चाहता था, उनके विषयमें मन्त्रीमण्डलमें मतभेद उपस्थित हुआ। इससे उसे बड़ा दुःख हुआ और वह सोचने लगा कि बीच समुद्रमें डूबती हुई नावको पार लगाने वाला माझी अब मैं किसे बनाऊं। अन्तमें सोचते सोचते उसने मैसीमो डी एजिलोको इस योग्य पाया। एजिलोको विसिज़ाकी लड़ाईमें एक घाव होगया था। वह उसकी पीड़ासे दुखित था। विक्टरने जब उसे प्रधान मन्त्रित्वके पदपर नियुक्त करनेका प्रस्ताव किया तब पहले तो एजिलोने उसे स्वीकार करना न चाहा क्योंकि वह राजनैतिक बखेड़ोंमें पड़ना अच्छा नहीं समझता था, किन्तु जब

केवल दिवास्वप्न था। उसी दिन रातके समय एक अनुचरके साथ वह पुर्त्तगाल देशान्तर्गत ओपर्टोकी ओर चल दिया। वहाँ उसने अपना जीवन व्यतीत किया। इधर विक्टरके सिरपर पीडमाएट राज्यको नये ढङ्गसे सङ्गठित करनेका भार पड़ा।

विक्टर इमेनुअलके सिरपर बड़े बुरे समय राज्य भार पड़ा, किन्तु उसने धैर्य्य और सन्तोषके साथ उस सारे बोझको ओढ लिया। विक्टर दक्ष और वीर पुरुष था। उसने मार्शल रेडिट्स्काईका निर्भीक हो सामना किया। जब आस्ट्रियन जनरलने किसी प्रकार न माना और पहलेकी शर्तोंपर ही वह जोर देता रहा, तब आवेशमें आकर वीर विक्टरने कहा—"यदि तुम्हारी यह इच्छा है कि युद्धमें मैं प्राण विसर्जन करूँ तो बहुत अच्छा, मैं तयार हूँ। मैं अपनी प्रजाको अस्त्रशस्त्रोंसे सुसज्जितकर रणक्षेत्रमें एकबार फिर बुलाता हूँ। तब तुम देखोगे कि पीडमाएटवाले उत्साहमें भर क्या कर सकते हैं। यदि मैं हारा तो इससे मुझे लज्जित न होना पड़ेगा। मेरे लिये वनका मार्ग बन्द नहीं है। किन्तु अपने कुलमें कलङ्क लगाना मुझे नहीं आता।"

अन्तमें सन्धि हुई। सार्डिनियाके अधीश्वरको अपनी सेनासे विदेशी सैनिकोंको अलग कर देना पड़ा। लड़ाईका बड़ा व्यय भार भी विक्टरको सहना पड़ा। अलसाण्ड्रिया दुर्गका आधा भाग आस्ट्रियाने लिया और आस्ट्रियाकी सेनाको पीडमाएट राज्यकी सीमाके अन्तर्गत पो, सीसा और टिसिनो नदियोंके बीचवाले स्थलमें छावनी बनानेका अधिकार मिला।

विक्टर जब अपनी राजधानीमें लौटकर गया, तब उसने देखा कि उसकी प्रजामें अशान्ति फैली हुई है। प्रजातंत्र

शासन प्रणालीसे शासन करनेकी शपथ ली थी। उस प्रणालीके अनुसार धर्मयाजकोंका शासन सम्बन्धी अधिकार नियम विरुद्ध था। अत. मंत्रीवर्गने धर्मयाजकोंसे वह अधिकार छीनना चाहा। इसपर विशप और अन्य पादड़ी झट लड़नेको तयार हो गये और राजा तथा पादड़ियोंमें कलह आरम्भ हो गया। विक्टरकी माताने अपने पुत्रसे अनुरोध किया कि पादड़ियोंसे मत झगडो और जैसी रीति अभीतक तुम्हारे कुलमें चली आयी है उसीपर तुम भी चलो, पर विक्टर इमेनुअलको पादडियोंके साथ कलह करनेकी इच्छा न रहते हुए भी अपने मन्त्रियोंका पक्ष लेना पडा। पादड़ियोंके न्यायालय उठा दिये गये। पादड़ियोंके प्रभुत्वसे साधारण प्रजा बहुत दुखी थी, अत उनका प्रभुत्व उठतेही पीडमाण्टकी प्रजा बहुत प्रसन्न हुई और वे समझने लगे कि विक्टर एव उसके मन्त्री सचमुच स्वतंत्रता देवीके सच्चे भक्त हैं।

इस नये सुधारसे प्रजा तो सन्तुष्ट हुई, किन्तु पादड़ी लोग, विशेषकर केथलिक चर्चवाले, नाना प्रकारके विघ्न उपस्थित करने लगे। मन्त्रिमण्डलीके एक मन्त्रीका नाम केवेलियर सेण्टा रोसा था। वह जब मरने लगा तब अन्तिम क्रिया सम्पादन करानेके लिये विशपने उसके पास किसी भी पादडीको न जाने दिया। विशपपर बहुत जोर भी डाला गया, किन्तु विशपने अपना हठ न छोडा। रोसा मर गया। जब पादड़ियोंके इस सङ्कीर्ण व्यवहारका समाचार लोगोंको मालूम हुआ, तब वे लोग पादड़ियोंसे और भी अधिक अप्रसन्न हुए। जिस विशपने यह लीला रची थी, वह पकड़कर कारागारमें डाल दिया गया। इसपर विक्टर इमेनुअल और रोमके पोपमें बहुत कुछ लिखा पढी हुई। पोपने विक्टरपर यह

देखा कि युवक विक्टरपर इस समय विपत्ति है, ऐसे समय उसका साथ देना आवश्यक है, तब उसने उस पदको अङ्गीकार कर लिया। सौभाग्यवश विक्टर और एजिलोके विचारोंमें कभी मतभेद उपस्थित न होता। दोनोंके विचार मिलजाते थे। विक्टर अपने प्रधानमंत्रीकी सज्जनता, शिष्टता एव अनुभवकी प्रौढतापर हृदयसे प्रसन्न एव सन्तुष्ट था और वृद्ध प्रधानमंत्री अपनेसे अवस्थामें छोटे अधीश्वरके निष्कपट और उत्साहपूर्ण वर्तावसे सदा प्रसन्न रहता था।

आरम्भमें बड़ी बडी कठिनाइयोंका सामना करना पड़ा। नयी पार्लमेण्टके जो सभ्य चुनेगये, उनमें प्राय बडे उग्र स्वभावके सभ्य थे और वे सदा राजा और उसके मंत्रिदलके प्रस्तावोंका विरोध किया करते थे। इनमें अधिक सभ्य वे थे जो मत्जीनीकी "नयी इटली" नामक सस्थाके भी सभ्य थे। इनके विषयमें डी एजिलोने एक वार कहा था कि "अल्पवयस्कोंसे अधिक बुद्धिमानीकी आशा नहीं की जा सकती क्योंकि उनमें अल्प बुद्धिही होती है।" इतनेमें विक्टर बीमार पडा और उसके अच्छे होनेकी लोगोंको आशा भी न रही। उसका पुत्र अल्पवयस्क था, अतः लोग कौंसिल द्वारा शासनकी सम्भावना करने लगे। किन्तु देशके सौभाग्यसे विक्टरका रोग छुट गया। वह स्वस्थ हुआ और थोडेही दिनों बाद वह पार्लमेण्ट भी भङ्ग कर दी गयी। साथही प्रजासे राजाकी ओरसे अनुरोध किया गया कि वे ऐसे लोगोंको अपने प्रतिनिधि चुने जो शान्त दान्त और विचारशील हों। इसका फल अच्छा हुआ। तीसरी पार्लमेण्टमें अच्छे लोगोंका निर्वाचन हुआ।

विक्टर इमेनुअलने सिंहासनासीन होनेके समय परिष्कृत

स्वतन्त्र साम्राज्य स्थापित हो।

पीडमाण्ट और पोपने विवाहके नये आईनको लेकर नया बखेडा खड़ा किया। डी एजिलो और काबूरमें मतभेद पड़ा और मन्त्रिमण्डलीने पद त्याग किया। विक्टरने डी एजिलोसे नवीन मन्त्रिमण्डली चुननेको कहा। नयी मन्त्रिमण्डली बनायी गयी किन्तु कुछ ही मास बाद रोमके मारे डी एजिलोके नाकोंदम आ गया और उधर उसका पुराना घाव उसे दुःख देने लगा। अन्त उसने अपना पद परित्याग किया और विक्टर-को परामर्श दिया कि काबूरको मेरे पदपर नियुक्त करो। विक्टरने काबूरको नियुक्त करनेमें इसलिये आपत्ति उपस्थित की कि काबूर कहीं भटभटी मचाकर बने हुए कामको बिगाड़ न दे। किन्तु अन्य उपाय न देख जब काबूर बुलाया गया तब उसने पदको अस्वीकार करते हुए कहा कि पादड़ियोंका अन्धेर मुझसे नहीं देखा जायगा। पर बहुत कहने सुननेपर काबूरने प्रधान सचिवके पदपर आरूढ होना अङ्गीकार कर लिया।

अभी कठिनाइयोंका यहीं अन्त न था। आस्ट्रियावाले पीडमाण्टको विद्रोहियोंकी जन्मभूमि बतलाकर, उसपर दोषा-रोप कर रहे थे। उधर युद्धका व्यय पचास लाख रुपये कर द्वारा उगाहकर आस्ट्रियाको चुकाना था। इस करके मारे पीडमाण्टवाले तङ्ग थे। घर और बाहर सर्वत्र विक्टरको कठिनाइयाँ ही दीख पड़ती थी किन्तु उसे काबूरमें पूर्ण विश्वास था कि वह सारी विघ्नबाधाओंको हटाकर किनारे लगा देगा।

इतनेमें क्रीमियाकी लड़ाई आरम्भ हुई। काबूरकी नीति-निपुणतासे सारडिनियाने रूसके विरुद्ध फ्रांस और इङ्गलैण्ड-से सन्धि की। विक्टरकी अभिलाषा थी कि उसकी सेना

दोष लगाया कि उसने अपनी प्रजाको आवश्यकतासे अधिक बोलनेकी स्वतत्रता दे रखी है। इसके उत्तरमें डी एजिलोने एक पुस्तिका निकाली जिसमें पादडियोंके शासन सम्बन्धी अनुचित अधिकारोंको हस्तगत कर लेनेका उल्लेख किया गया था। सेण्टा रोसाके मरनेसे मन्त्रिमण्डलीमें जो एक जगह खाली हुई थी, उसकी पूर्तिके लिये प्रधान सचिवने कावूरको चुना। डी एजिलो अनुभवी थे तो क्या किन्तु उसके बारेमें विक्टरने डी एजिलोसे कहा था—"सावधान रहना। यह कावूर तुम सबको उङ्गलियोंपर नचावेगा और तुमको ठिकाने लगा स्वयं प्रधान सचिव हो जायगा।" इटलीका भाग्योदय होनेवाला था, अतः विक्टरका यह भविष्यवाद ज्योंका त्यों पूरा हुआ।

उस समय इटली भरमें अकेला विक्टर इमेनुअल ही ऐसा राजा था जो अपनी प्रजाकी स्वतन्त्रताकी ओर उचित ध्यान देता था। अतः इटलीके अन्य नरेश उसपर सदा दाँत लगाये रहते थे। नेपिल्सकी राजगद्दीपर फर्डीनेण्डने बैठते ही विक्टर-की निन्दा करना आरम्भ किया। वह कहता था कि ऐसा राजा किस कामका जो अत्यन्त उदार हो और राष्ट्रीय सम्प्रदायके सिद्धान्तोंका अनुयायी हो। वियाइना और ट्यूरिन-में परस्पर सदा खटपट हुआ करती थी। इसका मुख्य कारण यह था कि ट्यूरिनके समाचारपत्र लोम्बार्डोंके प्रति आस्ट्रियाके अनुचित व्यवहारकी समालोचना खोलकर किया करते थे और विक्टर कुछ भी नहीं करता था। यूरोपके सारे राज्य विक्टरको अनुभवशून्य उद्दण्ड छोकड़ा समझा करते थे। परन्तु केवल इङ्गलेण्ड ही विक्टरका पक्षपाती था और चाहता था कि इमेनुअलकी चिरमिलाषा पूरी हो और इटलीका

थमा दे। माताके वियोगका शोक दूर नहीं होने पाया था कि इतनेमें उसकी स्त्री एडीलेडी भी चल बसी। विक्टरको घावपर घाव लगा। एडीलेडीपर विक्टरका प्रेम केवल उसके शारीरिक सौन्दर्यके कारण ही न था, किन्तु एडीलेडी जैसी रूपवती थी, वैसी ही गुणवती भी थी। जब विक्टर विचारों की विषम समस्याओंमें उलझ जाता था तब एडीलेडी उचित और यथार्थ परामर्श दे, पतिकी उलझने सुलझाती थी। सुगृहणी ऐसी थी कि घरकी सारी देखरेख और सन्तानका लालन पालन स्वयं करती थी। वह अन्य धनवानोंकी भोग विलास प्रिय ललनाओंकी तरह शृङ्गारके आडम्बरमें अपना सारा जीवन नष्ट नही करती थी। ऐसी सुलक्षणा सहचरीके दु:सह वियोगको विक्टर भूलने नही पाया था कि विक्टरका छोटा भाई फर्डीनेण्ड जो जिनोआका ड्यूक था मृत्युको प्राप्त हुआ। संसारमें जो अपने कहलाने योग्य हैं और जो अपने होते हैं, जिनके होनेसे गृहस्थ, गृहस्थ कहलाने योग्य होता है, वे सब एकएक करके पयान कर गये। पाठक सोच सकते हैं कि ऐसी स्थितिमें मनुष्यका मन क्योंकर स्थिर रह सकता है। इस विपदमें विक्टरके विरोधियोंने आक्षेप किया, तिसपर उसने कहा था—"लोग कह रहे हैं कि ईश्वरने मुझे यह दण्ड इसलिये दिया है कि मैंने उन आइनोंको पास किया जो पादड़ियोंके विरुद्ध हैं। उन्हींके शापसे मेरी माता, स्त्री और सहोदर भ्राताको मृत्यु हुई है। यही नही, मेरे विपक्षी मुझे और भी धमकाते हैं। किन्तु उनको जान लेना चाहिये कि जो राजा परलोकमे चिरशान्ति और सुख उपभोग करना चाहता है उसे अपनी प्रजाके सुखचैनके लिये इस पृथिवीपर बडा परिश्रम करना पडता है और अनेक प्रकारके

इस युद्धमें अपनी वीरताका परिचय दे। किन्तु प्रधान सचिव और उसके नीचेके मन्त्री विक्टरके इस विचारके विरुद्ध थे। वे कहते थे कि यह युद्ध विदेशमें हो रहा है जिससे हमसे तिल भर भी सम्बन्ध नहीं। यदि हम इसमें योग देंगे तो सर्वसाधारणजन क्या कहेंगे। कावूरने तो केवल उस सन्धिपत्र-जिसके द्वारा फ्रांस और इङ्गलैण्डसे सन्धि होती थी हस्ताक्षर करनेको विक्टरसे कहा, किन्तु विक्टरने उस पत्रपर भी स्वाक्षर कर दिये जिसमें उसने विदेशमें युद्ध छिडनेपर उक्त दोनों राज्योंको अपनी सेना द्वारा सहायता देनेकी प्रतिज्ञा की थी। इसपर विदेशीय विभागके मन्त्री डाबरमिडाने अपना पद परित्याग किया। तब कावूर अपने पदके कार्य्यके अतिरिक्त उस पद सम्बन्धी कार्य्यको भी करने लगा।

जो मनुष्य कुछ काम करना चाहते हैं और अपने चाहनेको कार्यरूपमें परिणत भी करते हैं उनको घर बाहर चारो ओर विघ्न बाधाओंका सामना करना ही पडता है। एक ओरसे तो विक्टरको राज्यसम्बन्धी अनेक चिन्ताएँ विकल कर रही थी साथ ही दूसरी ओरसे उसका गार्हस्थ्य जीवन भी वियोग जनित शोकका कारण हो रहा था। उसकी माता अपने पुत्रको सङ्कटमें छोड और एक ऐसा अन्तिम आदेश छोड परलोकवासिनी हुई जिसका पालन करना पुत्रके लिये तत्कालीन स्थितिमें असम्भव था। उसकी माताका उसे उपदेश था कि "बेटा, जिस लीकपर तुम्हारे बाप दादे चले आ रहे हैं उससे एक पग भी इधर उधर न होना।" भला विक्टरके पक्षमें जो राष्ट्रीय दलके सिद्धान्तोंका अनन्य पक्षपाती था, कब सम्भव था कि जान बूझकर वह अपने पितामह प्रपितामहादिकी तरह पादडियोंके हाथमें अपनी भी चोटी

हुई और अन्य शक्तियोंके नेताओंने उस सेनाके जनरल ला मारमोराकी बडी सराहना की। वह बडी बडी शक्तियोंके जनरलोंकी टक्करका समझा गया। इस सवादसे विक्टरके चिर अशान्त मनको शान्ति मिली। विक्टर प्रकृति वीर था, इसे वीर होने और वीर कहलानेकी बडी लालसा थी। यदि उस समय उसके पास कुबेरका धन भाण्डार होता तो वह विजय प्राप्तिके आनन्दमे उस सबको अपनी सेनाको उपहार स्वरूप तुरन्त दे डालता। उसके सैनिक यह बात जानते थे। इन बातोंको देख सुनकर विक्टरकी प्रजाकी अपने राजाके प्रति उत्तरोत्तर श्रद्धा बढती चली जाती थी। इससे विक्टर-का भी उत्साह बढ रहा था और वह सदा इस प्रयत्नमें लगा रहता था कि मेरे कर्मोंसे मेरी प्रजा किसी प्रकार हतोत्साह न होने पावे।

स्वार्थी पादडियोंकी जब स्वार्थहानि हुई और उनसे कुछ करते धरते न बन पडा तब उन्होने विक्टरका निन्दा प्रवाद यूरोप भरमें फैला दिया। निन्दा झूठी हो चाहे सच्ची ईश्वर तककी महिमाको घटा देती है। यह सोच और उस निन्दा-प्रवादको मिटानेके लिये विक्टर इमैनुअलने सवत् १६१२ विक्रमीके मार्गशीर्ष मासमे, डी एजिलो और काबूरको साथ ले लण्डन और पैरिसकी यात्रा की। उक्त दोनों नगरोंमें उसका बडी धूमधामसे स्वागत हुआ। पैरिससे चलते समय नेपो-लियनने यह शुभेच्छा प्रकट की कि मैं इटलीकी भलाईके लिये जो बन पडेगा करूंगा। इङ्गलैण्ड तो सदासे उन वीरोंका सम्मान करनेके लिये कटिबद्ध रहा है, जो अत्याचारियोंको परास्त कर अपनी वीरताको सार्थक करते है। अत इङ्गलैण्ड-ने विक्टरका जैसा अच्छा स्वागत किया, उसका उल्लेख करना

कष्ट भोगने पड़ते हैं।"

विक्टरका कहना बिल्कुल ठीक था। क्योंकि इसको अभी और भी अनेक अड़चनोंको दूर करनेके लिये कष्ट सहने अवश्य थे। पीडमाण्टके राज्यका दसवाँ भूभाग वहाँकी पादरी मण्डलीके हाथमें था और इसलिये वे अपार धनके स्वामी थे। सरकारने जो नये सुधार निकाले उनमें एक सुधार पादड़ियोंकी इस आयसे भी सम्बन्ध रखता था। पहले तो उनके अधिकारका झगड़ा था, अब तो प्राणोंसे भी अधिक प्रिय धनपर बात आ लगी। वहाँके विशप सरने मारनेको तयार हुए और विक्टरको धर्मद्रोही नास्तिक बतला उसको बुरे बुरे शाप देने लगे। उस समयका मन्त्रिमण्डल दृढ़ प्रतिज्ञ था और लोकमत उनके पक्षमें था। उधर विशप कहने लगे कि पादड़ियोंके धनमें हाथ न लगाया जाय, उनको आयसे जितना लाभ हो सकता हो उतना धन हम स्वयं देनेको प्रस्तुत हैं, पर सदाके लिये यह नियम न बनाया जाय। विक्टरपर इस प्रलोभनने प्रभाव डाला। इधर तो उसे अपनी माताका अन्तिम उपदेश स्मरण हो आया और उधर उसे उस घनिष्ट सम्बन्धका विचार आया जो उसके कुलसे पोपकी गद्दीके साथ परम्परासे चला आता था। इसपर विक्टर और उसके मन्त्रियोंमें मतभेद हुआ। उसने अपनी प्रजा और फ्रान्स एवं इङ्गलैण्डके राजदूतोंसे परामर्श माँगा। सब लोगोंने यही सम्मति दी कि तुम्हारा कल्याण इसीमें है कि तुम कानूनकी बात मानो। अन्तमें उसे वही करना पड़ा और रैटिज्जीके मन्त्रित्वमें नाम मात्रका इधर उधर कुछ हेरफेर कर उसे उसने कानूनके रूपमें स्वीकार कर लिया।

उधर सारडिनियाकी सेना क्रीमियाके युद्धमें विजयिनी

लेण्डने फ्रासकी मैत्रीपर मन्देह कर आस्ट्रियाके साथ मैत्री स्थापना की और इसके कुछही दिनों बाद फैलिस आरसिनी नामक एक इटेलियनने लुईस नैपोलियनके प्राण लेनेकी चेष्टा की। किन्तु पिछली दोनों घटनाओंका फल, लोगोंकी आशाके सर्वथा विरुद्ध हुआ। इङ्गलेण्ड और आस्ट्रियाकी मैत्री केवल लिखापढी तकही रही ओर आरसिनीकी अन्तिम प्रार्थनाने, जो इटलीके उद्धारके लिये की थी, फ्रासके सम्राट्के मनमें बडा अच्छा प्रभाव डाला। ईश्वरकी अनुकम्पासे इटली-के पक्षमें बुराईसे भलाई हुई।

नोवेरामें विक्टरके साथ आस्ट्रियाने जो सन्धि की थी वह दस वर्षके लिये थी। उसकी अवधि अब पूरी होने वाली थी। विक्टरको अब आशा बँध चली थी कि नोवेराका बदला लेनेका समय भी अब समीप आता जाता है। उधर कावूर और नेपोलियनने गुपचुप स० १८५८में एक सन्धि करली। स० १८५६में जब पार्लमेण्ट खुली और पार्लमेण्टके नियमा-नुसार, राजाने आरम्भिक वक्तृता दी, तब जो लोग उस समय वहा उपस्थित थे उनकी आखोंके सामने भावी घट-नाके सजीव चित्र खडे होगये। यह कावूरकी ओजस्विनी लेखनीका प्रसाद था। जिस समय विक्टरने कहा कि "हमारे हृदयमें सन्धिपत्रोंका आदर अवश्य है परन्तु हम उस आर्त्त-नादसे भी अनभिज्ञ नहीं हैं जो इटलीके अनेक प्रान्तोंसे सुनाई दे रहा है।" उस दिन पार्लमेण्टकी बैठकमें नेपि-ल्स राज्यका निवासी मसारी नामका एक व्यक्ति भी दर्शक बन कर गया था। उसने उस दिनके दृश्यका वर्णन करते हुए लिखा है कि विक्टरकी वक्तृताके प्रत्येक शब्दपर श्रोता-गण जयध्वनि करते थे। किन्तु जिस समय राजाके मुखसे

व्यर्थ ही है। विक्टर इमेनुअल और कावूरने अपने आचरणों-से इङ्गलेण्ड वालोंके मनमे यह बात जमादी कि वे दोनो भी उन्हीं आदर्शोंके भक्त हैं, जिनके इङ्गलेण्डवाले अनुयायी हैं। इङ्गलेण्ड और फ्रासकी राजधानियोंमे घूम फिरकर विक्टर मार्गशीर्ष मासके अन्तमें अपनी राजधानी ट्यूरिनमें लौट आया। जिसका घरमें आदर है उसका बाहर भी आदर होता है और जिसका बाहर आदर होता है उसका घरवाले भी आदर करते हैं। इसी नियमके अनुसार ट्यूरिन वालोनेभी अपने राजाका बडे उत्साहके साथ आदर किया।

सिवस्टपूलका पतन होते ही क्रिमियाकी लडाईका अन्त हुआ और स० १६१४ में शान्ति-सभाके अधिवेशनोंका उप-क्रम रचा गया। इस शान्ति-सभामे कावूरने जैसी सफलता प्राप्त की, उसका उल्लेख हम कावूरकी जीवनीमें कर आये हैं। कावूरके इस चातुर्य्यसे विक्टरके मनमें कावूरके लिये बहुत सम्मान होगया। इतनेमें सारडिनियाकी सेना क्रीमियासे लौटकर आयी। विक्टरने उन सैनिक वीरोंका वीरोचित स्वागत किया।

विक्टर और उसके प्रधान मत्रीको अभी अनेक कठिनाईयों-का सामना करना था। एक ओर आस्ट्रिया एव धर्मयाजक निरन्तर सारडिनियाके विरुद्ध लोकमतको बिगाड रहे थे और दूसरी ओर विदेशी सभ्यताके विरोधी दल वाले ट्यूरिन गवर्नमेण्टसे आग्रह कर रहे थे कि लोम्बार्डीसे आस्ट्रियनोंको मार कर भगा दो। इटलीके अन्य राज्योंके राजाओं और प्रजामे परस्पर मनोमालिन्य हो रहा था। उन राज्योंकी प्रजा-गण अपने राजाओंको अपना घोर शत्रु और विक्टर इमे-नुअलको अपना उद्धारकर्त्ता और रक्षक समझ रहे थे। इङ्ग-

दूससे कहा कि राजनैतिक युक्तियोंसे तुमने इस सम्बन्धके लाभ और उसकी आवश्यकता समझा दी, मैं तुम्हारे कहनेको मानता हूँ। किन्तु मुझे ऐसा करनेमें एक बलि देनी पड़ती है। मैं अपनी अन्तिम आशा उस समय दूंगा, जब मेरी लड़की इस सम्बन्धको बिना किसी दबावके स्वयं स्वीकार कर लेगी।

कावूरने राजकुमारीको भी समझा बुझाकर राजी करलिया और यह विवाह संवत् १९१५ के माघ मासमें हो गया।

दूसरा बलिदान, नीस और सेवाय प्रान्तोंको फ्रान्सके राज्यमें जोड़ देना था। यह भी विक्टरके लिये बड़ी कठिन परीक्षा थी, क्योंकि उसके कुलकी प्रसिद्धि सेवायके ही नामसे थी। पर दृढ़प्रतिज्ञ विक्टर इमैनुअल अपने उद्देश्यकी सिद्धिके लिये सब कुछ देनेको लिये उद्यत था। उसकी सर्वोच्च अभिलाषा इटलीको विदेशियोंके अत्याचारोंसे उन्मुक्त कर स्वतंत्र साम्राज्य स्थापन करनेकी थी। इसके लिये वह युद्ध करनेके लिये कटिबद्ध था, किन्तु उसके परामर्श-दाता उससे कुछ दिनों और ठहरनेके लिये कहते थे। जनरल नीलने जब कहा कि धर्म्मावतार, अभी कुछ और देखिये, तो इसपर विक्टरने कहा था कि "सेनानी, देखते देखते मुझे दस बरस हो गये।

इसके अनन्तर आस्ट्रियाके उभाड़ने और पीडमाण्टपर आस्ट्रिया द्वारा प्रथम आक्रमण किये जानेके लिये कावूरने जो उपाय रचे उनको हमारे पाठक कावूरकी जीवनीमें पढ़ही चुके हैं। अन्तमें आस्ट्रियाने पीडमाण्टपर आक्रमण किया और नैपोलियनको अपनी प्रतिज्ञानुसार विक्टरको सहायता देनी पड़ी। संवत् १९१६ के १० वैशाखको आस्ट्रियाके ठहरावोंको अस्वीकृत कर और तदनुसार आस्ट्रियाके राजदूत-

आर्त्तनादके शब्द निकले, उस समय क्या सभासद्, क्या प्रतिनिधि, क्या दर्शक सभी मारे उत्तेजनाके अपने अपने आसन छोड खडे होगये और उच्चस्वरसे जयध्वनि करने लगे। फ्रास, रूस, प्रुशिया एव इङ्गलैण्डके प्रतिनिधि आश्चर्य सागरमें निमग्न होगये और उस दृश्यको देख वे दङ्ग हुए। नेपिल्स राज्यके प्रतिनिधिके मुखपर मुरदनी छागयी। हम जैसे हतभाग्य देश निष्कासित भी अश्रुओंके प्रवाहको न रोक सके और जयध्वनि करते हुए मनही मन कहने लगे कि धन्य विक्टर तुम धन्य हो। तुम्हे हम दुःखियोंकी भी सुध है। यद्यपि उस समय विक्टर पीडमाण्ट राज्यके ही अधीश्वर थे किन्तु हमसे दुःखियोंने अपने मनमें उन्हें उसी समयसे इटली भरका अधीश्वर समझ लिया था।

विक्टरकी यह कोरी वक्तृता न थी, किन्तु स्वदेश हितैषियोंके लिये, युद्धोपकरण एकत्र करके कटिबद्ध रहनेकी चेतावनी थी। इस प्रसिद्ध वक्तृताके समाचार इटली भर-में फैलते विलम्ब न लगा और इटलीके पत्येक प्रान्तसे स्वदेश-हितैषी अस्त्र शस्त्रोंसे सुसज्जित हो पीडमाण्टमें एकत्र होकर समयकी प्रतीक्षा करने लगे। विक्टरको अभी बडी कठिन परीक्षा देनी अवशेष थी। फ्रासके सम्राट् विक्टरकी सहायता आस्ट्रियाके विरुद्ध देनेका वचन इस शर्त्तपर दे रहे थे कि विक्टर अपनी सोलह वर्षकी कन्याका विवाह सम्राट्के चचाके साथ, जिनकी अवस्था लडकीकी अवस्थासे दुगुनी थी, कर दें। ऐसा कौन अभागा पिता होगा जो बिना किसी दबावके अपनी सन्तानको कुपात्रके साथ सदाके लिये बाध दे। विक्टर इमेनुअलने प्रथम इस ठहरावको अस्वीकृत किया, किन्तु कावूरके बहुत कहने सुननेपर वह राजी हुआ और का-

वूरसे कहा कि राजनैतिक युक्तियोंसे तुमने इस सम्बन्धके लाभ और उसकी आवश्यकता समझा दी, मैं तुम्हारे कहनेको मानता हूं। किन्तु मुझे ऐसा करनेमें एक बलि देनी पड़ती है। मैं अपनी अन्तिम आज्ञा उस समय दूंगा, जब मेरी लड़की इस सम्बन्धको बिना किसी दबावके स्वय स्वीकार कर लेगी।

कावूरने राजकुमारीको भी समझा बुझाकर राजी करलिया और यह विवाह सवत् १९१५ के माघ मासमें हो गया।

दूसरा बलिदान, नीस और सेवाय प्रान्तोंको फ्रान्सके राज्यमें जोड़ देना था। यह भी विक्टरके लिये बड़ी कठिन परीक्षा थी, क्योंकि उसके कुलकी प्रसिद्धि सेवायके ही नामसे थी। पर दृढ़प्रतिज्ञ विक्टर इमेनुअल अपने उद्देश्यकी सिद्धिके लिये सब कुछ देनेको लिये उद्यत था। उसकी सर्वोच्च अभिलाषा इटलीको विदेशियोंके अत्याचारोंसे उन्मुक्त कर स्वतंत्र साम्राज्य स्थापन करनेकी थी। इसके लिये वह युद्ध करनेके लिये कटिबद्ध था, किन्तु उसके परामर्श दाता उससे कुछ दिनों और ठहरनेके लिये कहते थे। जनरल नीलने जब कहा कि धर्मावतार, अभी कुछ और देखिये, तो इसपर विक्टरने कहा था कि "सेनानी, देखते देखते मुझे दस बरस हो गये।

इसके अनन्तर आस्ट्रियाके उभाड़ने और पीडमाण्टपर आस्ट्रिया द्वारा प्रथम आक्रमण किये जानेके लिये कावूरने जो उपाय रचे उनको हमारे पाठक कावूरकी जीवनीमें पढ़ही चुके हैं। अन्तमें आस्ट्रियाने पीडमाण्टपर आक्रमण किया और नेपोलिनको अपनी प्रतिज्ञानुसार विक्टरको सहायता देनी पड़ी। सवत् १९१६ के १० वैशाखको आस्ट्रियाके ठहरावोंको अस्वीकृत कर और तदनुसार आस्ट्रियाके राजदूत-

को उत्तर दे, सारडिनीयाकी पार्लमेण्टने सेनाको आज्ञा दी कि युद्धके लिये तुम लोम्बार्डीकी यात्रा करो, और इस चढ़ाईका सारा दायित्व विक्टर इमेनुअलको सौंपा। विक्टरने एक घोषणापत्र निकाला। उसमे उसने आस्ट्रियाकी ज़ियादती-की बातें लिख अन्तमें लिखा था—"हमें ईश्वरपर भरोसा है, हमे इटेलियन सिपाहियोंकी वीरतापर भरोसा है, हमे फ्रान्सकी मित्रतापर भरोसा है और हमें प्रजाकी न्यायानुमोदित सम्मति-पर भरोसा है। मेरी सबसे बढ़कर कामना यह है कि इटलीकी स्वतन्त्रताके लिये जो युद्ध हो उसमे मै सबसे प्रथम शस्त्र उठाऊँ। इटलीकी जय हो।"

नौवेरामे राज्यशासनकी बागडोर हाथमें लेते समय दस-वर्ष पूर्व विक्टरने जो प्रतिज्ञा की थी उसको पूरा करनेका समय उपस्थित हुआ। वीर विक्टर अपने प्राणोका मोह छोड़कर शत्रुसेनाका सामना करने लगा। कभी कभी तो वह ऐसी ऐसी स्थितिमे पड जाता कि उसकी सेनाके जनरल और सैनिक उसकी रक्षाके लिये बडी चिन्तामे पड जाते थे, किन्तु वह वीर निर्भीक हो कठिनसे कठिन समयमें भी कभी पीछे पैर नही रखता था। जिस राज्यका राजा स्वय अपनी जानको हथेलीपर रखकर युद्ध करे उसकी अधीनस्थ सेना भला क्यों जी चुराने लगी।

उधर जिनोवामें नेपोलियन सेना सहित आकर विक्टरसे मिला। विक्टरकी सेनाने जयध्वनिके साथ फरासीसी सेना-का बडे उत्साहके साथ स्वागत किया। धीरे धीरे लोम्बार्डी-से विक्टरने आस्ट्रियनोंको मार भगाया। उधर गारिबाल्डी अपनी स्वय सेवकोंकी सेनाद्वारा एक एक करके नगरोंको जीतने लगा। विक्टरकी शूरवीरता देखकर फरासीसी सेनाने

विक्टरको अपनी सेनाका अध्यक्ष बनाया। लोम्बार्डीके अधिवासियोंकी ओरसे एक प्रार्थना समिति विक्टरके पास आयी और उसे बधाई देते हुए लोम्बार्डीको पीडमाण्टके अन्तर्गत मिलानेकी प्रार्थना की। लोम्बार्डीकी राजधानीमें विक्टर और गारिबाल्डी मिले और यहींसे दोनोंकी परस्पर मैत्री स्थापित हुई।

विक्टरकी आशातीत सफलता प्राप्त करते देख नेपोलियनकी नीयत बिगड़ी। उसने विक्टरसे पूछे बिना ही डरकर आस्ट्रियाके साथ सन्धि कर ली। इटालियन और फ्रेंच सेनाने नेपोलियनके इस कृत्यका सवाद सुन केवल आश्चर्य ही न माना किन्तु उसकी निन्दा करते हुए वे क्रुद्ध भी हुए। विक्टर इमेनुअलने यथाशक्ति प्रयत्न किया कि नेपोलियन ऐसा न करे, किन्तु नेपोलियन हठ करने लगा। तब सारी आशाओंको विसर्जनकर विक्टरने नेपोलियनसे कहा—"हा दीन इटली। श्रीमान्‌ने जो कुछ विचारा है ठीक ही है। किन्तु श्रीमान्‌ने इटलीकी स्वतन्त्रताके लिये जो कष्ट स्वीकार किया है उसके अर्थ मैं आपका कृतज्ञ हूँ और आप मुझे अपना मित्र समझते रहें।" जिस राजाकी सेना विजय प्राप्त करते करते बीचमें अकारण रोक दी जाय, उसके मुखसे ऐसे गम्भीर शब्द उस व्यक्तिके लिये जो उसकी सारी आशाओंका विघातक है, निकलना बड़ी भारी बात है।

विक्टरने अपने हृद्गत भावोंको बड़ी वीरताके साथ दबाया, किन्तु इतनेहीसे उसे चैन न मिला। गारिबाल्डी तथा उसका स्वयंसेवकदल नेपोलियनकी नीचता देख, क्रोधाग्निसे भभक रहा था और अपने भावोंको न सह सकता था। विक्टरने किसी न किसी प्रकार उन्हें भी शान्त किया। पर काबूरका

क्रोध, वह भी ठण्डा न कर सका। जब काबूरने यह सम्वाद सुना, दौड़कर विक्टरके शिविरमें पहुंचा और घण्टों तक बातचीत करनेपर भी उसका चित्त शान्त न हुआ। वह पद परित्याग पत्र विक्टरके हाथमें दे ट्यूरिन चला आया।

विलाफ्रेङ्काके सन्धिपत्रपर २६ आषाढ़ सम्वत् १९१६ का दोनों ओरके हस्ताक्षर हुए और लोम्बार्डी पीडमाण्टमें जोड़ दिया गया। उधर रैटेज्जी प्रधान सचिव हुआ। सन्धिपत्रपर हस्ताक्षर करते समय दोनों पक्षवालोंने सोचा था, कि इटलीकी छोटी छोटी रियासतें उन राजाओंको लौटा दी जाँयगी, जो वहाँके अधीश्वर हैं और जो अपने राज्योंको छोड़ भाग खड़े हुए हैं। किन्तु उन राजाओंकी प्रजा अपने राजाओंसे नितान्त अप्रसन्न थी। प्रत्येक राज्यके बसनेवालोंने प्रार्थना-समिति भेजकर विक्टरसे प्रार्थना की थी कि हमारे प्रान्तको अपने शासन राज्यमें मिला लीजिये और कई स्थानोंमें विक्टरके प्रतिनिधि शासन कर रहे थे। जब विक्टरने उन प्रतिनिधियोंको लौट आनेकी आज्ञा दी तब उन्होंने अपने स्थान छोड़ना इसलिये उचित न समझा कि यहाँकी प्रजा अपने राजाके विरुद्ध विप्लवके लिये उद्यत थी। उन लोगोंने खुलमखुल्ला कह दिया था कि हम अपने भगेड़ू राजाओंको इस प्रान्तमें फटकने न देंगे। अतः विला-फ्रेङ्काके सन्धि-पत्रका जैसा प्रभाव पड़ना चाहिये था वैसा न पड़ा।

मध्य इटलीकी रियासतोंने तो यूरोपके बड़े बड़े सम्राटोंकी सेवामें अपने प्रतिनिधि भेजकर प्रार्थना की कि हम अत्याचारसे पीड़ित थे, अब हम चाहते हैं कि हमारे देशका शासन पीडमाण्टके अधीश्वरके हस्तगत हो। फ्लोरेंसमें रिकासली और मोडिनामें फारिनीने सङ्कल्प कर लिया कि हम अपने

प्रान्तोंको पीडमाएटकी रियासतमें जोड़ देंगे, और उन लोगोंने अन्य रियासतोंके प्रतिनिधियोंको बुलाकर एक सभा की और इसी आशयका मन्तव्य स्थिर किया। इस फिनमें नित्य नये नये डेप्युटेशन पहुँचने लगे। विक्टर बड़ी कठिनतामें पड़ा। न तो वह उन प्रतिष्ठित लोगोंकी प्रार्थनाको अस्वीकृत कर सकता था और न आस्ट्रिया और फ्रांसकी इच्छाके विरुद्ध कोई काम करना चाहता था। उसने इटलीके राज्योंके समागत प्रतिनिधियोंका अच्छे प्रकार स्वागत किया, उनसे खुलकर बातचीत की और उन्हें विश्वास दिलाया तथा कहा कि कुछ दिनों और ठहरो। यूरोपकी शक्तियोंने इस विषयकी मीमांसाके लिये सवत् १८१८ के आश्विन मासके अन्तमें काँग्रेसका अधिवेशन किया। उसमें विक्टरकी ओरसे प्रतिनिधि बनकर कौन जाय—इस बातकी उसे चिन्ता हुई। इस योग्य कावूरको छोड़ दूसरा कोई पुरुष उसकी दृष्टिपर न चढ़ा। किन्तु कावूर जिस प्रकार अप्रसन्न हो चल दिया था उसका विचार कर, विक्टरको उसे बुलानेका साहस नहीं होता था किन्तु अन्य उपाय न देख विक्टरने कावूरको पेरिस भेजना निश्चित किया।

किन्तु रेटिज्जी विक्टरके इस निश्चयके विरुद्ध खड़ा हुआ और जान पड़ने लगा कि यह झगड़ा अब किसी प्रकार तय नहीं होगा। कावूरसे कहा गया कि तुम जिन शर्तोंपर पेरिस जाना चाहते हो उन्हें लिखकर भेजो। कावूर ब्रिटिश प्रतिनिधिके घरपर ठहरा हुआ था, अत वह बोलता गया और ब्रिटिश प्रतिनिधि सर जेम्स हडसन लिखते गये। जब यह लेख विचार समितिमें उपस्थित किया गया, तब हडसनके हाथका लेख देख, जनरल लामारमोरा बहुत बिगड़े। कहने

लगे हमारी घरकी बातें निश्चय होनेके पूर्व विदेशियोंके कानमें क्यों डाली जाती हैं। जनरल साहब इस बातपर इतना बिगड़े कि वे अपना पद परित्यागकर विचार-समितिसे पृथक हो गये। उधर विचार-समितिने कावूरकी शर्तोंको नापसन्द किया। विक्टरको यह बात अच्छी न लगी। उसने उस मन्त्रिमण्डलीको भङ्ग किया और कावूरको बुलाकर नवीन मन्त्रिमण्डली निर्वाचित करनेकी आज्ञा दी। कावूरने फिर नवीन मन्त्रिमण्डली बना डाली।

पोप अपनी रियासतकी भयानक स्थिति देख विचलित हुए और खुलखुला विक्टरकी निन्दा इसलिये करने लगे कि वह इटलीके सारे राज्योंका स्वयं अधीश्वर बन जाना चाहता है। अन्तमें दोनोंमें लिखापढ़ी आरम्भ हुई। विक्टरकी ओरसे जो पत्र जाते वे गम्भीर, प्रतिष्ठासूचक होते और उनके पढ़नेसे यह बात प्रकट होती थी कि विक्टर झगड़ा बढ़ाना नहीं चाहता, किन्तु पोपके पत्र क्षुद्रतासे भरे कलहोत्पादक थे। प्रस्तावित काम्रेसका अधिवेशन न हो पाया और लोगोंको ज्ञान पड़ने लगा कि मध्य इटलीकी रियासतें अपनी मतमानी कार्रवाई किये बिना न मानेंगी। मध्य इटलीकी रियासतोंने मिलकर पञ्चायत की और एक स्वरसे सबने मिलकर यह मन्तव्य निश्चित किया कि मध्य इटलीकी सारी रियासतें पीडमाण्टकी रियासतके साथ जोड़ दी जायँ। इस मन्तव्यको विक्टरने भी स्वीकार किया और उन रियासतोंको अपने अधिकारमें कर लिया।

पोपसे यह न देखा गया और उसने एक घोषणापत्र निकाल सारा विष उगल दिया। विक्टरको उस पत्रमें अनेक कुवाच्य कहे। उसे डाँकूके समान बताया। किन्तु उसके इस प्रका

हाथ पैर पटकनेका कुछ भी फल न हुआ क्योंकि जिन लोगों-को भडकानेके लिये उसने इतना कष्ट उठाया था, वे पोपके स्वरूपको भली भाँति जान गये थे।

इटलीको इस प्रकार सबल होते देख नेपोलियन कही कोई बखेडा खडा न कर दे, इसलिये विक्टरने उसे नीस और सेवायके प्रान्त दे डाले। इस कृत्यसे जो बखेडा घरमे खडा हुआ उसका वृत्तान्त हम गारिबाल्डीकी जीवनीमे लिख ही चुके हैं।

सवत् १९१६के २० चैत्रको नयी पार्लमेएटकी वैठक बैठी। उस बैठकमें रिकोसोली, फारिनी, कैपोनी, मेन्जोनी, मैमियेनी, पोरिमो आदि पीएडमाएट, लोम्बर्डी, टसकनी ओर इमिलिया प्रान्तोंके प्रतिनिधि उपस्थित थे। विक्टरने अपनी वक्तृतामें उपस्थित स्थितिका चित्र बडे प्रभावोत्पादक शब्दोंमें वर्णनकर सेवाय और नीसको फ्रांसके हाथ सौंपनेका कारण बतलाया। अन्तमें उसने कहा—"आजकी इटली रोमनोंकी इटली नहीं है। वर्त्तमान इटली मध्यकालीनोंकी इटली भी नही है। अर्थलोलुप विदेशियोकी परस्पर लडाईकी वस्तु भी नही, अब इटली है उनकी जो इटलीके निवासी हैं।"

विक्टरके व्याख्यानके अन्तिम शब्द उपस्थित श्रोताओंके मुखसे प्रतिध्वनित हुए और ये शब्द पीछेसे इटलीवालोंके लिये मंत्रके तुल्य महत्वपूर्ण वाक्य बन गये। "इटली इटलीवालोंकी होनी चाहिये"—ये शब्द जादू जैसा प्रभाव इटलीवालोंपर डालने लगे।

इसके अनन्तर विक्टरने अपने राज्यमें भ्रमण करना आरम्भ किया। जहाँ जहाँ वह जाता वहाँ उसकी प्रजा मन खोलकर उसका स्वागत करती थी। फ्लारेंसवालोंने उसके आगमनके उपलक्षमे अपने नगरको खूब सजाया। टसकनोके सभी छोटे

बडे, प्रसिद्ध अप्रसिद्ध, कवि, शिल्पी, गायक उससे मिले और कहने लगे कि जिस बातका हम स्वप्न देखते थे, वह आपने सच मुच करके दिखला दिया।

इतनेमें गारिबाल्डीने सिसली और नेपिलस्को हस्तगत करके रोमपर आक्रमण करना चाहा। परिणामदर्शी कावूर और विकृर दोनों इसके विरुद्ध इसलिये थे कि ऐसा करनेसे फ्रांस चिढकर पोपकी सहायता करेगा और फ्रांसको बिगाडना अभी ठीक नहीं इसलिये बड़ी फुर्तीके साथ कावूरने सरकारी सेना भेज गारिबाल्डीकी गतिको स्थगित किया। तब कावूरने विदेशी-राज-प्रतिनिधियोंको इसका कारण बतलाते हुए कहा कि हम यदि ऐसा न करते और गारिबाल्डी कैटोलिकामे पहुँच जाता तो सारा राज्य मिट्टीमें मिल जाता। इटलीको फिर राजविद्रोहियोंका शिकार बनना पड़ता।

विकृरने अपनी सेना सजाई और दक्षिणकी ओर प्रयाण किया। जहाँ वह जाता वहीं उसकी विजय होती थी। पोपकी सेना विकृरकी सेनाके सामने खड़ी नहीं हो सकती थी। कास्टेलफिडार्डोमें जनरल सियालडिनीने, पोपकी सेनाको बुरी तरह परास्त किया और तुरन्त अनकोनापर अपना अधिकार जमा लिया। कावूरने कह रखा था कि अमब्रिया, पीरुजिया लिये बिना इटलीमे विद्रोह शान्त न होगा। अतः विकृरने इन प्रान्तोंको अपने हस्तगत कर लिया। गारिबाल्डी ने जो प्रदेश विजय किये थे वे विकृरको सौंप दिये।

अनकोनासे नेपिल्सकी ओर जाते समय विकृर इमेनुअल ने दक्षिण इटली वासियोंके लिये एक घोषणा पत्र निकाला जिसमे उसने लिखा था कि मेरी सेना तुम्हारे प्रदेशमें शान्ति स्थापनके लिये जाती है। मैं तुम्हारे ऊपर बलात् अपनी आज्ञा

पालन कराने नही आता। किन्तु तुम्हारी अभिलाषाओंका सम्मान करनेको आता हू। तुम लोग अपनी इच्छाओंको विना किसी रोक टोकके प्रकाश कर सकते हो। इसी प्रकारकी अनेक आश्वासनप्रद बातें उसमें लिखी थीं।

नैपिल्सकी सीमा पर विकृर और गारिबाल्डी मिले। गारिबाल्डीने विकृरको "इटलीके अधीश्वर" कहकर सम्बोधन किया। तब विकृरने उसे सीधे शब्दोंमें धन्यवाद दिया। अनन्तर दोनों वीरोंने हाथ मिलाये और घोड़ों पर सवार हो बराबर बराबर दोनों राजधानीकी ओर गये। नैपिल्समें दोनों वीरोंने शासनसम्बन्धी आवश्यक प्रवन्ध किये। वहाँकी प्रजाने दोनोंको समानरीत्या माना। किन्तु कुछ दिनों बाद सारा धन और भेंटकी वस्तु परित्याग कर गारिबाल्डी तो अपने घर केप्राको लौट गया और उसके जानेके कुछ ही दिनों बाद विकृर भी अपनी राजधानीमें लौट गया।

इटलीकी सारी रियासतोंमें विकृरके विजयका डङ्का पिट गया किन्तु रोम और विनीशिया अब तक उसके झण्डेके नीचे नहीं आये थे। इतनेमे नवीन पार्लमेण्टका अधिवेशन किया गया जिसमें यह प्रस्ताव किया गया कि आजसे "सारडिनिया राज्य" के बदले यह "इटली राज्य" कहा जाय। प्रस्ताव स्वीकृत हुआ और विकृर इमैनुअलको द्वितीय विकृर इमैनुअल, इटलीका राजाकी उपाधि मिली।

कावूर अभी तक पीडमाण्ट राज्यके अधीश्वरका प्रधान सचिव था जब विकृर इटलीका अधीश्वर हुआ तब इटली साम्राज्यके अधीश्वरका प्रधान सचिवभी कोई दूसरा मनुष्य होना चाहिये यह सोच कावूरने अपना पद त्याग दिया। तब विकृर-ने प्रजाके प्रधान नेताओंसे परामर्श किया किन्तु सब लोगों

ने एक स्वरसे कावूरके पक्षमें अपनी सम्मति प्रकट की। तब कावूर इटलीके अधीश्वरका प्रधान सचिव हुआ। घरमें तो गारिवाल्डी आदि जो तलवारके बलसे रोमको लेना चाहते थे कावूरकी निन्दा करते थे और बाहर पाड्डो उस की निन्दा किया करते थे। पर कावूर इन लोगोंकी निन्दापर तिल भर भी ध्यान नहीं देता था। वह रोमको हस्तगत करनेका उपाय सोच रहा था कि इतनेमें उसका अन्तिम समय आया और वह लोकान्तरित हुआ। कावूरके मरनेपर विक्टर बहुत दुःखी हुआ और शोकावेशमें कहने लगा कि "यदि मरना ही था तो इटलीके लिये अच्छा होता यदि मेरी मृत्यु होती।" कावूर की मृत्युके अनन्तर उसके मित्र एवं शत्रु सभी दुःखी हुए।

कावूरके बाद रिकासली इटलीका प्रधान सचिव हुआ, किन्तु जिस बोझको कावूर उठाये हुए था वह रिकासली न उठा सका। और नौ मास काम कर उसने पद परित्याग कर दिया। तब रेटिज्जी प्रधान सचिव हुआ। इसको जैसी कठिनाइयोंका, विशेष कर गारिवाल्डीके रोम उद्धारके विचारसे, सामना करना पडा था, उसका उल्लेख हम गारिवाल्डीकी जीवनीमें कर ही आये हैं। रेटिज्जीने गारिवाल्डीको बन्दी बना कर केवल प्रजा ही को असन्तुष्ट न किया बलिक उसके इस कृत्यसे विक्टरको भी दुःख हुआ। फल यह हुआ कि उसे भी अपना पद परित्याग करना पडा और उसकी जगह फारिनीको मिली। किन्तु उसे भी शारिरिक अस्वास्थ्यके कारण कुछ ही दिनों बाद अपना पद परित्याग कर देना पडा। तब मिन्घेटी प्रधान सचिव हुआ। इतने हेर फेर हो गये किन्तु रोमका प्रश्न ज्योंका त्यों पडा रहा। बडी अडचन यह थी कि नेपोलियन एक ओर तो इटलीकी स्वाधीनताका पक्षपाती था और दूसरी ओर वह

पेपके अधिकारोंको भी अक्षुण्य बनाये रखना चाहता था।

सौभाग्यवश वह समय आया जब नेपोलियनका ध्यान दूसरी ओर आकृष्ट हुआ। इधर विक्टर इस बीचमें अनेक देशोंमें घूम फिर कर बहुत कुछ अनुभव प्राप्त कर चुका था। और अपनी प्रजाके मनमे अपने सद्व्यवहारसे अपने लिये बहुत बडा स्थान कर चुका था। विक्टरको आशा थी कि रोमके अधिकारमे आनेके पूर्व वेनिस अवश्य हस्तगत होगा। धीरे धीरे फ्रांस सम्राटके साथ विक्टरका हेल मेल उत्तरोत्तर बढ़ता गया। नेपोलियनके मनमे भी यह बात समा गयी कि इटली की राजधानी होनेके योग्य रोम ही है। उसके इस विचारकी पुष्टि उसके प्रधान सचिव ड्रून डी लुइसने बडी योग्यतासे की। पर यह काम एक साथ करनेका उसको भी साहस न हुआ। उसने कहा कि ट्यूरिन इटलीकी राजधानी होने योग्य नही है। राजधानी इटलीके मध्य भागमे दक्षिण प्रान्तकी ओर होनी चाहिये। इस पर विक्टरके मन्त्रिमण्डलीने राजधानीके लिये फ्लारेंसको पसन्द किया। जिस ट्यूरिनमे अनेक शताब्दियोंसे विक्टरके पूर्व पुरुषोंका आवास स्थान था उसका छोडना विक्टरको बहुत खला। उसने कहा कि "आप सब जानते हैं कि मैं पक्का ट्यूरिनी हूँ, पर मेरी उस हृदयकी पीडाको कौन जान सकता है जो मुझे यह सोचकर होती है कि वह नगर छोडना पडेगा जिसमे मेरे अनेक प्रेमपात्र और प्यारे हैं, जिन्हें मेरे कुटुम्बमे, मेरे वंशसे यत्परोनास्ति भक्ति और प्रेम है, जहां मेरे पुरखोंकी नाल गडी हुई है। सवाय और नीसके परित्यागकी पीडाके बाद कोई इससे अधिक शोक जनक सार्वजनिक घटना मेरे लिए नही हुई है। इटलीकी एकता के लिए यदि यह स्वार्थत्याग आवश्यक न होता तो

में बिना इनकार किये न रहता।"

विकृर को राजधानीके बदलनेसे जो दुःख हुआ था उसका परिचय उसके ऊपर उद्धृत किये हुए वाक्योंको पढने से भली भाति जाना जा सकता है। साथ ही ट्यूरिन वासियोंको भी राजधानी परिवर्तनसे बडा दुःख और क्षोभ हुआ था और परिणाम यह हुआ कि मिन्धेटीको अपना पद त्यागना पडा और इस विचारका विरोध, सार्वजानिक सभाए करके किया गया और विकृरको भी नरम गरम बाते सुननी पडी। विकृरने जनरल ला मारमोराको प्रधान सचिव बनाया और उसने ट्यूरिन वासियोंकी अप्रसन्नता एव विरोधकी कुछ भी परवाह न कर फ्लोरेंसमें राजधानी स्थापितकी। फ्लोरेंस वालोंने बडी श्रद्धा भक्तिसे इटलीके अधीश्वरका आगत स्वागत किया।

सवत् १९२३ वि०में विक्टरका तृतीय पुत्र जो बहुत् दिनों से रोगाक्रान्त था मरा और उसकी मृत्युके कुछही दिनोंवाद इटलीका एक प्रसिद्ध राजनितिज्ञ मैसिमो डि एजिलो का शरीरान्त हुआ। डी एजिलो शिल्पी, कवि, राजनीतिज्ञ और योद्धा था। वह अपने व्यवहारके कारण सर्वजन प्रिय था। विक्टरकी उसमें बडी आस्था थी। यूरोपके अन्य शक्तिशाली अधीश्वर भी उसकी प्रतिष्ठा करते थे। उसके मरनेसे इटलीकी बडी हानि हुई।

इसी वर्षमे राजनैतिक गगनमडलमें युद्धकी घनघोर घटाएँ छायी हुई थी। प्रूशिया और आस्ट्रियामें विवाद हो रहा था। सवत १९२२ वि०के २५ चैत्रको प्रुशियाके साथ इटलीने सन्धि की। तब आस्ट्रिया वाले घबडाये और नेपोलियनको बीचमें डालकर इटलीसे कहलवाया कि हम इटलीको विनिशिया

देनेको तय्यार हैं यदि इटली प्रशियाके साथ सन्धि न करें। आस्ट्रियाने लोभ तो बडा दिखलाया था किन्तु इटलीके अधीश्वर आस्ट्रियाकी बातोंमें न आये और संवत् १९२३ के ७ आषाढको आस्ट्रियाके विरुद्ध युद्धकी घोषणा करदी। विक्टरने इटलीका सारा राजकाज अपने एक चचेरे भाईको सौंपा और स्वय वीरवाहिनी ले युद्धके लिये अग्रसर हुआ। उसके दोनों पुत्र हमवर्ट और एमेडियस भी उसके साथ गये। यद्यपि इसप्रारकी विकट लडाइयोंमें आशाके प्रतिकूल गारिवाल्डी एव विक्टरकी सेनाको कई स्थानोंपर हारना पडा तथापि प्रशियाकी सहायतासे आस्ट्रियाको इटलीके साथ सन्धिकर लेनी पडी। इटलीके हाथ विनिशियाका प्रान्त आया यद्यपि इटलीको अपन अनेक वीरोंसे हाथ धोने पडे तथापि विनिशिया का प्रान्त विदेशी राज सत्तासे मुक्त हुआ। इस प्रान्तके इटलीमें मिलतेही डेनियल मेनिन आदि देश हितैषी जो राजविद्रोहके अपराधमे देशसे निकाल दिये गये थे स्वदेशमें लौट आये। उन लोगोंने आकर विक्टरकी अभ्यर्थनाकी। उसके उत्तरमें विक्टरने बडे मर्मस्पर्शी शब्दोंमे एक व्याख्यान दिया और सवत् १९२३ वि०के २२ कार्तिकको वह प्रान्त इटली साम्राज्यमें मिला लिया गया।

अब रोमही शेप रह गया। फरासीसियोंने अपनी पूर्व प्रतिज्ञानुसार रोमसे अपनी सेना जो दोवर्पके लिये वहाँ रखी थी, लौटाली। इसके बाद गारिवाल्डी आदिने उतावलीकर जो लीलाकी उसका उल्लेख हम गारिबाल्डीकी जीवनीमें कर चुके हैं। मैन्टोनामें इटलीके अनेक स्वयसेवकोंको फ्रांस सेनाकी नयी शास्पो तोपोंकी मारसे प्राणदेने पड़े थे। जब यह समाचार विक्टरने सुना तब वह कहउठा "हाय हाय,

इन शास्पो तोपोने मेरे पिता तुल्य राज हृदयमे प्राणान्तक छेद्कर दिये हैं, ऐसी व्यथा होती है मानों इन गोलियोंने मेरा शरीर छेद् डाला है। इतने जीवनमें इससे बढकर मुझे और क्या शोक होगा। ”

इतनेमें युवराज हमवर्टका विवाह उसकी चचेरी बहिन कुमारी मारघेरियाके साथ हुआ। हमवर्ट की अवस्था इस समय २४ वर्षकी थी। विक्टरके दूसरे पुत्रको स्पेनका राज्यसिंहासन मिलनेवाला था। वह प्रिंस डेला सिस्टरनाकी पुत्रीके साथ विवाह कर चुका था। स० १६२६ वि० में विक्टर पिसाके समीप एक ग्राममें बहुत बीमार पडा। कुछ दिनों पीछे वहीं उसने काउंटेस मीराफियोरीके साथ विवाहकर लिया।

इसीसाल फ्राँस और प्रूशियामें परस्पर युद्ध हुआ। फ्रासको अपनी चिन्ता पडी और वह पोपकी रक्षा करनेमें असमर्थ हुआ। फरासीसियोंको बुरी तरह प्रूशियावालोंसे हारना पडा। सेडानमे फ्रासके सम्राट्को शत्रुके हाथ आत्मसमर्पण करना पडा। इन समाचारोंको सुनकर रोमवालोंने विक्टर इमेनुयलसे रोमके उद्धारकी प्रार्थना की। उनकी प्रार्थनाके अनुसार कार्य करनेका सुअवसर देख उसने इस काममें हाथ डाला। फ्रासकी नयी सरकारको उसने एक पत्र लिखा। उत्तर इसका मिला कि फ्रासमें अब इतनी शक्ति नही रही कि वह इटलीका सामना करे। इसपरभी विक्टरने पोपको पत्र लिखकर आपसमे ठीकठाक कर-लेना चाहा। किन्तु जब पोप दुराग्रहमे पड किसी प्रकार राजी न हुए तब इटालियन सेनाने पोपके राज्यपर चढ़ाईकी। सवत् १६२७की ५वीं आश्विनको पोपके प्रभुत्वका अन्त हुआ। पोपकी अवस्था उस समय अस्सी वर्षकी थी तो भी इटालियन सेनाका सामना करनेका उसने दृढ सकल्प किया और नगरके परकोटे-

की दीवालसे पोपकी सेना आने शत्रुकी सेनापर गोले छोडने लगी। यह युद्ध बहुत देरतक न हो पाया। विदेशी राज्यके प्रतिनिधियोंने पोपसे अनुनय विनयकर उन्हें युद्धसे विरत करना चाहा, पर हठी बूढेने उनकी एक न मानी। अन्तमें विक्टरकी सेनाने नगरमें प्रवेश किया। तब सेण्ट पीटरपर एक सफेद कपडेका झण्डा खडा किया गया और एक घण्टेके बाद वहाँ पोपकी सेनाने हथियार रख दिये। इटलीका तिरङ्गा झण्डा राजप्रासादपर उडने लगा। उसे देख रोमवालोंके आनन्दकी सीमा न रही। सेण्ट एनजीलोकी गढीका फाटक खोला गया और उसमें से बीसों राज्यनैतिक अपराधोंके लिये बन्द किये हुए बन्दी छोडे गये। अनन्तर पोप और कारडीनल वेटीकन अर्थात् पोपके राजप्रासादमें चले गये और वहाँसे उन्होंने दुनियाको सारी खुदाईमें पुकार मचाई कि हम जबरदस्ती बन्दी बना लिये गये हैं। रोमवालोंसे सम्मति मांगी गई और उन लोगोंमें सबसे अधिक सम्मति रोमको इटलीमें मिला लेनेकी आयी। रोमका राज्य मिला लिया गया।

संवत् १९२७के २०वें मार्गशीर्षको फ्लारेन्समें पार्लमेण्टकी अन्तिम बैठकमें विक्टरने कहा—"इटलीकी राजधानी रोममें स्थापित करूँगा—मैंने यह प्रतिज्ञा की थी। वह पूरी हुई। जिस जिस कार्यको आजसे २३ वर्ष पूर्व मेरे पिताने आरम्भ किया था, उसे आज मैंने पूरा किया। उपस्थित प्रतिनिधियोंको अभिवादन करते हुए यह कहते हुए कि इटली एक हुई और स्वतन्त्र हुई। मुझे बडा आनन्द प्राप्त होता है। अब इटलीको सुख समृद्धि बढाना और उसे स्वाधीन बनाये रखना हम लोगोंके ऊपर निर्भर है।"

विक्टरने कभी यह नहीं चाहा कि पोपके साथ विवाद

करे। रोमको अपने अधिकारमें करलेनेपर भी उसने रोम नगरमे राजधानी स्थापित करनेमें नव मासका विलम्ब किया और चाहा कि किसी प्रकार पोप अप्रसन्न न हो।

स० १९२८ के २० ज्येष्ठको बडी धूमधामसे विक्टर इमेनु-अलने इटलीकी नयी राजधानीमें प्रवेश किया और इसी वर्षके ११ वी मार्गशीर्षको रोममें पार्लमेण्टका प्रथम अधिवेशन हुआ जिसमें समस्त इटलीके प्रतिनिधि उपस्थित थे।

रोमके राज्य सिंहासनपर बैठ सात वर्ष तक विक्टर इमेनुअलने इटली मे राज्य किया और इस बीचमें उसने इटलीकी बडी उन्नति की। विक्टर स्वयं दूसरे देशोंके अधी-श्वरोंका अतिथि बनता और बदलेमे अन्य देशोंके अधीश्वर उसके अतिथि होते थे। यद्यपि आस्ट्रियावालोंने इटलीमे शासन करते समय बडे अत्याचार किये थे, तथापि उदारहृदय विक्टरने उन सबको भुला दिया और सं० १९३० वि० में आस्ट्रियाके सम्राट् फ्रँसिस जोसफसे वियेनामे मिला और संवत् १९३३ वि० मे फ्राँसिस जोसफ उससे वैनिसमें आकर मिला। दोनों अधीश्वरोंमे परस्पर सद्भाव स्थापित हुआ।

पोप प्रगटमें तो विक्टर की सदा निन्दा किया करता था किन्तु एकान्तमें उनकी प्रशंसा करता था। असल बात यह थी कि नवें पियूष हृदयके बुरे न थे और व्यक्तिगत मत उनके बहुत अच्छे थे। किन्तु पदके विचारसे उनको अपने अनुयायी पादडियोंके स्वार्थ पर ध्यान देना पडता था। अत. प्रकाश रूपसे वे बडे कट्टर और संकीर्ण बन जाते थे। वे अपने को अबभी रोमका अधीश्वर समझे हुए थे, किन्तु वास्तवमें अब यह उनका समझना कोरी विडम्बना थी।

संवत् १९२८ से १९३५ वि० तक सात वर्षके भीतर

इटली सम्बन्धी विशिष्ट ग्रंथोंकी सूची

यूरोपका संक्षिप्त इतिहास (सुदर्शन प्रेस प्रयाग)

Bolton King History of Italian Unity (1899)

Burckhardt Civilization of the Renaissance in Italy
[*English translation 1890*]

Corner History of Italy

Cavour The Countess Evelyn Martinengo Cesaresco
(*Macmillan & Co Ltd , St Martin's Street, London*)

D' Ascoli Archivio Glottologico

Evelyn, Countess The Liberation of Italy, 1815-1870
(*Martinengo Cesaresco London Seeley & Co Ltd 38 Great Russell Street, London*)

Garnett Short History of Italian Literature

Hodgkin Italy and Her Invaders (1896-99)

King, Mrs Hamilton Letters and Recollections of Mazzini (*Longmans Green & Co , 39 Paternoster Row, London, New York, Bombay & Calcutta*)

Life and Writings of Joseph Mazzini, 6 Vols
(*London, Smith, Elder & Co , 15 Waterloo Place, London*)



इटली सम्बन्धी विशिष्ट ग्रंथोंकी सूची

यूरोपका संक्षिप्त इतिहास (सुदर्शन प्रेस प्रयाग)

Bolton King History of Italian Unity (1899)

Burckhardt Civilization of the Renaissance in Italy
[*English translation 1890*]

Corner History of Italy

Cavour The Countess Evelyn Martinengo Cesaresco
(*Macmillan & Co Ltd, St Martin's Street, London*)

D' Ascoli Archivio Glottologico

Evelyn, Countess The Liberation of Italy, 1815-1870
(*Martinengo Cesaresco London Seeley & Co Ltd 38 Great Russell Street, London*)

Garnett Short History of Italian Literature

Hodgkin Italy and Her Invaders (1896 99)

King, Mrs Hamilton Letters and Recollections of Mazzini (*Longmans Green & Co 39 Paternoster Row, London, New York, Bombay & Calcutta*)

Life and Writings of Joseph Mazzini, 6 Vols
(*London, Smith, Elder & Co, 15 Waterloo Place, London*)

Mario, Jessie White The Birth of Modern Italy
(T Fisher Unwin, London)

Marriott, J A R The Makers of Modern Italy
(Macmillan & Co Ltd , St Martin's Street, London)

Orsi Modern Italy (*Story of the Nations* Series)

Stillmann The Union of Italy (1898)

Symonds Age of the Despots (1888)

Italian Literature

Thayer, William Roscoe The Life and Times of Cavour
(Boston & New York Houghton Mifflin Co The Riverside Press Cambridge)

Trevelyan, George Macaulay Garibaldi s Defence of the Roman Republic *(Longmans Green & Co 39 Paternoster Row, London, New York Bombay and Calcutta*

Garibaldi and the Thousand

Garibaldi and the Making of Italy

Underwood, F M United Italy *(Methuen & Co Ltd London)*

Vernon, Mrs H M Italy from 1494 to 1790 (Cambridge Historical Series) *Cambridge University Press*

Zimmern, Helen, and Agresti, Antonio New Italy
(Constable and Company Ltd , London)

अनुक्रमणिका

ज्ञानमण्डलके उद्देश्य और नियम।

उद्देश्य (१) देशी भाषाओंद्वारा संसारके ज्ञानको अपनाना।

(२) विदेशी भाषाओंद्वारा भारतके ज्ञानको संसारमें पहुँचाना।

(३) संस्कृतमें वर्तमान ज्ञानभण्डारकी खोज कर उसका देशी और विदेशी भाषाओंद्वारा प्रचार करना।

नियम (१) प्रायः मौलिक ग्रन्थ ही प्रकाशित किये जायँगे। कुछ चुने हुए ग्रन्थोंका भाषान्तर भी प्रकाशित होगा।

स्थायी ग्राहकोंके नियम

ज्ञानमण्डल ग्रन्थमालाके स्थायी ग्राहकोंके निम्नलिखित नियम हैं।

(१)—जो महाशय १) रु० प्रवेश शुल्क जमाकर अपना नाम ग्राहकोंकी श्रेणीमें लिखा लेंगे वे ही स्थायी ग्राहक समझे जायगे। स्थायी ग्राहक दो प्रकारके होंगे।

(अ) एक वे जो ग्रन्थमालामें प्रकाशित सभी पुस्तकें लेना चाहते हैं। ऐसे ग्राहकोंको 'माला' में प्रकाशित सभी पुस्तकें पौनी मूल्यपर दी जायँगी।

(ब) दूसरे वे जो 'माला' में प्रकाशित केवल वे पुस्तकें लेना चाहते हैं जिनमें उन्हें विशेष रुचि है, पर उन्हें वर्ष भरमें प्रकाशित पुस्तकोंमें से कमसे कम आधी पुस्तकें लेना आवश्यक होगा। ऐसे ग्राहकोंको १५) रु० प्रति सैकड़े कमीशन दिया जायगा।

(२)—सभी पुस्तकोंकी सूचना स्थायी ग्राहकोंको प्रकाशित होनेसे १५ दिन पूर्व दे दी जायगी। जिन महाशयको पुस्तक मँगाना स्वीकार न हो उन्हें इस बातकी तुरन्त सूचना दे देनी चाहिए। अन्यथा पुस्तक छपकर भेजनेपर यदि वह लौटा दी जायगी तो उसके व्ययका भार उनपर रहेगा जो दूसरी मर्तबा वी० पी० भेजनेपर वसूल कर लिया जायगा।

(३)—जो स्थायी ग्राहक लगातार वी० पी० को दो वार बिना यथेष्ट कारण लौटा देंगे, उनका नाम स्थायी ग्राहकोंकी सूचीसे अलग कर दिया जायगा।

(४)—स्थायी ग्राहकोंको पूर्व प्रकाशित सभी पुस्तकोंमें रियायत की जायगी। पर उनके लिए उन्हें अलग पत्र व्यवहार करना होगा।

(५)—हमारे यहाँसे प्रकाशित 'स्वार्थ' मासिक पत्रके ग्राहकोंको भी कार्यालयकी प्रकाशित सभी पुस्तकें पौनी मूल्यपर दी जायँगी।

ज्ञानमण्डल काशीकी प्रकाशित पुस्तकें ।

१—स्वराज्यका सरकारी मसविदा । दो भाग । श्रीयुत श्रीप्रकाश जी, बी ए, एल्-एल् बी (केम्ब्रिज) बेरिस्टर द्वारा सम्पादित। डबल-क्रौन १६ पेजीके ५५० पृष्ठ । साधारण जनोंमें भी इसको सुलभ रीतिसे पहुच करानेके अभिप्रायसे मूल्य इसका केवल १॥।) रक्खा है ।

२—बिहारीकी सतसई । डबलक्रौन १६ पेजी ३६८ पृष्ठ । सजिल्द, मूल्य २) कवि सम्राट् बिहारीकी सतसईपर — सोनेमें सुगध चरितार्थ करनेवाली — हिन्दी ससारके सुप्रसिद्ध विद्वान प० पद्मसिंह शर्म्माकी अपूर्व समालोचना ।

३—अब्राहम लिंकन । डबलक्रौन १६ पेजी पृष्ठ १५२, मूल्य ॥) । जीवनमें नवयुग पैदा करनेवाली अपूर्व पुस्तक । अँग्रेजीमें इसकी लाखों प्रतियाँ प्रति वर्ष बिकती हैं । मध्य प्रदेशके शिक्षाविभागने इसे अपने पाठ्य ग्रन्थोंमें रक्खा है ।

४—प्राचीन भारत सचित्र । ग्रन्थमालाका चौथा ग्रन्थ । लगभग १००० विक्रमाब्दतकका सचित्र इतिहास । प्राय एक मासमें निकलेगा ।

५—इटलीके विधायक महात्मागण सचित्र । मालाका पाचवाँ ग्रन्थ । छपगया । यूरोपकी राजनैतिक चालोंका उल्लेख और इटलीके सच्चे देश भक्तोंके जीवन तथा कार्य्यक्रमका वर्णन । स्वदेशका उद्धार करनेवाले युवकोंके हितकी अनेक शिक्षाएँ इससे मिलती है । मूल्य २।) सजिल्द ।

६-यूरोपके प्रसिद्ध शिक्षण सुधारक–मालाका छठवाँ ग्रन्थ । मू० १॥=)

७-विलुप्त पूर्वीय सभ्यता–मालाका सातवाँ ग्रन्थ–छप रहा है ।

अन्य और शीघ्र ही प्रकाशित होने वाले महत्वके ग्रन्थ (१) जापानकी राजनैतिक प्रगति (२) वैज्ञानिक अद्वैतवाद (३) पश्चिमीय यूरोप, सचित्र (४) अर्थशास्त्रका उपक्रम (५) राष्ट्रीय आयव्यय (६) भौतिक विज्ञान (७) रसायन शास्त्र ।

व्यवस्थापक—ज्ञानमण्डल कार्यालय, काशी ।